ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार

एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२, में उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो उसकी गर्दन दायें बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं।   **शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान**

१ 13 03 1983 पुष्प 43 अनुपम जगत माला के सदृश्य अध्ययन पञ्चीकरण

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा, महिमावादी है। मानो उसी की महिमा इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड में ओत प्रोत है। जितना भी यह जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है, इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, वह मेरा प्यारा प्रभु विद्यमान है। मानो वह वेदां ब्रह्मा यज्ञनं, बर्वस्ते वह यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। यह जो ब्रह्माण्ड है, यह परमपिता परमात्मा का आयतन माना गया है। मानो उसके आयतन की आभा में रमण करने वाला वह अमूल्य देव, हमें प्रायः दृष्टिपात आता रहता है। जिस भी काल में, हम यह चिन्तन करना प्रारम्भ करते हैं कि हमारा याज्ञिक जीवन है और यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में, दृष्टिपात आ रही है। यहाँ प्रत्येक मानव, प्रत्येक प्राणीमात्र मुनिवरों! देखो, याज्ञिक बना हुआ है।

याग का स्वरूप

याग का अभिप्रायः है एक दूसरा मानव, प्राणी, प्राणी से, कटिबद्ध हो रहा है। मानो एक दूसरा, एक दूसरे में ओत प्रोत हो रहा है और उस ओत प्रोत हुई सत्ता को, महानत्ता को जानने का नाम मेरे पुत्रो! देखो, एक याग माना गया है। जैसे हमारे यहाँ नाना प्रकार का औषधि विज्ञान है। तो हमारे ऋषि मुनियों ने बेटा! अग्नि का चयन करते हुए नाना प्रकार की औषधियों का परमाणु बना करके, मानो देखो, उसका प्रथम तो साकल्य ही बनाया। उसके पश्चात् अग्नि ने उसका जब भेदन किया तो भेदन शक्ति मानो क्योंकि अग्नि में विद्यमान है, अग्नि उसका भेदन कर रही है, अग्नि ही मानो देखो, वायु की आभा में गति करने वाली है।

तो मेरे पुत्रों! विचार विनिमय करने वालों ने यह कहा, क्या वह जो अग्नि है, वह भेदन

करती है और औषध का परमाणु बना करके वायुमण्डल में प्रसारित कर देती है अथवा वह वायु में उन परमाणुओं का नाना रूपों से भेदन होता है। अथवा उनका विभाजन होता है। तो बेटा! यह संसार एक मानो भव्यता में दृष्टिपात आने लगता है। मानो देखो, कुछ प्राणी वायुमण्डल में, आभा में गति करने वाले हैं, कुछ पृथ्वी के गर्भ में विद्यमान हैं। तो मुनिवरों! देखो, सर्वत्रता में वह अग्नि ही साकल्य के परमाणु बना करके वायु में परणित कर देती है और वायु उन्हें प्राण स्वरूप के रूप में प्रदान करती रहती है।

ब्रह्माण्ड की गतियां

मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में निर्णय देते हुए कहा था, अपने वाक् प्रगट करते हुए कहा था कि यह जो संसार है, ये मानवीय क्षेत्र कहलाया जाता है जहाँ विज्ञानवेत्ताओं ने अथवा इसको विज्ञानशाला के रूप में, अथवा याज्ञिक पुरुषों ने, यज्ञशाला के रूप में मानो इस परमात्मा के भव्य जगत् को स्वीकार किया। तो इसीलिए प्रत्येक मानव बेटा! इस संसार को अपने अपने दृष्टिकोण से परम्परागतों से ही, मापता रहता हैं मैं बेटा! जब विद्यालय में अध्ययन करने के लिए मानव जाता है अथवा अध्ययन करना हमारा क्योंकि स्वभाव है, प्रत्येक मानव अध्ययन करता रहता है तो अध्ययन करने में बेटा! दो प्रकार की वार्त्ता आती रहती हैं सबसे प्रथम मानो उस अध्ययन काल में एक तो स्वतः इस ब्रह्माण्ड का अध्ययन करना, एक अध्ययन है मानो, अपना स्वतः अध्ययन कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्माण्ड, यह क्या है? ब्रह्माण्ड में कैसे गतियाँ हो रही हैं, लोक कैसे अपने एक दूसरे लोक और मण्डलों को बेटा! सहायता दे रहा है? सहायक बना हुआ है? तो मुनिवरों! इस सहायक बनने के पश्चात सम्भवा दिव्यं गतं प्रमाणा वसु रन्धनि गच्छतम्। मेरे प्यारे! देखो, एक समय सम्भवा देखो, विज्ञानवेत्ता भी, विचारक भी, अध्यापन करते हुए मुनिवरों! उन्होंने यह निर्णय किया है, ब्रह्माण्ड का अध्ययन करने के पश्चात् मानव को स्वतः अपना अध्ययन करना चाहिए, मानव जब अध्ययनशाला में प्रवेश करता है, एक अध्ययन करने की भी एक शाला होती है और वह शाला क्या है? मुनिवरों! देखो, वह निद्रा की गोद में जाता है। मेरे प्यारे! मन,

बुद्धि, चित्त, अहंकार अपनी साम्यवस्था में परिणित हो जाता है, मेरे प्यारे! देखो, उसी को सुषुप्ति काल कहते हैं। परन्तु देखो, जब हम सुषुप्ति काल को विचारने लगते हैं। यह क्या है, जिसमें मानो देखो, अपने में सुखद अनुभव कर रहा है, आनन्द अनुभव कर रह है, ऐसा क्या अभृत कहलाया जाता है?

चित्त मण्डल में ब्रह्माण्ड

मेरे प्यारे! इसके सम्बन्ध में ऋषि मुनियों ने अपना बहुत गम्भीर अध्ययन करते हुए कहा, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। मेरे पुत्रों! हमारे यहाँ अंगिरा गोत्र में, नाना ऋषि हुए हैं, मानो देखो, अंगिरस गोत्र में एक श्वेत नामक ऋषि हुए हैं। वे श्वेत नामक ऋषि के हृदय में यह मानो देखो, अध्ययन करने की प्रवृत्ति जागरूक हो गई। एक समय मानो अपने आसन पर विद्यमान थे, मानो देखो, एक वेदमन्त्र उन्हें स्मरण आया, चित्रं रथं प्रमाणः गतौ दिव्यं ब्रह्मा सम्भो देवाः वेद की आख्याकिया एक स्मरण आई कि हम मानो देखो, इस वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन करें। तो वेदमन्त्र यह कह रहा था कि हे मानव! तू अपने चित्तमण्डल को जानने का प्रयास कर। मानो यह जो चित्त मण्डल है, इसमें ब्रह्माण्ड का चित्रण मानो चित्रित होता रहता है। यह जो संसार का जितना भी दृष्टि देवतव है, मानो लोक लोकान्तर की जो छाया है मुनिवरों! देखो, वह सर्वत्र चित्त में विद्यमान रहती है, क्योंकि मानव का जो चित्त है, चित्त नाम मेरे प्यारे! पृथ्वी को माना गया है। इस पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का चित्त मण्डल विराजमान है। नाना प्रकार के अंकुर विद्यमान होते हैं। वह अंकुर अपने समय समय पर जागरूक होते रहते हैं। इसी प्रकार मानव के शरीर में भी मानो जो चित्त नाम का स्थान है, उसमें संस्कार रूपी मानो देखो, अंकुर विराजमान हैं जो समय समय पर उपजते रहते हैं और मानव मुनिवरों! देखो, अपने में क्रिया कलाप करता रहता है।

चित्त स्थली पृथ्वी

तो विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, वेद के ऋषियों ने और आगे चिन्तन करने वालों ने कहा है, समा रथप्रणे देवाः चित्त को जानना चाहिए, इस पृथ्वी मण्डल को

जान लेने में हमारा मानो देखो, बाह्य अध्ययन होता है।

मेरे पुत्रों! देखो, जब बाह्य अध्ययन करना प्रारम्भ करता है तो ऋषि ने श्वेत ने मानो देखो, एक समय अध्ययन करने के लिए तत्पर हो गए, अध्ययन करने लगे कि बाह्य जगत् में ये जो पृथ्वी है। यह मानो देखो, चित्तस्थली बनी हुई है। नाना प्रकार के बीजों का रूपांतर होता रहता है, अंकुर रूपों से इसकी जीवन शक्ति में मानो वह विद्यमान है। वह जो जीवन शक्ति में विद्यमान है वह अग्रह कहलाता है। मानो देखो, स्वर्ण है, स्वर्ण के आभूषण बन जाते हैं परन्तु वही आभूषण बन करके मुनिवरों! देखो, कणों में विद्यमान होते हैं। जब वह कणों में विद्यमान हो जाते हैं, तो मुनिवरों! देखो, वह उसी आभा में परिणत हो जाते हैं। उसी किरणों में मानो देखो, वह समर्पित हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! जो पृथ्वी के उसी आँगन में प्रवेश हो करके किरणों के द्वारा मुनिवरों! देखो, एक रूपांतर होता रहता है। इसी प्रकार प्रत्येक वस्तु का रूपांतर हो जाता है। परन्तु देखो, निर्माण हुआ है, उसका मानो उपयोग हो गया है, उपयोग के पश्चात् उसका सूक्ष्म रूप निर्माणित हो गया है, सूक्ष्म रूप बन करके उसी स्थली में प्रवेश कर गया है। जहाँ से मुनिवरो! वह परमाणुवाद आया था वहीं उसका मानो देखो, रूपांतर हो करके मानो अपने स्वरूप में प्रवेश करता रहता हैं।

चित्त का मूल

तो विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! आज मैं तुम्हें गम्भीर क्षेत्रों में न ले जाता हुआ, केवल विचार विनिमय यह देने के लिए आया हैं। क्या मुनिवरों! देखो, सम्भवा ब्रहे कृताः वे मानो देखो, अंगिरस गोत्र के ऋषि बेटा! चिन्तन कर रहे थे, और चिन्तन करते हुए मुनिवरों! देखो, अपनी आभा में वह परिणत हो रहे थे। उनका अध्ययन करने का जो माध्यम बना वह पृथ्वी बन गया। क्या, पृथ्वी के गर्भ में क्या है? तो बेटा! देखो, वह अपनी शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके, वह मुनिवरों! देखो, शान्त मुद्रा में आभा में रमण करने लगे और अपने चित्त मण्डल को प्राण से समन्वय करना चाहते थे। बेटा! जब वह प्राणों में समन्वय करना चाहते थे, तो एक समय वह भ्रमण करते हुए

महर्षि सुधनकेतु ऋषि के द्वार पर पहुंचे। सुधनकेतु ऋषि महाराज ने कहा, आइए ऋषिवर! पधारिए। ऋषि विद्यमान हो गए। ऋषि ने कहा, कहो ऋषिवर! आज कैसे आगमन हुआ? उन्होंने कहा, प्रभु! यह वेदमन्त्र है और वेदमन्त्र यह कहा रहा है कि चित्तं ब्रह्मः प्राणं ब्रहे सम्भवः चित्रोरथाः आज मैं उस चित्त के रथ को जानना चाहता हूँ। जिस चित्त के रथ पर मानो शब्द या संस्कार विद्यमान हो करके, अंकुर बन जाता है। अंकुर बन करके वह पौधे के रूप में परिणत हो जाता है। वही मानो देखो, विशाल बन जाता है। हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ क्या, मैं चित्त के मण्डल को चित्त के मूल को जानना चाहता हूँ? परन्तु सुधनकेतु ऋषि ने कहा कि हे भगवन! हे अंगिरस गोत्र में जन्म लेने वाले ऋषिवर! क्या यह वाक् कैसे निर्णय हो? उन्होंने कहा, प्रभु! मुझे किसी प्रकार इसका समाधान कीजिए।

पञ्चीकरण

तो मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, हमारे यहाँ, परम्परागतों से पञ्चीकरण होता रहता है। मानो परमपिता परमात्मा ने जब, माता के गर्भस्थल में, जब मानव का निर्माण किया, तो उस मानव का भी मुनिवरों! देखो, पञ्चीकरण किया गया और वह पञ्चीकरण होता हुआ, मानो देखो, पंचीकरणों में उसकी आभा विद्यमान हो गई। वह पञ्चीकरण क्या है? मानो देखो, पञ्चीकरण, पञ्चमहाभूतों का रहता है, इसी प्रकार मानव के शरीर में भी जब रचनाकार ने रचना की, तो वह पञ्चीकरण के आधार पर हुई। क्योंकि पञ्च कोणो वाला मानो देखो, पञ्च महाभूतों वाला, यह जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है, यह इसमें पञ्चमहाभूत हैं वही पञ्चीकरण मेरे पुत्रों! देखो, आचार्यों ने, इसके ऊपर टिप्पणियाँ की हैं अथवा उन पर विचार विनिमय किया है कि हमारा पञ्चीकरण होना चाहिए।

मुद्रा से स्वयं का बोध

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि विचारने लगे, ऋषियों ने अध्ययन किया कि साधना के क्षेत्र में चले जाओ। तो मुनिवरों! देखो, अंगिरस गोत्र में रहने वाले ब्रह्मचारी ने, मुनिवरों! देखो, शान्त मुद्रा हो करके वह मुद्रित हो गएं और उन्होंने मुनिवरों! देखो, नेत्रों को

मुद्रित किया, घ्राण को मुद्रित किया, घ्राण और देखो, श्रोत्रों को मुद्रित जब करने लगे तो मुनिवरों! देखो, वह घ्राणां ब्रहे सम्भवा देवतं ध्रणा अब घ्राण को जब मुद्रित करने लगे, रसना को मुद्रित किया और त्वचा को मुद्रित करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, इसके ऊपर वह गम्भीर अध्ययन करने लगे। वह गम्भीर मुद्रा में प्रवेश कर गए। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपनी इन्द्रियों को जानने का प्रयास किया। अपने उस पञ्चीकरण को जानने का प्रयास किया कि पञ्चीकरण क्या है? जिसके ऊपर मुझे प्रायः अध्ययन करना है। तो मुनिवरों! देखो, वह मुद्रित हो करके मानो देखो, ऋषि ने यह कहा, क्या भगवन! मुद्रित होना, यह आपका बहुत प्रियतम है। यह अपना स्वतः अध्ययन है, चित्त के मण्डल को जानने के लिए, मन की प्रतिभा को जानने के लिए, परमात्मा के भव्य जगत् को जानने के लिए, मानव को मुद्रित हो जाना चाहिए। बेटा! मैंने मुद्रिता का इसीलिए वर्णन किया गया है कि हमारे यहाँ, परम्परागतों से ऋषि मुनि बेटा! मुद्रित होते रहे हैं। मुद्रित का अभिप्रायः क्या है? मानो देखो, इस हमारे मानव शरीर में, यह जो पञ्चीकरण हो रहा है, एक दूसरे से मिलान करना है, एक दूसरे से मिलान करने से मानो देखो, चित्त की प्रवृत्ति बनती है। मन और प्राण की प्रवृत्ति बन जाती है। जब मन और प्राण की एक सूत्र में प्रवृत्ति बनती है, तो उसके बनने के पश्चात् मानो वह मुद्रित होता है। बाह्य जगत् से वह मानो नाना प्रकार के बंधनों से अवऋण हो करके, सूक्ष्म मूलक बन करके सूक्ष्म क्षेत्र में प्रवेश करता है, जहाँ प्रवेश करने के पश्चात्, मेरे प्यारे! वह मुद्रित हो करके और वह अपनी आभा में अपनी महानता में सफलता को प्रायः प्राप्त हो जाता है।

पार्थिव तत्व में चित्त

मेरे प्यारे! मुझे बहुत पुरातन काल, स्मरण आता रहता है। परन्तु देखो, ऋषि ने जब यह निर्णय दिया, तो वहाँ से मानो देखो, ऋषि ने गमन किया। अंगिरस गोत्र में होने वाले, ब्रह्मचारी ने वहाँ से गमन करते हुए मुद्रित हो गए, शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके और अपनी पांचों इन्द्रियों को पञ्चीकरण करते हुए, मेरे प्यारे! देखो, इसके ऊपर

प्रायः अनुसन्धान किया और विचारा यह गया कि पार्थिव तत्त्व में ही चित्त विद्यमान रहता है। जहाँ मानव के शरीर में पार्थिव तत्त्व हैं वहीं चित्त का मण्डल बना हुआ है, उसी को चित्त कहते हैं। परन्तु उस चित्त में जो गति आती है वह प्राण की है और मुनिवरों! देखो, वह जो शब्दावली आती है, ध्वनि आ रही है, वह मानो देखो, हमारे यहाँ श्रोत्रों की है और मुनिवरों! देखो, जो अप्रतम् शब्दों की ध्वनियाँ हैं, समूह रुद्र कहलाया जाता है वह मानो देखो, शब्द, उस प्राण से उत्पन्न हो करके मेरे प्यारे! देखो, वह रसना से मिलान करते हुए, आभा में रमण करते हुए मेरे प्यारे! देखो, मानव के हृदय में वह मुद्रित हो जाती है।

मुनिवरों! देखो, हृदय ही इस संसार का इस ब्रह्माण्ड की कुंजी कहलाती है, जिस कुंजी को जानने के लिए मानव परम्परागतों से ही, प्रायः अनुसन्धान करता रहा है और विचारता रहा है कि मुझे मुद्रित हो करके अपनेपन में ही नहीं सीमित रहना है, मानो मुझे ऊर्ध्वा में, परमात्मा के राष्ट्र में गमन करना है। मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ, इस प्रकार के नाना राजा भी हुए हैं जिन्होंने मुनिवरों! देखो, इस महानता को जानने का प्रयास किया।

चित्त में संस्कार

आओ मेरे प्यारे! देखो, वह ऋषि अंगिरस गोत्र के ऋषिवर मुनिवरों! देखो, वह भयंकर वन में चले गए, चिन्तन करते हुए, मुद्रित होते हुए, वेद के ऊपर अध्ययन करते हुए, एक एक वेदमन्त्र के ऊपर उनका बड़ा अनुसन्धान और उनकी विचारधारा गम्भीर हृदय में प्रवेश होना ही मानो देखो, उनकी आभावत कहलायी जाती है। विचार विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! मैं आज कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। आज तुम्हें इन विचारों की मैं भूमिका बनाना चाहता हूँ और वह भूमिका क्या है? मुनिवरों! देखो, भूमिका ये कि मानव को अपने चित्तमण्डल को जानना चाहिए। जिस चित्त मण्डल में नाना संस्कार विद्यमान रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, हृदय में नाना प्रकार की स्मरण शक्ति के रूप में

विद्यमान होने वाला मानो एक अभ्याहत कहलाने वाला गतिशील होता रहता है।

तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, ऋषि मुनियों ने इस चित्त के क्षेत्र को जानने के लिए, बहुत प्रयास किया। अध्ययन करना प्रारम्भ किया, और वह अध्ययन, प्रतिक्रियाएं, अध्ययन में अश्व अप्रात होते हुए मेरे पुत्रों! देखो, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर गये। पृथ्वी के गर्भस्थल में, अग्नि प्रचण्ड हो करके मानो तपा रही है। इसी प्रकार जब वह अपनी हृदयस्थली में, जब पार्थिव तत्त्वों में पहुंचे तो मुनिवरों! देखो, कहीं प्राण लिए हुए हैं, कहीं मानो देखो, घ्राण असुतां मानो शब्द लिए हुए है, कहीं प्रीति ले रही है। मानो एक दूसरे परमाणु का मिलान होता हुआ वह चित्त मण्डल बन करके वह स्मरण शक्ति का मुनिवरों! देखो, एक केन्द्र बन जाता है और उसका समन्वय हृदय से रहता है। हृदय का सम्बन्ध, मेरे पुत्रों! देखो, वह उस परमपिता परमात्मा के भव्य हृदय से रहता है जिस परमपिता परमात्मा ने बेटा! इस संसार रूपी जगत् का निर्माण किया। तो आओ मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या, मेरे प्यारे! देखो, वह जो भव्यता चित्त के मण्डल को जानना चाहते हो, जिसमें संसार विद्यमान रहता है, जिसमें यह ब्रह्माण्ड विद्यमान रहता है। जिसमें चैतन्य और जड़ जगत् दोनों विद्यमान रह करके, विज्ञान के क्षेत्र में चला जाता है। आध्यात्मिक विज्ञान में रमण करता हुआ, वह मानो देखो, भौतिक विज्ञान से दूरी होता हुआ, वह मानो देखो, अपने में अपनेपन को प्राप्त करता रहता है।

आहार से मन

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आज मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, तुम्हें केवल संक्षिप्त परिचय देने के लिए आया हूँ, और वह परिचय क्या है? वह परिचय यह देने जा रहे थे कि वह जो चित्त का मण्डल है, वह जो चित्त की प्रतिभा है चित्त का जो मण्डल है मानो देखो, उसको जानने के लिए मानव परम्परा से अनुसन्धान करता रहा है। वह चित्त क्या है? जिसमें बेटा! देखो, संसार विद्यमान रहता है। एक मानव अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके मानो वह चक्षु की प्रतिभा को, देखो, इस मस्तिष्क की आभा को, जान करके, वह परमात्मा के भव्य जगत् को जब दृष्टिपात करने लगता

है तो यह संसार उसके मानो लिए एक खिलवाड़ बन जाता है। विज्ञान के क्षेत्र में जाता है तो विज्ञान एक खिलवाड़ दृष्टिपात होने लगता है। परन्तु वह अपने क्षेत्र में इतनी सफलता को प्राप्त हो गया है पुत्रों! क्या अपने में वह महान् बनता चला जाता है। परन्तु देखो, अंगिरस गोत्र के ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहे हैं। अपना स्वतः अध्ययन करना बहुत अनिवार्य है। जब स्वतः अपना अध्ययन करने लगे। चित्त के मण्डल को जानने लगे, तो बेटा! उन्होंने मन का शोधन किया। क्योंकि मन का जो निर्माण होता है, मन की जो उत्पत्ति होती है, वह आहार से होती है। आहार मानव का ऐसा पवित्र होना चाहिए। परन्तु देखो, आहार से व्यवहार बनता है और जब आहार और व्यवहार दोनों पवित्र होते हैं तो मानव का जीवन पवित्र बनता चला जाता है। जब मानव में पवित्रता आती है तो मुनिवरों! देखो, वह सत्य ही उच्चारण करता है और जब वह सत्य ही उच्चारण कर रहा है तो सत्य के गर्भ में वह मानो सर्वत्र ब्रह्माण्ड विद्यमान है। सत्य ही ब्रह्म है। सत्य ही चेतना है। मानो देखो, उसी के आधार पर यह संसार पञ्चीकरण सा दृष्टिपात आता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, सत्य ब्रह्म को जानना, ये मानव का एक बहुत अनिवार्य, एक कर्त्तव्य कहलाया जाता है। ब्रहे असुतां देवत्यां लोका मेरे पुत्रों! देखो, उसकी आभा को जानने के लिए हमें वैज्ञानिक बनना है। विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश करना है और विज्ञान क्या है? जो चित्त के मण्डल को जान लेता है, चित्त के ऊपर अध्ययन करने लगता है। मेरे प्यारे! मानव स्वप्न को प्राप्त हो रहा है, स्वप्न दृष्टिपात कर रहा है। स्वप्न में बेटा! देखो, वह ऋषि एक भयंकर वन में चला जाता है। भयंकर वन में जा कर औषधि विज्ञान के ऊपर अनुसन्धान कर रहा है। औषधि विज्ञान को जान करके, अग्नि में उसको मानो तपा करके, उसके परमाणुओं के ऊपर अनुसन्धान कर रहा है।

मेरे पुत्रो! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, वह भयंकर वनों में मेरे पुत्रों! देखो, एक सम्भवा देवालयतां लोकां हिरण्यं रथाः मेरे पुत्रों! देखो, उस आभा में गति करता रहता है। वह उसी में गतिशील रहता है। परन्तु देखो, उसको जानने के लिए मानव

को प्रयास करना है।

तो मेरे पुत्रों! आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है? मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ ऋषिवर मानो देखो, जब अपने चित्त के मण्डल को जानने के लिए तत्पर होने लगे, तो बेटा! देखो, इन्द्रियों में प्रवेश कर गए। इन्द्रियों का प्रत्येक रूप को जानने के लिए, मेरे पुत्रों! देखो, चित्त के मण्डल को जानने लगा। स्वप्नवत स्वप्न को प्राप्त हो रहा है। स्वप्न में दृष्टिपात कर रहा है, याग कर रहा है। औषधि विज्ञान को जान रहा है। मेरे पुत्रों! वह चित्त का मण्डल बना हुआ है। चित्त में वह विद्यमान हैं परन्तु उन अंकुरों के सूक्ष्म रूप को स्थूल बना करके मानो देखो, वह स्वप्न को प्राप्त हो रहा है। स्वप्न में स्थूल बना करके, उसे पान कर रहा है ये सब कुछ क्या है मेरे पुत्रों!? ये चित्त का मण्डल है चित्त के मण्डल में संस्कार विद्यमान हैं। जन्म जन्मांतरों के संस्कार विद्यमान होते हैं। इन संस्कारों के आधार पर, संस्कारों की प्रतिभा को ले करके ही मेरे पुत्रों! देखो, उस आभा में गति करता रहता है।

स्वप्नावस्था का आधार

आओ, मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, तुम्हें ये वाक् प्रगट करने के लिए आया हूँ कि क्या ऋषि मुनियों ने, इस चित्त के मण्डल को जानने के लिए, क्या मुनिवरों! देखो, इसमें पत्नी नहीं होती, पत्नियों से आमोद प्रमोद कर रहा है आनन्दं ब्रह्मे समा गृहतो वह सर्वत्र मानो गृह का निर्माण कर रहा है। मानो भव्य भवन उसमें दृष्टिपात आ रहे है। यह कहाँ से आ रहे हैं? पुत्रों? मानो देखो, चित्त के मण्डल में, अंकुर विद्यमान हैं। उन अंकुरों को जब यह मन मानो आत्मा के प्रकाश में पहुंचाता है, प्रकाश में जाकर यह सब साक्षात्कार मानो देखो, वह उसी, प्रकार मानो जैसा दृष्टि अंकुर रूप में है वैसा ही वह स्थूल रूप बन करके स्वप्नावस्था को दृष्टिपात करता रहता है। परन्तु देखो, ऋषि ने बेटा! इसके ऊपर अध्ययन किया कुछ मानो कन्द मूल औषधि इत्यादि को पान करके अपने मनस्तत्व को शुद्ध और पवित्र बनाने के लिए ऋषि प्रायः देखो, गायत्री माता की गोद में चले गए। मानो

सरस्वती की गोद में जा करके आनन्दित हो करके प्रभु का गुणगान गाने लगे, क्या प्रभु का गुणगान गाने लगे प्रभु की भव्यता को मानो देखो, दृष्टिपात करने लगे।

विचार विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने लगभग बारह बारह वर्षों तक, उस अन्नाद को पान किया जो मानो देखो, कन्द मूल से सम्बन्धित होता है, उसको पान करके अपने चित्त मण्डल को जानने के लिए, मन को पवित्र बनाने के लिए सदैव उन्होंने बेटा! पवित्र साधना की है। मानो देखो, एक सौ एक वर्ष तक देखो, उन्होंने कई प्रकार के अनुष्ठान किए। उन अनुष्ठानों में वह सफलता को प्राप्त हुए। परन्तु देखो, चित्त के मण्डल को जानने लगे। चित्त में जहाँ तरंगें उत्पन्न हुई, उन तरंगों का भाव, मेरे पुत्रों! देखो, उसकी स्मरण शक्ति में परणित होने लगा। विचार विनिमय क्या? उन संस्कारों को साक्षात्कार भोगने लगा, तो ऋषि ने बेटा! देखो, पिच्चासी वर्षों तक तप करने के पश्चात् उन्होंने चित्त मण्डल को जानने का प्रयास किया। मानो चित्त के मण्डल को जाना और यह निर्णय किया ऋषि ने कि मानव के शरीर में पार्थिव जो परमाणु हैं, पार्थिव जो तत्त्व हैं यह आणा अस्ति है मानो वही उस मण्डल का क्षेत्र बना हुआ है। मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आज मैं तुम्हें यह निर्णय कराने के लिए आया हूँ, यह निर्णय देना चाहता हूँ क्या संसार में मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक ऋषि मुनियों ने अपने अपने जीवन को जानने के लिए, अपनी आभा को जानने के लिए मानो उन्हें परम्परागतों से प्रायः अनुसन्धान किया हैं।

पार्थिव तत्वों का स्वरूप

आओ मेरे प्यारे! आज का विचार हमारा क्या कह रहा है? जैसे यह मानव के शरीर में पार्थिव तत्त्वों में, चित्त विद्यमान रहता है उस चित्त मण्डल को मेरे प्यारे! देखो, वह जल उसको प्राण शक्ति दे रहा है, मानो देखो, त्वचा उसको प्रीति दे रही है और देखो, वह चित्र कौन दे रहा है? वह नेत्र हैं, मेरे पुत्रों! देखो, श्रोत्र हैं और रसना, शब्दों का उद्गान गा रही है। उद्गीत गाती ही रहती है। जब वाणी उद्गीत गाती ही रहती है तो बेटा! उद्गान चलता रहता है। मेरे पुत्रों! देखो, इसको जानना हमारा बहुत कर्त्तव्य है, अनिवार्यता

है, जिसको जान करके मानो अमृतमयी बन जाता है। अमरापुरी को प्राप्त हो जाता है।

एक दूसरे में सहायक परमाणु

तो आओ मेरे प्यारे! आज का यह हमारा विचार, हमें क्या कह रहा है हम कौन से क्षेत्र में चले गएं हैं, बेटा! बाह्य जगत् मानो देखो, पार्थिव तत्त्वों को जानने वाला, पार्थिव परमाणुओं को जानने वाला मानव विशेष वैज्ञानिक बन जाता है। क्योंकि इसके परमाणुओं में ही मेरे पुत्रों! देखो, ये सब सहायक बने हुए है। तो विचार विनिमय क्या? वेद का मन्त्र कहता है, चाहे तुम सूक्ष्म जगत् में चले जाओ, चाहे स्थूल जगत् में चले जाओ, परन्तु दोनों ही जगत् में मानो एक प्राणी, प्राणी का सहायक बना हुआ है, मानो देखो, परमाणु, परमाणु का सहायक बना हुआ है। लोक, लोक का सहायक बना हुआ है। मानो देखो, एक प्राणी एक लोक दूसरे लोक में गति कर रहा है। एक लोक दूसरे लोक में गति कर रहा है मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण है उन्ही ऋषि मुनियों ने, जब इस संसार के विज्ञान को दृष्टि से दृष्टिपात करने लगे और विज्ञान की आभा में दृष्टिपात करने लगे तो मेरे पुत्रों! देखो, विज्ञान का परमाणु, विज्ञान ने यह सिद्ध किया है, क्या यह जो परमाणु गति कर रहा है, एक दूसरे में पिरोया हुआ है, माला बनी हुई है। जैसे यह ब्रह्माण्ड में नाना लोक लोकान्तरों की एक माला बनी हुई है और इस माला को जो धारण करता है वह मानो वैज्ञानिक बन जाता हैं, जो उस माला को अपने में धारण कर लेता है मेरे प्यारे! देखो, परमाणु एक दूसरे में गतिशील हो रहा है। लोक भी इसी प्रकार गतिशील हो रहे हैं। शब्द भी इसी प्रकार चित्र ले करके बेटा! एक दूसरे में कटिबद्ध हो रहे हैं, एक दूसरे के सहायक बन करके इसी प्रकार परमपिता परमात्मा ने बेटा! ये भव्य जगत् बनाया। इस भव्य जगत् में एक प्राणी, प्राणी का सहायक बना हुआ है। बेटा! मानो एक प्राणी है, प्राणी में पिरोया हुआ है। मानो देखो, अप्रता देवा मुनिवरों! देखो, वहीं पञ्चीकरण आ जाता है। विचार देते देते बेटा! कहाँ चला गया? वही पञ्चीकरण आ जाता है उसी पञ्चीकरण में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ रहता

है। वही मानो देखो, चित्त का मण्डल है।

चित्त क्या है? यह पार्थिव तत्त्व है। मेरे प्यारे! प्राण क्या है? यह जल तत्त्व है। मुनिवरों! देखो, जीवन शक्ति क्या है? मुनिवरों! देखो, वह सोमं शक्ति है। जिसे हम सोम शक्ति कहते हैं मुनिवरों! देखो, सौम्यता मानो देखो, कहाँ से? अग्नि की आभा से प्राप्त होती है। अग्नि की आभा कहाँ से प्राप्त होती है? मेरे पुत्रो! देखो, वह वायु से प्राप्त होती है और वायु अवकाश में परमाणुओं को लेकर के गति बेटा! करती है। विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! यह पञ्चीकरण कहलाता है। इस पञ्चीकरण की आभा में मुनिवरों! देखो, साकल्य पिरोया हुआ है। मुनिवरों! देखो, यज्ञमान यज्ञशाला में साकल्य प्रदान कर रहा हैं, परन्तु जब वह प्रदान करता है तो उसके गुणों का अवधान करने वाला मानो देखो, पांडित्व होता है। उद्गाता होता है, अर्ध्वुय होता है। मुनिवरों! देखो, उसकी आभा को जानते रहते हैं। उस परमाणुवाद को भी मानो वैज्ञानिक तत्त्वों को जाना जाता है। परन्तु देखो, वही वायुमण्डल में जा करके, अन्तरिक्ष में जा करके परमाणुओं के मिलन में अशुद्ध परमाणुओं को निगलना, शुद्ध परमाणुओं को देना यह आहुति का कर्त्तव्य बन जाता है। तो विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! आज मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह चल रहा था कि परमपिता परमात्मा ने बेटा! ये जगत् रचा है, अनुपम है, जितना जड़ जगत् और चैतन्य जगत् है, यह एक दूसरे में पिरोया हुआ सा दृष्टिपात आता है। एक माला बनी हुई है। उस माला को जो मानव जान लेता है वह बेटा! उस माला के सूत्र को भी जानता है और जो माला के सूत्र को जानता है वह मेरे प्यारे! अपना स्वतः अध्ययन भी करना जानता है और जो अपना स्वतः अध्ययन करना जानता है। मेरे पुत्रों! देखो, इस जगत् को जानता है और जो जगत् को जानता है वह भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान को जानता है। और जो भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान में पारायण होता है, वह प्रभु के गर्भ में बेटा! प्रवेश करता रहता है।

तो विचार विनिमय क्या? परमात्मा का यह जो जितना जगत् है, यह सब उसका गर्भाशय कहलाता है। तो मुनिवरों! देखो, यह प्रत्येक मानव, मानव में पिरोया हुआ,

प्राणी मात्र है। माता पुत्र में पिरोई हुई है, और पुत्र माता में पिरोया हुआ है पत्नी, पति में पिरोई हुई है पति पत्नी के आंगन में पिरोया हुआ हैं। मेरे पुत्रो! देखो, एक माला बनी हुई है पुत्रों! लोक लोक में पिरोया हुआ है। ये पृथ्वी है यह सूर्य में, सूर्य बृहस्पति में पिरोया हुआ है। और बृहस्पति आरूणि मण्डल में पिरोया हुआ और आरूणि मानो देखो, ध्रुव में पिरोया हुआ है और ध्रुव देखो, स्वाति नक्षत्रों में पिरोया हुआ है। स्वाति मूल में पिरोया हुआ है और मूल मेरे पुत्रों! नाना गन्धर्व लोकों में पिरोया हुआ सा जगत दृष्टिपात आता हैं।

तो मेरे प्यारे! जब मैं यह विचारने लगता हूँ, क्या वेदमन्त्र क्या कहता है हमें? वेदमन्त्र यह कहता है कि यह संसार एक दूसरे में पिरोया हुआ है पुत्रों! मानो देखो, माता अपने पुत्र से स्नेह कर रही है, वह माता में पुत्र पिरोया हुआ है माता पुत्र में पिराई है। मेरे पुत्रो! देखो, पिरोया हुआ यह जगत्, एक माला बनी हुई है और जो पिरोने वाली शक्ति है बेटा! उसका नाम एक चेतना है, और उस चेतना को जानना ही मुनिवरों! देखो, हमारा कर्त्तव्य कहलाता है। जो चेतना के आँगन में प्रवेश करता है, वही बेटा! परमात्मा की प्रतिभा को जानता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नही चाहता हूँ। मेरे प्यारे! महाननद जी यह कहा करते हैं कि याग होता रहता है, याग का जो साकल्य है, उस साकल्य में मानो यह साकल्य में कैसे एक दूसरे में पिरोया हुआ है और वायुमण्डल में क्या गति होती है इसकी ये चर्चाएँ हम कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् अब हमारा यह समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः क्या मुनिवरों! देखो, यह है कि यह भगवान का, परमपिता परमात्मा का जो अनुपम जगत है, यह एक माला के सदृश है। इस माला को हमें धारण करना चाहिए। इस माला की चर्चाएँ हम कल भी प्रगट करेंगे। मानो देखो, एक औषधियों की माला है जिसको वैद्यराज जानता है। एक मानो देखो, औषधियों की माला है, जिसको वनस्पति विज्ञान को ले करके आचार्य जानता है। जो अध्यापन का कार्य कर रहा है। उसी माला को ले करके वैज्ञानिक जानता है जो परमाणुवाद में चला जाता है। इसी माला को ले करके मुनिवरों!

देखो, वह भौतिक आध्यात्मिक विज्ञान में प्रवेश करता है जो अपनी आत्मा को जान करके प्रभु में अपने को पिरो देता है।

तो मुनिवरों! देखो, यह आज का हमारा वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। कल समय मिलेगा, तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा। अच्छा भगवन्! स्थान : लाक्षागृह, बरनावा

२ 14 03 1983 पुष्प 43 भगवान कृष्ण का गुरु संदीपन महाराज से मुद्रिका पर संवाद

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है, क्योंकि जितना भी ये आभा वाला जगत् है, उस सर्वत्र जगत् का जो मूलक है, वह चेतनामयी प्रभु कहा जाता है। हमारे यहाँ वेदों का पठन पाठन, भिन्न भिन्न प्रकार के स्वरों में होता रहता है, उनकी नाना प्रकार की ध्वनियाँ मानी जाती हैं। परन्तु नाना ध्वनियों में, सर्वत्र ध्वनियों में बेटा! एक आत्मीयता का दिग्दर्शन होता है। क्योंकि जब हम किसी ध्वनि को हृदय से, समन्वय हो करके जब हम उसके ऊपर चिन्तन और मनन करना प्रारम्भ करते हैं। तो प्रायः मुनिवरों! देखो, उसमें ऐसी महान् ऐसी आत्मीयता होती है कि विशाल ब्रह्माण्ड को अपना हृदय बनाती हुई और अपने साथ में संक्रोसता वर्णा प्रज व्रत देवा मानो देखो, उससे अपने ही अपने हृदय को हृदय से समावेश करता हुआ मानव, प्रभु! के आँगन में प्रवेश करने का प्रयास करता है।

ब्रह्माण्ड चित्त की आभा

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं देने आया हूँ, न कोई मैं व्याख्याता हूँ। केवल कुछ अनुभूतियाँ हैं, कुछ परम्परा की वार्त्ताएं हैं मुनिवरों! देखो,

उनके ऊपर हम अध्ययन करते रहते हैं और उनमें जो विचार विनिमय होता रहता है, उनमें जो महानता का दिग्दर्शन होता रहता है, प्रायः उसके ऊपर हम विचार विनिमय करते रहते हैं। तो आज का हमारा वेद का पठन पाठन हमें बेटा! कुछ प्रेरणा दे रहा है और वह प्रेरणा है जो हम चित्त के मण्डल की कुछ वार्त्ता प्रगट करते रहते हैं क्योंकि यह सर्वत्र, जो ब्रह्माण्ड है यह मानो देखो, चित्त की आभा कहलाती हैं। जैसे मानव का चित्त है और यह ब्रह्माण्ड है यह भी एक चित्रं कहलाया जाता है। तो इसी के आँगन में हम अपने को ही समावेश करते हुए उस चित्त की प्रतिभा में रमण कर जाते हैं। मेरे प्यारे! इससे पूर्व वाक्यों में, हम तुम्हें पञ्चीकरण की चर्चा कर रहे थे कि मानव को अपने जीवन का पञ्चीकरण कर लेना चाहिए। जो मानव अपने जीवन का पञ्चीकरण बना लेता है, मेरे प्यारे! देखो, उस मानव के जीवन का महान कल्याण और अपनी आभा को प्राप्त करने लगता है। तो विचार आता है मुनिवरों! पञ्चीकरण की प्रेरणा हमें कहाँ से प्राप्त होती है?

हस्त में पञ्चतत्व का स्वरूप

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! भगवान कृष्ण का जीवन। जब मुनिवरों! देखो, भगवान कृष्ण तपस्या करते थे, क्योंकि जहाँ वह राष्ट्र के विषय में जानते थे, जहाँ वह दर्शनों के मानो गम्भीर रहस्यों में गमन करते थे, वहीं मुनिवरों! देखो, वह विज्ञान की प्रतिभा को भी जानते थे। मुझे उनका जीवन स्मरण आता रहता है जब बेटा! देखो, वह तपस्या में प्रवेश करते थे, तो अपने जीवन को पञ्चीकरण बना लेते थे। पञ्चीकरण का अभिप्रायः यह है कि हमारे मानव के शरीर में मेरे प्यारे! देखो, हस्तों में मानो देखो, पञ्चीकरण, हमें मानो देखो, एक ही आभा कृत होती रहती थी। उसी का निर्णय करते रहते हैं। मानो देखो, **पृथ्वी**, **अग्नि**, **आकाश**, **जल** और अग्नब ब्रहे गति अस्तोः और **वायु**, यह अपने में गति करते रहते हैं। एक ही धुन में तीनों ही मानो देखो, कृति असुतों में रमण करते रहते हैं। विचार क्या मुनिवरों! देखो, अग्नि को और पृथ्वी तत्त्व दोनों का मिलान करना हो तो मुनिवरों! देखो, वह हस्त ब्रहे मुनिवरों! देखो, अंगुष्ठान और अंगुलस्त अग्नि

तत्त्व को मिलान करने से मानव के शरीर में जो पार्थिव तत्त्व हैं, जिसे हम चित्त का मण्डल भी कहते हैं, मानो देखो, जो अग्नि उसको तेजोमयी बनाती रहती है। उन दोनों के मिलान करने से मानव के शरीर में अग्नि और पार्थिव तत्त्वों का जब समन्वय होता है, तो बेटा! मन की स्थिति स्थिर होने लगता है। जब वह स्थिर होने लगती है, तो इस सम्बन्ध में उन्होंने एक समय बेटा! देखो, जब यह भयंकर वन में समुद्र के तट पर वह तपस्या करने चले गए, तो मुनिवरों! देखो, अपने में पञ्चीकरण को लाने का प्रयास किया, जिसे हमारे यहाँ एक मुद्रिका कहते हैं। मानो इस मुद्रिका का सिद्धान्त परम्परागतों से हमारे ऋषि मुनियों के सिद्धान्त में भी आता रहा है और विद्यालय में भी इस सिद्धान्त को प्रायः अध्ययन कराते रहते थे।

तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है। जब बेटा! देखो, यहाँ महाराजा अश्वपति के यहाँ मानो देखो, अध्यापन का कार्य कलाप होता रहा, तो ब्रह्मचारियों को मेरे पुत्रों! देखो, अध्ययन में मुद्रिका का वर्णन कराते। हमारे यहाँ विद्यालयों में जब तक मुद्रिका वाला आचार्य नहीं होता, तो ब्रह्मचारियों को हम ब्रह्मवर्चोसि नहीं बना सकते। क्योंकि वह सोहो रम्भा ब्रहा क्योंकि मुद्रिका का अभिप्रायः यह है। कि हमारा मन मेरे पुत्रों! देखो, सूर्य विज्ञान के ऊपर अध्ययन करना चाहता है। जब सूर्य विज्ञान के ऊपर अध्ययन करना चाहता है। तो मुनिवरों! उस अग्नि को चन्द्र ब्रहेः, और मानो देखो, वायु को, दोनों को मिलान करते हुए, मानो यह अंगलुष्ठ लेते हुए वह अंगुष्ठान से उनका मिलान करते हुए मेरे प्यारे! गोलाकार बनाते हुए मानो अपने मन को वहाँ स्थिर कर लेता है। जब वह स्थिर करता हुआ मुनिवरों! देखो, सूर्य विज्ञान, सूर्य में जो प्रतिभा है उसका समन्वय हमारे अन्तरात्मा, हमारे हृदय से होता है, तो वह जो हृदय है, हृदय में मुनिवरों! देखो, सूर्य की किरणों से जो द्यौ मण्डल में तत्त्व विद्यमान होते हैं, मुनिवरों! देखो, उनका साक्षात् होना स्वाभाविक बन जाता है। तो विचार क्या मेरे पुत्रों! देखो,

ब्रह्मचारीजन इसी प्रकार प्रायः अपना अध्ययन करते रहते थे।

महर्षि कृष्णा का महर्षि संदीपन से विमर्श

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! भगवान कृष्णा का वह बाल्यकाल, जिस काल में वह संदीपन ऋषि के यहाँ अध्ययन करते रहते थे और संदीपन ऋषि महाराज मेरे प्यारे! देखो, अध्ययन कराते रहते थे तो मुनिवरों! एक समय वे गुरु के चरणों में ओत प्रोत हो करके ये अध्ययन करने लगे कि महाराज! मैंने कुछ वेदमन्त्रों का अध्ययन किया है, मुद्रो भवा सम्भवा देवतम अग्नि वर्णा प्रव्हा प्रसुति चित्रं रथा मेरे प्यारे! भगवान कृष्णा ने बाल्यकाल में यह वाक् कहा कि महाराज! ये वेदमन्त्र कहता है हम इस वेदमन्त्र के आधार पर कुछ जानना चाहता हूँ क्योंकि आप ऋषिवर हैं, आप ने बहुत अध्ययन किया है उस अध्ययन के आधार पर मैं आपके चरणों में विद्यमान हूँ। तो मुनिवरों! देखो, ऋषि ने कहा, हे ब्रह्मचारी! यह तुम्हारा प्रश्न मानो बड़ा गम्भीर है, बड़ा अद्वितीय है। उन्होंने कहा, महाराज! इसका मुझे निर्णय कराइए। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपने अध्ययन के आधार पर उन्होंने कुछ अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने कहा हे कृष्णा! मानो देखो, यह जो तुम उच्चारण कर रहे थे सर्वो ब्रह्मेः अग्निं वरुणां चित्र अग्रते देवः मानो यह जो वेदमन्त्र की कुछ आख्यायिकां हैं। जिनका विचार मैं तुम्हें नित्यप्रति याग के समय इस वेदमन्त्र का परिचय देता रहता हूँ, और वेदमन्त्र यह कहता है कि हम जिस जिस मानव के मन की विकृतता शान्त नहीं होती, वह मानव ब्रह्मवर्चोसि नहीं बन सकता और तुम्हें ब्रह्मवर्चोसि बनना है और ब्रह्मवर्चोसि बन करके तुम्हें अपनी मुद्रिका को जानना है।

तो भगवान कृष्णा मुनिवरों! मानो देखो, वायु और पृथ्वी दोनों के मिलान को मुनिवरों! देखो, क्रियात्मक जानना चाहते थे। तो मुनिवरों! देखो, मानो देखो, संदीपन ऋषि महाराज ने ब्रह्मचारी को यह प्रश्न करते हुए मानो अपने हृदय में हर्षता का परिचय, वेदमन्त्र का परिचय देने लगे। उन्होंने कहा, हे ब्रह्मचारी! आओ, विराजो! मानो देखो, तुम साधना के क्षेत्र में जाना चाहते हो या विज्ञान के क्षेत्र में जाना चाहते हो? कृष्णा

जी ने कहा कि महाराज! मैं तो दोनों ही क्षेत्रों में जाना चाहता हूँ, मैं मानो यौगिक क्षेत्रों में भी प्रवेश करूंगा और विज्ञान के क्षेत्र में भी मेरा मानो अनुसन्धान चलना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, कि यदि तुम इस विज्ञान में जाना चाहते हो, भौतिकवाद में प्रवेश करना चाहते हो तो तुम अपनी मुद्रिका को जानो। मानो देखो, मुद्रिका क्या है? मुनिवरों! देखो, बाह्य जगत् और अपने आन्तरिक जगत् दोनों के ऊपर तुम्हें अध्ययन करना है। वह अध्ययन कैसे करना है? मानो देखो, एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके, तुम अपनी गम्भीर मुद्रा बना लो। परन्तु गम्भीर मुद्रा कैसे बनाओगे? जब तक बाह्य जगत् का समन्वय आन्तरिक जगत् से नहीं होगा, जब तक तुम गहरी मुद्रा में प्रवेश नहीं करोगे। मुझे स्मरण है बेटा! देखो, वेदमन्त्रों के ऊपर अध्ययन करने वाला ऋषि योगी होना चाहिए और योगी बेटा! प्राण को संग्रह करता हुआ, अग्नि को संग्रह करता हुआ, मुनिवरों! देखो, पार्थिव तत्त्व का चित्त के तत्त्व से उसका समन्वय होना चाहिए। जब वह चित्त के मण्डल से अपना समन्वय करता है तो मेरे प्यारे! अग्नि का और चित्त के मण्डल दोनों का समन्वय हो करके मानो दोनों प्रकार के विज्ञान में वह पारायण बनता है। दोनों प्रकार का विज्ञान क्या है? सबसे प्रथम है वह भौतिक विज्ञान, जिस भौतिक विज्ञान के ऊपर, मानव बेटा! अपना अनुसन्धान करता रहता है। मानो देखो, कहीं वह गम्भीर मुद्रा में चला जाता है, कहीं वह बाह्य जगत् में प्रवेश करता हुआ कही मानो वह सूर्य मण्डल की मानो किरणों में चला जाता है, मण्डलीय बन जाता है, कहीं पार्थिव तत्त्व के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ करने लगता है। तो मानो देखो, जो तुम्हारी जो अध्ययन करने की प्रवृत्ति है वह तुम्हारी विशाल उस काल में बनेगी जब तुम अपने हृदय अगम ज्योति में मानो देखो, अपनी अणिमा के द्वारा तुम मानो अपनी साधारण कृतियों में मुद्रा बनाओगे।

मुद्रा का स्वरूप

तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा, प्रभु! मैं मुद्रा को जानना चाहता हूँ, मुद्रा किसे कहते हैं? उन्होंने कहा, मुद्रा कहते हैं कि हमारे इस मानव के एक हस्त में मानो पांच अंगुष्ठान

कहलाते हैं। प्रत्येक अंगुष्ठानों में इनका प्रत्येक अंगुष्ठान का सम्बन्ध पांचो तत्त्वों से रहता है, मानो देखो, अंगुष्ठान सबसे प्रथम अंगुष्ठान का सम्बन्ध पृथ्वी से होता है। द्वितीय का अग्नि से होता है, तृतीय का अन्तरिक्ष से होता है, चतुर्थ का आपो से रहता है, और पञ्चम का वायु से रहता है। इसी प्रकार जो मानव अपने को विजय करना चाहता है तो पाचों जो अंगुष्ठान हैं, उनके ऊपर उनका अध्ययन होना चाहिए और क्रियात्मक होना चाहिए। क्रियात्मक कैसे बनता है? मुनिवरों! देखो, शान्त मुद्रा में विद्यमान है, एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके मानो देखो, अन्धकार से अपने जीवन को प्रकाश में लाना चाहता है अपने जीवन को प्रकाश में लाने के लिए वह मानो देखो, वह अंगुष्ठान और अग्नि तत्त्वों का मिलान करना चाहता है, क्योंकि पृथ्वी के तत्त्व में तो चित्त रहता है और अग्नि के गर्भ में मानो देखो,प्रकाश रहता है जिसका द्यौ से और प्राण से समन्वय होता हुआ मानो देखो, उनको एकाग्र करने के लिए, क्योंकि ये सब मन का मण्डल कहलाता है। और मन का मण्डल मानो प्राण की गति के द्वारा मुनिवरों! देखो, उसका समन्वय संग्रहित किया जाता है।

मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है मानो देखो, दोनों अपने गुरु शिष्या भवा सम्ब्रहे दोनों विचार विनिमय करते रहते थे। परन्तु देखो, वह रात्रि के अन्तिम काल में मुनिवरों! देखो, वह मुद्रिका बनाते थे। अपनी मुद्रिका बना करके, मन को उस मुद्रिका पर लगा देना, मेरे प्यारे! देखो, हृदय से उसका समन्वय हो जाता था। और मानव का जो हृदय है वह बेटा! देखो, संसार के ज्ञान और विज्ञान की एक कुञ्जी माना गया है। क्योंकि हृदय से ही मानव स्नेह करता है, हृदय से ही मानव पञ्चीकरण को जानता है, हृदय से ही मानव अन्तरिक्ष की उड़ान उड़ता है, हृदय से ही मानव नाना प्रकार के परमाणुवाद को जान करके मानो देखो, अपने यन्त्रों में यन्त्रित हो जाता है। परमाणु हृदय ही अगम्य ज्योति को जान करके, बेटा! देखो, ऋषि मुनि अन्तर्मुखी हो करके, वेद की पोथी को, वेद के मन्त्र के गम्भीर रहस्यों को जान करके बेटा! उसको बाह्य जगत् में प्रवेश करते

रहते हैं।

हृदय का परमात्मा के हृदय से मिलान

तो मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना न देता हुआ मेरे प्यारे! भगवान कृष्णा का जीवन जब मुझे स्मरण आता है तो भगवान कृष्णा मानो देखो, अन्धकार हो, प्रकाश हो, वह सदैव अपने जीवन को प्रकाश में लाना, ब्रह्मवर्चोसि बन करके ब्रह्मचर्य की आभा में, ब्रह्मवर्चोसि उसे कहते हैं। जो प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को जान करके और पांचों अंगुष्ठानों का समन्वय उनके विचारों से मानो देखो, उसको समन्वय कराता है और उसको ले जा करके साकल्य बना करके, हृदय रूपी यज्ञशाला में मेरे पुत्रों! देखो, अगम्य ज्योति बना करके ज्ञान रूपी अग्नि को प्रचण्ड करके इस बाह्य जगत् के साकल्य को ला करके उसमें बेटा! जो स्वाहा कर रहा है, आहुति दे रहा है, वह स्वाहा कह करके बेटा! देखो, हृदय को परमात्मा के हृदय से मिलान मिलाना चाहता है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, भगवान कृष्णा का जीवन मानो देखो, ऋषि के आश्रम में पनप रहा था, पनप रहा था आनन्दित हो करके पनप रहा था। मेरे प्यारे! देखो, भक्त सुदामा मानो देखो, उनके मित्र सुदामा थे। वह सुदामा के साथ भी मुनिवरों! देखो, उनका विचार विनिमय होता रहता था। वे सुदामा भी मानो देखो, क्योंकि वह भी दार्शनिक और तत्त्ववेत्ता के सम्बन्ध में मानो इस सम्बन्ध में विचार विनिमय करते रहते थे। परन्तु कृष्णा में यह विशेषता रही है कि जो ऋषि ने एक समय में विवेचना दी है, उस विवेचना को वह मानो देखो, स्मरण कर लेते थे और स्मरण करके उसी का अनुष्ठान करते हुए उसे बाह्य जगत् में प्रसारित करते थे और बाह्य जगत् से प्रसारित करके उसे समेट करके फिर वह आन्तरिक जगत् में ले जाते थे। आन्तरिक जगत् में ले जा करके वह उसको मुद्रित रूप में बनाते थे। तो मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्याएं, प्रत्येक मेरा प्यारे ऋषिवर मानो देखो, मुद्रित होना चाहता है, मुद्रित होना चाहिए। मुद्रित उसे कहते हैं जो बेटा! देखो, अग्नि तत्त्वों को जानना चाहता है, जल तत्त्वों को जानना चाहता है। मेरे पुत्रो! मैंने तुम्हें कई काल में प्रगट करते हुए भी कहा है। भगवान कृष्णा

ने भी मानो देखो, इस जल तत्त्व को जानते हुए मुद्रिका के गहरे समुद्र में चले गए। मानो देखो, गहरे समुद्र में जा करके उन्हें एक बिन्दु प्राप्त हुआ। मानो देखो, अगाध समुद्रों में जा करके, एक वेद का मन्त्र उन्हें स्मरण आया मानो अगाध समुद्र में जा करके और वह वेद का मन्त्र कहता था, सम्भविता अग्नि वो भवा अस्वानं ब्रह्मे वाचनमं प्रहे व्रता देवा मानो देखो, वह यह वेदमन्त्र और इस वेदमन्त्र में जो ज्ञान और विज्ञान मानो इसके गर्भ में विद्यमान था, उस गर्भ को उन्होंने जानने का प्रयास किया।

तो बेटा! वह गर्भ को कैसे जाना? मानो देखो, वेदमन्त्र कह रहा था, वेदमन्त्र की प्रतिभा यह कहती थी, एक बिन्दवा भवः सम्भवे देवाः क्योंकि परमपिता परमात्मा ने जब यह संसार की रचना की तो रचना के सम्दर्भ में मानो देखो, उन्होंने पञ्चीकरण से ऊर्ध्वा में जो पञ्चीकरण में वास कर रहा है, पञ्चीकरण का जो विभाजन ऐकीवाद का पञ्चीकरण में जो विभाजन कर रहा है, मानो उस चेतना का उन्होंने प्रदर्शन कराया। वह चेतना के ऊपर उन्होनें अनुसन्धान करते हुए मानो देखो, इस चेतना के सम्बन्ध में उन्होंने अपने विचार देते हुए कहा, सम्भवः प्रवे वृताः मेरे प्यारे! देखो, वृताः का जन्म हुआ। वह वृताः किसे कहते हैं? जब बेटा! देखो, परमपिता परमात्मा ने इस संसार का मन्थन किया। संसार का जब मन्थन किया तो मुनिवरों! देखो, एक बिन्दु की रचना, एक उन्हें कहीं प्राप्त हुआ। महतत्त्व को जब मथा गया तो उससे मन्थन करने से एक बिन्दु का जन्म हुआ। उस बिन्दु को चेतना मे, मानो देखो, गति प्राण प्रहे असुता वह प्राण की आभा से वही बिन्दु मुनिवरों! देखो, सबसे प्रथम अन्तरिक्ष को प्रदान किया। अन्तरिक्ष मानो देखो, अपने में उसे स्थिर नहीं कर सका। वही बिन्दु, वही प्रतिभा वही जन्म प्रवेः वायु में प्रवेश किया, वायु भी उसे न रख सका क्योंकि वायु एक गति है। परन्तु देखो, वही प्रेय बिन्दु मेरे प्यारे! अग्नि में प्रवेश किया, तो अग्नि भी उसे अपने में स्थिर नहीं कर सकी। मेरे प्यारे! वही बिन्दु वरणोसा उस बिन्दु को वरणास स्वाहा कहते थे। परन्तु वह बिन्दु मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा भान है क्या वह आपो में प्रवेश कर दिया, जब आपों में प्रवेश कर दिया वहीं देवता का पूजन होने लगा। वहीं देव प्रवृत्ति की आभा का जन्म हो गया। मेरे प्यारे! वही बिन्दु मानो प्रवेश करके आपो में, वही मुनिवरों! तेजोमयी गति

बन गयी। वहीं तेजोमयी गति बन करके देखो, माता और पिता के हृदय में मानो देखो, जल बिन्दु उसी रसों का स्वादन होने लगा। उसी बिन्दु की रक्षा करने के लिए मेरे प्यारे! देखो, वनस्पतियों का रस भी आने लगा। उसी आपों में वनस्पतियों का रस आया, रस आने के पश्चात् मानो देखो, बिन्दु के आँगन में बेटा! देखो, वह सब परमाणु जो वनस्पतियों का रस था, परमाणु बन करके, रस के रूप में उस बिन्दु के आँगन में प्रवेश कर गया। जैसे एक बुद्धिमान है, एक ब्रह्मवेत्ता है, ब्रह्म की चर्चा कर रहा है। मानो नाना प्राणी आ करके, उसके अंग संग विद्यमान हो जाते हैं और वह कहते हैं, महाराज! हमारी यह शंका है, उसका निवारण कीजिए। वह कहते हैं, कि ब्रह्म की शंका है। यह ब्रह्म एक गति है, कोई कहता है कि ब्रह्म एक कल्पत्र अस्तु कहलाता है।

ऋत सत स्वरूप

परन्तु देखो, वह बुद्धिमान नाना प्रकार का परिचय दे करके यही कहता है क्या इसका मानो समाधान यह है जैसे मुझे स्मरण है मुनिवरों! देखो, पिप्पलाद ऋषि के यहाँ एक समय देखो, गार्गेपथ्य जा पहुंचे और गार्गेपथ्य ने यह कहा कि हे भगवन! मैं यह जानना चाहता हूँ कि ऋतश्चा ब्रह्मे प्राहा वृते क्या भगवन! मैं इस वेदमन्त्र को जानना चाहता हूँ क्या मैं ऋत और सत् को जानना चाहता हूँ क्या इसी देखो, ऋषि से, ब्रह्मवेत्ता से जब यह प्रश्न किया गया कि ऋत, सत क्या है? तो मानो देखो, आचार्य, ब्रह्मवेत्ता उसका निवारण कर रहा है, निवारण करता हुआ कहता है कि ऋत् नाम प्रकृति का है और सत् नाम ब्रह्म का है। दोनों का समन्वय हो करके संसार की रचना हो जाती है। तो मानो देखो, ऋषिवर यह प्रश्न करता है परन्तु ब्रह्मवेत्ता निवारण कर रहा है। इसी प्रकार वह जो असु है वह जो मानो आपो में समाया गया था, उसके अंग संग नाना प्रकार की वनस्पतियों का रस पहुंच जाता है। और नाना वनस्पतियों का रस जब उसके अंग संग आ जाता है तो वह अंग संग वनस्पतियों के रसों का उद्गम करने लगता है। उनके

गुणों को उद्धृत करने लगता है।

प्रभु तुल्य माता

मेरे प्यारे! देखो, जैसे माता है, अपने पुत्रों को, प्रातःकालीन अपने बाल्यों को पुत्र पुत्रियों को अपने समीप विद्यमान करके अपनी लोरियों का पान कराती रहती है और लोरियों का पान कराती कहती है, हे बालक! हे बालिका! तू मानो देखो, मेरे गर्भ से तुमने जन्म लिया है, तू महान् है, तू चेतना है, तुम मानो अकाय नहीं हो, अकाय तो केवल समन्वय होने से बना है। अकायं ब्रह्मे मानो अकाय तो मानो देखो, समन्वय का कृत कहलाता है। परन्तु ये चेतनामयी, आभामयी, रुद्रोमयी भागं ब्रह्म लोकां माता जब बालक को यह उपदेश देती है तो बालक बालिका प्रसन्न हो रहे हैं। कहते है हे पूज्य माता! तू तो माता है। माता के शब्द का जो जन्म है मेरे पुत्रों! वह प्रभु! से उत्पन्न हुआ है। क्योंकि हमारे यहाँ प्रभु को माता कहते हैं। प्रभु ने अपने दायित्व को, माता के स्वरूप को पृथ्वी को प्रदान कर दिया तो पृथ्वी माता कहते हैं मानो देखो, जब पृथ्वी माता ने अपने स्वरूप को आपो को प्रदान करके बेटा! देखो, जो जननी माता है उसे अपना दायित्व दिया पृथ्वी ने, तो मानो देखो, उस ममता का जन्म हो गया पुत्रों! मेरे प्यारे! देखो, वह ममत्वानं ब्रह्मे सम्भवा देवाः मेरे पुत्रों! देखो, माता का जन्म हो गया और वह माता बन गई है वह जननी माता है। जिसके गर्भ में बेटा! वह शिशु बिन्दु मानो जो प्रभु! ने बेटा! जिस बिन्दु को मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष को दिया, अन्तरिक्ष ने कहा मैं इसे स्थिर नही कर सकता, वायु को दिया, वायु ने अग्नि को प्रदान कर दिया, अग्नि ने मुनिवरों! देखो, आपो में प्रवेश कर दिया, वही आपो है मेरे प्यारे! और यह मानो रजतव, वीर्यतव, ये वनस्पतियों का रस बिन्दु के अंग संग प्रवेश कर गया। मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में यह बिन्दु है। परन्तु देखो, वह बिन्दु पनप रहा है। वनस्पतियों के रस, उसके अंग संग आ करके मेरे प्यारे! नाना धातुओं के रस, मुनिवरों! देखो, जितने रस हैं संसार के मुनिवरों! चाहे वह धातु के रूप में हैं, चाहे वह अन्नाद के रूप में हैं, चाहे वह खनिज के रूप में विद्यमान है मुनिवरों! देखो, चाहे वह तारामण्डल की

जो नाना प्रकार की भीनी भीनी किरणें आ रही हैं, धीमा धीमा प्रकाश आ रहा है, सूर्य का प्रकाश आ रहा है, चन्द्रमा से रस आ रहा है, मेरे प्यारे! देखो, वह सर्व रसों का, मुनिवरों! देखो, सर्व ब्रह्माण्ड की सर्वत्र आभाएं मेरे प्यारे! उस शिशु बिन्दु के समीप आनी प्रारम्भ हो जाती हैं। माता के गर्भस्थल में बेटा! वह जो प्रभु ने पृथ्वी माता कहा मानो देखो, अपना दायित्व दिया, और पृथ्वी माता ने जननी माता को देखो, अपना दायित्व दिया तो बेटा! देखो, उसमें हम जैसे पुत्रों! का निर्माण हो गया। वह निर्माण होने लगा मानो देखो, उसी नाना प्रकार की वनस्पतियों के रसों से, उस आभा का जन्म हो गया पुत्रों! मानो देखो, जब वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ करते हैं, तो गम्भीर मुद्रा में प्रवेश करने से बेटा! यह सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान मानव के समीप आने लगता हैं मुनिवरों! देखो, जितना भी संसार का ज्ञान और विज्ञान है, चाहे वह तारा मण्डलों में जाने का हो, मानो यातायात का हो, चाहे परमाणुओं को गठन करने का हो, परन्तु देखो, वहीं बिन्दु मानव के शरीर में मानव के रूप में प्रवेश हो करके, नाना प्राणियों के रूप में प्रवेश हो करके नाना प्राणी एक दूसरे से बेटा! कटिबद्ध हो रहे है। एक दूसरे में एक दूसरे की प्रतिभा पिरोई हुई है।

मस्तिष्क में ब्रह्माण्ड

मेरे पुत्रो! वह जो प्रतिभा है वह एक महान् ज्योतिमयी कहलाती है। आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में, तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, मैंने तुम्हें कई काल में यह कहा है, कि मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। केवल परिचय देने के लिए आता हूँ और वह परिचय क्या है? वह प्रभु ने बेटा! उस बिन्दु की रचना की। तो मानो भगवान कृष्ण ने संदीपन ऋषि से कहा, हे प्रभु! मैंने यह वेदमन्त्रों में अपनी ध्यानावस्था में, मुद्रा में प्रवेश कर गया। हृदय अगम्य ज्योति में प्रवेश करता हुआ मैंने परमात्मा के हृदय अगम्य ज्योति से जब मिलान किया तो प्रभु! मुझे कुछ ऐसा भान हुआ है कि मानव का जो लघु मस्तिष्क है, इस लघु मस्तिष्क में मानो देखो, इस प्रकृति का सर्वत्र मानो कुञ्जी सर्वत्र ब्रह्माण्ड इसमें ओत प्रोत हो रहा है जैसे परमात्मा का जगत, यह ब्रह्माण्ड के रूप में

है मानो नाना प्रकार की आभाओं के रूप में गतियाँ कर रहा है, तो इसी प्रकार यह जो शिशु रूपं ब्रह्मे कृतां देवाः यह जो मानो प्रभु ने अपना दायित्व जो एक दूसरे को प्रदान किया है पृथ्वी ने कही गऊ माता के रूप में, ममता का उद्गृत दिया है, कहीं मानो देखो, नाना प्रकार के रूपों में परणित करने से निर्माता को माता का दायित्व दिया है।

बेटा! यह बड़ा विचित्र है, इसके ऊपर अध्ययन करने से यह प्रतीत होता है कि परमात्मा के जगत् को जानने से, परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को जानने से, मेरे पुत्रों! देखो, यह प्रतीत होता है कि यह जो ब्रह्माण्ड है, ये गति कर रहा है, गतिशील है मानो देखो, वह जो गति है, वह चेतना है, वह मानो ममता के रूप में विद्यमान हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह आभामयी वाक् जब दोनों का, गुरु शिष्य परम्परा के आधार पर, विचार विनिमय होता रहता था, तो मुनिवरों! एक समय भगवान कृष्णा ने यह कहा कि महाराज! मैं चित्त के मण्डल के ऊपर अपना अध्ययन करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने देखो, अग्नि और पृथ्वी की दोनों की मुद्रिका बनाई। मुद्रिका बना करके भगवान कृष्णा बेटा! अन्तर्मुख बन गए। अन्तर्मुख बन करके ये मुनिवरों! देखो, भगवान कृष्णा से मानो देखो, बीस वर्ष का काल जब समाप्त हुआ था, उस काल में यह मुद्रिका उन्होंने बनाई। और यह मुद्रिका बना करके मुनिवरों! देखो, बीस वर्ष के ब्रह्मचारी ने मानो यह मुद्रिका बना करके अन्तर्मुखी हो जाना, बाह्य जगत् में आना, मानो देखो, शिशु विज्ञान को जानना और बाह्य जगत्, आन्तरिक जगत् दोनों का समन्वय करते हुए आचार्य के चरणों में सदैव मानो देखो, वेदमन्त्रों के ऊपर अध्ययन होता रहता था।

तो मुनिवरों! देखो, संदीपन ऋषि महाराज ने एक समय ब्रह्मचारी से एक वेदमन्त्र का अनुष्ठान कराया। उन्होंने कहा इसको लगभग बारह दिवस तक तुम इसका अनुष्ठान करो। मेरे प्यारे! अनुष्ठान का अभिप्रायः यह है क्या उस वेदमन्त्र को लेकर के अध्ययन करना। उसके एक एक शब्द के ऊपर मानो उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर अध्ययन करना और अध्ययन करके उसके स्वरूप का वर्णन करना यह मानो देखो, जब उन्होंने वर्णाः प्रहे जब उन्होंने आज्ञा दी तो एक वेदमन्त्र के ऊपर बारह दिवस तक अध्ययन

करने लगे। जब अध्ययन करने लगे तो वेदमन्त्र क्या था? वेदमन्त्र था विष्णु चक्रां भवाः सम्भवेति देवं ब्रहाः शम्भु अप्रणां भूता ब्रहा वेद का वाक् यह कह रहा था कि तुम इसके ऊपर अध्ययन करो। मेरे प्यारे! देखो, भगवान कृष्णा ने बारह दिवस तक एकान्त मुद्रिका बना करके मुनिवरों! देखो, अन्तर्मुखी बन गए। अन्तर्मुखी बन करके वह देखो, वह ऋषि संदीपन उन्हें मुनिवरों! देखो, कुछ औषधियों का पंचांग बना करके, दूधेडिका, कुलवांचनी, सम्भूनिका, सर्पकेतु, कुछ औषधियों का बेटा! वह तपा करके मानो रस बना करके मानो रस बना करके भगवान कृष्णा को मानो देखो, प्रातःकाल प्रदान कराते थे। वह बारह वर्षो तक तक अनुसन्धान किया तो उसमें मुनिवरों! देखो, जितने भी ये नाना प्राणी हैं जैसे सर्प है, सुदुकेतु है, जैसे सिंह है, जैसे मृग है और गो अस्वानी है। यह कुछ पशु होते हैं जो वनचर हैं, उनकी भाषा को, उनका क्रिया कलाप उनका आमोद प्रमोद सर्वत्र इस वेदमन्त्र में वह विज्ञान विराजमान था। तो मुनिवरों! देखो, उसके विज्ञान को भगवान कृष्णा ने अध्ययन किया। तो हमारे यहाँ, परम्परागतों से बेटा! गुरु शिष्य की जो परम्परा है वह बड़ी विचित्र रही है। मानो देखो, गुरु और शिष्य दोनों एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके, अध्ययन करना, उनके अध्यापन का कार्य मानो देखो, रूचिकर होता हुआ, जिस प्रकार का वह विज्ञान बनाना चाहते, अपने जीवन में उसी प्रकार की विद्या, उसी प्रकार की अनुभूतियाँ चक्र वह उनको प्रदान करते रहते थे। तो मेरे प्यारे! मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें यह निर्णय देते हुए कहा कि उनका काल बड़ा विचित्र रहा। मुनिवरों! देखो, वह इन्हीं वेदमन्त्रों के ऊपर अपने स्थूल शरीर को सूक्ष्म, आकुञ्चन बनाना, जैसा मुनिवरों! देखो, प्रकृति का स्वभाव है। इसी स्वभाव के आधार पर मानो विराट रूप की भी प्रतिक्रिया उसी में विद्यमान रहती थी।

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना न देता हुआ, विचार यह दे रहा हूँ हमारे ऋषि मुनि परम्परागतों से बेटा! इन मानो देखो, मुद्रिकाओं के ऊपर प्रायः अनुसन्धान करते रहते थे और वह जो मुद्रिका है, उस मुद्रिका विज्ञान को जानते हुए ऋषि मुनि बेटा! अपने में पारायण होते हुए, इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करते थे। तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार यह क्या कह रहा है? हम प्रत्येक

वेदमन्त्र के ऊपर अपना अनुसन्धान करना चाहते हैं। प्रत्येक वेदमन्त्र में, उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा को दृष्टिपात करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! उसका ज्ञान, उसका विज्ञान, मुनिवरों! देखो, परमाणुवाद लोक लोकान्तरवाद मानो उसके ऊपर अनुसन्धान करना चाहता हैं। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में यह निर्णय देते हुए कहा था कि यह जो मंगलं ब्रहे अस्तोः बिन्दं आपो है इस आपो में ही प्राणं ब्रहे अस्तोः, यह प्राण शक्ति उसमें समाहित रहती है। उसी से बेटा! मानो देखो, औषधियों के रसों का स्वादन होता रहता हैं। यदि हमारे इस मानव शरीर की रचना में लोक लोकान्तरों के परमाणु तरंगवाद नहीं है तो लोकों को नहीं जान पायेंगे। जान उसी रूप में सकते हैं जब हमारे अन्तर्हृदय में वह प्रतिभा विद्यमान रहती है।

आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार क्या? मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बनना चाहता है। प्रत्येक मानव को आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बन करके प्रत्येक मानव को आध्यात्मिक याग करना चाहिए। बेटा! यागां ब्रह्मेः लोकाम् मानो देखो, याज्ञिक बन करके, याज्ञिक कौन है? जो बाह्य जगत् को जानता है। एक यज्ञमान बेटा! आहुति दे रहा है, यज्ञशाला में आहुति दे रहा है। वह आहुति अग्नि वायुमण्डल में प्रवेश करा देती हैं वह सूक्ष्म बन करके मानो देखो, उसकी विभक्त शक्ति प्रबल बनती हुई मुनिवरों! देखो, बाह्य जगत् को आन्तरिक जगत् के क्षेत्रों में लाना ही मुनिवरों! देखो, यह विशेषता मानी जाती है। मेरे पुत्रों! आज का हमारा यह वाक् क्या कह रहा है आज हम गुरु शिष्य के सम्वाद में परणित हो गए। मानो देखो, उस बिन्दु के ऊपर जिस बिन्दु की रचना माता के स्वरूप में मानो वही बिन्दु बन जाता है, वही पिता के रूप में बन जाता है, वही पुत्र के रूप में बन जाता है। मानो देखो, एक संकल्प शक्ति के द्वारा, प्रभु का यह जगत् है, यह संकल्प शक्ति ही कहलाती है, बेटा! जिससे मानव वे शिशु बेटा! भिन्न भिन्न रूपों में दृष्टिपात आ रहा है। उसको बेटा! एकोकी दृष्टि में, एकोकी आकुञ्चन शक्ति में लाना है, एक ही रूप में लाने के लिए बेटा! हमें प्रभु की

याचना करनी है। हम प्रभु की याचना करते हुए अपनी अन्तरात्मा को जानने के लिए तत्पर हो जाएं।

बेटा! देखो, आज मैं मुद्रिका के सम्बन्ध में हमारे यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार की मुद्रिकाओं के ऊपर चिकित्सा भी होती रहती थी, उस चिकित्सा के सम्बन्ध में मैं कल तुम्हें विशेष चर्चाएँ प्रगट करूंगा। क्या हमारे यहाँ मुद्रिका में चिकित्सा कैसे है। वे चर्चाएं हम कल प्रगट करेंगे क्या प्रत्येक मानव रूग्ण रहता है मानो देखो, वायु को हम कैसे दमन कर सकते हैं? अग्नि को हम कैसे दमन कर सकते हैं? ये कल बेटा! देखो, भगवान कृष्ण और संदीपन ऋषि के संवाद में वार्त्ताएं उनका जो विचार है वे कल हम प्रगट करेंगे। आज का वाक् अब हमारा समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। स्थान : लाक्षागृह, बरनावा।

३ 15 03 1983 पुष्प 43 भगवान कृष्ण का ऋषि संदीपन के आश्रम में

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का, गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना देव की महिमा का वर्णन किया जाता हैं हमारे यहाँ वेदों के पठन पाठन का, जो क्रिया कलाप होता रहता है मानो उसमें नाना प्रकार के व्यंजन हैं, नाना प्रकार की धाराएं हैं। हमारे यहाँ, जब वेदों का पठन पाठन किया जाता है तो बेटा! उसके नाना प्रकार माने गए हैं, जैसे हमारे यहाँ जटापाठ, घनपाठ, मालापाठ, विसर्गपाठ, उदात्त और अनुदात्त। मानो नाना प्रकार के पठन पाठन करने के, नाना भेदन माने गए है। मानो उसमें भेदन करने वालों में अपनी अपनी वृत्तियों को ले जाते हुए मानो उन्होंने बेटा! प्रत्येक स्वरों में कोई न कोई ऐसी प्रतिभा, ऐसा कोई समन्वय इन्द्रियों का रहता है जैसे बेटा! मानो

अपने नौ द्वारों को योगेश्वर शान्त करता हुआ और एक मस्तिष्क में लघु अव्रणाः होता है, मानो एक ध्वनि होती है, जिसको हमारे यहाँ अनहाद कहते हैं, मानो उसमें भिन्न भिन्न प्रकार का ध्वनि चक्र चलता रहता है। तो मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें ध्वनि चक्रों के ऊपर विशष विवेचना देने नहीं आया हूँ। केवल विचार विनिमय यह कि हमारे वैदिक साहित्य में, भिन्न भिन्न प्रकार की चर्चाएँ, भिन्न भिन्न प्रकार की धाराएं, भिन्न भिन्न प्रकार का शब्दों का रूपांतर परम्परागतों से होता रहा है।

गुरु शिष्य की कामना

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है, हमारे यहाँ गुरु और शिष्य दोनों की परम्परा और उन दोनों का जो समन्वय है, वह बड़ा विचित्र रहा है क्योंकि जिस समय आचार्य ब्रह्मचारी को शिक्षा देता है, तो उसके हृदय में ये वेदना होती है कि मेरा यह ब्रह्मचारी महान् और पवित्र बने, और परन्तु ब्रह्मचारी यह चाहता है कि मैं आचार्य के चरणों में विद्यमान हो करके, अपने जीवन की जितनी गुत्थियाँ हैं, अपने जीवन की जितनी ग्रन्थियाँ हैं, मानो उनका सर्वत्र स्पष्टीकरण हो जाए। मेरे प्यारे! गुरु शिष्य का दोनों का बडा विशिष्ट बहुत विचित्र परम्परागतों से समन्वय रहा है। जैसे माता और पुत्र का विशेष समन्वय रहता है, जैसे माता जन्म दे देती है, तो आचार्य उसे जीवन प्रदान करता चला जाता है। तो मेरे प्यारे! मैं विशेषता में न जाता हुआ, आज मैं तुम्हें वहीं ले जाना चाहता हूँ बेटा! जहाँ भगवान कृष्ण और मुनिवरों! देखो, महात्मा संदीपन ऋषि महाराज की चर्चा होती रहती है। मानो उन्होंने बेटा! स्वर विज्ञान के ऊपर, मुनिवरों! देखो, ऋषि ने स्वर विज्ञान के ऊपर अपनी कुछ टिप्पणियाँ देने लगे। तो महात्मा संदीपन ऋषि ने, महामना ने यह कहा, हे कृष्ण! आओ, मानो देखो, जैसे तुम मेरे आँगन में विराजमान हो करके अपनी प्रत्येक ध्वनि को स्वीकार करो। मेरे प्यारे! उन्होंने अपने चरणों में विद्यमान हो करके, नाना प्रकार की मुद्रिका के सम्बन्ध में, उन्होंने अपना विचार दिया, मुनिवरों! देखो, हस्त कि मानो जो देखो, उंगलियाँ में ब्रहे मेरे प्यारे! इसमें कुछ ध्वनियाँ होती रहती हैं उनकी यह जो कृतियाँ हैं, उनकी जो वासनी है मानो देखो, मुनिवरों! देखो, उनके ऊपर उनका

विचार, उनकी भाषाएं, भाषाओं का मानो उद्गम होता रहता है। एक मानव देखो, अपने ही एक अंगुष्ठान से सर्वत्र अपनी भाषा का प्रतिपादन कर देता है, उसमें मानो देखो, अक्षरों की प्रतिभा है, उसमें व्यंजन हैं, उसी में प्रति अग्रह कहलाया जाता है।

ब्रह्म का जगत

तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है, बहुत पुरातन काल की वार्त्ताएं हैं पुत्रो! भगवान कृष्ण उनके चरणों में विद्यमान हो करके मानो देखो, उन मुद्राओं के सम्बन्ध में जानते थे कहीं मुनिवरों! उन्होंने अग्नि तत्त्व को प्रधान माना है, किसी ने आकाश तत्त्व को प्रधान माना है, अन्तरिक्ष और किसी में मुनिवरों! देखो, जल और वायु का समन्वय किया है और पार्थिवता से इसका समन्वय करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, उसमें नाना प्रकार के स्वरों की आभा का जन्म होता हैं मिलान करने से शब्दों की धाराओं का जन्म होने लगता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, इस विचार को देते हुए भगवान कृष्ण ने नाना आचार्य से नाना प्रकार के प्रश्न किया करते थे। उन्होंने कहा, प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह जो बाह्य जगत् है मानो ब्रह्माण्ड एक स्वरूप बना हुआ है, यह ब्रह्म का अनुपम जगत् है, इसको ब्रह्माण्ड कहते हैं। परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह जो ब्रह्माण्ड गति कर रहा है यह स्वरों से कर रहा है या व्यंजनों से कर रहा है?

पांच प्रकार की गतियां

तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय महात्मा संदीपन ने कहा कि जो भी गतियाँ हो रही हैं वह नाना प्रकार के व्यंजनों में हैं, स्वरों में हैं और देखो, अपनी अपनी आभा में आभायित होने वाली प्रतिक्रिया चल रही है। क्या तुम्हें यह प्रतीत है मैंने कई काल में तुम्हें ये प्रगट करते हुए कहा था कि यह जो ब्रह्माण्ड है इसमें मानो पांच प्रकार की प्रतिक्रिया होती रहती है। इस ब्रह्माण्ड में पांच प्रकार की प्रतिक्रियाएं सबसे प्रथम मानो देखो, प्रसारण है उसके पश्चात् मानो देखो, इसी में गति है गति के पश्चात् इसी में ध्रुवा है, ध्रुवा के पश्चात् इसी में ऊर्ध्वा है, और इसी में आकुञ्चन शक्ति विद्यमान रहती है। जितना संसार का, सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल का जितना भी विज्ञान

है। वह सर्वत्र विज्ञान इन पांचों प्रकृति की गतियों से दृष्टिपात हो रहा है। मानो जितना भी विज्ञान आज हमें दृष्टिपात आ रहा है, जितना भी भौतिक विज्ञान है यह मानो देखो, प्रसारण में हैं, वही ध्रुवा में है, यही गति में है, और मुनिवरों! देखो, यही ऊर्ध्वा में होता हुआ, आकुञ्चन में सिमट जाता है। मानो देखो, इस प्रकार का ये देखो, विज्ञान काण्ड है विज्ञान की जो प्रतिभा है वह पांचों प्रकार की आभाओं में गति कर रहा है परन्तु देखो, इसका विचार अब्रूण कहलाया जाता है। मेरे प्यारे! भगवान कृष्ण के हृदय में एक संकल्प जागा कि प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या इन पांचों गतियों का इस अन्तरात्मा से क्या समन्वय होता रहता है और इस ब्रह्माण्ड का तो मैंने जान लिया है कि इस ब्रह्माण्ड से कृत्तियाँ है परन्तु आत्मा से क्या सम्बन्ध है इसका?

आत्मा का रथ

तो महात्मा संदीपन ऋषि ने कहा, ब्रह्मचारियों के मध्य में प्रातः कालीन था, तो मुनिवरों! उन्होंने कहा हे कृष्ण! यह जो अग्रताः सम्भवाः देवं ब्रह्मा मानो देखो, यह जो मैंने तुम्हें जो पांचों प्रकार की, ब्रह्माण्ड की आभा का वर्णन किया है। इसी ब्रह्माण्ड का समन्वय इस मानव के शरीर से होता है क्योंकि यह आत्मा का शरीर है। आत्मा का रथ है मानो देखो, रथ से इसका समन्वय रहता है। मानव के नेत्र हैं मेरे प्यारे! इसमें प्रसारण शक्ति रहती है, इसी में आकुञ्चन शक्ति है, इसीमें मानो देखो, गति है मुनिवरों! देखो, गति से अप्रतम ब्रह्मेः गच्छतो देवाः मेरे प्यारे! नेत्र संसार का चित्र ले लेते हैं। जिस वस्तु को दृष्टिपात किया जा रहा है। नेत्र केवल दृष्टिपात करते ही मुनिवरों! देखो, मन रूपी श्वञ्जनं विद्यमान है। वह उसकी आकर्षण शक्ति मानो देखो, उसकी आभा को अपने में धारण कर लेता है। मेरे प्यारे! देखो, उसी में प्रसारण, उसी में क्रिया, उसी में मुनिवरों! देखो, सर्वत्र ध्रुवा, ऊर्ध्वा, आकुञ्चन, प्रतिभा इसमें ओत प्रोत हो जाती हैं। इसी प्रकार ये जो ब्रह्माण्ड है, जो मानो देखो, विज्ञानशाला के रूप में यह ब्रह्माण्ड कहलाता है। मुनिवरों! देखो, इसमें एक आकुञ्चन शक्ति है, एक प्रसारण है, वैज्ञानिकजन प्रसारण को जान लेते हैं। तो मुनिवरों! वह गति में चले जाते हैं। गति में प्रवेश करते हैं तो

ध्रुवा में चले जाते हैं। ध्रुवा को जानते हैं तो ऊर्ध्वा में चले जाते हैं। ऊर्ध्वा में से मेरे प्यारे! सर्वत्र को आकुञ्चन बना करके यन्त्रों का निर्माण कर लेते हैं। मेरे प्यारे! योगीजन जब साधना के क्षेत्र में जाता है, तो बेटा! देखो, इन्द्रियों में जो प्रसारण है, मुनिवरों! देखो, जो भी कुछ क्रिया कलाप हो रहा है, उस सर्वत्र को बेटा! योगीजन दृष्टिपात करते रहे हैं। यह तारामण्डलों की माला है, माला बनी हुई है। मेरे प्यारे! ये शब्दों की माला है वे शब्द भी मुनिवरों! आकार के सहित चलते रहते हैं। उन पर अच्छी प्रकार दृष्टिपात करता है, मानो इसी प्रकार प्रीति है, प्रेम है, स्नेह है, मानवीयता है। मेरे प्यारे! देखो, उसमें चला जाता है। पांचों इन्द्रियों का जो स्वाहा है, मेरे प्यारे! देखो, इसको जान करके ये संसार में इसके स्वरूप को बाह्य जगत् में जान करके समेट लेते हैं, आकुञ्चन कर लेते हैं। आकुञ्चन करके मेरे प्यारे! देखो, वह अपने अन्तर्हृदय में ब्रह्माण्ड की कल्पना करते हैं। अपने अन्तर्हृदय में ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करते रहते हैं।

प्रकृति की आभा

बेटा! मुझे एक वाक् स्मरण आ गया है। ये संदीपन और भगवान कृष्ण का संवाद तो चलता ही रहा है परन्तु मुझे एक वार्त्ता सतोयुग के काल की स्मरण आ गई है पुत्रों! हमारे यहाँ एक हरितत नामक एक गोत्र हुआ है, जिस गोत्र का सम्बन्ध दद्दड़ गोत्र से रहा है। तो हरितत जो गोत्र था मुनिवरों! उसका ऊर्ध्वा से सम्बन्ध, परम्परा से बेटा! वायु गोत्र से रहा है तो मुनिवरों! देखो, वह हरितत गोत्र में बेटा! एक ऋषि हुए हैं, जिन ऋषि का नाम मेरे प्यारे! सुकन्वाकेतुक ऋषि महाराज था। सुकन्वाकेतुक ऋषि महाराज एक समय अपने आसन पर विद्यमान थे। वह आचार्यों से, मानो देखो, अपने गुरुओं से, ऋषि मुनियों से ये चर्चा श्रवण करते रहे कि मैं आकुञ्चन करना चाहता हूँ और मैं आकुञ्चन कैसे करूं? अपने हृदयस्थली में विद्यमान हो करके इस संसार को हृदयमयी दृष्टिपात करने लगे। तो मेरे प्यारे! देखो, वह जो ऋषि थे वे हरितत गोत्र ऋषि महाराज बेटा! वह मानो देखो, साधना के क्षेत्र में प्रवेश कर गए। उन्होंने जब वैज्ञानिक तथ्यों से ये जान लिया कि यह पांचों गति ही प्रकृति की आभा कहलाती हैं।

परन्तु देखो, मुझे क्रियात्मक अपने जीवन को बनाना है, क्रियात्मक क्षेत्र में मुझे अपने को ले जाना है। तो मानो देखो, उन्होंने ये विचारा कि कौन कौन सी औषधियाँ ऐसी हैं जिन औषधियाँ में प्रसारण भी हो, कुछ औषधियों में आकुञ्चन हो, कुछ औषधियों में गति हो। पुनरूक्ति मानो इस प्रकार का मानो देखो, उन्होंने अपने में पांचो गतियों को जानने के लिए और आत्मा से, सम्बन्धित इस वाक् को जानने लगे। आत्मा से, इनका क्या समन्वय रहता है?

तो मेरे प्यारे! देखो, जब वह इस वाक् को ले करके वह अपनी ऊँची उड़ान उड़ने लगे तो मुनिवरों! देखो, वृक्षों के क्षेत्र में पहुंचे, वह वनस्पति क्षेत्र में पहुंचे। मेरे प्यारे! वनस्पति क्षेत्र में जा करके, उन्होनें रसना के अग्रभाग को, बारह वर्ष तक, छिद्रों को जानने के लिए, उन्होनें बेटा! उसकी जानकारी के लिए अनुसन्धान किया और बारह वर्ष का एक ही अनुष्ठान किया उन्होंने। उस अनुष्ठान से यह हुआ यह हुआ जितने रसना के अग्रभाग मेरे प्यारे! रसना के अग्रभाग को के छिद्र हैं जिसमें पांचों रस समाहित रहते हैं वही रस मुनिवरों! देखो, इन वनस्पतियों में ओत प्रोत रहते हैं और उन वनस्पतियों को जानने के लिए मेरे पुत्रों! उन्होंने अनुष्ठान किया। बारह वर्ष के अनुष्ठान करते हुए रसना पर विजय प्राप्त कर ली, रसना के रसों को विजय कर लेता है, विजय कैसे करता है? बेटा! उसमें शीतली प्राणायाम किया जाता है, शीतली जो प्राणायाम् है उसे करने से और उसमें मुनिवरों! देखो, अग्नि अग्नवाकेतु मुनिवरों! देखो, मुद्रा में मुद्रित किया जता है। मानो देखो, उन्होंने वह प्राणायाम किया। जल को उन्होंने मुनिवरों! अन्तरिक्ष से शीतली प्राणायाम से उन्होंने अपने में धारण किया, परन्तु देखो, छह माह तक यह अध्ययन किया। छह माह तक उन्होंने अग्नेश्वरी प्राणायाम किया। अग्नेश्वरी प्राणायाम वह होता है। मेरे प्यारे! देखो, कुम्भक को प्राची कृताक करते हुए, विश्वा अनुगात्त करते हुए मेरे प्यारे! देखो, उसमें उसको ले करके वह अग्निवर्णा कहलाया गया, जिसमे शरीर में अग्नि प्रचण्ड हो जाए। अग्नि प्रचण्ड होना एक प्राणायाम है। उन्होंने बेटा! वह एक चन्द्रकेतु सोम प्राणायाम किया। मेरे प्यारे! देखो, उसको लेने से, प्राणायाम को करने से उनकी रसना पर मेरे पुत्रों! देखो, विजेता को प्राप्त हो गये। रसना के अग्रभाग के

छिद्रों को जाना। छिद्रों को जान करके अग्नि का अनुष्ठान किया। जल अनुष्ठान किया मेरे प्यारे! देखो, वह इस प्रकार के अनुष्ठान किए तो मुनिवरों! वह बारह वर्षों का तप करने के पश्चात् मुनिवरों! देखो, अपने में विजेता को प्राप्त हो गए। कामां ब्रह्मवे सम्भवः जो मानव रसना के रसों का स्वादन करता हुआ मेरे प्यारे! इस पर विजय कर लेता है, वह ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर लेता है और ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करने वाला ब्रह्मवर्चोसि बनने के लिए तत्पर होता है। प्राणायाम ब्रह्मा प्राणायाम रुद्रो प्राणायाम समभवा मेरे प्यारे! देखो, वह मानो ब्रह्म की आभा में रमण करने लगता है, एक प्राण सखा के द्वार पर मुनिवरों! देखो, मन को स्थिर कर लेता है, मन को स्थिर करता हुआ खेचरी प्राणायाम के द्वारा शीतली प्राणायाम के द्वारा, विश्वानं प्राणायाम के द्वारा मानो देखो, भिन्न भिन्न की आभा में गति करने लगता है तो रसना पर विजय हो जाता है। एकोकी रसना पर विजय करने के लिए मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने पंचांग औषधियों का पान किया। उन्होंने कुछ वृक्षों के रसों को जल में तपा करके अग्नि के द्वारा मुनिवरों! देखो, पान किया। ऐसा मुझे कुछ स्मरण है। मुनिवरों! देखो, उन ऋषियों ने देखो, बारह वर्ष का अनुष्ठान करते हुए, उन्होंने और उसके पश्चात मानो देखो, इन्द्रिय के ऊपर अनुसन्धान करते हुए, केवल अब्रहा सम्भवे रसना ग्रही अम्ब्रहो वह रसना के ऊपर अनुसन्धान करते हुए मेरे प्यारे! उन्होंने उसके पश्चात् श्रोत्रीय इन्द्रियों के ऊपर अनुसन्धान किया। श्रोत्रीय इन्द्रिय के पश्चात् चक्षु इन्द्रिय पर अनुसन्धान करते हुए उनको ला करके उनका जितना भव्य जगत् था सूक्ष्म जगत् था, मेरे प्यारे! देखो, सब जगत् को ले जाकर के बाह्य ब्रह्माण्ड में उसकी कल्पना की। ब्रह्माण्ड की कल्पना करते हुए मुनिवरों! उनको आकुञ्चन शक्ति में, आकुञ्चन करते हुए सर्वत्रता को, मुनिवरों! देखो, हृदय रूपी यज्ञशाला में, उस साकल्य की आहुति देने के पश्चात् मेरे प्यारे! अपने में सफलता को प्राप्त हो गए।

तो विचार विनिमय क्या? मेरे प्यारे! मैं ऐसी चर्चा कर रहा हूँ जो बेटा! किसी काल में हम साधकों के मध्य में ये चर्चा किया करते थे। मानो साधकों को यह जब यह शिक्षा देते रहते थे तो मुनिवरों! देखो, आज समय इतनी आज्ञा नहीं दे रहा है। विचार विनिमय

क्या? मुनिवरों! देखो, यह क्रियाएं, ये विचारधाराएं, केवल देखो, हमारे ऋषि मुनि ही नहीं, त्रेता के काल में, इस प्रकार का देखो, विज्ञान रहा है। इस प्रकार का यौगिकवाद भी रहा है परन्तु इसका दुरूपयोग भी होता रहा है। तुम्हें ये प्रतीत होगा श्वेतम नामक राजा की कन्या का नाम सुरसा था देखो, उसका नाम तो सोमकेतु था। परन्तु सोमकेतु माता कहती थी परन्तु पिता उसे ऋचा कहता था। और ऋचा के अब्रहा मेरे प्यारे! देखो, जब वह गुरु के यहाँ अध्ययन करती थी तो वह उसको सुरसा कहा करते थे, मेरे प्यारे! देखो, सुरसा ने बहुत से विज्ञान को जाना। मानो इन्हीं पांचों प्रतिक्रियाओं को वेद की लेकर उन्होंने बेटा! देखो, बहुत सी प्रतिक्रियाओं को बाह्य जगत् में जानते हुए मानो देखो, आन्तरिक जगत् में जानने का प्रयास किया। मेरे प्यारे! देखो, मुखारबिन्दु को बहुत ऊर्ध्वा में मानो कर लेना, आकुञ्चन कर लेना ये सब क्रिया देखो, उनके समक्ष आती रहती थीं। मेरे प्यारे! देखो, सुरसा अपने मुखारबिन्दु को बहुत गति से कर लेती थी परन्तु देखो, उसी प्रकार देखो, आकुञ्चनता में लाने के लिए भी तत्पर रही। परन्तु देखो, उन्होंने बहुत से प्राणियों को, बहुत से मनुष्यों को मुख में अर्पित कर लेना, मानो देखो, उसको आकुञ्चन की आभा को परणित कर लेना तो मुखारबिन्दु में एक स्वानचनकेतु नामक एक यन्त्र था उनके द्वारा। जो उन्होंने मुख में आश्वातन दिया। जिस समय तुम्हें प्रतीत होगा, महाराज हनुमान मानो देखो, जामवन्त और मुनिवरों! देखो, सम्पाति की प्रेरणा से जब समुद्र को यन्त्रों से मुनिवरों! गति करने लगे तो मुनिवरों! देखो, सुरसा का स्थान आता था। देखो, प्रारम्भ में सुरसा ने उस यन्त्र को मुखारबिन्दु पर धारण किया हुआ था। मेरे पुत्रों! देखो, उसमें हनुमान को परणित कर लिया। मेरे पुत्रों! देखो, हनुमान जी सुरसा से भी मुनिवरों! देखो, विशेष वैज्ञानिक थे। मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपने शरीर को प्रसारण शक्ति का प्रहार किया, महाराजा हनुमान ने अपने शरीर को विशाल बनाया। उनके देखो, धारणा में एक यन्त्र था जिस यन्त्र की आभा से मनुष्य जीवित रह सके और यन्त्र का विनाश हो जाए। तो मेरे पुत्रों! देखो, वह यन्त्र महाराजा जामवन्त की प्रेरणा से, महाराजा सम्पाति ने दिया। महाराजा सम्पाति के राष्ट्र पर ही महारानी सुरसा देखो, राज्य करती रहती थी, शासन करती रहती थी। तो मेरे

पुत्रों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि महाराजा! सम्पाति ने मुनिवरों! देखो, एक यन्त्र दिया उन्हें, जिस यन्त्र का नाम संगतक नामक था। संगतक नामक यन्त्र को उन्होंने दिया जामवन्त को। सुरसा के यन्त्र में जो मुखमानित यन्त्र कहलाता था। मुनिवरों! यन्त्र का वहां विकृत हुआ, उस यन्त्र का आक्रमण होकर विनाश हो गया और हनुमान उसमें से जीवित निकल करके लंका में प्रवेश कर लिया।

तो विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, जिन यन्त्रों को मानो देखो, जिन क्रियाओं को क्रियात्मकता में ऋषि मुनि किया करते थे और मुनिवरों! वही विज्ञान, वही आभा जब राजाओं के समीप आ पहुंची तो उन्होंने उसे यन्त्रों के रूप में लेना प्रारम्भ कर दिया। वैज्ञानिकों ने उसे यन्त्र के रूप में ला करके, मेरे पुत्रों! देखो, उसका नाना रूपों में प्रतिपादन किया गया। यन्त्रवादों में यन्त्र की आभा रमण होती रही परन्तु इस प्रकार का विज्ञान हमारे यहाँ, परम्परागतों से बेटा! पांचो प्रकार की गतियों में मानो गतिशील होता रहा है। आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, केवल कुछ परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ, इन पांचों गतियों पर सर्वत्र विज्ञान गति करता है। मानो इसी से यन्त्रवाद है। इसी से मुनिवरों! देखो, साधना के क्षेत्र में, साधनावाद भी इसी के क्षेत्र में रहता है। मुनिवरों! देखो, पुरातन काल में बेटा! जब विद्यालयों में इस प्रकार की शिक्षा ब्रह्मचारियों को प्रदान की जाती है तो ब्रह्मचारियों का मानवीयतव महान् बनता था, ब्रह्मचारियों का जीवन ऊर्ध्वा में गति करता है। मेरी प्यारी माता जब अपने गर्भस्थल में अपने बालक को कर्त्तव्यवादन करती हुई मानो बालक को गर्भ में शिक्षा देना प्रारम्भ करती है। इसी प्रकार की शिक्षा मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक माता ने दे दे कर उसका अनुभव किया।

ऋषि पराशर का माता द्वारा शिक्षा

मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है। इसी सन्दर्भ में बेटा! एक समय बहुत पुरातन काल की वार्त्ता है। बेटा! एक हमारे यहाँ ऋषि हुए हैं, जिनका नाम मुनिवरों! देखो, पाराशर

कहलाया जाता हैं वह ऋषि हुए परन्तु पाराशर ऋषि को बाल्यकाल से यह उन्हें सिद्ध था कि वह प्रत्येक भाषा की, प्रत्येक प्राणी की और कुछ पक्षियों की भाषा उन्हें स्मरण थी। मेरे प्यारे! देखो, उन भाषाओं में क्या क्या विज्ञान था? मेरे प्यारे! कुछ ध्वनियाँ होती रहती थीं, कुछ परमाणु गति करते रहते थे। तो मुनिवरों! कहीं उनकी माता ने, शकुन्तमानुक उनकी माता का नाम था, उन्होंने एक समय दर्शनों में कहीं यह अध्ययन किया कि बालक को जो मानो देखो, उसके मस्तिष्क को श्वासों की तरंगें उसमें परिणत कर देती हैं माता, तो उसके श्वासों की जो गतियाँ होती हैं जो श्वास में विचार होते हैं। वही विचार मुनिवरों! देखो, बालक के अन्तःकरण में प्रवेश कर जाते हैं। ऐसा कहीं उन्होंने दर्शनों में अध्ययन किया, जब अध्ययन किया तो मुनिवरों! माता ने इन वाक्यों का अध्ययन करके, जब पाराशर मुनि जब उनके माता के गर्भस्थल में विद्यमान थे, तो मुनिवरों! देखो, माता यह कहा करती थीं, एकान्त स्थली में विद्यमान है, गर्भ में रहने वाले आत्मा से चर्चा करती रहती थी। मानो देखो, वह कहा करती थी, हे आत्मा! तू भव्य है, हे आत्मा! तू एक रस रहने वाली है, मानो तू मेरे गर्भस्थल में आई है, तेरा क्या संस्कार है मेरे से? तेरा क्या सम्बन्ध है? मानो देखो, यह आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती रहती थी, और यदि तू इसका उत्तर नहीं देती आत्मा तो तेरा मेरा जो सम्बन्ध है वह केवल संकल्पमात्र से ही रहेगा। मानो देखो, संकल्प मैंने किया, पतिदेव ने किया, संकल्पमात्र से देखो, वह बिन्दु आभा में प्रवेश हो गया हैं वही बिन्दु मानो जल में प्रवेश करता हुआ, तू मेरे गर्भस्थल में आत्मा अमृत ले करके आया है। मानो देखो, हे बालक! ये जो संसार है इस संसार में तू आया है, ये संसार बड़ा विचित्र है, यहाँ इस संसार में मानो देखो, कोई अपमानित कर रहा है, कोई मान कर रहा है, कोई दुरिता में परिणत कर रहा है तो कोई आभा में परिणत कर रहा है, कोई पुष्पों की वृष्टि कर रहा है, कोई धूलिका में परिणत करा रहा है। हे देवत्याम्! हे आत्मा! तू भव्य है, तू कथमोसि है। तू कैसे मेरे गर्भ में आया? मानो देखो, माता ये वार्त्ता प्रगट करती रहती थी। जब माता निद्रा की गोद में जाती और निद्रा की गोद में जाने के पश्चात् जब मानो वह सुषुप्ति में प्रवेश करती हुई और जब वह देखो, स्वप्नावस्था में किसी काल में चली जाती

थी, माता की स्वप्नावस्था में उस अन्तरात्मा का एक आकार बन करके क्योंकि जो विचार उसने बनाए वह आकार बन करके आत्मा यह कहा करती थी, सम्भवः देवः सम्भवः रुद्रा सम्भवः भद्रम् भवे सम्भवः हे माता! मैं भद्र बन करके तुझे माता बनाने के लिए आया हूँ क्योंकि मेरा संकल्प केवल इतना है, ममतव है, उस संकल्प में ग्रता है, मानो मेरा पुण्य तेरे गर्भ में आने का, क्योंकि तू भव्य और पवित्र है। यह कहा करता था वह आत्मा! परन्तु जब माता के गर्भ से बालक जगत् में आया, संसार में आया, माता की लोरियों को पान करने लगा, माता उसके नेत्रों में मानो मस्तिष्क से वही श्वासों की गति उसे देती रहती थी और देखो, श्रोत्रों में उस श्वास की गति का वर्णन करती रहती थी। हे बालक! यह जो प्राण गति कर रहा है यह निःस्वार्थ है, इसमें कोई स्वार्थ नहीं है। हे बालक! यह प्राण ही इस संसार में निःस्वार्थ होकर गति कर रहा है और प्रत्येक इन्द्रियों में स्वार्थ विद्यमान है। हे बालक! हे आत्मा! तू महान् है। यदि तूने मेरे गर्भस्थल में प्रवेश किया है, मानो देखो, तेरा ये कर्त्तव्य है जो मैं उच्चारण कर रही हूँ। ये विचार बनाकर उसको देती रहती है कि हे बालक! यह संसार तो एक संशय आश्वान कहलाया जाता है।

बेटा! देखो, वह बालक, जब माता के उन भावों को श्रवण करता रहता, वह मग्न होता रहता। माता के आँगन में बालक आनन्दित हो रहा है, मग्न हो रहा है, मानो औषधिपान कर रहा है। माता की लोरियों का पान कर रहा है, माता को आनन्दित कर रहा है, माता के मानो देखो, भव्य विचारों को, अपने अन्तःकरण में प्रवेश कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब वह बालक कुछ प्रबल हो गया। प्रबल हो होने के पश्चात् वही बालक कहता है, हे माता! तू मेरी भव्य माता है, मानो तूने मुझे पवित्र बनाया है। मैं माता! तुझे पवित्र बनाऊंगा। मेरे प्यारे! माता को बालक कैसे पवित्र बनाता है? जब माता का पुत्र बालक, जब आचरणों से पवित्र बन जाता है, आचरणों में वह तपस्वी बन करके ब्रह्मचर्य व्रत को अपना करके प्रत्येक श्वास की गति को प्राणायाम में पिरो देता है, ब्रह्म में मन को पिरो देता है, बेटा! देखो, माता का गर्भाशय पवित्र हो जाता है।

तो विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, मैं दूरी नहीं जाना चाहता हूँ, विचार देता

हुआ, आज मैं बेटा! दूरी चला गया हूँ। विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, वही पारा मुनि कितने पवित्र थे, मानो वह विज्ञान में भी अग्रणीय थे। मेरे प्यारे! वे पांचों प्रकृति की गतियों को, ब्रह्माण्ड की गतियों को बेटा! भली भांति जानते थे। मेरे प्यारे! क्योंकि माता ने उसे अन्तःकरण में अपने श्वासों को, अपने विचारों के परमाणु बेटा! श्वासों के द्वारा उनके मस्तिष्क में ओत प्रोत करा दिए। मस्तिष्क मुनिवरों! देखो, ज्ञान की, विज्ञान की आध्यात्मिकवाद बेटा! की कुंजी माना गया है। उन्हें वह माता प्रदान करती रहती थी। माता ने ब्रह्मा सम्भवे देवाः मेरे पुत्रों! देखो, पारा मुनि तपस्या करते थे, दर्शनों में परणित हो गए। मेरे प्यारे! ममता नहीं थी, ममतव था मानो देखो, ममता नहीं था। मोह नहीं था। वह तपस्वी भयंकर वन में तपस्या में परणित हो गए। तपस्या करते हुए, तपस्या का जीवन ही संसार में महान् है। बेटा! मैं उच्चारण कर रहा था, तपस्या का क्षेत्र क्या है? तपस्या किसे कहते हैं? तपस्या का अभिप्रायः यह है कि प्रत्येक मानव की इन्द्रियां, उन इन्द्रियों के विषय को व्यापक रूप से जानना और जान करके, उसको आकुञ्चन हृदय में प्रवेश कर देना। मेरे प्यारे! देखो, उस विज्ञान को, आभा में परणित करने का नाम इन्द्रियों के ऊपर, इन्द्रियों के ज्ञान और विज्ञान को जान करके मेरे प्यारे! एक प्राण स्वरूप में परणित हो जाना, गम्भीर मुद्रित हो जाना, मेरे प्यारे! देखो, उसका नाम तपस्या कहलाती है। तपस्या का अभिप्रायः मैंने पुरातन काल में भी कई काल में वर्णन करते हुए कहा है।

ब्रह्माण्ड में प्रभु द्वारा गतियां

आज मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार विनिमय केवल यह है, आज मैं वही जाना चाहता हूँ जहाँ से बेटा! हमने इन वाक्यों का विचार प्रारम्भ किया था। मेरे प्यारे! भगवान कृष्ण जी महाराज, मानो देखो, महाराजा संदीपन मुनि महाराज के द्वारा यह अध्ययन करते थे। आचार्य से यह प्रश्न किया उन्होंने महाराज! यह पञ्चमहा जो क्रियाएं है, पञ्चमहा जो जगत् में आभा दृष्टिपात हो रही है जिनसे यह जगत् क्रियाशील सा दृष्टिपात आ रहा है इनका आत्मा से क्या सम्बन्ध रहता है? मैं आत्मा के सम्बन्ध को मैं

भली भांति जानना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! जब उन्होंने यह कहा कि मैं आत्मा के सम्बन्ध को जानता चाहता हूँ तो महात्मा संदीपन ऋषि ने कहा, हे कृष्णा! मानो देखो, यह पंचाम् ब्रह्मे है, प्रकृति से जब चेतना का मिलान होता है तो मानो ये पञ्च महा यह गतियाँ इसमें से सदैव उत्पन्न हो जाती हैं। और यदि चेतना का इसमें स्रोत नहीं होगा तो मानो देखो, परमाणु में गति का सञ्चार नहीं होगा। इसीलिए वह जो गति है, परमाणुवाद में जो गति आकुञ्चन में है, जो गति प्रसारण में है, जो गति गतियों में है, जो गति ध्रुवा और ऊर्ध्वा में है, इस गति को देने वाला बाह्य जगत् में वह चैतन्य देव है और आन्तरिक मानव के शरीर में यह गति देने वाली यह आत्मा है। तो आत्मा से इसका विशेष सम्बन्ध रहता है। इसीलिए वेद के ऋषियों ने कहा है कि यह आत्मा को जानने वाला ही मेरे प्यारे! इस ब्रह्माण्ड की प्रतिक्रिया को जान जाता हैं मेरे पुत्रों! देखो, आत्मा को जानने वाला वैज्ञानिक बन जाता है। आत्मा को जानना हमारे लिए बहुत अनिवार्य है, आत्मा को कैसे जाना जाएगा? बेटा! ये प्रतिक्रियाएं मैंने तुम्हें भिन्न भिन्न रूपों में परणित की हैं।

आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। मैं कोई व्याख्यान देने नहीं आया हूँ केवल विचार यह देने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक मानव इसके ऊपर अनुसन्धान करने वाला हो। अनुसंधानित रहना चाहिए। आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कहा रहा है? हमारा ये अनुष्ठान् जगत् क्या कह रहा है? हम गम्भीर मुद्रा में जाना चाहते हैं, गम्भीर मुद्रा में प्रवेश करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! गम्भीर मुद्रा में प्रवेश करने वाला मानव ही इस संसार सागर से पार होता है।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं कहाँ चला गया हूँ। इसी पांचों प्रकार की, इसी ब्रह्माण्ड की प्रतिक्रियाओं को लेकर के मेरे प्यारे! वैज्ञानिक अपने क्षेत्र में चला जाता है। वैज्ञानिक अपनी आभा में चला जाता है। मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! एक समय सुधन्वाकेतु नामक एक ब्रह्मचारी था। सुधेनकेतु ब्रह्मचारी ने मेरे पुत्रों! महर्षि पारा मुनि के यहाँ तपस्या करते थे। तपस्या करते, वेदों का अध्ययन करते हुए वेद में एक मन्त्र आया और मन्त्र यह कह रहा था समाकृतं ब्रह्मे आस्वां दिव्यं ब्रह्मे अस्तः। मेरे प्यारे! देखो, इसी

वेदमन्त्र को लेकर के उन्होंने पांचों गतियों पर अनुसन्धान किया। इसमें से उन्होंने नाना प्रकार की चित्रावली रूपक यन्त्रों को जानने का प्रयास किया। उनको जानते हुए मुनिवरों! देखो, उनकी यन्त्रवेला में प्रवेश करते हुए अपने में मुनिवरों! देखो, महानता को प्राप्त हो गए।

विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! आज का हमारा, आज मैं कोई विशेष विवेचना में नहीं ले जाना चाहता हूँ। विचार केवल यही यज्ञं भवा सम्भवे देवा अन्तरिक्षां दिव्या गतप्रव्हे असुता मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार का याग परम्परागतों से बेटा! मानवीय मस्तिष्कों में मानो देखो, होता रहा है। माता के मस्तिष्कों में, क्रियात्मकता में होता रहा है। मुझे स्मरण है महाराजा संदीपन ऋषि आश्रम में बेटा! प्रातःकालीन मानो देखो, योगा याग होता था। योगा याग किसे कहते हैं? बेटा! याग अमृते मानो देखो, दो वस्तुओं के मिलान का नाम याग माना गया है। मेरे पुत्रों! देखो, मनस्ततव, प्राणस्ततव, इन्द्रियतव सम्भवः। मानो देखो, सर्वत्र इन्द्रियों के मिलान का नाम, ध्यानावस्था का नाम बेटा! योग है। मानो देखो, योग से परणित होते, मानो देवयाग में परणित हो जाना देवयाग उसे कहते है जहाँ देवताओं का पूजन होता है। देवता कौन हैं? मैंने कई काल में बेटा! मैंने इसकी विवेचना की हैं। देवता वह कहलाता है जो देता है, देवता वह कहलाता है जो महान् है। देवता वह कहलाता है जो सौम्य है। देवता वह कहलाता है जो मुनिवरों! देखो, देवतव की आभा में सदैव मुनिवरों! महानता का प्रसारण होता रहता है। तो मुनिवरों! यहाँ परमात्मा का नाम भी देवता है और पञ्चमहाभूतों का नाम भी देवता है। देखो, यहाँ पाण्डियतव अप्रतं ब्रहे अस्मुतहि मानो वह भी देवता है।

ऋषि याग

मुनिवरों! देखो, देवतव को धारण करने वाला उनको भोज्य देना मानो देखो, वायुमण्डल में सूक्ष्म परमाणुओं का प्रसारण कर लेना, घृत के द्वारा, साकल्य के द्वारा वह देवपूजा के रूप में कहलाता हैं हे यज्ञमान! जब तू अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके जब तू देव की पूजा करता है, देवताओं का पूजन करता है तो जानो तेरे आन्तरिक जो

देवता हैं। तेरे शरीर में जो मानो देवतव कार्य कर रहें हैं, वह मानो तेरे शरीर को महान् बना करके तुझे वही देवता की श्रेणी में प्रदान कर सकते हैं। मेरे प्यारे! वही तो देवता है। विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! यज्ञमानं ब्रह्मे लोकाः। वह प्रातःकालीन, उनके यहाँ देवपूजा होना, देवपूजा के पश्चात् देखो, ऋषि याग होना, ऋषि याग किसे कहते हैं? ऋषि मुनियों के जीवन चरित्र को अध्ययन करना और ऋषि मुनियों की वाणी को और मन्थन किया हुआ जो जगत् है उनकी जो लेखनियाँ हैं मानो देखो, उसको अपने में धारण करता हुए बाह्य जगत् में प्रसारण करना वह ऋषि याग कहलाता है। इसके पश्चात् ऋषि याग के पश्चात् मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा को उसमें पिरो देते हैं। वे परमपिता परमात्मा की प्रतिभा है। मेरे पुत्रो! देखो, यहाँ प्रत्येक मानव को साधक बनना है। चाहे वह याग के द्वारा हो, चाहे वह देवयाग के द्वारा हो, चाहे ब्रह्मयाग के द्वारा, चाहे ऋषि याग के द्वारा। प्रत्येक मानव को बेटा! अपने अपने कर्तव्यवाद में परणित होना हैं ये हमारे विद्यालयों की बेटा! परम्परागतों से एक प्रणाली मानी जाती है। यही परम्परा है, इस परम्परा को मानो अपने हृदय में धारण करता हुआ इस संसार सागर से पार हो जाएगा। इसके पश्चात् जब ये तीनों क्रिया कलाप हो जाना, उसके पश्चात् मेरे प्यारे! वहाँ विज्ञान की क्रियात्मक शिक्षा देना महाराजा संदीपन ऋषि के आश्रम में जहाँ मुनिवरों! देखो, इस प्रकार की यज्ञशालाएं, विचार शालाएं जहाँ भिन्न भिन्न प्रकार की देव पूजाओं के सम्बन्ध में चिन्तन और मनन होता रहा वहाँ मेरे पुत्रो! देखो, सम्भवे प्रव्हा सतप प्रव्हे असुतो वहीं उसी स्थलियों पर विज्ञान के परमाणुओं को जानना यह जो प्रकृति की मैंने पांच गतियों का वर्णन किया हैं मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम मानो प्रसारण आता है, क्रिया आती है, प्रसारण क्रिया की प्रतिभा को जान करके, मेरे प्यारे! उसके पश्चात् ध्रुवा और ऊर्ध्वा में और मुनिवरों! देखो, आकुञ्चन में लग जाना यह इन ब्रह्मचारियों के यहाँ शिक्षार्थियों का विशेषतव था, शिक्षा की प्रणाली एक महान् बनती है। महान् उस काल में बनती है जब मानव अपने जीवन को क्रियात्मक, बाह्य जगत् को क्रियात्मक दृष्टिपात करता हुआ और आन्तरिक जगत् में प्रवेश कराता हुआ अपने हृदय अगम्य ज्योति को दृष्टिपात कर लेता है। मेरे प्यारे! अपनी अगम्य ज्योति

को प्राप्त करने वाला है।
मानव ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है। भगवान कृष्णा की भांति वह ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है। मेरे पुत्रो! मुझे तो परमपिता परमात्मा की अनुपम कृपा से भगवान कृष्णा के जीवन को अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में यह निर्णय देते हुए कहा था कि वह सदैव अपने जीवन को क्रियात्मक बनाते रहते थे क्योंकि उनका विज्ञान सदैव इनका योग भी महान् था, उनका अनुष्ठान भी महान् था। उनका आयु भी विचित्र था। मैंने तुम्हें पुरातन काल में कहा था भगवान कृष्णा का जब भगवान कृष्णा मृत्यु को प्राप्त हुए 362 वर्ष की आयु थी उनकी। तो इतनी आयु में सर्वत्र प्रतिक्रियाएं की।
उनके जीवन के काल में कितना अध्ययन रहा है। यह मैं चर्चाएँ कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् हमारा बेटा! यह समाप्त होने जा रहा है आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए अपने में महानता की ज्योति को जानते हुए अपने में हम सीमित न रह जाएं। हमारा जीवन व्यापकवाद में रहना चाहिए। आज मैंने बेटा! एक विषय पर तुम्हें सतोयुग के ऋषि की भी चर्चा की। त्रेता के काल के कुछ राष्ट्रीय विचारों की चर्चाएँ भी की। भगवान कृष्णा महाराज की चर्चा करते हुए आज का विचार हमारा समाप्त होने जा रहा है। विचार विनिमय क्या था? ये जो जटापाठ, धनपाठ, मालापाठ, उदात्त, अनुदात्त यह जो नाना की ध्वनियाँ हैं यह मुनिवरों! पांचों इन्द्रियाँ हैं। पांच कर्म इन्द्रियाँ हैं इनके समन्वय से इस मस्तिष्क में नाना प्रकार प्रकार की स्वर ध्वनियाँ होती रहती हैं। बेटा! उन स्वर ध्वनियों को श्रवण करने वाला ध्वनि को अपने में पान करने वाले को विशेष योगी कहते हैं। ये चर्चाएँ हम कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा। स्थान लाक्षाग्रह बरनावा।

४ 16 03 1983 पुष्प 43 त्रि विद्या का योग द्वारा साक्षात अध्ययन

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व

से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा अथवा उसकी ध्वनि का वर्णन होता रहता है। क्योंकि जितना भी यह संसार है, चाहे वह जड़वत में हो, चाहे वह चैतन्यवत में हो, परन्तु उसमें जो एक ध्वनि हो रही है और उस ध्वनि को, प्रत्येक प्राणी अपने में पान कर रहा है, उस ध्वनि का जो स्रोत है, वह एक अनुपम महान देव की ही आभा कहलाती हैं इसीलिए हमारे वैदिक साहित्य वालों ने, उस ध्वनि के ऊपर बहुत चिन्तन और मनन किया है। क्योंकि मानव का यह शरीर है, रचना हो रही है रचनाकार रचना कर रहा है, परन्तु जब वह वस्तु जब रचना में पूर्ण रूपेण आ जाती है तो उस रचना के एक महान पिण्ड में नाना प्रकार की ध्वनियों और गतियों का प्रसारण होता रहता है। मेरे प्यारे! मानव वाणी नहीं उच्चारण कर रहा है, मानव नेत्रों से अपनी भाषा का वर्णन कर देता है, तो वह एक अमोध ध्वनि कहलाती हैं बेटा! मानव अपने शब्दों से, अपनी भिन्न भिन्न रूपी असतो से मौन रह करके भी अपनी अन्तरात्मा की वार्त्ता को प्रगट कर लेता है। मेरे प्यारे! मानव एकान्त स्थली पर विद्यमान है। वह मानव मुद्रित हो रहा है और अपनी मुद्रा में मुद्रित होता हुआ, वह अपने हृदय की मानो देखो, सुगन्धि को वह अपने हृदय की महान सुगन्धि को उसके आश्रम में बेटा! सुगन्धित हो रही है। वह नहीं कह रहा है कि मैं सुगन्धि कर रहा हूँ। परन्तु उसका जो श्वास है वह जो मानो एक परमाणु अपने में ध्वनि कर रहा है और वह ध्वनि कैसी है? क्या ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोई हुई बेटा! वह ध्वनि है। वह जो ध्वनि का प्रसारण कर रहा है, मानो वह जो ध्वनियाँ आ रही हैं, उसको प्रत्येक मानव, उस ध्वनि के लिए ललायित रहता है और यह कहता है साधारण प्राणी कि यहाँ तो किसी महापुरुष की ध्वनि है। मानो देखो, उसके विचारों की, उसकी तपस्या की यह सुगन्धि है।

पवित्रता की ध्वनियां

तो मेरे प्यारे! जब प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर हम अध्ययन करते हैं और अध्ययन में ये

चिन्तन करते हैं कि हमें सुगन्धि देनी है, हमें ध्वनि देनी हैं, वह ध्वनि आ रही है, उसका प्रसारण कर रहा है। उसी ध्वनि को लेखनीबद्ध हो करके अपने में लेखक बन रहा है। मेरे प्यारे! देखो, मानव, ब्रह्मचारी, अपने माता पिता को अपना परिचय पत्र देता हुआ, एक लेखनी प्रगट कर रहा है। वह अपने हृदय की एक अनुपम जो ध्वनि है उस ध्वनि को मुनिवरों! वह पत्रिका में प्रसारण कर रहा है। उस हृदय की वाणी को, उस हृदय की ध्वनि को, उस हृदय की अमंगलं असुतो मौन रहने वाली आभा को जब परिचय किसी को दिया जाता है, वह परिचय अपने में धारण करता हुआ प्रसन्न हो रहा है। कैसा जगत है? बालक कह रहा है विद्यालय में, अपने आचार्य के चरणों में ओत प्रोत हो करके माता को एक लेखनीबद्ध कर रहा है। मानो देखो, जब गृह में होता है तो ब्रह्मचारी अपने आचार्य, पूज्यपाद को लेखनीबद्ध कर रहा है। अपने हृदय के उद्गार कह रहा है। अपने हृदय की ध्वनि रूप बाह्य जगत बेटा! में लेखनीबद्ध हो रही है, मुनिवरों! देखो, वह कैसी लेखनी है? वह उसके हृदय की पवित्र ध्वनि है। जैसे वेदमन्त्र मानो देखो, अपने में ध्वनित होता रहता है और वह जो वेदमन्त्र ध्वनित होता है उस ध्वनि को जो श्रवण करता है वह पवित्रतम हो जाता है, वह पवित्र आभा में परणित हो जाता हैं जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होता हैं विद्यमान हो करके अपनी धर्म देवी से अपने उद्गार प्रगट करता है हे देवी! यागः ब्रह्मे वस्तुतम् देवाः हे देवी! हम याग में परणित होना चाहते हैं। हम यागमयी अपने को बनाना चाहते हैं। हम अपने मानो देखो, याज्ञिक वेदी को महान बना करके द्यौ लोक में जाना चाहते हैं। मानो वह यज्ञमान अपनी देवी से कह रहा है। देवी कहती है सम्भवः देवः ब्रह्मः वाचम् नमः प्रवेः हे प्रभु! आप तो सूर्य के तुल्य हैं। मानो देखो, चन्द्रमा सम्भवे मेरी तो सदैव ये कामना रहती है कि योगां ब्रह्मे वाचन्नमा प्राणं रुद्रा वह जो प्राण हैं जो ब्रह्म के आस्वात कहलाए जाते हैं। वह अन्तरात्मा की छाया कहलाती है। वह जो प्राण हैं उन प्राणों को एकाग्र करके प्रभु! आप योगी बनो। मैं योगेश्वर बन करके हम पवित्र याग करेंगे। साकल्य बाह्य जगत का याग होगा। आन्तरिक जगत का हम अपनी अन्तरात्मा को जानने का याग करेंगे। यहीं तक नहीं, वह कहते हैं कि अन्तरिक्ष में जितना विज्ञान है, अन्तरिक्ष में जितना

विज्ञान है हम उसको याग रूप बनाना चाहते हैं। मेरे प्यारे! अन्तरिक्ष में जो नाना तरंगें गति कर रही हैं, वायु मण्डल में क्या? अन्तरिक्ष में गतियाँ हो रही हैं, वायु गति दे रहा है, मेरे प्यारे! वह जो परमाणु हैं एक एक परमाणु में मुनिवरों! देखो, सर्वत्र सृष्टि का जो चित्र हो रहा है वह चित्रण वैज्ञानिक यन्त्रों में हमें दृष्टिपात आएगा। मेरे प्यारे! देखो, पति पत्नी इस प्रकार के याग में जब लग जाते हैं तो उनके जीवन में एक सफलता आने लगती है। पवित्रता की ध्वनियाँ आने लगती हैं।

तो विचार विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! यही ध्वनि मुझे स्मरण है, महाराज शिव और देखो, पार्वती, जब गान गाते थे, गान गाकर के नटवर एक उनका नृत्य होता था, जब नटवर नृत्य होने लगा तो मुनिवरों! देखो, उस नृत्य में मानो ध्वनियों में वह एक एक जो नृत्य था उनका मेरे पुत्रों! देखो, नटवर जो नृत्य था उस एक एक नृत्य में एक आभा परणित हो रही है। उस मानो देखो, ध्वनि ध्वनित हो रही है, मानो उस एक ध्वनियों का प्रसारण हो रहा हैं एक कामवासना वाला प्राणी है वह अपनी वाणी से, नेत्रों से मेरे प्यारे! देखो, वह विष को बिखेर रहा है। एक मानो योगेश्वर बन करके ओ३म् रूपी सूत्र में इस वाणी की ध्वनि को पिरो करके मुनिवरों! देखो, वह सुगन्धि प्रसारण कर रहा है। तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! मैं कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ आज कोई व्याख्यता नहीं हूँ, न व्याख्यान देने आया हूँ केवल तुम्हें यह परिचय देने आया हूँ कि मुनिवरों! देखो, हमें अपने जीवन को महान बनाना है।

भगवान कृष्ण का यौगिक संकल्प

भगवान कृष्ण का जीवन मुझे स्मरण आता रहता है। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, भगवान कृष्ण का जीवन ऐसा महान्, ऐसा पवित्र, मानो जब वह जो पञ्चीकरण, अपनी इन्द्रियों को समेट करके, वह जो हृदयस्थली में ले जाते थे तो मानो देखो, उनकी योग की प्रवृत्तियाँ बिखर जाती थीं और योग की प्रवृत्तियाँ जब बिखर करके मुनिवरों! देखो, जब बाह्य जगत से सुगन्धि को लाती थीं, आन्तरिक जगत से वह सुगन्धि प्रसारण होती थी। तो मेरे प्यारे! देखो, पूज्यपाद गुरुदेव के समीप

विद्यमान हो करके वह अनुसन्धान करते रहते थे। अनुसन्घान मेरे प्यारे! प्रत्येक इन्द्रिय का अनुसन्धान, प्रत्येक प्राणों का अनुसन्धान, क्या ये प्राण कौन थे यह किस किस प्रकार का प्राण हैं? उसको जानना है तो मेरे पुत्रों! देखो, वह इस प्रकार वह अपने में मुद्रित होते हुए, अपनी महान आभा को सुगन्धि में लाना ही उनका कर्त्तव्य कहलाता था।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, उनके चरणों में पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान रहते थे। एक समय बेटा! देखो, उनके एक मित्र, विद्यालय में अध्ययनं ब्रह्मेः मित्र बने, मानो जिनको सुदामा कहते थे। सुवज्ञना गच्छतं देवा वह मानो दोनों विचारक बन करके बेटा! वनों में पीपल के वृक्ष के नीचे अनुसन्धान कर रहे थे।

भगवान कृष्ण और सुदामा की आध्यात्मिक चर्चा

एक समय उन्होंने महात्मा ने मंगलं ब्रहे गुरु ने यह कहा कि अध्ययन करो। मानो तुम अध्ययन करो उन्होंने तृतीय कहा कि तुम अध्ययन करो तो मेरे प्यारे! दोनों अध्ययन के लिए एक वृक्ष के नीचे विद्यमान हो गये, अध्ययन करने लगे। तो उन्होंने देखो, महात्मा की वार्त्ता को पान करते हुए सुदामा ने कहा, हे कृष्ण! आचार्य ने हमें तीन समय कहा है कि तुम अध्ययन करो, अध्ययन करो, अध्ययन करो, ऐसा क्यों कहा है? कृष्ण जी बोले कि हे सुदामा! तुम पूज्यपाद गुरुदेव की आन्तरिक ध्वनि को नहीं जानते हो, यो तो यह तो उनकी आन्तरिक ध्वनि है आन्तरिक ध्वनि में ही तो वह मुद्रित हो करके मुद्रिका बनती है। मानो देखो, पूज्यपाद गुरु ने कहा है क्या तुम अध्ययन करो, अध्ययन का अभिप्रायः यह है क्या वेदमन्त्र का अध्ययन करो। तुम ज्ञान का अध्ययन करो परन्तु जब द्वितीय कहा कि अध्ययन करो तो वह कहते हैं कि वेद की ध्वनि को तुम प्रसारण करो तुम उसके सुयोग्य हो जाओ, जब तक उसके योग्य हो जाओ तो उसका प्रसारण करो मानो देखो, तृतीय कहते हैं तुम अध्ययन करो तो वह कहते हैं कि अध्ययन का अभिप्रायः यह है कि अपना स्वतः अध्ययन कर लो। अपना अध्ययन करना क्या है? मानो देखो, जो हमारे मानवीय शरीर से, प्रत्येक इन्द्रिय से विज्ञान की धारा,

नित्यप्रति मानो देखो, जो तरंगें ओत प्रोत होती रहती हैं। बाह्य जगत में वह तरंगें जाती हैं और आन्तरिक जगत में वह तरंगें आती हैं उनसे हम भौतिक विज्ञान में प्रवेश करते हैं। इन्हीं विचारों को अध्ययन, स्वतः करने से, हम अपनी अन्तरात्मा को जानते हैं हम अन्तरात्मा को जान करके प्रभु से मिलान करते हैं। तो मानो देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा है कि तुम स्वतः अपना अध्ययन करो। हमें स्वतः अपना अध्ययन करना है।

स्वतः अध्ययन कैसे किया जाता है? यह एक विचार का विषय रहता है। एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके अध्ययन की मानो नाना प्रकार की आभाएं हैं। जब अध्ययन करता हुआ मानव चरम सीमा पर पहुंच जाता है। तो बेटा! अध्ययन की परम्परा भी समाप्त हो जाती है। विचार देता हुआ कृष्ण कहता है, हे सुदामा! तुम पूज्यपाद गुरुदेव की भाषा को नहीं जाने। पूज्यपाद ने कहा था, कि हे ब्रह्मचारियों! तुम अध्ययन करो। हे ब्रह्मचारियों! तुम अध्ययन करो। परन्तु अध्ययन का अभिप्रायः केवल अपना अध्ययन करना है। कहाँ तक पंहुचना है अपने को मानो इसके ऊपर विचार विनिमय आज हम करना चाहते हैं पुत्रों! भगवान कृष्ण ने कहा था कि हे सुदामा! हमें वहाँ तक जाना है जहाँ हम संसार को विजय कर सकें। अपने को विजय करना ही संसार को विजय करना हैं। यह संसार विजय नहीं हुआ करता हैं परन्तु जब हम अपने को अध्ययन में ला देते हैं, अपना स्वतः अध्ययन कर लेते हैं, अपने में हम मुद्रित हो जाते हैं, अपने में हम महान और मौन हो जाते हैं, अपने में हम वेद के पठन पाठन के प्रकाश में रमण करते हैं। तो उस समय मानव का अपने को विजय करना ही संसार को विजय करना है। तो मेरे प्यारे! भगवान कृष्ण ने यह सब उच्चारण किया और यह कहा कि हे सुदामा! हमें, तुम्हें यह कहा कि तुम अध्ययन करो, तो तुम्हें हमें मानो देखो, दोनों को मुद्रित हो जाना है और मुद्रित कैसे हो जाना है? कि मानो देखो, यह संसार पांचों हो वस्तुओं पर विद्यमान रहता है।

अंगद की योग मुद्रा

तुम्हें यह प्रतीत होगा, क्या तुमने साहित्य में, पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया था, एक

समय में क्या हमें अध्ययन करते हुए। जिस समय त्रेता के काल में रावण और राम का संग्राम होने का विचार बना, परन्तु राम और रावण का संग्राम होने की जब वार्त्ता आई तो राम ने बालि पुत्र को यह कहा कि तुम रावण के समीप चले जाओ, वहाँ जा करके तुम मानो यह उच्चारण करो। रावण से मुद्रित हो करके, कि तुम अपने में अपनित्व हो जाओ। तुम्हारा यह संग्राम प्रिय नहीं हैं तो मानो देखो, उस समय बालिपुत्र मेघनाथ ने जब देखो, वालि पुत्रों! भवा सम्भवे वाचनमं ब्रह्मे वाचं भवितो अस्तो सम्भवा देवतं जब बालि पुत्र ने वहाँ से गमन किया तो भ्रमण करते हुए मानो देखो, वह लंका में, रावण के राज्य में पहुंचे। मानो लंका का कुछ भ्रमण किया और उन्होंने यह सूचना दी कि मैं राम का दूत बन करके आया हूँ। जब दूत बनने की वार्त्ता आई, तो मानो वह राज्यसभा में पहुंचे। रावण ने कहा, कहो, तुम कैसे आ पहुंचे? उन्होंने कहा, प्रभु! मेरी इच्छा यह है कि आप रावण हैं, आप राजा हैं, आपका बहुत ऊँचा आपका जीवन रहा है और आपका राष्ट्र भी पवित्र रहा है परन्तु देखो, माता सीता को तुम ले करके आए, यह राष्ट्र को अपराध होता है। जिस राजा के राष्ट्र में मानो मेरी पुत्रियों का हनन किया जाता हो, वह काल रावण! प्रिय नहीं होता। तुम्हारे राष्ट्र में ये प्रियता नहीं है। तुम अपने महापिता के साहित्य को ले करके चलो। मानो तुम अपने महापिता का साहित्य राष्ट्र को दो। तुम्हारे महात्मा कागभुषुण्ड जी, महर्षि लोमश इत्यादियों ने तुम्हारे यहाँ अश्वमेध याग कई समय कराए हैं। परन्तु एक समय महर्षि वक्रेतकेतु ऋषि ने तुम्हारे यहाँ यागों का चलन कराया। परन्तु देखो, अब तुम्हारे यहाँ देखो, यह याग नहीं कहता, यह तुम्हारी राष्ट्रीय पद्धति नहीं कहती, तुम माता सीता को मुझे अपना मानो सेवक बना करके माता सीता को मुझे अर्पित कर दो। और तुम्हारा दोनों का सम्बन्ध हो जाएगा। विच्छेद से मिलान हो जाएगा। परन्तु रावण ने कहा कि यह महाकृत्य है।

मुनिवरों! देखो, मुझे ऐसा कुछ स्मरण है, ऐसा कुछ मुझे प्रतीत हो रहा है क्या उस समय मुनिवरों! देखो, उन्होंने सम्भवा बालि पुत्र बोले कि तुम क्रोध में क्यों आते हो? यह मेरे पर क्रोध करने का तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि मैं सेवक हूँ मानो देखो, एक मानो देखो, वनचर का, मैं राम का सेवक हूँ। वह वनों में रहते हैं, चाहे वह

कहीं रहते हों, परन्तु मैं उनका सेवक हूँ, मैं न्याय की वार्त्ता प्रगट कर रहा हूँ। आप न्याय को न्याय स्वीकार नहीं कर सकते तो राजा की पद्धति भ्रष्ट हो जाती हैं मुनिवरों! देखो, जब बालिपुत्र ने यह कहा, मुनिवरों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि रावण क्रोधित हो गए। परन्तु देखो, उस समय वह यौगिक मुद्रा में प्रवेश कर गए। उन्होंने बेटा! देखो, प्राणों के ऊपर अध्ययन किया था। मेरे प्यारे! देखो, शरीर के सर्वत्र प्राण को वह अपने पग में मुनिवरों! देखो, उन्होंने स्थिर कर लिया और वह जो प्राण था एक ही पग में आ गया। और उन्होंने कहा, मेरे जो पग को दूरी कर सकता हो तो, मैं माता सीता को त्याग दूंगा और मानो देखो, राम को ले करके अयोध्या चला जाँऊगा। यह वाक् उन्होंने प्रगट किया। मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि यह वही मुद्रा थी जो भगवान कृष्ण और सुदामा मानो देखो, गुरु आश्रम में बेटा! चर्चा कर रहे थे, वह मुद्रा क्या थी? मुनिवरों! देखो, प्राण, अपान, उदान और व्यान को मिलान करते हुए सर्वत्र प्राण की सत्ता को मेरे पुत्रों! देखो, उस मानप्रहे एक ही पग में ले आए। एक पग में लाने से उनके यहाँ कोई ऐसा मानो देखो, बलिष्ठ नहीं था, जो उनके बालिपुत्र के पग को दूरी कर सके। दूरी करने वाला कोई न रहा तो विचार हुआ कि अब क्या करें? मेरे प्यारे! देखो, जब सर्वत्र बलवान जितने जो बलिष्ठ थे, जितने देखो, मानो यन्त्रों तन्त्रों के निर्माण करने वाले थे, वहाँ विराजमान होने वालो अक्षय थे, और नारायंतक थे, परन्तु अहिरावण भी थे, मेघनाद इत्यादि सर्वत्र विद्यमान थे। उन्होंने जब उनके पगों को अस्वान करने का प्रयत्न किया तो किसी से न हो सका। क्योंकि वह तो प्राण शक्ति थी। आत्मा की, चित्त की प्रवृत्तियों को एकाग्र करके वह मुद्रित हो करके, प्राण को ला करके। अब देखो, जब अन्तिम में रावण को मद मोह आ गया। मद मोह आ जाने के पश्चात रावण ने जब उनके पग के लिए ग्रत किया, अपनी क्रिया की, तो उस समय उन्होंने अपने प्राण को, अपनी मुद्रा से अमुद्रित बना करके और प्राण को ज्यों का त्यों वही ला करके पग को दूरी कर लिया। उसने कहा, हे रावण! आप तो राजा हैं और ऐसे राजा हैं कि जिसके राष्ट्र में न सूर्य उदय होता है, न अस्त होता है। आप इस प्रकार के व्यापक राजा है परन्तु देखो, यह जो राजा ग्रती है आपकी यह जो हीनता है, यही तेरे राष्ट्र को

नष्ट कर सकती है। मानो देखो, उन्होंने बाली पुत्र ने, जब यह कहा, अंगदो सम्भवेति मानो अंगद जी ने जब यह कहा कि सो भद्रे आपं ब्रीहि असुतो चरणां बन्धु मंगलं ब्रहे उन्होंने कहा यह चरणों को स्पर्श करना है तो तुम राम के चरणों को और माता सीता को ले करके, राम के चरणों को स्पर्श कर और माता सीता के चरणों को स्पर्श करके कि यह मेरे से चर्य पाप हो रहा हैं मानो जब उन्होंने यह कहा मुनिवरों! रावण मौन हो गए। रावण से कोई उत्तर नहीं बना।

शरीर द्वारा ब्रह्माण्ड की परिक्रमा

तो विचार विनिमय क्या? भगवान कृष्ण ने कहा, हे सुदामा! हम और तुम दोनों विद्यमान हैं। आचार्य ने कहा है कि इस प्रकार का तुम दोनों अध्ययन करो। अध्ययन क्या? यह जो हमारे शरीर में प्राण, अपान जो गति कर रहा है, इन दोनों को रसना के द्वारा, आहर के द्वारा, व्यवहार के द्वारा मानो अपने ब्रह्मचर्यवत को धारण करके उसको मुद्रित बना लेना चाहिए। हम मुद्रा में लाना चाहते हैं। हम स्वयं मुद्रित होना चाहते हैं। मुद्रा का अभिप्रायः क्या है? कि हमारा यह जो शरीर है यह ब्रह्माण्ड की कल्पना करता हैं यह शरीर हमारा सर्वत्र भू मण्डल की परिक्रमा कर रहा है। मानो देखो, लोक लोकान्तरों की परिक्रमा कर रहा है। इसी में आभायित हो रहा है। प्रकृतिवाद को, जड़वत को शून्य आभा को यह अच्छी प्रकार जानता है। मेरे प्यारे! देखो, सुदामा ने कहा, हे कृष्ण! वार्त्ता तो बहुत प्रिय आपने प्रगट की है परन्तु यह हम जानना चाहते हैं कि मुद्रा का विज्ञान से क्या समन्वय रहता है? विज्ञान से इसका क्या सम्बन्ध है? भगवान कृष्ण ने कहा कि मानव जब ध्यानावस्थित होता है कि हमें यह वस्तु जाननी है। हम एक वस्तु पर अनुसन्धान करते हैं। अनुसन्धान क्या है कि हम यह चाहते हैं कि माता अपने प्यारे पुत्र को स्नेह कर रही है। जब माता स्नेह करती है उसका हृदय, उसके रक्त की जो तरंगे हैं वह माता के शरीर में हैं। माता के रक्त की तरंगें बाल्य के शरीर में हैं। दोनों का जब परस्पर मिलान होता है, दोनों की जब परस्पर स्नेह की प्रतिभा होती है, तो एक दूसरे परमाणु में परमाणुओं के मोह का सञ्चार उत्पन्न हो जाता है और वह जो

सञ्चार है वह मानो देखो, ममतव को धारणा करा देता है। वही ममता की आभा में रमणा करा देता है। परन्तु देखो, कृष्णा ने कहा, हे सुदामा! तुम्हें यह प्रतीत होना चाहिए।

अन्तरिक्ष में ध्वनियां

अब रहा यह विज्ञान की वार्त्ता। विज्ञान में एक मानव यह जानना चाहता है कि मुझे कोई वार्त्ता प्रगट कर रहा है। मेरे नामोकरणा की वार्त्ता दे रहा है। उस वार्त्ता को मैं मुद्रित हो करके कहता हूँ। शान्त रहो, मुझे कोई भी वाणी से ध्वनियाँ कर रहा है, उस ध्वनि को स्वीकार करता हुआ कहता है कि यह ध्वनि जहाँ से आ रही है और जहाँ मैं हूँ वह बहुत दूरी है। दूरी का, जहाँ परस्पर मिलान हुआ है उस मिलान के ऊपर मुनिवरों! देखो, अनुसन्धान करता है। वह वैज्ञानिक जब, उस दूरी का अनुसन्धान करता है तो अनुसन्धान करता हुआ एक यन्त्र का निर्माणा करता है, उन तरंगों को एकत्रित करता हैं उन परमाणुओं को एकत्रित करके उनको क्रियात्मक में ला करके मानो देखो, एक यन्त्र बना करके ध्वनियाँ आ रही हैं, ध्वनि मानो उस यन्त्र में प्रवेश कर रही है, हम उसे श्रवणा कर रहे हैं। वह ध्वनि अन्तरिक्ष से आ रही है।

अथर्वा ऋषि की चर्चाएं

मेरे प्यारे! देखो, मुझे एक वार्त्ता स्मरणा आ गई है, भगवान कृष्णा और सुदामा की चर्चा में एक वाक् आया। भगवान कृष्णा ने कहा कि हे सुदामा! एक समय मैं पूज्यपाद गुरुदेव के एक दिवस का तुम्हें स्मरणा होगा, उस समय मैं अध्ययन कर रहा था। जब अध्ययन कर रहा था, तो मुझे मानो देखो, ब्रह्मा के पुत्र एक अथर्वा हुए हैं जो उनके ज्येष्ठ पुत्र कहलाते थे। जहाँ से यह ब्रह्मा वंशलज प्रारम्भ हुआ हैं, वह मानो ऋषियों का वंशलज प्रारम्भ हुआ। वह जो अथर्वा थे, उनको अथर्वा क्यों कहते थे? अथर्वा कहते हैं जो स्थिर रहने वाला हो अथर्व प्रवे वर्णां सम्य ब्रही सम्भवमि वर्चो दिवत्याम लोकः मानो देखो, अथर्वा का अभिप्रायः यह है अथर्वं ब्रहे कृणां ब्रह्मा वाचन्नं ब्रह्मे कृतं भवति असुतो देवा मानो देखो, वह जो स्थिर रहने वाला हो। स्थिर रह करके अपने हृदय की गति से ही मानो वह संसार की आभा को, संसार की इस दूरी को वह मापते रहते हैं, और कैसे

मापा जाता है? इसके ऊपर हम बहुत सूक्ष्म सा विचार करेंगे। वह कैसे मापा जाता है? मानो देखो, मापने वाला मापता रहता है। अब मुनिवरों! देखो, उन्होंने एक वस्तु को मापा अथर्वा ने और वह एक समय मानो ऋषि मुनियों के समाज में पहुंचे। ऋषि मुनियों के समाज में पंहुचे, तो ऋषि मुनियों ने कहा कि प्रभु! आप अपने अनुभव की कुछ चर्चा कीजिए। उन्होंने मुनिवरों! देखो, अपने अनुभव की चर्चा प्रारम्भ की। अपने अनुभव की चर्चा जब देने लगे तो उन्होंने अपने अनुभव की विवेचना करते हुए कहा सो ब्रहे वाचा कि मानो मैंने कुछ वेदों की ध्वनियों को श्रवण किया है, कुछ याग किया है और याग के पश्चात मानो अपने जीवन के रथ को ले करके मैं अन्तरिक्ष में पहुंचा हूँ। और जीवन में अन्तरिक्ष के रथ को मानो एक समय मैं वेदमन्त्र में कहीं यह अध्ययन कर रहा था। वेद का पाठ यह कह रहा था, गत प्रव्हा वाचा मंगलं ब्रह्मे व्रता मानो मंगल का प्राणी अपनी ध्वनि कर रहा है। मंगल का प्राणी ध्वनि कर रहा है मंगल के प्राणी की जो ध्वनि है वह कृतियों में रमण कर रही है। मानो देखो, उसी समय मैं इस अनुसन्धान में लग गया। मैं अपने पूज्यपाद गुरुओं के द्वार पर पहुंचा। वहाँ मैंने इसके ऊपर अनुसन्धान किया। परन्तु देखो, ब्रह्मवर्चोसि उस अथर्वा ने यह कहा ब्रह्मा के जेठे पुत्र ने मानो देखो, यह कहा कि मैंने एक यन्त्र का निर्माण किया था जो मानो देखो, ध्वनि जैसे लोकों से आती थी लोकों से आने वाली ध्वनि का पृथ्वी से उसका मिलान होता रहता था और मिलान हो करके उस ध्वनि को मैं श्रवण कर रहा था। उस ध्वनि को यन्त्रों में लाने का मैंने प्रयास किया। मैं उसी समय त्रीचकेतु नामक ऋषि के द्वार पर पहुंचा। त्रीटकेतु ऋषि महाराज इसके ऊपर पूर्व योगाभ्यास करके अनुसन्धान कर चुके थे। मानो मैं जब उनके द्वार पर पंहुचा मैंने जब उनसे प्रश्न किया प्रभु! आपने यह सब कैसे जाना? तो उन्होंने कहा कि हमारी जो अनुष्ठान मुद्राएं हैं जिस मुद्रा को योगीजन करते हैं वह मुद्रा है मानो देखो, इस मंगल में पार्थिव तत्त्व प्रधान है। मानो पृथ्वी को तुम देखो, वायु गति से दोनों का मिलान कर लो अरूवान भवे कृता और मिलान करके उसको यन्त्रों में अपने अनुभव में लाओ, अनुभव की वार्त्ता को यंत्रित करो। और यंत्रित करके मानो ध्याना यह जो मानव का हृदय है इस हृदय का समन्वय

क्योंकि परमात्मा के हृदय होता हैं यह जो जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है यह परमात्मा का हृदय है। मानव का हृदय है दोनों का जब समन्वय होता है तो मानो देखो, इस हृदय में संसार की भाषाएं विद्यमान हैं। संसार की वार्त्ताएं विद्यमान हैं। मानो देखो, पञ्चीकरण वाला पञ्चम इसमें विद्यमान रहता है। जिस तत्त्व के लोक के प्राणियों की तुम वार्त्ता प्रगट करना चाहते हो ध्यानावस्थित हो करके उसी लोक से तुम्हारा तारतम्य हो जाएगा। यह वाक् ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने मानो सतोयुग के काल में प्रगट किये।

पृथ्वी के स्वाभाविक गुण

मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा कि सम्भवा देवा भगवान कृष्ण ने कहा हे सुदामा! तुमने यह जान लिया यहां नहीं। मैंने इतना कुछ अनुसन्धान मानो अध्ययन करने वाली, कुछ पोथियों से किया हैं उसी अध्ययन को मैं क्रियात्मक रूप में लाना चाहता हूँ। मानो देखो, जैसे ध्रुवा है ऊर्ध्वा है, मानो देखो, जैसे आकुञ्चन, प्रसारण और गति है ये प्रकृति की पांचों आभाओं का जन्म होता रहता है। किसी भी काल में प्रभु ने जब यह संसार रचा, इस पृथ्वी में मानो जब किसी चेतना का समन्वय हुआ, चेतना से मिलान होते ही यह पांचों प्रकृति के स्वभाव जागरूक हो गए और पांचों स्वभाव कौन से हैं? वह स्वाभाविक गुण हैं प्रकृति के मानो प्रसारण हैं, गति है, ऊर्ध्वा है, ध्रुवा है और आकुञ्चन है। ये पांच इसके मानो देखो, स्वाभाविक गुण हैं यह गुणों का गुणावादन होने लगा। इन गुणों को मुनिवरों! देखो, यही गुण देखो, एक बिन्दु के रूप में, माता के गर्भ में प्रवेश हो गए। माता के गर्भ से पुत्र का जन्म हुआ आकुञ्चन रूपों से, मानो देखो, वही पांचो गति उस मानव के शरीर में प्राकृतिक मानो देखो, विद्यमान हो गई। एक बिन्दु की आभा में बेटा! मैं कहाँ तक, इन वाक्यों को प्रगट करता रहूँगा, यह विषय पुत्र बहुत गहन विषय है। जब मैं किसी काल में बेटा! अध्यापन का कार्य करता रहता था तो ब्रह्मचारियों को यह अध्ययन कराता रहता था, ब्रह्मचारियों के अध्ययन की शैली मानो इतनी विचित्र रही है इतनी आभा में रही है क्या उसको मुनिवरों! देखो, निर्णय

करना यह मानो देखो, असुत कहलाया जाता है।

विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, भगवान कृष्णा ने सुदामा से यह कहा हे सुदामा! पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा कि हे ब्रह्मचारिओ! तुम अध्ययन करो, तुम अध्ययन करो, तुम अध्ययन करो, क्योंकि तीन समय अध्ययन का अभिप्रायः तीन वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि तीन ही वाक्यों में मानो यह जगत समाहित हो रहा है। जैसे ओ३म् की तीन मात्राएं हैं इनमें यह जगत समाहित है, मानो देखो, पुनरूक्ति भी तीन ही प्रकार की रहती है, वेद भी तीन ही कहलाए जाते हैं। मानो उनमें तीन ही प्रकार का विषय कहलाता है। संसार का जितना भी ज्ञान है विज्ञान है उसमें तीन प्रकार की ही वासनाएं हैं। मेरे प्यारे! ज्ञान, कर्म, और उपासना ये तीन प्रकार की विद्या वेदों में विद्यमान है। आगे बेटा! इसका वृत्त बनता रहता है। मानो देखो, अंकुर रूपों में ये तीन ही विद्यमान हैं। प्रकृति के पांच गुण हैं परन्तु देखो, उसमें तीन प्रकार के परमाणु हैं। सबसे प्रथम पार्थिव परमाणु, जल परमाणु, अग्नि परमाणु इन्हीं परमाणुओं से मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष और वायु इन परमाणुओं को गति देती है, अन्तरिक्ष में परमाणु वास करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ये आभामयी जगत कहलाता है। ये त्रैतवाद है मानो देखो, यह संसार तुम्हें त्रैतवाद की आभा में परणित हो रहा है। जब हम त्रैतवाद की वार्त्ता को ले करके चलते हैं तो हमें यह आश्चर्य होता है यह प्रभु! का कैसा अनुपम जगत है। बेटा! वेद का ज्ञान भी तीन ही प्रकार का है। मानव के शरीर में गुण भी तीन ही हैं। मानो देखो, ये तीन ही प्रकार की यज्ञमान यज्ञ में आहुति दे रहा हैं मेरे प्यारे! तीन ही प्रवृत्ति बन रही हैं। एक अंगला सम्भवो देवतां मेरे प्यारे! प्रभु का यह कैसा अमूल्य जगत है, पुत्रों! जिसके ऊपर हमारे ऋषि मुनि एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके बेटा! अनुसन्धान करते रहते हैं। विशेषकर वह मुद्रित होते रहते हैं। बेटा! ऋषि मुनियों की सबसे प्रथम मुद्रा में जाना, मुद्रित होना, पञ्च महाभूतों को जानना, उनको यौगिकता में लाना मानो देखो, उसको बाह्य जगत के हृदय में प्रवेश करते हुए हृदय में ही मानो देखो, संसार को दृष्टिपात करना, यही उनकी विशेष यौगिकता कहलायी जाती

है।

उपाधि काल

तो मेरे पुत्रो! आज मैं कोई विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ। न मैं कोई व्याख्याता हूँ। केवल तुम्हें परिचय देने आया हूँ और वह परिचय क्या है कि हम परमपिता की आराधना करते हुए, महिमा को जानते हुए, मेरे पुत्रों! मैंने कई काल में वर्णन किया। हमारे यहाँ भगवान कृष्ण की चर्चाएँ, जहाँ आती हैं, वहाँ शिव विज्ञान हमारे यहां बड़ा विशेष रहा है। हमारे यहाँ समय समय पर नाना शिव होते चले आए हैं। क्योंकि हमने बहुत पुरातन काल तुम्हें यह निर्णय दिया कि यह सब उपाधि काल कहलाते हैं। ये सब उपाधियाँ कहलाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, महाराजा शिव के यहाँ नित्य प्रति बेटा! विज्ञान का नृत्य होता रहता था। भगवान कृष्ण भवे सम्भवा वाचन्नमं ब्रह्मे असुतो मेरे प्यारे! देखो, महाराजा हनुमान और महाराजा शिव के पुत्र गणेशाय नमः ब्रह्मे मानो देखो, गणेश जी ये सर्वत्र मुनिवरों! देखो, इस आभा में रमण करते रहे हैं। इस आभाओं की चर्चाओं में रमण करना इनका कर्त्तव्य रहा है। मुनिवरों! देखो, आज मुझे इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है। मानो देखो, मैं तुम्हें यह उच्चारण कर रहा था क्या मुनिवरों! देखो, भगवान कृष्ण और महात्मा सुदामा मानो देखो, उनको महात्मा बाल्यकाल में कहते थे वह भिक्षा प्रवृत्ति पर अपने जीवन का निर्वाह करते रहते थे परन्तु पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत प्रोत हो करके वह आत्मा की चर्चा करते रहते थे। इसी प्रकार भगवान कृष्ण की भी चर्चा होती रहती थी।

आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है? कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए मेरे प्यारे! आज का विचार विनिमय क्या कि हम अपने में मुद्रित हो करके इस संसार को एक आभा में परणित करते चले जाएं, मानो चाहे वह राष्ट्रीय विज्ञान हो, चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान हो, चाहे भौतिक विज्ञान हो। मेरे प्यारे! सबमें वह प्रभु! गुथा हुआ है। विज्ञान और ज्ञान से परणित होने वाला वह प्रभुत्व कहलाता है। यह है बेटा! यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय

मिलेगा, मैं शेष चर्चाएँ तुम्हें कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या मुनिवरों! देखो, विद्यार्थी काल में ब्रह्मचर्य काल में आचार्य के चरणों में ओत प्रोत हो करके बेटा! संसार के विज्ञान को जाना जाता है मानो देखो, वही उनके चरणों में प्रतिभा का जन्म होता है यह है बेटा! आज का वाक् समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा ओ३म् देवा रथं ब्रह्म भू शोणां वाचन्न रथा .... स्थान : लाक्षाग्रह बरनावा समय : दोपहर 3 बजे

५ 17 03 1983 पुष्प 43 मुद्राएं यह अनुपम जगत् एक माला के सदृश है।

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, नाना प्रकार की ध्वनियों का और नाना प्रकार के क्रिया कलाप प्रायः हमारे समीप आते रहे हैं। जब हम उन क्रिया कलापों में अपने को ले जाते हैं और एक एक वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ करते हैं तो मानो एक ही वेदमन्त्र में, ब्रह्माण्ड का, एक एक ज्ञान का तन्तु उसमें निहित रहता है। एक ही वेदमन्त्र का चिन्तन करने से, मानव अपने को बहुत ऊर्ध्वा में ले जाता है। हमने तुम्हें बहुत पुरातन काल में, अपना वाक् प्रकट करते हुए कहा था कि ये जो वेदों का भिन्न भिन्न प्रकार का पठन पाठन करने का जो प्रकार है, प्रायः ऋषि मुनि बेटा! इस ज्ञान के ऊपर अध्ययन करते रहते थे और गान गाने वाला गान गाता ही रहता है। क्योंकि यहाँ, प्रत्येक परमाणु और अणु उद्गानं ब्रहे तत्त्वा वह सर्वत्र प्रभु का गान गा रहे हैं। वेद का एक एक शब्द है, उसमें भिन्न भिन्न प्रकार की ध्वनियाँ हैं। उसमें भिन्न भिन्न प्रकार के प्रकार हैं। परन्तु वह गान गाया जा रहा है। बेटा! एक एक शब्द, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है क्योंकि एक एक परमाणु बेटा! उसी की गाथा गाता रहता है।

तो आओ मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है? मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब बेटा! महर्षि कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज, अपने

विचारों का आदान प्रदान करते रहते थे। उनका विचार विनिमय चलता रहता था क्योंकि कागभुषुण्ड जी जहाँ ब्रह्मवेत्ता थे, वहाँ वह विज्ञान में, भी बड़े पारायण थे। महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! वे वह नाना प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों की चर्चा करते रहते थे। परन्तु उनसे कुछ वाक्य लाकर के वह अपने एकान्त स्थलियों में विद्यमान रहते थे।

भगवान कृष्ण और महर्षि सन्दीपन की ज्ञान चर्चाएं

बेटा! मैं इन वाक्यों में न जाता हुआ, मानो उनके जीवन चरित्र का अध्ययन करने वाला, बेटा! भगवान कृष्ण और सुदामा जी दोनों ही अध्ययन करते रहते थे। जब ऋषि मुनियों का जीवन बेटा! अध्ययन किया जाता है, तो मानव के जीवन की एक महान धारा बन जाती है। मानव का जीवन, एक पवित्रवत् बनने लगता हैं तो मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। केवल कुछ परिचय देने के लिए आया, मेरे प्यारे! देखो, जब वह अध्ययन करते थे, तो महाराज भगवान कृष्ण ने बेटा! एक समय अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा, क्या हे प्रभु! मैं विज्ञान में मुद्रित होना चाहता हूँ यह जो विज्ञान है, इसमें मैं कैसे मुद्रित हूँ? क्योंकि वेद के शब्द जब मुझे स्मरण नहीं आ पाते, तो उस समय मुझे क्या करना चाहिए? तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा संदीपन ऋषि ने ये कहा कि जब तुम मानो वेद के मन्त्र से वञ्चित होने लगो उसका विधिवत संगति न कर सको, तो उस समय तुम अपने प्रत्येक इन्द्रियों को समेट करके मानो अपने हृदय अगम्य ज्योति में प्रवेश कर जाओ, और अन्तर्हृदय की अगम्य ज्योति में जब तुम प्रवेश कर जाओगे, तो वह परमात्मा का जो हृदय है, वह ज्ञान से परिपूर्ण है तुम्हारा जो हृदय है दोनों का समन्वय करके और वह जो वेदवाणी है, वेदवाणी का वह जो प्रकाश है वह प्रकाश मानो देखो, तुम्हारी वाणी से उद्बुद्ध होने लगता है। मानो वह उद्धृत हो जाता है।

सोलह हजार वेदमन्त्रों को कण्ठस्थ कर्ता भगवान कृष्ण

तो विचार क्या है? मानो तुम अपने में मुद्रित होना चाहते हो। हे कृष्ण! तुम अपने में यह चाहते हो, कि मैं प्रत्येक वेद की ऋचा को अपने में अध्ययन करना चाहता हूँ। मेरे

प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि भगवान कृष्ण ने सोलह हजार वेद की ऋचाओं को मुनिवरों! देखो, अपने कण्ठस्थ किया और कण्ठस्थ करके उसका उद्गम चलता रहता था। प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को बेटा! जानने वाला मानो अपने में अनुसन्धानित हो रहा है। मुनिवरों! देखो, ब्रह्म की चर्चा हो रही है। ब्रह्म के विचारों का आदान प्रदान हो रहा है। मुनिवरों! देखो, सर्वत्र राष्ट्र में क्या, मानो ऋषियों में, इन विचारों की प्रतिभा की चर्चा होती रहती है। मुनिवरों! देखो, इसी वेद के मन्त्रों को लेकर के, वह अध्ययन करते रहते थे। वह अध्ययन, मानो जहां ज्ञान का अध्ययन, जहाँ आत्म तत्त्वों का अध्ययन, वहाँ मुनिवरों! देखो, उनका भौतिक विज्ञान मानो देखो, विशालता में परणित होता रहता था।

भगवान कृष्ण की अनुसन्धानवेत्ता बनने की इच्छा

मेरे प्यारे! देखो, गुरु आश्रम में, विद्या का अध्ययन करते हुए, मेरे पुत्रो! देखो, एक यन्त्र का निर्माण, एक समय मुनिवरों! देखो, महाराजा शिव ने, और हनुमान जी ने दोनों ने एक स्थली पर विद्यमान हो करके हिमालय की कन्दराओं में, एक यन्त्र का अध्ययन किया था और वह यन्त्र इस प्रकार का था, सूर्य जैसे उदय हो रहा है, उस यन्त्र के प्रभाव से मानो देखो, वह सूर्य को अपने में ढांप लेता था और रात्री बन जाती थी। मानो देखो, सूर्य की कृतिका का समावेश हो जाता थी। तो मेरे प्यारे! देखो, एक समय भगवान कृष्ण और सुदामा भी इस वाक् का अध्ययन कर रहे थे। उनके आभाओं का विज्ञानमयी जो तत्त्वमयी रहस्य था। उसके ऊपर अध्ययन हो रहा था। जब अध्ययन हो रहा था तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने भगवान कृष्ण ने महात्मा संदीपन ऋषि से यह कहा कि हे पूज्यपाद! आप तो वेद के मर्म को जानने वाले हैं। धर्म के मर्म को जानने वाले हैं परन्तु हम यह जानना और चाहते हैं कि इस यन्त्र का निर्माण कैसे होता है? इस यन्त्र के निर्माण की, हम प्रतिक्रियाओं को जानना चाहते हैं। हमें ऐसा कुछ स्मरण है उन्होंने कहा, हे कृष्ण! मानो तुम भौतिक विज्ञान में जाना चाहते हो या आध्यात्मिक विज्ञान में प्रवेश करना चाहते हो? उन्होंने कहा, महाराज! विज्ञानां ब्रह्मे कृतां लोकाः

हिरण्यं ब्रव्हे अस्तुतो दिव्या, बेटा! भगवान कृष्णा ने यह कहा कि मैं उस विज्ञान को जानना चाहता हूँ, जो विज्ञान वेद की प्रतिभा के गर्भ में विद्यमान रहता है। क्योंकि वेद नाम प्रकाश का है और देखो, मानव की प्रवृत्ति इस प्रकाश को जानना है, मानो प्रत्येक मानव की, प्रत्येक विद्यार्थी की, आचार्य के चरणों में ये उत्सुकता बनती है कि मैं प्रत्येक वस्तु का विशेषज्ञ बन जाँऊ। मानव उस धारा को जानना चाहता है, उसका विशेषज्ञ बनना चाहता है। भगवन! तुम्हारे चरणों में वैदिकता के मन्त्रों का बहुत सा अध्ययन किया है। परन्तु जो उनमें उद्गम है, उनमें जो रहस्य है, उन रहस्यों के लिए मैं आपके चरणों में विद्यमान रहता हूँ क्योंकि मेरा यह कर्त्तव्य है कि मैं अनुसन्धानवेत्ता बनूं। तो मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है उनके यहाँ जहाँ हमारे यहाँ विद्यालयों में बेटा! यज्ञशाला होती है, उन्हीं विद्यालयों में एक सूक्ष्म सी क्या विशाल विज्ञानशाला भी होती है। जहाँ ज्ञानशाला है मानो देखो, वहाँ विज्ञानशाला, जहाँ यन्त्रों का निर्माण, यन्त्रों का धातुपिपाद को निर्माण करने की विधिवत् क्रिया और यन्त्र उसमें विद्यमान रहते हैं।

भगवान कृष्णा द्वारा निर्मित अधेररत यन्त्र

तो मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जब भगवान कृष्णा ने बेटा! देखो, यन्त्रों को जानने का प्रयास किया। वहाँ एक वेद में एक वाक् आया। सम्भवते असुताम देवं प्रमाणं ब्रीहि व्रतो देवा अग्नि के धुम्र में यह विशेषता होती है क्या वह मानो कुछ वह कालिमा को ला करके, वह सूर्य की कृतियों को अपने में धारण कर लेता है। परन्तु वेद में जहाँ ये शब्द आया, वहाँ वेद के मन्त्रों में ये भी शब्द प्रतिपादित होने लगा, उन्हें कही उन्होंने कहा कि यह रात्रि क्यों होती है? मानो उन कणों को जानना चाहिए। मानो देखो, कहीं उन्होंने यह अध्ययन किया, सूर्यं ब्रह्मे पृथ्वी वचस्वाः यह पृथ्वी जैसे गतिशील रहती है, मानो देखो, सूर्य का जैसे जैसे आँगन में गति करती सूर्य के सन्मुख आ जाती हैं। वहीं प्रकाश होता रहता है, परन्तु ये भी यथार्थ है परन्तु रात्रि मानव के दिवस में भी रात्रि आ जाती हैं वहाँ उन्होंने इन्हीं धातु पिपादों पर अनुसन्धान करना प्रारम्भ किया और वह इन वाक्यों पर अनुसन्धान करने लगे, कि मानव के आँगन में,

जब मानव के मस्तिष्क में, सुसज्जिता आ जाती है। कृका अन्तति आ जाती है तो उस समय मानो देखो, मानव के नेत्रों के समीप अन्धकार आ जाता है। मानो देखो, इस अन्धकार की कालिमा को ले करके उन्होंने कहीं वेदों में ऐसा अध्ययन किया, क्या, मुझे तो उस वस्तु को जानना है। तो मेरे पुत्रो! मुझे ऐसा स्मरण है उन्होंने भयंकर वनों में संदीपन ऋषि के यहाँ, अनुसन्धान करने लगे और उन्होंने यन्त्रों का निर्माण करना प्रारम्भ किया।

मानो देखो, उस विद्यालयों में अनुसन्धानशाला है, विज्ञानशाला है, उन वैज्ञानिक यन्त्रों में नाना धातु पिपाद को लेकर के मेरे प्यारे! जल के परमाणुओं को, पृथ्वी के परमाणुओं से, समन्वय करते, अग्नि के परमाणुओं से, जब समन्वय किया गया, अग्नि के उन परमाणुओं में जिनमें धुम्र विशेष होता है, मानो उन परमाणुओं को ले करके, उन्होंने उस परमाणुवाद को अन्तरिक्ष में से लेना प्रारम्भ किया, कुछ धातुओं से लेना प्रारम्भ किया तो एक अंधेश्वर नाम के यन्त्र का निर्माण किया था, जिस अंदेश्वर नामक यन्त्र का मेरे प्यारे! देखो, महाभारत के काल में, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है मुनिवरों! देखो, जब जयद्रथ को नष्ट करने की प्रवृत्ति के लिए आएं तो उन्होंने महारानी रुक्मणी से इस यन्त्र का प्रहार कराया था तो मेरे प्यारे! देखो, वह सूर्य को ढांपने वाला यन्त्र था।

मेरे पुत्रो! मैं इस सम्बन्ध में भी मैं विज्ञान में तुम्हें नहीं ले जाना चाहता हूँ परन्तु विचार विनिमय क्या कि उस यन्त्र का भगवान कृष्ण ने निर्माण किया था। इसी यन्त्र को देखो, महाराजा शिव ने और महाराजा हनुमान ने इसी यन्त्र का दोनों की सम्मति से, मुनिवरों! देखो, त्रेता के काल में निर्माण हुआ था, और वह निर्माण होते हुए, जिस समय राम का काल था, जिस काल में देखो, भगवान राम देखो, और सम्भवे समा चटुत्म, रावण का, दोनों का संग्राम हो रहा था, मेरे पुत्रों! एक यान, उन्होंने ऐसे यन्त्र का, वायुमण्डल में प्रसारण कर दिया, कि अन्धकार छा गया। परन्तु देखो, वह रावण भी एक विशेष वैज्ञानिक था। उन्होंने ऐसे यन्त्र का निर्माण किया मानो जिससे वृष्टि हुई, अग्नि की वृष्टि होने लगी, सेना में त्राहि त्राहि हो गई।

तो विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! मैं यन्त्रकाल में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार

विनिमय केवल यह क्या भगवान कृष्णा, मानो संदीपन ऋषि के यहाँ जब अध्ययन करते रहते थे तो मेरे प्यारे! देखो, अध्ययन की प्रतिक्रियाएं मानो प्रारम्भ रहीं, अध्ययन चलता रहा, अड़तालीस वर्षों तक मुनिवरों! संदीपन ऋषि के यहाँ उन्होंने अध्ययन का कार्य किया। मानो अध्ययन उनका चलता रहा अड़तालीस वर्षो में वह मुनिवरों! देखो, विज्ञान में भी पारायण होने लगे। जहाँ बुद्धिमान, बुद्धिमता जहाँ मुनिवरों! देखो, उनका विज्ञान, विशालता में रहता था, वहाँ मेरे प्यारे! उनका सौम्य क्रिया क्लाप था, वह चरित्र की प्रतिभा थी वह उस महानता में रहती क्या मानो देखो, उसका कोई अब्रहो ब्र्व्हे स्वसता मानो देखो, उसकी संतुलना, उस समय कोई कर नहीं पा सकता था।

आज मैं विशेष चर्चा नहीं प्रकट करूंगा क्योंकि इस सम्बन्ध में मानो कल मेरे प्यारे! महानन्द जी कुछ प्रकाश दे सकेंगे, परन्तु आज का विचार विनिमय तो केवल यह है कि अम्ब्रहो सम्भवः देवाः। मेरे प्यारे! देखो, मैं उस काल में जा रहा था, जहाँ भगवान कृष्णा और सुदामा जी दोनों मुद्रित हो करके, ऋषि मुनियों के मानो साहित्यों की चर्चा करते रहते थे। दोनों उनके जीवन चरित्र, उनके विचारों का जो आदान प्रदान होता रहता था, उसके ऊपर उनका विचार विनियम होता रहा, तो मेरे प्यारे! देखो, उनका विचार क्या होता? वह अपने में मुद्रित होने के लिए उन्होंने मुद्रित होने के लिए आत्म तत्त्व की चर्चा करते रहते थे। क्या मानव अपने में कैसे मुद्रित हो जाता है? मानो देखो, अग्नि को पृथ्वी से मिलान करना चाहता है और अग्नि, और पृथ्वी को, वायु से मिलान करना चाहता है और वायु को अन्तरिक्ष में, मानो देखो, अग्नि से समन्वय करना चाहता है। मानो देखो, इस प्रकार का, उनका विचार विनिमय आदान प्रदान होता रहता था। उन विचारों को ले करके दोनों अपने में सम्भवः दिव्यम् गतप्रवः अस्वः रुद्रोः भागः दिव्यस्ते। मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, कि वह अपने में मुद्रित होना और योगाभ्यास के द्वारा कहीं अग्नि और पृथ्वी के मुद्रित हो करके, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर जाते थे, और चिन्तन करते रहते थे कि अग्नि का भण्डार इस पृथ्वी में कैसे गति कर रहा, मानो कैसे धातुओं को तपा रहा है, कैसे मानो तृण बन रहा है? इसी प्रकार वह कहीं चन्द्रमा के मुद्रित होते हुए, शीतली आभा में रमण कर जाते और शीतली

आभा में रमण करने से मुनिवरों! वे शीतली आभा को जान करके, वह चन्द्रमा की कान्ति के द्वारा बेटा! अपने मन की प्रवृत्ति को मानो देखो, उसमें परिवर्तित करते रहते थे। विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! इसी प्रकार सूर्य विज्ञान, नाना प्रकार का मानो देखो, मुद्रा जानते थे। मुद्रा क्या होती है? मुद्रा यह है एक मानव ध्यानावस्थित होना चाहता है एक मानव बेटा! देखो, मुद्रित होना चाहता है वह अपने नेत्रों की ज्योति की श्रोत्रों की धारा को, घ्राण की मन्द सुगन्ध को और त्वचा की प्रीतियों को मेरे प्यारे! देखो, वाणी के उद्गम को, वह एक सूत्र में लाना चाहता है। वह एक सूत्र को बनाना चाहता है। यदि उसने अपनी पाचों अंगुष्ठानों को, एक सूत्र में लाने का और उनको मुद्रित करने का प्रयास कर लिया वहाँ प्राण शक्ति को लाने का प्रयास कर लिया है तो बेटा! पांचों इन्द्रियां, इन्द्रियों का विषय, हृदय में प्रवेश हो करके मानो देखो, हृदय में वह प्रचण्ड ज्ञान रूपी अग्नि का वह याग हो करके मेरे पुत्रों! देखो, मानव की बुद्धि के सम्पूर्ण तन्तुओं का स्पष्टीकरण हो जाता है। और मानव के जब मस्तिष्क के तन्तुओं का स्पष्टीकरण हुआ, तो वही मानव आत्म परमात्मा की, आत्मा की, प्राण का जितना विज्ञान है वह मानो उस महापुरुष के लिए खिलवाड़ की भांति हो जाता है।

वाणी के दो स्वरूप

तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, ये देखो, कागभुषुण्ड जी का और महर्षि लोमश मुनि महाराज का विचार विनिमय होता रहता था मेरे प्यारे! देखो, कहीं मानव अग्नि के ऊपर अनुसन्धान करना चाहता है, कहीं वायु के ऊपर विजित होना चाहता है, कहीं मानो देखो, वह शब्द के ऊपर विजित, अपने को विजय करना चाहता है। कहीं वाणी को विजय करना चाहता है बेटा! जब वाणी पर विजय कर लेता है। तो मेरे प्यारे! उसका जो मानव दर्शन है, वह उसका ऊँचा बन जाता है। वाणी के बेटा! दो प्रकार के स्वरूप माने गएं हैं। एक वाणी का स्वरूप मानो देखो, एक वाणी का स्वरूप स्वादनों

में, रसों में परणित हो जाता है। एक रसों को विजय करने में परणित हो जाता है।

सुधन्वाकेतु और अंगिरस ऋषि का सम्वाद

बेटा! जो आज वाणी से उद्गान गा रहा है, वेद की प्रतिभा का वर्णन कर रहा है मुझे स्मरण आता रहता है जब हमारे यहाँ ऐसा वर्णन आया है कि महर्षि अंगिरस मुनि महाराज एक समय बेटा! सुधन्वा केतु ऋषि के द्वार पर विद्यमान थे। जब विद्यमान थे, तो अंगिरस ऋषि ने उनसे कहा कि प्रभु! सुधंवाकेतु ऋषि से कहा कि मैं अपनी वाणी पर विजय करना चाहता हूँ। मैं अपनी इन्द्रियों पर विजय करना चाहता हूँ। तब उन्होंने कहा कि कौन सी धारा पर विजय करना चाहते हो? उन्होनें कहा प्रभु! मैं मानो वैदिक प्रकाश को लेकर के प्रकाश में अपने को स्नानित करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रिय।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऐसा मैंने उनके सम्बन्ध में कुछ अध्ययन किया कि अंगिरस ऋषि महाराज और सुधंवाकेतु ऋषि महाराज का, दोनों का सम्वाद चलता रहता था और दोनों के सम्वाद में यह आया कि वाणी को वह मानव ऊँचा बना सकता है जो मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसि बन सकता हो, और ब्रह्मवर्चोसि कौन बनता है? जो वाणी को पवित्र बना लेता है, और दोनों एक ही सूत्र के मनके हैं। परन्तु विचार यह है, कि दोनों ही एक सूत्र के मनके हैं, परन्तु विचार में यह आया, कि सम्भवो देवाः वाणी को कैसे पवित्र किया जाए?

आहार के प्रकार व ग्रहण

बेटा! उसका आहार पवित्र होना चाहिए। आहार में पवित्रता हो, आहार कैसा होना चाहिए? बेटा! एक समय तो मानव वायु का आहार होना चाहिए और एक समय अन्नाद का आहार होना चाहिए। और एक समय मानव अपनी प्रवृत्तियों को संयम में लाने के लिए चिन्तन का आहार होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, तीन प्रकार के आहार होते हैं। मानव के द्वारा, जिनसे मानव की प्रवृत्तियों में, महानता का जन्म होता है। मेरे पुत्रो! देखो, सबसे प्रथम मानव को मुनिवरों! देखो, आहार पान करना चाहिए क्या सम्भवे

देवा! वायु का आहार, मेरे पुत्रों! प्रातःकालीन जब मानव अपने आसन से पृथक होता है। अपनी नाना प्रकार की क्रिया कलापों से निवृत्त हो करके वह चिन्तन के लिए मानो सबसे प्रथम वह अपने में मुनिवरों! देखो, प्राणायाम, शीतली प्राणायाम और अग्नि प्राणायाम, सोमभुक प्राणायाम नाना प्रकार के प्राणायामों का यहाँ वर्णन आता रहता है। परन्तु देखो, वायु का आहार वायु के ऊपर अपना आहार करना चाहिए जो मानो देखो, वायु से आहार कर लेता है। उसके पश्चात् वह अन्नाद के आहार को पान करना चाहता है। बेटा! अन्न क्या है? मुनिवरों! देखो, अन्न उसे कहते हैं, जो प्रभु ने प्रसाद रूप में सृष्टि के प्रारम्भ में बेटा! मानव को प्रदान किया। मेरे प्यारे! देखो, यह जो अन्न है मेरी प्यारी माता अपने भोजनालय में अन्न को तपा रही है परन्तु जब तपाती रहती है तो माता अपने पुत्र की प्रवृत्ति को ऊँचा बनाने के लिए गायत्री छन्दों का पठन पाठन कर रही है। गायत्री छन्दों का जब पठन पाठन हो रहा है, वेद की ध्वनियाँ हो रही हैं, मुनिवरों! देखो, वह अन्न को तपाया जा रहा हैं। तो वह जो माता के उद्गार है। वाणी के वाणी का सम्बन्ध मुनिवरों! देखो, हृदय से होता है। हृदय का सम्बन्ध वेद रूपी प्रकाश से होता है। और वह जो प्रकाश है मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है। मेरे प्यारे! देखो, उससे वह जो परमाणु हैं, उसमें जो एक मानो यन्त्र बन गया है, एक आकार बन गया है माता की वाणी का, बेटा! वह अन्न में विद्यमान हो जाता है। वह संस्कारित्त हो जाता है। मुनिवरों! देखो, उस अन्न को पुत्र पान करता है, तो उसकी बुद्धि महान् बनती है। पतिदेव पान करता है, तो उसकी बुद्धि महान् बनती है। कोई महापुरुष अतिथि आ करके पान करता है, तो बेटा! उसकी बुद्धि भी पवित्र बनती है, परन्तु वह अन्न कैसा हो? सात्विक अन्न हो और माता के, वेद के मन्त्रों की ध्वनि वाला अन्नाद होना चाहिए।

प्रभु का दर्शन

मेरे प्यारे! देखो, मैं इसमें इतने कठोर, मानो देखो, इतने गम्भीर रहस्यों में तुम्हें नहीं ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार विनिमय, मेरे पुत्रो! देखो, अध्ययन करना, मानो देखो,

आहार करना, उसके पश्चात् जब आहार पवित्र होता है, तो मानव के व्यवहार की प्रवृत्तियाँ बन जाती हैं। व्यवहार पवित्र बनता है मेरे पुत्रों! वह सबसे प्रथम व्यवहार में, जनता में जनार्दन को दृष्टिपात करता है। मेरे प्यारे! वह समाधिष्ट होता है तो अपनी प्रवृत्तियों को आन्तरिक जगत् में ले जा करके वे परमपिता परमात्मा की गम्भीर सागर में चला जाता है, गम्भीर जगत् में चला जाता है। चेतना के सूक्ष्म रहस्य में चला जाता है, प्राण की आभा को जान करके मेरे पुत्रों! देखो, वह ध्यानावस्थित हो करके, वह बाह्य जगत् को आन्तरिक जगत् में दृष्टिपात करता है और आन्तरिक जगत् को बाह्य जगत् में दृष्टिपात करता है। बेटा! उसका ये संसार और हृदय का संसार दोनों का समन्वय हो करके बेटा! प्रभु ही प्रभु दृष्टिपात आने लगता है।

तो मेरे प्यारे! मैं कहाँ चला गया हूँ? मैं दूरी नहीं जाना चाहता हूँ। आज मुनिवरों! देखो, मैं हम तुम्हें उस क्षेत्र में ले जा रहे हैं कि गम्भीर अध्ययन होना चाहिए। गभीर अध्ययन की चर्चा क्या है? मुनिवरों! आहार व्यवहार को पवित्र बनाना है। वाणी उद्गान गा रही है। वाणी प्राण को ले करके उद्गान गा रही है, मानो आहार गान गा रहा है तो प्राण को ले करके गा रहा है। मुनिवरों! देखो, प्राण ही मुनिवरों! देखो, प्राण ही मुनिवरों! देखो, अन्तिम मण्डले सतो चिन्तनाति ब्रहे वह जो चिन्तन सुधा है जिसके गर्भ में जाने से बेटा! प्राण के साथ ही देखो, बेटा! मन को पृथ्वी के गर्भ में ले जाता है, पृथ्वी के गर्भ में जो नाना प्रकार का धातु पिपाद का निर्माण हो रहा है, मानो उसको लेकर वही मुनिवरों! प्रवृत्ति उसकी और लोकों में प्रवेश कर जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, ज्ञान और विज्ञान दोनों उसके सिद्ध हो जाते हैं वह ज्ञानी भी है, मानो देखो, वैज्ञानिक भी है। और वह मुनिवरों! विज्ञानवेत्ता बन करके वह इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करता है।

तो विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! विचार क्या है? वायु मुनि महाराज और उन दोनों के विचारों का आदान प्रदान होता रहता था। विचारों की प्रतिभा, इतनी महानता में मुनिवरों! देखो, उसके पश्चात मानो देव पूजा, याग में परिणत होता है। मेरे पुत्रों! देखो, उस परिणत होने में, उसकी आभा का एक पवित्र जन्म हो जाता है तो मुनिवरों! देखो,

यह उसकी मुद्रिका कहलाती है, यह मुद्रा कहलाती है। जिस मुद्रा के ऊपर मैं, कई समय तुम्हें से विचार दे रहा हूँ।
मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम प्रातःकालीन मुनिवरों! देखो, प्राण को ले करके, वह अंगुष्ठानों को ले करके वायु को विजय करना है वायु अंगुष्ठानों को अपनाने के लिए तत्पर हो जाएं। अग्नि को विजय करना, हो तो अग्नि और पार्थिवता से मिलान हो जाए, बेटा! देखो, यह अपने हृदय अगम्य् ज्योति से और हृदय असुताम् इन्द्रियों के द्वारा मानव अपने में स्पष्टीकरण करता है। भगवान कृष्ण ने बेटा! देखो, यही विशेषता थी, कि भगवान कृष्ण का जीवन मुनिवरों! देखो, जब उसका अध्ययन करने का, हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ। तो ऐसा मानो मुझे दृष्टिपात हुआ, कि उनके जीवन में मानो बाह्य जगत और आन्तरिक जगत् दोनों मानो सुसज्जित थे और दोनों पर मुनिवरों! देखो, अनुशासन करने के नाते, मेरे पुत्रों! देखो, वह विराट स्वरूप की प्रतिक्रिया को भी जानते थे। क्योंकि परमात्मा का यही तो विराट स्वरूप होता है क्या वह आन्तरिक जगत् को बाह्य जगत् को, दोनों को एक दूसरे में समन्वय करने वाले हैं। जैसे प्राण और अपान दोनों को समन्वय करने से, अपान से, प्रकृति से अस्वानम को जाना जाता है परन्तु देखो, प्राण अपान को जानने से अन्तरिक्ष के परमाणुओं में किस किस गति से परमाणु गति करता है? वह जाना जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, हमारे ऋषि मुनियों ने, जब विज्ञान और ज्ञान के ऊपर अध्ययन प्रारम्भ किया तो मुनिवरों! आध्यात्मिक विज्ञान भौतिक विज्ञान दोनों का समन्वय करने का प्रयास किया, दोनों का समन्वय जब तक नहीं किया जा सकता जब तक यह संसार ऊँचा नहीं बन सकता।
तो मेरे पुत्रो! आज का हमारा यह विचार, क्या कह रहा है? हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम ऋषि मुनियों के ये विचार हैं। ऋषि मुनियों की जो धारणाएं हैं, उनको महान् बनाने के लिए बेटा! हम सदैव अपने विचार व्यक्त करते रहते हैं।
आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वाक्य यह क्या कह रहा है? मुनिवरों! देखो, हम किसी किसी अस्वत लोकों में गति करने के लिए तत्पर हो जाते हैं परन्तु बेटा! जब

मुझे भगवान कृष्णा और नाना ऋषि मुनियों का जीवन स्मरण आता रहता है। मेरे प्यारे! ऋषि मुनि यन्त्रों का निर्माण करके बेटा! कहीं वह मंगल में गए हैं, कहीं मानो वह सूर्य लोकों तक की यात्राएं हमारे आचार्यों ने विज्ञान के द्वारा की हैं। जैसे सूर्य की किरण है जो की गति कर रही है उसी के साथ अपनी प्रवृत्ति को ले जाना, अपने मन की धाराओं को ले जाना उनके ऊपर जब गम्भीर अध्ययन करना, बेटा! यही मुनिवरों! देखो, अपने मानवीय जीवन का अध्ययन करना है। इस अध्ययन प्रवृत्ति से ही ये समाज ऊँचा बन सकता है, ये अध्ययन की प्रवृत्ति से ही विद्यालय ऊँचे बनते हैं, इन्हीं मानो प्रवृत्तियों से राष्ट्र पवित्र बनता है। तो मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है? कि विज्ञान के नाना तंतुओं में, जब मानव प्रवेश करता है, नाना प्रकार के तंतुओं की वार्त्ताओं में रमण करता है तो मानो अपने में गम्भीर मुद्रित हो करके अग्नि का चलन करता है, अग्नि की आभा में मानो अपनी प्रवृत्तियों की समिधा बना करके हृदय रूपी अग्नि में बेटा! देखो, उनका स्वाहा कह करके अन्तरिक्ष में प्रवेश कर जाता है, वह मानो देखो, अन्तरिक्ष में रमण करता है। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, कि हमारे यहाँ ऋषि मुनियों ने नाना प्रकार की चित्रावलियों का निर्माण किया था।

द्वापर में चित्रावली

बेटा! वह चित्रावली भगवान कृष्णा के द्वारा भी थी। जिस काल में मुनिवरों! देखो, महाभारत का काल था। महाभारत का काल देखो, जब संग्राम प्रारम्भ होने लगा, तो मुनिवरों! देखो, भगवान कृष्णा धृतराष्ट्र के द्वारा पहुंचे। महाराजा धृतराष्ट्र नेत्रहीन थे, मानो नेत्र नहीं थे, प्रज्ञा चक्षु थे, उनका मानो देखो, संजय प्रव्हा उनका एक सुमन था। मंत्री अपनी आभा में उनके चरणों की आस्वातम वन्दना करता रहता था। मेरे प्यारे! देखो, भगवान कृष्णा ने यह कहा कि हे भगवन! देखो, तुम्हारे इन राजकुमारों में संग्राम होने जा रहा है तुम क्या चाहते हो, तुम्हारी कोई इच्छा है? उन्होंने कहा कि संग्राम होने जा रहा है तो हे कृष्णा! मैं चाहता हूँ कि मेरे द्वारा ऐसा कोई यन्त्र होना चाहिए ऐसा यत्न

होना चाहिए, जिससे यह क्रिया कलाप जो देखो, कुरुक्षेत्र में हो वह मुझे हस्तिनापुर में वर्णित होता रहे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा बहुत प्रिय, तो भगवान कृष्णा ने मानो देखो, संदीपन ऋषि महाराज के चरणों में विद्यमान हो करके उन यन्त्रों को जाना था। मेरे पुत्रो! देखो, यन्त्र क्रिया में लाना, लाया हुआ यन्त्र उन्होंने बेटा! चित्रावली धृतराष्ट्र के यहाँ प्रदान की और वहाँ कुरुक्षेत्र में संग्राम हो रहा है और उस यन्त्र में मानो देखो, उसका चित्र आ रहा है, वह चित्र मानो देखो, जैसे आता उसी प्रकार मानो संजय मानो देखो, प्रज्ञा चक्षु को प्रदान करता रहता था मुनिवरों! विचार विनिमय क्या? विज्ञान मानव की चरम सीमा पर रहा है किसी किसी काल में। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था मैं वैज्ञानिक नहीं हूँ मैं विज्ञान के तंतुओं में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। परन्तु देखो, यहाँ नाना प्रकार के चित्र बेटा! अन्तरिक्ष में गति करते रहते हैं।

विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! देखो, आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है कि परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते रहें। बेटा! यही चित्रावली यही यन्त्र लंका में जब राम और रावण का संग्राम हो रहा था, तो मुनिवरों! देखो, इसी यन्त्र के द्वारा, चित्रावली के द्वारा राम और रावण के संग्राम को भरत अपने में, अयोध्या में दृष्टिपात कर रहा था। मेरे प्यारे! वही यन्त्र वही संग्राम की प्रतिक्रिया, हिमालय की कन्दराओं में अपने राष्ट्र में विद्यमान हो करके, महाराजा शिव और पार्वती उनको दृष्टिपात करते रहते थे। मेरे प्यारे! देखो, यहीं तक नहीं अब्रणा ब्रह्मे सम्भवां देवतवां मुनिवरों! देखो, जब सूर्य, में किसी भी प्रकार का अग्नि के प्रचण्ड से मुनिवरों! देखो, आक्रमण हो करके और सूर्य में गढेला बन जाता है। तो मेरे प्यारे! ऐसे चित्र महाराजा शिव के द्वारा थे कि जैसे उनका वहाँ आक्रमण हुआ। परमाणुओं का आक्रमण हुआ, सूर्य में गढेला हुआ, उसका चित्र मुनिवरों! देखो, महाराजा शिव के यन्त्र में प्रवेश करता था। और वह उन्हें दृष्टिपात होता रहता था। मेरे पुत्रो! मैं विज्ञान के क्षेत्र में विशेष नहीं ले जाना चाहता हूँ। विचार यह देना चाहता हूँ क्या मुनिवरों! देखो, हमारा जो मानवीय वैदिक साहित्य है, वेद हमें क्या कह रहा है? वेद हमें किस मार्ग के लिए पुकार रहा है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल भी स्मरण है, पुत्रों! जब

महाराजा मार्कण्डेय ऋषि महाराज अपने मानो देखो, इस चन्द्रमा और पृथ्वी दोनों की आकर्षण शक्ति के द्वारा अपना स्थान बनाए हुए थे। अपना यन्त्र बनाए हुए थे, महाराजा शिव और पार्वती दोनों मानो देखो, यन्त्र में लगभग छह माह तक मार्कण्डेय ऋषि महाराज का संग होता था। तो मेरे पुत्रों! मैं विज्ञान के क्षेत्रों में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ ऋषि मुनियों का जीवन और देखो, वैज्ञानिको का जीवन, परन्तु देखो, आहार और व्यवहार जब पवित्र होते हैं तो मानव के मस्तिष्क की जो ग्रंथियाँ हैं उनका स्पष्टीकरण हो जाता है। वे प्रभु की आभा में रमण करते रहते हैं।

बेटा! देखो, यह तो मानव का विज्ञान है परन्तु कल समय मिलेगा तो परमात्मा के विज्ञान की चर्चा करेंगे कि वह प्रभु! कितना महान वैज्ञानिक हैं? बेटा! आज का विचार विनिमय समाप्त। अब मुझे समय मिलेगा, आज के विचारों का अभिप्राय क्या? कि अब भगवान कृष्ण ने, नाना ऋषि मुनियों के जीवन चरित्र अध्ययन कर कर के नाना प्रकार के विज्ञान को जाना बेटा! यह आज का वाक् समाप्त बेटा! अब वेदों का पठन पाठन होगा। लाक्षागृह, बरनावा।

६ 18 03 1983 पुष्प 43 महानन्द जी का राष्ट्र व समाज को उन्नत करने पर विचार

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महान् देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे देव इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के कण कण में विद्यमान है। मानो उसी की प्रतिभा है जो प्रतिभा, इस संसार की एक एक वस्तु में विद्यमान हैं बेटा! हमारा वेद का मन्त्र, उस एक एक वेद के मन्त्र में बेटा! ज्ञान और विज्ञान की तरंगे विद्यमान रहती हैं। क्योंकि परमपिता परमात्मा का ये जो अमूल्य जगत् है मानो यह ब्रह्माण्ड, उस परमपिता परमात्मा का आयतन माना गया है अथवा यह उसका गृह माना गया है। जैसे यह मानव शरीर है, ये आत्मा का आयतन माना गया है इसी प्रकार

मानो ये संसार एक आभा में रमण कर रहा है। ज्ञान और विज्ञान में गति करने वाला, बेटा! ये ब्रह्माण्ड एक महान् देव की गाथा गा रहा है। क्योंकि देव की गाथा कौन गाता है? देव की गाथा कौन गा रहा है? उस देव की गाथा इस प्रकृति का एक एक परमाणु गा रहा है मानो एक ब्रह्माण्ड की जो रचना है वह रचना ब्रह्म की ही गाथा गा रही है। मेरे प्यारे! परमाणु अपने में गतिशील रहता है परन्तु उसे कौन गति दे रहा है? कौन मानो उसकी रचना में सहायक बन रहा है? मेरे प्यारे! यह चेतना वह चैतन्य देव है। तो बेटा! ये भिन्न भिन्न प्रकार की रचना है, इन रचनाओं के मूल में कोई वस्तु है। इन रचनाओं के मूल में मानो देखो, कोई एक रचाने वाला है और वह रचाने वाला मेरा प्रभु है, मेरा अनुपम देव है।

ब्रह्म की रचना

बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में बेटा! ऋषि मुनि विद्यमान हो करके मानो अपने में उस प्रभु का चिन्तन करते रहते थे और उसके ब्रह्माण्ड को निहारते हुए उस ब्रह्माण्ड की आभा में रमण करना बेटा! एक सर्वत्रता का कर्त्तव्य रहता था। मैं बेटा! इससे पूर्वकाल में भगवान कृष्ण की चर्चा कर रहा था। मेरे प्यारे! देखो, कृष्ण की चर्चा करते हुए, संदीपन ऋषि और इत्यादि ऋषि मुनियों की जहाँ चर्चाएँ आती रहती हैं। मानो जहाँ ब्रह्म का वर्णन है, जहाँ मुनिवरों! एक आभा में रमण करने वाला यह अनुपम ब्रह्माण्ड है जिसके ऊपर गुरु शिष्य दोनों विद्यमान हो करके, अपना प्रायः विचार विनिमय करते रहते थे। मेरे प्यारे! वह विचार, एक अव्यहत गति से, गतिशील रहने वाला, वह विचार अन्तरिक्ष में विद्यमान रहता है। उसी अन्तरिक्ष के ऊपर, मेरे प्यारे! परमाणुओं का समूह, परमाणुओं की आभाएं बेटा! तरंगे मानो देखो, इस मानो देखो, अन्तरिक्ष में तरंगित होती रहती हैं। अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, प्रत्येक आभ्यं ब्रह्म सूक्ता याज्ञां ब्रह्मे लोकाः मानो देखो, यह याग गति करता रहता है, यह संसार एक प्रकार की यज्ञमयी, आभामयी, ध्वनिमयी, श्रोत्रमयी में ही

बेटा! सर्वत्रता में ही ब्रह्म की आभा और ब्रह्म की रचना ही दृष्टिपात आती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, बहुत पुरातन काल हुआ, जब बेटा! कुछ तो चर्चाएँ हुई थीं। नाना ऋषि मुनियों का कुछ विचार विनिमय हुआ था परन्तु वह विचार एक भव्य आभामय, ज्योतिमय बन करके रह गया। तो मेरे प्यारे! देखो, मानव के जीवन में भिन्न भिन्न प्रकार के विचार उदधृत होते रहते हैं। उन विचारों को लेकर के, मानव ऊर्ध्वा उड़ान उड़ता रहता है। जो बेटा! देखो, गुरुदेव के चरणों में विद्यमान हो करके, हम सदैव मानो परम्परागतों से एक आभा का जन्म होता रहा है। आज मैं बेटा! विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूंगा क्योंकि मेरे प्यारे! महानन्द जी भी दो शब्दों की आज कुछ अब विवेचना करेंगे, अब मैं अपने वाक्यों को यहीं विराम देना चाहता हूँ।

पूज्य महानन्द जीः का प्रवचन ओ३म् श्वंजना रथं यज्ञं भविताः देवं अन्तरिक्षो रजतम् नमा देवं भद्रा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मेरे भद्र ऋषि मण्डल! आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने, मुझे बहुत समय के पश्चात् कुछ समय प्रदान किया। जैसे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी अभी प्रभु के सम्बन्ध में या कृष्णा जी के सम्बन्ध में, संदीपन ऋषि के सम्बन्ध में, अपना विचार देते रहे और वह उनका विचार मानो एक अमृतमयी धारा में रमण करने वाला विचार है। बहुत पुरातन काल हुआ, जब मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह निर्णय कराया था, कि यह जो आधुनिक काल का जो यह काल है वर्तमान का यह जो जगत है यह अपनी अपनी आभाओं से बहुत दूरी चला गया है। अपने पूज्यपाद गुरुदेव को मैं परम्परागतों से ही, कुछ परिचय कराता रहता हूँ और आज भी मैं कुछ परिचय कराने के लिए आया हूँ। बहुत समय हुआ, जब मैंने बहुत से वाक्यों को उद्धृत करते हुए कुछ परिचय दिया था। आज भी मैं वर्तमान में भी अपना कुछ वार्त्ताओं का परिचय देना चाहता हूँ और वह परिचय क्या है? आज मैंने एक युक्तियाँ प्रगट की, एक वेद की लोलुक्तियां थी, वे याग के सम्बन्ध में संकेत देता रहता है। एक वाक् यह है कि मानव के सुन्दर रूपों में रमण करने वाला उसका चरित्र उसकी महानता का प्रदर्शन होता रहता है और एक वाक् उसमें विष्णु भवे कृतं ब्रहेन राये नमस्ते आज राष्ट्र की भी चर्चा होती रहती है। जहाँ राष्ट्र की चर्चाएँ होती रहती हैं। जहाँ मानो देखो, भिन्न भिन्न प्रकार

के विचारों का उद्गम होता रहता है जहाँ राष्ट्र की चर्चा होती रहती है अथवा उनकी उद्गमता, उनकी भव्यता जो मानवीय मस्तिष्कों में निहित रहती है जो मानव राष्ट्र की आभा में रमण करने वाला है।

विज्ञान से समाज में अराजकता

मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा था, कि ये जो संसार है आधुनिक काल का जो यह जगत् है मानो नाना प्रकार की रूढ़ियों वाला जो जगत् है, समाज है, इन रूढ़ियों का विनाश कैसे हो? परन्तु पूज्यपाद गुरुदेव ने इसका निराकरण करते हुए, बहुत सी वार्त्ताओं की चर्चा इन्होंने प्रगट की। आज मैं भी उन्हीं वाक्यों में हम जाना चाहता हूँ। क्या मानो देखो, प्रत्येक वस्तु को मानव को व्यापक रूप से दृष्टिपात करना चाहिए। जिस समाज में, जिस मानव में व्यापकवाद नहीं होता वह समाज और वह काल समाज के साथ में इसका परिवर्तन द्वितीय रूपों में परणित हो जाता है। इससे पूर्व पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वर्णन कराया कि जिस काल में विज्ञान में मानो दूरिता आ जाती है। विज्ञान के दूरिता होने के कारण ही राष्ट्र में, समाज में मानो देखो, अराजकता का प्रसारण हो जाता है। जब विज्ञान का दुरूपयोग राष्ट्र जब व्यवसायी बन जाता है राष्ट्र को जब द्रव्य की और पदों की लोलुपता हो जाती है उस समय वह राष्ट्र कुछ काल में रसातल को चला जाता है।

परन्तु देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रश्न किया कि ये विज्ञान आपने कहा है। परन्तु देखो, विज्ञान के सम्बन्ध में यह बहुत सूक्ष्म वार्त्ता है आधुनिक काल की जब मैं विद्यालयों में, आधुनिक काल के मानो देखो, जब मैं वैज्ञानिकों के समीप जाता हूँ और वैज्ञानिकों से चर्चा करता हूँ कि यह तुमने कितना ऊर्ध्वा में विज्ञान जाना है? तो वह विज्ञान की वार्त्ता प्रगट करते हैं और विज्ञान को कहते हैं हमारा यान कहीं मंगल के लिए गति कर रहा है। कहीं चन्द्रमा के लिए गति कर रहा है। परन्तु ये विज्ञान बहुत पूर्वतम ब्रहे आधुनिक जो काल है, वह भी विज्ञान के ऊपर अनुसन्धान कर रहा है। परन्तु जब मैं पुरातन काल के उस विज्ञान में जाना

चाहता हूँ तो आधुनिक काल का जो विज्ञान है जो वह अभी तक मानो देखो, इकाई में भ्रमण कर रहा है। वह इकाई में क्यों भ्रमण कर रहा है? इसके ऊपर मैं आज विचार देना चाहता हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई वार्त्ताएं प्रगट करते हुए कहा था, विज्ञान की चर्चा करते हुए राष्ट्रों की चर्चा करते हुए, वैदिक साहित्य के मानो देखो, प्रश्नों को जब हम अपने में क्रियात्मक लाना चाहते हैं? तो प्रायः हमें ऐसा दृष्टिपात होता है क्या उनकी आभाएं कितनी विचित्रता में रही हैं। उनका विज्ञान कितनी महानता में रहा है। परन्तु आधुनिक काल का विज्ञान मानो देखो, सूर्यों की किरणों को अब तक इसके विज्ञान में मानो इकाई क्या इसको जानने को तत्पर होना तो चाहता है। परन्तु इतना नहीं होना चाहता। मैंने वह काल भली भांति दृष्टिपात किया हैं जिस काल में देखो, महाराज हनुमान इत्यादि अपने विद्यालय में, अपनी मानो देखो, विज्ञानशालाओं में, वह एक एक सूर्य की किरणों को ले करके, यन्त्रों में, उससे विद्युत ले करके उस विद्युत को यन्त्रों में प्रवेश करके, जो आधुनिक काल का जो यन्त्र वह पृथ्वी के रसों से गति करता है, उस काल का जो यन्त्र था, वह सूर्य के रस को ले करके सूर्य की किरण को साथ ले उसी से विद्युत ले करके देखो, वह यान लोकों की परिक्रमा करता रहता था। आधुनिक काल का जो विज्ञान है वह पृथ्वी के रसों को ले करके, पृथ्वी के रसों की कोई सीमा होती है, मानो जिस लोक का यह विज्ञान है, जिस लोक की यह प्रतिभा है, वह उसी की आभा में यह गति कर रहा है परन्तु देखो, पुरातन काल का विज्ञान है वह शक्तिशाली है उस विज्ञान में कोई न कोई मानो देखो, धुरी है और वह धुरियों में गति करता रहता है। परन्तु पुरातन काल का विज्ञान एक महानता की ज्योति में रहा है, उसमें अभिमान नहीं होता क्योंकि राष्ट्र की आभाएं अपनी आभा में मानो निहित है। इसके पश्चात् राजा जब व्यवसायी बना है, जिस काल में, उसी काल में, प्रजा का विनाश हुआ है। उसी काल में अग्नि की धाराओं का, अग्नि की तरंगों का जन्म हो गया हैं जिससे मानव, मानव की प्रतिभा नष्ट हो गई है। मानो इसी प्रकार आज मैं विशेष विवेचना नहीं देना चाहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ मैं परिचय देना चाहता हूँ। आधुनिक काल का वैज्ञानिक चन्द्रमा में जाने के लिए तत्पर हुआ, परन्तु चन्द्रमा से

जब कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तब चन्द्रमा की यात्रा में सान्त्वना को प्राप्त हो गया है। इसके मूल में क्या क्योंकि आज का जो विज्ञान है, जो जानकारी के लिए नहीं है वह स्वार्थवादी बना हुआ है। परन्तु पुरातन काल का विज्ञान स्वार्थवादी नहीं था। वहाँ वह जाकर के अपनी आभाओं को अपने यन्त्रों को इतनी चरम सीमा पर ले गए कि चन्द्रमा में जाना, वहाँ के प्राणीमात्र को दृष्टिपात कराना, वहाँ के प्राणियों को, कौन सा तत्त्व प्रधान वाला प्राणी है वह प्राणी कैसे उड़ान उड़ता है? परन्तु देखो, मैंने पूज्यपाद गुरुदेव को बहुत पुरातनकाल में भी, ये वार्त्ता प्रगट की थी परन्तु देखो, आधुनिक काल का वैज्ञानिक जा करके कुछ मानो चन्द्रमा के रजों को ला करके वह मौन हो गया। परन्तु देखो, अब रहा यह की धर्म और रूढ़ियाँ क्या स्वीकार करती हैं? विज्ञानवेत्ता तो यह कहते हैं कि चन्द्रमा तो एक लोक है परन्तु रूढ़िवादी कहते हैं कि परमपिता परमात्मा का ये एक प्रकाश है, इसमें कोई द्वितीय मानो देखो, सिद्धांत नहीं है, एक ही वाक् आता है, कि वास्तव में चन्द्रमा प्रकाश है और वह चन्द्रमा प्रभु का प्रकाश है, परन्तु वह यह कहते हैं। कुछ प्राणी, ऐसा नही कि सर्वत्रता में है। परन्तु देखो, उसी से संवतसर को स्वीकार करते हैं परन्तु विचार क्या है कि वैदिक साहित्य यह कहता है संवतसर का जो निर्माण हुआ है कि संवतसर का जो उत्पादन होता है वह सूर्य से होता है, वह चन्द्रमा से नहीं होता क्योंकि चन्द्रमा में एक कला नहीं होती, चन्द्रमा में जब एक कला नहीं होती, तो मुनिवरों! अपनां ब्रह्मे। उस एक कला का एक दिवस भी नहीं बनता, जब वह दिवस नहीं बनता, तो वही इसमें माह भी नहीं बनते, इसमें दिवस भी नहीं हैं और जब दिवस भी नहीं बनते, तो अहोरात्र भी नहीं बनते, मनवंतर भी नहीं बनेगा, मनवंत्तर भी नहीं बनेगा तो मोक्ष की प्रतिभा भी नहीं बनेगी।

सूर्य सिद्धान्त से दिवस

परन्तु देखो, ये मैंने एक विचार दिया है, जो विचार अकृतियों में, विचार जाता है परन्तु चन्द्र सिद्धान्त को मानने वाले भोले प्राणियों से, विशेष करके मोहम्मद के मानने वाले मानो चन्द्र सिद्धान्त के ऊपर, वह अपनी आभा को वेद की प्रतिभा को अपने से दूरी

कर देते हैं, परन्तु मैं इस विचार में, राजा का, राष्ट्र का कर्त्तव्य उसके क्या यहाँ, बुद्धिमान एकत्रित हो करके सिद्धान्त को अपनाना चाहिए। एक सिद्धान्त की धारा को अपनाना चाहिए। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, मानो एक सिद्धांत चला आ रहा है। सूर्य सिद्धांत से, मानो सूर्य की, पृथ्वी की गति बनती है, गति से दिवस और रात्रि बनती है और जब दिवस तथा रात्रि बनती है, उसी से अहोरात्र और माह बनता है और माह से वर्ष बनता है और वर्षों से मानो एक कल्प बनता है और कल्पों से ही देखो, अहो व्रीणि, अहो सम्भवे, अहो अस्सुतम् मनुवंतर बनते हैं। मनवंतर बन करके, इसी गणना आगे वर्णित की जा सकती है।

परन्तु विचार विनिमय क्या? परन्तु जब चन्द्र सिद्धांत के ऊपर और हम विचार विनिमय देना प्रारम्भ करते हैं तो वह धटित नहीं होता। एक कला उसकी समाप्त हो जाती है परन्तु देखो, वह कला सूर्य सम्पूर्ण कलाओं से सदैव युक्त रहता है क्योंकि उसका सम्बन्ध द्यौ से है। चन्द्रमा का सम्बन्ध सूर्य से है तो वह जो पूर्ण कलाओं वाला है उसका सम्बन्ध द्यौ से रहता है तो द्यौ और यह दोनों मिलान करके आभा में गति करते रहते हैं। परन्तु देखो, इस प्रकार यह मैंने यह सूक्ष्म परिचय दिया पूज्यपाद गुरुदेव को।

राष्ट्र निर्माण के लिए समाज के चार बिभाग

आगे जो द्वितीय परिचय देना है हमें, केवल यह है कि हम यह उच्चारण कर रहे थे कि आधुनिक काल का जो विज्ञान है आधुनिक काल की जो परम्पराएं हैं परन्तु देखो, उस आभाओं को, पुरातन की आभाओं में ले जाना चाहते हैं। हमारे यहाँ यह नियमावली परम्परागतों से ऋषि मुनियों ने निर्णयात्मक बनाई कि संसार में निर्णय कौन करेगा? इस समाज का विभाजन हो रहा है, स्वतः विभाजन हो रहा है परन्तु इस विभाजन को बुद्धि युक्त कौन निर्णय दे सकता है? तो विचार गया, भगवान मनु के काल में मनु के काल में विचारा गया कि समाज को किन भागों में नियुक्त करना चाहिए। तो भगवान मनु ने और रेणमानुक ऋषि महाराज दोनों ने समाधिष्ट हो गएं और इसी विषय को लेकर कि समाज का कैसे विभाजन होगा और कौन विभाजन करेगा और कितने प्रकार

का विभाजन होना चाहिए? यह मानो भगवान मनु जी सूर्य और पृथ्वी के ऊपर मानो देखो, वह अग्नि और पृथ्वी के दोनों के गति ले करके वह अपनी सिद्धांतिक मुद्रा में परणित हो गये। अपने हृदय की मुद्रा में परणित हो गये। अपने मन की प्रवृत्तियों को समेट करके, वेद के मन्त्र ने मन को मानो देखो, प्राण की गति को वह मन आभा में रमण कराया वह अपने में मुद्रित हो गए और जब मुद्रा में परणित हो गये, जब मुद्रित हो गएं मुद्रित हो जाने के पश्चात् उन्हें भान हुआ है छह माह तक उन्होंने केवल रसों का पान करके वृक्षों के और उन्होंने समाधिष्ट हो करके विचार विनिमय करते हुए मानो अपने अपने सत्यप्रवे वह छह माह तक उस मुद्रा में रहे। उस छह मुद्रा में रह करके उन्होनें उसके पश्चात् देखो, उनके हृदय में वह आया यह अकाटय सिद्धान्त है समाज का, वह अकाटय सिद्धांत है जिसे कोई नष्ट नहीं कर सकता कि समाज की देखो, मानव की चार प्रकार की प्रवृत्तियाँ होती हैं। मानो देखो, इन प्रवृत्तियों के आधार पर भगवान मनु ने अपना एक सिद्धांत बनाया, अपना एक विचार दिया समाज को और विचार क्या दिया, क्या यह जो समाज है, मानो देखो, एक राष्ट्र का निर्माण होना चाहिए। राष्ट्र के निर्माण की चर्चा भी उन्होंने की। उसके पश्चात्, राष्ट्र की चर्चा के पश्चात् उन्होंने समाज को चार विभागों में विभक्त कर दिया और चार विभाग बन गए समाज के।

विद्यालय से विभाजन वर्ण

मानो देखो, बुद्धिमान है जो तार्किक है जो अणु और परमाणुओं को जानकर के त्याग और तपस्या में परणित रहने वाला है वह मानो देखो, बुद्धिमान है। उसे आयु का अध्ययन करना चाहिए, आयुर्वेदाचार्यों ने बेटा! बहुत पुरातनं ब्रहे सम्भवः देवत्यया़ं कहा है। हे मेरे पूज्यपाद समभवाः देवत्यां उन्होंने पुत्रों और बेटा कह करके मानो ऋषियों मुनियों को तथा अपने शिष्यों को सम्बोधित करके कहा था। भगवान मनु ने कहा था क्या हे सम्भवो! सम्भवे क्रेतानि कृति मानो देखो, यह समाज चार विभागों में बुद्धिमान, त्याग और तपस्या में जो निष्पन्न रहने वाले हैं, जैसे न्यायालय में न्याय करने वाला,

जब उसमें पक्ष आ जाता है और निष्पक्ष नहीं रहता तो, वह न्याय नहीं कर सकता। इसी प्रकार देखो, जो ब्राह्मण है, जो बुद्धिमान है, जो विद्यालयों में शिक्षा देता है उस समय वह ब्रह्मचारियों का अध्ययन करता है। ब्रह्मचारियों का अध्ययन कौन कर सकता है? जो मुनिवरों! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो इसको जानते हैं, यह मैं ऐसी वार्त्ता प्रगट करा रहा हूँ। जैसे मानो देखो, सूर्य की एक मानो देखो, गृति आवस्ति एक सूक्ष्म सी ज्योति है। परन्तु देखो, मैं उस वाक्यों में नहीं, विचार क्या देखो, जब विद्यालयों में प्रवेश करते हैं, तो भगवान मनु का सिद्धांत स्मरण आता है कि भगवान मनु ने यह कहा था कि जब समाज का विभाजन हो तो आचार्यजन, बुद्धिमान मानो देखो, ब्राह्मणजन होकर के, वह अध्ययन करने वाले हों और ब्रह्मचारियों के मस्तिष्कों का अध्ययन करें, उनकी प्रवृत्तियों का अध्ययन करें। तीन दिवस तक इसीलिए तीन रात्रि और तीन दिवस में मानो देखो, उसकी जानकारी हो। पठन पाठन का कर्म कैसा है? उस पठन पाठन में कैसी प्रवृत्तियाँ हैं? मानो देखो, जब इस प्रकार का अध्ययन आचार्यों का होता है उस अध्ययन के साथ साथ, उस अध्ययन की प्रतिक्रिया में जाकर के वह अपने में जाकर के वह अपने में समाज का वह निर्माण करते हैं। देखो, शुद्र का एक बालक है एक बालक क्षत्रिय का है एक राजा का पुत्र है एक पंक्ति में भोज्यपान करने वाले हैं। पंक्तियाँ लगी हुई हैं आचार्य अध्ययन कर रहा है उस अध्ययन को लेकर के अपनी आभा में परणित होते रहते हैं और वह समाज का निर्माण कौन करता है? शूद्र का बालक, ब्राह्मणतव को प्राप्त होता है और उसी वैश्य का पुत्र ब्राह्मण और ब्राह्मण के कुल में जन्म लेने वाला वैश्य बन सकता है। जैसे जिसकी प्रवृत्ति हो। इसका निर्माण विद्यालयों में होता है। जब विद्यालयों में इनका निर्माण होता है, तो विद्यालय पवित्र होने चाहिएं। मानो देखो, कौन करेगा? इसका समाज के अध्ययन, समाज के विभाजन को कौन निर्णन दे सकेगा। वह जो विद्यालय में आचार्य विद्यमान है वह इसका निर्णय देगा। परन्तु देखो, जब मैं इस मनु के सिद्धांत को, मनु के विचार को, जब मैं यह विचारता रहता हूँ यह इतना अकाटय है देखो, एक शूद्र है जो केवल सेवा कर सकता है वह अकृतं उसके गृह में जन्म लेने वाला बालक पुत्र भी देखो, ब्राह्मण बुद्धिमान बन

सकता है। इस प्रकार की आभा जब भगवान मनु ने श्वेतकेतु ऋषि इत्यादियों ने प्रगट किया था।

आधुनिक काल का शिक्षक

परन्तु हे पूज्यपाद गुरुदेव! यह तो पुरातन काल का समाज रहा। परन्तु देखो, जब मैं आधुनिक काल के विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ, पुरातन काल के विद्यालयों में तो मैंने अध्ययन किया है आपने भी अध्ययन किया और भी नाना आचार्यों ने अध्ययन किया है और अध्यापन का कार्य भी किया है और निर्णय देने का भी कार्य किया है, परन्तु जब मैं यह विचारता रहता हूँ कि आधुनिक काल की शिक्षा प्रणाली, आधुनिक जगत् का शिक्षक समाज है आधुनिक काल का जो गुरु समाज है वह कैसा बन गया है? उस पर विचार मुझे देना है परन्तु देखो, इसके ऊपर विचार देना है हमारे यहाँ यह देखो, कोई भी किसी प्रकार की संसार में भाषा हो। कोई भी भाषा हो, चाहे वह चन्द्रमा की भाषा हो, चाहे वह मंगल की भाषा हो, चाहे वह किसी भी राष्ट्र की भाषा हो, वह जिस राष्ट्र की भाषा हो, उस भाषा में यदि चरित्र नहीं है। जिस भाषा में यदि उच्चारण करने का अधूरापन हो तो देखो, उस भाषाओं के गर्भ में अचरित्र विद्यमान रहता है। जैसे मानो कोई भी भाषा को वह पूर्ण रूपेण नहीं होती है। एक वाक् है और वह वाक् लगभग देखो, कई प्रकार जैसे उसके कई प्रकार होते हैं यह सिद्धांत परम्परा का है। परन्तु वह एक ही वाक् है देखो, कितने मानो नाती इत्यादियों को एक ही भाषा में परणित किया जाता है तो वह भाषा में अधूरापन होता है इस भाषा के गर्भ में जहाँ भी अधूरापन होता है उस अधूरेपन के गर्भ में मानो देखो, अविज्ञान और जो अधूरेपन के गर्भ में यहाँ ऐसा हम मानते हैं कि उसके गर्भ में अचरित्र मानो विद्यमान रहता है और जिस भाषा में रूपेण रहता है, जैसे देवताओं की भाषा है, देव भाषा है, इसी प्रकार जैसे वेद की पवित्र देखो, आभा कहलाती है, उसको हम आभा कहते हैं। इसी प्रकार उसका रूपांतर किए हुए को, हम भाषा कहते हैं परन्तु वह रूपेण जो शब्द जहाँ है वह शब्द वहीं उच्चारण किया जाए, जैसे हमारे यहाँ गो नाम का शब्द है, गो नाम कई

प्रकार से उच्चारण किया जाता है। गो नाम पृथ्वी है तो उसके गर्भ में, गो नाम के प्रारम्भ के गर्भ में चरित्र विद्यमान है परन्तु इसी प्रकार यह जो नाना प्रकार का एक सिद्धांत मानो देखो, कृतियों में रमण कर रहा है वह चक्र के रूप में गति कर रहा है, वह भाषं ब्रहे होना चाहिए। इसके पश्चात् आचार्यों के कुल में जब मैं प्रवेश करता हूँ तो आयुर्वेद का अध्ययन नहीं प्राप्त होता, अध्ययन नहीं किया जाता। आयुर्वेद का अध्ययन जब नहीं होता, तो ब्रह्मचारी के मस्तिष्क का अध्ययन कैसे किया जाएगा? परन्तु जब यह अध्ययन नहीं होगा तो यहाँ ब्राह्मण समाज का या विभक्त व्यक्तियों का कैसे जन्म होगा? यह जन्म इस प्रकार नहीं हो रहा, यह न होने के कारण ही यहाँ समाज में रूढ़ियाँ उत्पन्न हो रही हैं। उन रूढ़ियों का परिणाम यह है कि राष्ट्र राष्ट्र को अपने तक लाना नहीं चाहता है।

इसी प्रकार जब मैं यह विचारता रहता हूँ, कि आधुनिक काल के जगत् को, कि हम जब राष्ट्र को, राष्ट्रवेत्ताओं के द्वार पर जाते हैं, तो राष्ट्रवेत्ताओं की मानो देखो, सभाएं होती हैं, विचार होते रहते हैं। मानो द्रव्य के आधार पर, जिस राजा के राष्ट्र में शिक्षा प्रणाली का उद्गम होगा, वह कुछ काल में शिक्षा प्रणाली नेत्रहीन बन जाएगी। मानो आज मैं वर्तमान काल में, जो दृष्टिपात कर रहा हूँ वह ये है क्या शिक्षा प्रणाली देखो, राष्ट्रवेत्ताओं के द्वार पर जब यह पहुंचती है तो केवल आधुनिक काल का जो समाज है, आधुनिक काल का जो शिक्षक वर्ग है चाहे वह किसी भी क्षेत्र में है, चाहे वह किसी भी राष्ट्र में है परन्तु द्रव्य के एकत्रित करने में लगा हुआ है। एकत्रित द्रव्य को पदम् ब्रह्मे मानो देखो, वह जो द्रव्य है, जब द्रव्य एकत्रित करने में लगा हुआ है तो उनके यहाँ होने वाला जो सन्तान है, होने वाला जो पुत्र है परन्तु वह पवित्र और महान नहीं बन पाता। क्योंकि जैसा द्रव्य आता है, वैसी उनकी संतानों को मानो उसी प्रकार की शिक्षाओं का वायुमण्डल बन जाता है और वायुमण्डल बन करके वह नाना आभा में, नृत्यों में अरूण ब्रहे उत्पन्न आवृत्तियों में ओत प्रोत हो करके, अपने ब्रह्मचर्यव्रत को नष्ट कर रहा है। आधुनिक काल का समाज, जब मैं विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ, तो ब्रह्मचारीजनों ने मानो देखो, ब्रह्मचर्यजन अपने को ब्रह्मचारी नहीं कहता, अपने को

ब्रह्मवर्चोसि नहीं कहता। विद्या का अध्ययन करने वाला, अपने को गार्हपथ्य अग्नि नहीं कहता, परन्तु देखो, वह कहता है कि यह पराः यह तो वार्त्ता वृद्ध हो गई है। अरे,! मेरे भोले प्राणियों! यह वार्त्ता वृद्ध नहीं हैं संसार में सभी प्राणियों को वहीं आना है जिसे तुम वृद्ध कहते हो, वहीं पहुंचना है परन्तु देखो, जब बाल्यकाल में, शिक्षकों की सूक्ष्मता, आचार्यजन जब ब्रह्मचारियों पर मोहित हो करके शिक्षा प्रणाली की आभा बन जाती है तो कैसे विद्यालय ऊँचे बन सकते हैं? परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ कि यहाँ आभा में रमण कराना हैं मेरी पुत्रियों को आज के आचार्यों को गृह सूत्रों का पठन पाठन नहीं कराया जाता है। परन्तु देखो, जहाँ उसके जीवन की चरी बनती हो, जीवनचर्या बनती हो। जहाँ जीवनचर्या नहीं बनेगी, वहाँ शिक्षा प्रणाली भी क्या रह सकेगी? परन्तु इस प्रकार का जो एक समूह बन रहा है, एक विचार बन रहा है, यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार की धाराएं बन रही हैं। आज जो राष्ट्रवेत्ता हैं, उनकी जो संतानें हैं, पुत्र पुत्रियाँ हैं उनका जो नृत्य हो रहा है, उनकी जो अग्रा है वह ऐसे विद्यालयों में है जहाँ अनुशासन रहता है, साधारण जो समाज है उसकी सन्तान, उसके पुत्र पुत्रियों ऐसे विद्यालयों में हैं जहाँ अनुशासन का नामोकरण भी नहीं किया जाता तो समाज, राष्ट्र कैसे ऊँचा बन सकता है? ऐसा खिलवाड़ हो रहा है इस समाज में।

रूढ़ियों से अज्ञान

परन्तु देखो, इसके ऊपर बुद्धिमान विचारक विचार विनिमय करते चले जाएं और विचारें हम समाज को कैसे ऊँचा बना सकते हैं यदि संसार को, राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो समाज को अपनी रूढ़ियों को त्यागना होगा, धर्म की रूढ़ियों को त्यागना होगा, परन्तु वह जो रूढ़ियों हैं, वह रूढ़ियाँ मानो देखो, राष्ट्र के जीवन को विनाश के मार्ग पर ले जा रही हैं। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब भिन्न भिन्न प्रकार के विचार देने वाले विचारक, विचार केवल एक होता है। विचार अनेक नहीं होते, भिन्न भिन्न नहीं होते विचारों का एकीकरण होता है धर्म एकोकीकरण होते हैं, धर्म भिन्न भिन्न नहीं होते, धर्म एकोकीकरण है। परन्तु आधुनिक काल के राष्ट्रवेत्ताओं के द्वारा पर जाता हूँ तो वह नाना

धर्म कहने लगता है, वह कहता है कि हम नाना धर्मों को इनकी विचारधाराओं का हम सम्मान करते हैं परन्तु जब मैं यह कहता हूँ हे भोले प्राणियों! संसार में नाना धर्म तो होते ही नहीं, धर्म तो केवल एकोकी वचन है, एकोकी ही चरण है परन्तु देखो, वही चरण एकोकी की व्याख्या करोगे, तो तुम्हारा राष्ट्र जीवित रह सकेगा, और यदि तुम नाना धर्म उच्चारण करते रहोगे, नाना धर्मों को एक सूत्र में लाना चाहते हो, तो वह सूत्र ही नष्ट हो जाएगा, वह आभा में रमण नहीं हो सकेगा। धर्म को एक आभा में, एक सूत्र में लाने का तुम प्रयास करो। एक सूत्र में लाना है धर्म को।

धर्म का स्वरूप

धर्म किसे कहते हैं? देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में, वह वाक् प्रगट किए हैं, कई काल में उन वाक्यों की विवेचनाएँ की हैं। आज मैं उन वाक्यों में नहीं जाना चाहता हूँ। विचार केवल यही देना चाहता हूँ, कि मानव की इन्द्रियों में सर्वत्र धर्म विद्यमान रहता है। वह सर्वत्र ही एकोकी धर्म विद्यमान रहता है, धर्म केवल एकोकी चरण है, नाना चरणों में नहीं रहता। नाना चरणों में रहेगा, तो विकृति आ जाएगी। समाज में नाना प्रकार की आभाओं का जन्म हो जाएगा, इसके पश्चात् हमारे यहाँ गुरु शिष्य की जो परम्परा है, मैंने भी पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत प्रोत होकर के, बहुत सी शिक्षाओं का अध्ययन किया है और नाना ऋषियों की परम्परा चली आ ही है परन्तु योग को दृष्टिपात करके आचार्य शिक्षा देता है, आचार्य वर्णों का निर्माण करता है कि वह क्षत्रिय है, यह ब्राह्मण है, यह वैश्य है और यह क्षुद्र है, समावर्ती है। इस प्रकार की संज्ञा विद्यालयों में निर्माणित होती है और राजा का यह कर्त्तव्य है कि प्रत्येक विद्यालय में इस प्रकार के विचार होते चले जाए, तो राजा के राष्ट्र की रूढ़ियाँ नष्ट हो जाएगी। जब तक रूढ़ि रहेगी तब तक मानव की स्वार्थ की प्रवृत्ति बलवती होती रहेगी। जब स्वार्थ बलवती हो जाता है तो उस काल में, उस राष्ट्र में, समाज में अन्धकार छा जाता है और वह जो अन्धकार है वही राष्ट्र और समाज को रसातल में ले जाता है। विचार विनिमय क्या? मैं विशेष चर्चाएँ नहीं देना चाहता हूँ क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव,

मुझे समय की आज्ञा नहीं दे रहे हैं। विचार केवल यह है कि आज हम परमपिता परमात्मा की चर्चा को, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव करते रहते हैं। कई समय से वह यौगिक मुद्राओं के सम्बन्ध में अपने विचार देते रहते थे। प्रत्येक आभा में रमण करा रहे थे, कि वह जो हर्षोमय उल्लास होते हैं, अनुष्ठान होते हैं उनके। वह देखो, मुद्राओं के ऊपर चर्चा कर रहे थे, ये मुद्राएं हमारे यहाँ, परम्परागतों से साधना में सहायक बनी हुई हैं। वे सहायक बनती रहती हैं परन्तु यह सब विद्यालयों में, मुद्राओं का ज्ञान आचार्य विद्यालय में ब्रह्मचारियों को परणित कराते रहते हैं। मैंने भी कई काल में, जब मैं विद्यालयों में अध्ययन करता था तो इन मुद्राओं के ऊपर मानो विचार आचार्य देते रहते थे। ये मुद्राएं सब विद्यालयों में प्रवेश कराई जाती थी। आधुनिक काल के विद्यालयों में जब प्रवेश करता हूँ तो विचर विनिमय में करता रहता हूँ तो तब अर्थात् मुद्राओं का जो ज्ञान है तो वह कहते हैं कि हमें मुद्रा कदापि नामोकरण भी नहीं किया परन्तु कहाँ से है। जब उस शिक्षा प्रणाली को तुम क्रियात्मक नहीं बनाते। तो जीवन तुम्हारा इसी प्रकार चलता रहेगा।

विचार क्या? मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह अध्ययन की परम्परा प्रगट करा रहा हूँ। जब मैं विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ, तो अनधिकार को जब शिक्षा देने का अधिकार प्राप्त होता है। द्रव्य की लोलुपता के कारण, तो राष्ट्र और विद्यालय जीवन को नष्ट करते चले जा रहे है। इसी प्रकार आज के विचार विनिमय क्या? मैं कोई विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव को मैं परिचय देने आया हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव नाना परिचय देते रहते हैं आज मैं भी उन विचारों में गम्भीर मुद्रित होना नहीं चाहता हूँ। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा। मुझे कल समय मिलेगा, तो मैं आधुनिक काल के विज्ञान के ऊपर कुछ चर्चा प्रगट करूंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! मेरे प्यारे! महानन्द जी ने अभी अभी अपना कुछ विचार दिया, परन्तु इन विचारों में मानो कर्मठता और विचारशीलता है। आज का हमारा जो विचार, जो धाराएं केवल मुद्रा के ऊपर हम विचार व्यक्त कर रहे थे। मेरे पुत्र महानन्द जी ने अभी अभी अपने विचार देते हुए कहा कि विद्यालयों में वर्ण व्यवस्था के

ऊपर अपना विचार दिया। वर्ण व्यवस्था राष्ट्र में, विद्यालयों में होनी ही चाहिए। उनका निराकरण एक आभा में राष्ट्रीय उद्गमों में होना चाहिए। यह विचार बहुत प्रिय लग रहे थे। परन्तु कल भी मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने कुछ विचार व्यक्त करेंगे। आज का हमारा यह विचार समाप्त होने जा रहा है। आज के विचार उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि मानव अपने जीवन को कैसे ऊँचा बन सकता है? राष्ट्र और समाज कैसे ऊँचे बन सकते हं? मेरे पुत्र यह कहाँ करते हैं कि राष्ट्र में रूढ़ि नहीं होनी चाहिए। क्योंकि रूढ़ि ही समाज का विनाश करती है। रूढ़ियों में, विचारों में परिवर्तन आते रहते हैं ऐसा ये कहते हैं परन्तु रूढ़ियों के सम्बन्ध में भी ये विचार देते रहते हैं। आज का विचार हमारा क्या, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए परमात्मा के राष्ट्र में परमात्मा के भव्य जगत् में हम मानो ब्रह्माण्ड की रचना के ऊपर विचार विनिमय करते हुए ब्रह्म को हम अपने कृतियों में दृष्टिपात करते हुए जिससे हमें यह भान हो कि प्रत्येक वस्तु की जो रचना है वह प्रभु ही करता हैं जैसे माता के गर्भस्थल में शरीर की रचना होती है, कैसी सुन्दर वाणी प्रभु ने निर्माणित की है? माता नहीं जानती कौन निर्माणवेत्ता है, पिता नहीं जानता कौन निर्माणवेत्ता है? परन्तु सूक्ष्मसा सन्निधानमात्र से ही कर्म किया है, उस कर्म की रचना का जो स्वरूप है वह प्रभु के द्वार पर है, प्रभु ही रचना कर रहा है, कहाँ कहाँ के सम्बन्ध संबधित किए हैं। कही चन्द्रमा को माता के जीवन से, गर्भ से परणित किया है। सूर्य को, वशिष्ठ अरुणधती मण्डलों को नाना प्रकार के मण्डल उसमें ध्वनित रहें हैं और वे ध्वनियाँ हो रही हैं। ये चर्चा भी कल हम प्रगट करेंगे। वे जो ध्वनियाँ हैं अपने में ध्वनित होती हैं, अपनी आभा में रमण कर रही है। यह आज का विचार, अब हमारा समाप्त होने जा रहा है, कल समय मिलेगा, तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। अब वेदों का पठन पाठन होगा। स्थान : लाक्षागृह बरनावा।

७ 19 03 1983 पुष्प 43 भगवान कृष्ण का गुरु संदीपन

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर

वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है।
मानो जो ये स्वर ध्वनि हो रही है जिस ध्वनि के सम्बन्ध में, बहुत पुरातन काल से ही चर्चाएँ होती रहती हैं और ऋषि मुनियों के मस्तिष्को में, इस ध्वनि का प्रायः वर्णन होता रहता है, तो मेरे पुत्रो! वह ध्वनि कौन सी है? जिस ध्वनि के आ जाने के पश्चात् मानव के जीवन में एक महानता का दिग्दर्शन होता है क्योंकि महानता के लिए, परम्परागतों से ही, मानव प्रयास करता रहा है और ये विचारता रहा है कि मेरे जीवन में आनन्द होना चाहिए। चाहे वह बेटा! राष्ट्र हो, चाहे वह ब्रह्मवेत्ता हो, चाहे वह गायक हो, चाहे वह घन पाठ में गाने वाला ब्रह्मचारी हो, परन्तु उसका एक ही उद्देश्य रहता है कि मेरे जीवन में एक आनन्द होना चाहिए। एक आनन्द की ध्वनि होनी चाहिए। परन्तु विचार आता रहता है, जहाँ आनन्द का प्रदर्शन होता रहता है जहाँ आनन्द की प्रतिभा आती रहती है। वहीं मेरे प्यारे! देखो, एक दुखद की भी ध्वनि होती है। परन्तु दुखद की ध्वनि में भी कहीं कहीं मुनिवरों! देखो, एक परमानन्द का गायन प्राप्त होता है।

माता की ममतव पूर्ण ध्वनि

मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें ऐसे, विचारों को देने के लिए आया हूँ, जिन विचारों में एक महानता विद्यमान रहती है। माता के गर्भस्थल में शिशु है, परन्तु जब वह माता के गर्भ स्थल से पृथक होता है तो माता को अपार एक कष्ट एक आभा में एक दुखद ध्वनि होती है। परन्तु जब वह बाह्य जगत् से पृथक होता है तो उस माता के मानो अन्तःकरण में एक आनन्द की ध्वनि होने लगती है। तो मुनिवरों! देखो, वह जो आनन्द की ध्वनि है वह ममता से परिपूर्ण है। परन्तु यदि वह कर्त्तव्य से पूर्ण हो जाए कर्तव्य से परिपूर्ण हो जाए तो माता और पुत्र दोनों ही अपने में विकासवादी बन करके, राष्ट्र और समाज को ऊँचा बना सकते हैं। परन्तु यदि माता की ध्वनि जैसे हृदय में मानो प्रकाशित हुई, ध्वनि आनन्दित बनी दुखद के पश्चात्, परन्तु यदि वह ध्वनि मोह ममता तक ही सीमित रह गयी, तो मानो देखो, कोई भी वस्तु उसे प्राप्त नहीं होती। वह दोनों आभा मैं रमण

करने वाला जो जीवन था केवल ममता के आधार पर रह गया। परन्तु वह कर्त्तव्य की वेदी पर नहीं आ सका। यदि वह कर्त्तव्य की वेदी पर आ जाए, तो मुनिवरों! देखो, ममत्वां देवो भव वषणा वह माता पवित्र बन जाए और बाल्य भी पवित्र बन जाए और राष्ट्र और समाज उसमें में एक महनता की ज्योति प्रकाशित हो जाए।

तो विचार विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! आज मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विशेष चर्चा भी देने नहीं आया हूँ, विचार ये देने के लिए आया हूँ कि मानव को अपने जीवन में, एक महान ध्वनि को अपनाना चाहिए। जो माता भी ध्वनिवादी है परन्तु वह भी स्थिर रह करके मौन रह करके जब अपने में मुद्रित हो जाती है, अपने में मुद्रित हो करके वह आभा में रमण कर जाती है। जैसे भगवान कृष्ण ने महात्मा संदीपन ऋषि महाराज से ये कहा था एक समय क्या हे भगवन! मैं विराट स्वरूप ब्रह्म को जानना चाहता हूँ। वह जो ब्रह्म का विराटमयी स्वरूप है उसे मैं जानना चाहता हूँ। मैं यह चाहता हूँ कि अपान और प्राण का दोनों का समन्वय कैसे करता है साधक? मेरे प्यारे! देखो, जब भगवान कृष्ण ने ये बाल्य काल में युवा अवस्था में मेरे पुत्रों! देखो, भगवान कृष्ण की आयु, उस समय मानो देखो, 20 वर्ष 22 दिवस की आयु थी। जब ये उन्होंने यह प्रश्न किया तो महात्मा संदीपन ऋषि क्योंकि इस योग के मर्म को जानते थे, जहाँ वह व्याकरण के, ध्वनियों के मर्म को जानते थे वहाँ मुनिवरों! वह योग की प्रतिभा को भी जानते थे।

तो मेरे प्यारे! देखो, योग की प्रतिभा में ले जाते हुए, उन्होंने कहा कि तुम अपान और प्राण की आभा को कृष्ण तुम जानना चाहते हो यह प्रश्न तुम्हारा बड़ा एक महान् है? क्योंकि इस अपान और प्राण के मिलान करने वाले बहुत से ब्रह्मवेत्ता हुए हैं। मानो देखो, इसमें बहुत बुद्धिमान हुए हैं। तुम राष्ट्र और समाज की चर्चा करो, तुम विज्ञान की चर्चा करो। परन्तु उन्होंने कहा, नहीं, प्रभु! मेरे हृदय की यह आकांक्षा है और मैं चाहता हूँ कि मैं संसार में विराटमयी ब्रह्म को दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय भगवान कृष्ण से संदीपन ने कहा हे ब्रह्मचारी! आओ, तुम विराजो! मानो वह विराजमान हो गए। उन्होंने कहा योग की आभा में तुम गमन

करना चाहते हो। सबसे प्रथम उन्होंने अग्नि और गति दोनों की मुद्रा को उन्होंने मुद्रित करना प्रारम्भ किया। मेरे प्यारे! प्राण पर मन को जब आभाषित कर दिया, जब प्राण और मन दोनों का समन्वय, दोनों एक सूत्र में जब परणित हो गए तो मानो देखो, वायु का जो वेग था, वह नाभि केन्द्र से प्रकाशित होता हुआ, गति करता हुआ मुनिवरों! देखो, प्राण की, मस्तिष्क में जो टिकटिकी मानो कृतिका है उसमें मुनिवरों! देखो, स्थिरता आ जाती है। आज मैं इस योग की आभा को तुम्हें परिचय दूंगा, केवल इच्छा सर्वत्र रूपेण में अनुभव की चर्चा नहीं करुंगा, केवल परिचय दूंगा और वह परिचय क्या है? जब टिकटिकी अस्वानम् हो जाती है वह जो कृतिका है जिसे हम त्रिवेणी कहते हैं जहाँ दोनों प्राणों का और मन का और प्राण और अपान का नाभि केन्द्र से समन्वय हो करके, दोनों का मिलान होता है। वह मूलाधार में भी होता है, नाभि चक्र में भी होता है। नाभि चक्र से वह आभां तत्त्वमन्नेवाः मेरे प्यारे! देखो, त्रय के स्थान में, तीनों प्रकार के, परमाणुओं का मिलान हो जाता है। क्योंकि वास्तव में, इस मानव शरीर में प्राण, अपान और उदान इन तीनों प्राणों के मानो देखो, एकाग्र करने से ही योग सिद्ध हो जाता है। कैसे होता है? प्राण में से मुनिवरों! देखो, जितना भी ये अन्तरिक्षवाद है, लोक लोकान्तरों वाद है, इसमें ये जो परमाणुओं का उद्गम होता रहता है उसका वैज्ञानिक बन करके, वह विज्ञान प्रकृति का इस अन्तरिक्ष की आभा में रमण हो जाता है। परन्तु जब यह अपान में जाता है तो निचला स्थान जो है पृथ्वी का गर्भ है, खाद्य और खनिज है, मुनिवरों! देखो, प्राण अपान के मिलान होते ही दोनों के मुनिवरों! देखो, दोनों विज्ञान का स्पष्टीकरण हो जाता है। परन्तु जब उदान को लिया जाता है इसमें उदान का मिलान किया जाता है तो उदान के मिलान से मुनिवरों! देखो, जितना चित्त का मण्डल है वह नाना जन्म जन्मांतरों का है, करोड़ों जन्मों का क्यों न हो परन्तु उसके संस्कार उसके समीप मानो नृत्य करने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, ये तीन प्राण माने गए हैं प्राण, अपान और उदान इनकी त्रैति ही आभा को जानने से योगी बेटा! योगी योग सिद्ध हो जाता है।

आज मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। आज मैं योग के विद्यार्थी का आश्वासन

देना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह कि इनका मिलान कैसे? मानो देखो, यह समाधि ध्यानावस्थित ये मुद्रिका बनती है, और मुद्रिका बन करके जब मन को एकाग्र किया जाता है तो ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु, उसके समीप आकर के प्रकृतिवाद नृत्य करने लगता है और वह नृत्य का बहुत सा अनुभव ऐसा है जिसका वर्णन करता है, बहुत सा अनुभव ऐसा है, जिसका बाह्य जगत में हम वर्णन नहीं कर सकते। तो विचार विनिमय क्या? क्या मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है, वेद का मन्त्र कहता है, कि हम प्राण, अपान और व्यान तीनों का समन्वय करने से हमें बेटा! देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड की प्रतीति होने लगती है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ।

विचार विनिमय क्या, मेरे प्यारे! महानन्द जी मानो देखो, कुछ विज्ञान की चर्चाएँ करते रहते हैं। मानो आज भी इन्होंने कहा है कि मैं विज्ञान के ऊपर कोई विवेचना करूंगा। परन्तु आज मेरे पुत्र, कुछ यागाम् ब्रह्मेः वसुरन्धनं वाचनं गतप्रवस्तोः यह आज कुछ मानो अपने विचार व्यक्त करेंगे।

पूज्यपाद महानन्द जीः ओ३म् गतौ सर्वा भद्राणि मं वाचन्नमा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी, कुछ आध्यात्मिकवाद विज्ञान की चर्चा कर रहे थे। इनके विचारों में, एक ऐसी महत्ता का प्रदर्शन होता है। जब हम इनके चरणों में ओत प्रोत हो करके इस विद्या का अध्ययन करते थे, तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव चरणों में ओत प्रोत करा करके, इस यौगिक साधना को भली भांति प्रगट करते रहते थे। परन्तु आज मैं ये विचार देने के लिए नहीं आया हूँ, कि मैं अपने बाल्यकाल को ले करके, अपनी एक धारा को अपनाने के लिए प्रारम्भिक रचनाओं में परणित हो जाँऊ। केवल हमारा विचार ये है कि इससे पूर्व काल में, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ परिचय दे रहा था, और वह परिचय था कि हम अपने में महान और अपने में विचित्र कैसे बन सकते हैं? मानो राष्ट्र, समाज और मानवता को कैसे ऊँचा बना सकते हैं? इससे पूर्व काल में, मैं मनु जी की चर्चा कर रहा था। मनु जी क्या कहते थे? मनु जी की विवेचना करने वाला, मानो इस संसार में बहुत से ऋषि मुनियों का जीवन,

मुझे स्मरण आता रहता है। जैसे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी प्रगट करा रहे थे क्या **साधक ही संसार में वेद की प्रतिभा को जान सकता है** मानो तपस्वी ही संसार में उस तपोमयी ब्रह्म की आभा को जान सकता है।

मुद्राओं से मनन की प्रक्रियां

परन्तु आधुनिक काल वर्तमान का जो यह काल है, पुरातन काल को आधुनिक काल से जब मैं तुलना करने लगता हूँ तो आश्चर्य आता है। मानो देखो, आज का मानव आज का मानव, एक एक वेदमन्त्र को ले करके मानो उसके ऊपर नाना प्रकार की अशुद्धियां, टिप्पणियाँ करता रहता है और जब वह टिप्पणी करता है वह कुछ ऐसा विद्यालयों में भी टिप्पणियाँ होती रहती हैं, कहाँ एकान्त स्थलियों पर भी टिप्पणियाँ होती रहती हैं, और वह टिप्पणियाँ भी अशुद्धता में परणित हो रही हैं। जब मैं ये विचारता हूँ अरे, भोले प्राणियों! वेद के विषय को यदि तुमने वेद के ऊपर मन्त्र के ऊपर चिन्तन करना है तो उसके ऊपर मनन करना होगा। और वह जो मनन की शैली है, वह जो मनन की प्रतिभा है वह तुम्हें मानो मुद्राओं से प्राप्त होगी। जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कई काल से मुद्राओं के सम्बन्ध में अपनी चर्चा कर रहे हैं। अपने हृदय में जब मानव अपनी इन्द्रियों की प्रतिभा को आन्तरिक जगत् में ले जाता है तो उस समय नाना विचारों की अनुभूतियाँ होने लगती है। परन्तु जब मैं अनुभूतियों के क्षेत्रों से भी ऊर्ध्वा गति में जाने के लिए तत्पर होता हूँ तो आधुनिक काल के भौतिक काल के विज्ञान के ऊपर अपना विचार देने के लिए हम किसी किसी काल में पूज्यपाद गुरुदेव से समय लेते रहते थे और अपने विचार, अपने हृदय की वेदना को सदैव प्रगट करते रहते हैं।

गुरुदेव का जीवन

आज जिस स्थली पर हमारी ये आकाशवाणी जा रही है वहाँ वेदों का पठन पाठन हो रहा है। वहाँ मेरा हृदय बहुत प्रसन्न रहता है जब वेदों का गान होता है। परन्तु जहाँ हृदय में प्रसन्नता होती है वहाँ मानो देखो, हृदय में एक मानो देखो, व्याकुलता भी होती

है। मैं यह स्मरण कराता हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव तो जानते ही हैं। परन्तु मैं ये उच्चारण कर रहा हूँ वो समय था जब, ऐसे ऐसे याग होते थे। पुत्रेष्टि याग होते, वृष्टि याग होते अग्निष्टोम याग होते, वाजपेयी याग होते। मानो उस समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को कजली वनों में से मानो जहाँ सिंह अपनी ध्वनियाँ करते रहते हों, मानो गज अपनी ध्वनियाँ करते रहते हों, मानो कजली वनों से ला ला करके ब्रह्मचारी के द्वारा यागों की रचना होती रहती थी। परन्तु आधुनिक काल का जब मुझे पूज्यपाद गुरुदेव का वह जीवन आधुनिक, वर्तमान और पुरातन काल का जीवन स्मरण आता है तो हृदय मानो देखो, मैं प्रभु को ही धन्यवाद क्या? प्रभु! की कृतिका का वर्णन करने लगता हूँ। प्रभु तू अनुपम है। तेरी महिमा कैसी विचित्र है? तू मानव को कहीं का कहीं पहुंचा देता है। कर्म की आभा के ऊपर। परन्तु मैं इस सम्बन्ध में विवेचना देने नहीं आया हूँ। मैं पूज्यपाद गुरुदेव को यह वर्णन करा रहा हूँ कि हम आज विज्ञान के ऊपर वैज्ञानिक स्थलियों में जब प्रवेश करते हैं परन्तु पुरातन काल का जो वैज्ञानिक था, यह प्रजा को, वह समाज को, वह विद्यालय में ब्रह्मचारियों को मानो यह शिक्षा देता था कि संसार में निर्भय रहना चाहिए। किसी प्रकार की भी मानव को भय की आभा नहीं आनी चाहिए। मानव सदैव जब अप्रतम पामराति अस्तो जब पामर प्रवृत्ति बन जाती है तब मानव में नाना प्रकार की मानो देखो, शंका, लज्जा उत्पन्न हो जाती हैं। आधुनिक काल का जो वैज्ञानिक है वह नाना प्रकार से मानव को मानो देखो, भय की प्रतीति देता जा रहा है। अहा, मानव को निष्क्रिय बना रहा है। विज्ञान के सदुपयोग के स्थान में दुरूपयोग होता जा रहा है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह परिचय कराया है कि आधुनिक काल का वैज्ञानिक, मानो देखो, चन्द्रमा की क्या, सूर्य की क्या, मंगल की यात्रा में मानो अपने को सफलतम् स्वीकार करता है और यह कहता है कि मैं मंगल में चला गया हूँ। यह जो मंगल मण्डल है मंगला धत्वहे प्रहे अस्तो इस में मानव का यान गति कर गया है। जब मैं यह विचार ले करके मैं जब महात्मा ध्रुव वाले और महात्मा नारद मुनि की विज्ञानशाला में प्रवेश करता हूँ देखो, देवर्षि नारद और महात्मा ध्रुव देखो, जब वह उनका विद्यालय मुझे स्मरण आता है तो महात्मा ध्रुव अपने यान में विद्यमान हो करके, सूर्य की किरणों

से विद्युत को ले करके वह मानो देखो, नाना स्वाति लोकों की परिक्रमा करता रहा है जो मंगल से भी ऊर्ध्वा में मण्डल गति करने वाले हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में यह वर्णन करते हुए कहा था, यह जो विज्ञान है इसकी स्थिरता भी मानव के तप के द्वारा रहती हैं यदि मानव में तप नहीं है। मानव वैज्ञानिक तपस्वी नहीं है। तो विज्ञान भी स्थिर नहीं रह सकता। विज्ञान मानो देखो, कणों में परणित हो जाएगा या विनाशता में परणित हो जाएगा। ऐसा मानो देखो, मुझे स्मरण है। आधुनिक काल में विद्यालयों में मैं प्रवेश करता हूँ तो मानो देखो, वहाँ शिक्षा दी जाती है विज्ञान की, परन्तु क्रियात्मक जो जीवन है उससे मानव इतना कटिबद्ध नहीं जितना होना चाहिए। ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहा है, विद्यालय में प्रवेश हो रहा है, परन्तु देखो, जब उनका क्रिया कलाप, उनकी कृतिका दृष्टिपात आती है तो हृदय में एक मानो कम्पायमानता दृष्टिपात आने लगती हैं।

पुरातन यन्त्र

आज मैं तुम्हें विज्ञान के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ! पुरातन काल के मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने विज्ञान की चर्चा करते हुए बहुत से रहस्यों को उद्धृत किया है! जो आधुनिक काल का वैज्ञानिक उन तथ्यों से मानो दूरी रहता है। आधुनिक काल का वैज्ञानिक तो ऐसा यन्त्र भी निर्माणित नहीं कर सका है जो मानव एक स्थली पर मानो किसी प्रकार की उद्दण्डता कर गया है और उस उदण्ड वाले प्राणी का, वह चला गया है परन्तु उसका चित्र लें लें। ऐसा कोई यन्त्र अब तक निर्धारित नहीं हुआ। परन्तु देखो, पुरातन काल के ऐसे वैज्ञानिक हुए हैं, भारद्वाज और वशिष्ठ मुनि आश्रम में, उद्दालक आश्रम में, ऐसे ब्रह्मचारी हुए हैं, मानो एक मानव चला गया है, ढाई घड़ी के पश्चात् भी उस मानव का चित्र लिया जा रहा है। देखो, यदि इस प्रकार का विज्ञान राजा के राष्ट्र में आ जाए तो राजा के राष्ट्र में मानो देखो, जो नष्ट करने वाले जो पामर प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं मानव हैं, उन व्यक्तियों को देखो, उनका ह्रास हो सकता है या उनको कारागार में स्थिर किया जा सकता है। नाना ऊर्ध्वा में क्रिया कलाप करने वाला अशुद्धियों में न

रह जाए ऐसा मानो देखो, विज्ञान की, विज्ञान में सार्थकता विद्यमान रहती है। आधुनिक काल का विज्ञान उस यन्त्र को निर्माणित नहीं कर सका है उसको देखो, इस मानव ने क्या जाना है? आधुनिक काल के समाज ने मानो चित्रावलियों को जाना है। वायु में चित्र गति कर रहा है! यन्त्रों के द्वारा, उन चित्रों को यन्त्र ले रहा है। ऐसे तो मानव सम्भवा देवा पूज्यपाद गुरुदेव यह कहा करते हैं कि मानव मानो एकान्त स्थली पर विद्यमान है, अन्धकार छाया हुआ है, एक मानव का प्रकाश आ रहा है या कोई माता अपने पुत्र के वियोग में, या पत्नी अपने पति के वियोग में, जब मानो देखो, अन्तर आभा में अपने पतिदेव को वाणी से पुकारती है और कहती है कि हे देव! कहाँ हो? परन्तु देखो, उस देव के द्वारा, उस पत्नी का चित्र भी विद्यमान है परन्तु उसके शब्द के साथ में, चित्र गति कर रहा है। यह प्रभु का विज्ञान कितना है महान्? मैं आज जब अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहता हूँ, हे पूज्यपाद! आधुनिक काल का वैज्ञानिक, यह निर्णय नहीं कर सका है अब तक, कि यह शब्द पिता के लिए है या पुत्र के लिए है, वह शब्द अन्तरिक्ष में गति कर रहा है! उन शब्दों को जानने के लिए, उन शब्दों को यन्त्रों में लाने के लिए मानव का चित्र नहीं आ रहा है परन्तु देखो, हाँ यन्त्रों के द्वारा अवश्य आ जाएगा यन्त्रों का एक केन्द्र बना हुआ है उसके द्वारा आ सकता है।

परन्तु देखो, जैसे माता मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब हम अपने योग के आँगन में प्रवेश करते थे, तो एक समय मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा कि हे प्रभु! आज तो महर्षि लोमश मुनि का आह्वान होना चाहिए! उनके विचारों का मानो आदान प्रदान होना चाहिए। तो पूज्यपाद और हम वेद की ध्वनि के द्वारा उनके नामों का उच्चारण करते हुए आह्वान करते तो वह आत्मा अन्तरिक्ष में जहाँ भी होती, तो उस आत्मा का इस आत्मा से मिलान हो जाता मानो इस प्रकार का योग की साधना में, यौगिकता विद्यमान रहती है। जब मैं यह विचारता हूँ जैसे माता अपने पुत्र को आह्वान करती है, मानो अपनी वेदना उस बालक तक परणित कर देती है तो मानव के हृदय में जो यन्त्रालय बने हुए हैं, उन यन्त्रालयों में वह चित्रण हो करके मानो देखो, एक आह्ववान की प्रवृत्ति जाती है आधुनिककाल का विज्ञान, प्रभु के विज्ञान को तो जानने के लिए तो तत्पर हो रहा है,

परन्तु जहाँ यह विज्ञान सार्थक होना है, उस आभा पर नहीं आ रहा है। आधुनिक काल का विज्ञान कहता है कि सूर्य जो मण्डल है, उसमें नाना प्रकार के मानो आक्रमण होते रहते हैं। आक्रमण हो करके वहाँ से, बहुत सा सूर्य का भाग मानो देखो, पृथ्वी मण्डल पर क्या, बहुत से लोकों में वह आवृत हो जाता है। परन्तु जब इसके ऊपर आधुनिक काल के वैज्ञानिकों की चर्चाओं को श्रवण करते हैं तो हमारे यहाँ प्रायः ऐसा आक्रमण देखो, मानव के जीवन पर होता रहा है। परमाणुवाद पर होता रहा है। एक मानव है अपनी आभा में, मुद्रा में विद्यमान है, एक शक्तिशाली मानव ने आ करके उस प्राणी के ऊपर आक्रमण किया है। वह आक्रमण से मौन हो जाता है। आक्रमण से उसे क्रोध भी आता है परन्तु देखो, क्रोध में भी वह मौन हो जाता है। परन्तु क्रोध की आभा में क्या है? वह मानव की प्रवृत्तियों के ऊपर, एक प्रकार का आक्रमण हो रहा है। उस आक्रमणों का परिणाम क्या होता है? वह उस क्रोध को अपने में पान करता है, अपने में जल की भांति उसको मानो अव्रोत बना लेता है, अग्नि के द्वारा ही उसे मानो देखो, जब प्राण का प्राण पर आक्रमण होता है तो मानो नाग प्राण का ऊर्ध्वा मुख बन करके वही क्रोधाक्रमण मानो देखो, क्रोधाग्नि से वह बाह्य जगत में चला जाता है और जब बाह्य जगत में प्राणम्ब्रे अस्ते जब क्रोध चला जाता है तो मानव का जो अमृतमयी है, जो प्रकाशमयी देने वाले परमाणु हैं वह परमाणु भस्म हो करके, विष के रूप में मानो देखो, बाह्य जगत में, आन्तरिक जगत में मानो देखो, नाना प्रकार के रुग्णों के रूप में आ जाते है। तो परिणाम क्या है? मैं आज एक ऐसी विवेचना देने आया हूँ, जो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, बारम्बार प्रगट करते रहते हैं परन्तु आधुनिक काल का कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ, जो इस क्रोध की अग्नि का कोई यन्त्र निर्धारित कर सके।

महाराजा हनुमान जी और महाराजा गणेश द्वारा यन्त्र निर्माण

मुझे स्मरण है एक समय देखो, महाराजा हनुमान ने और शिव के पुत्र गणेश जी ने दोनों ने एक स्थली पर विद्यमान हो करके, एक यन्त्र का निर्माण किया था, जिस में क्रोधाग्नि को अंकित किया गया और क्रोधाग्नि को अंकित करने से, उसको वैज्ञानिक

तथ्यों से उसका रूपान्तर किया गया, विभाजन किया गया परमाणुओं का, तो मानव के हृदय का जो भयंकर जो क्रोध है, जो मानो देखो, वह मानव की विचित्र आभा को वह विद्वता की आभा को, यौगिक आभा को मानो देखो, वह अन्तरिक्ष में परणित करके एक अग्नि का स्रोत बन जाता है, जिससे मानव की प्रवृत्तियाँ मानव के हृदय में मानो देखो, अग्नि प्रगट हो करके तुच्छ बन जाता है। इसी प्रकार यह बाह्य जगत है, यह आन्तरिक जगत है। बाह्य जगत् में जब देखो, सूर्य के ऊपर आक्रमण होता है तो उसके कुछ भाग लोकों में जाते हैं, क्रोधाग्नि का जब मानव के शरीर पर प्रतिभाषित हो जाता है उसे पृथ्वी ही अपने में निगल जाती है, वायुमण्डल में देखो, परमाणु बन करके, अन्तरिक्ष को प्राप्त हो करके वही क्रोधाग्नि उस मानव को प्राप्त होती है, जिस मानव का क्रोध अन्तरिक्ष में चला गया।

तो आज मैं ऐसे वाक् तुम्हें प्रगट कराना चाहता हूँ जिन वाक्यों के ऊपर मानव बहुत सी वार्त्ताओं को लाना कृति चाहता है। विचार विनिमय क्या है? आज मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। मैं पूज्यपाद गुरुदेव को परिचय नहीं देने आया हूँ। मैंने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में क्रियात्मक रूपों में इस विद्या का अध्ययन किया है। परन्तु आधुनिक काल का, जो विज्ञान है, आधुनिक काल का विज्ञान तो क्रोध का भी कोई चित्र निर्धारित नहीं कर सका है! क्या इस मानव का क्रोध है और इसमें कितनी मात्राएं हैं? उस क्रोध में कितना नृत्य हो रहा है? उसका कोई यन्त्र निर्धारित नहीं हो सका है। परन्तु देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह परिचय करा रहा हूँ परन्तु विज्ञान क्या बन रहा है? आधुनिक जगत् का जो विज्ञान है वह परमाणु शक्ति में विशाल है। परमाणु शक्ति को एकत्रित कर रहा है। परमाणुवाद में रमण कर रहा हैं वह समय दूरी नहीं है जब परमाणुवाद का इस मानो देखो, संसार में आक्रमण होने वाला है। जब आक्रमण होगा तो एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को अग्नि में परणित करना चाहता है। वर्तमान का जो काल है वह बड़ा विचित्र है। मानो एक दूसरे के आधात का संशयियों पर विद्यमान हैं। वह यह विचार रहा है मैं इस राष्ट्र को कैसे अपने आक्रमण से विजय कर सकता हूँ। आज विजय होने के लिए नाना प्रकार की कल्पना कर रहा है मानव परन्तु राष्ट्र राष्ट्र को

निगलना चाहता है, राष्ट्र राष्ट्र को अपनी आभा में रमण करना चाहता है।

सूर्य किरणों से यान निर्माण

परन्तु जब मैं यह विचारता रहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन कराता हूँ, कि पुरातन का विज्ञान आधुनिक काल का विज्ञान, आज का मानव मानो देखो, यात्रा कर रहा है अन्तरिक्ष की, पुरातन का मानव देखो, अपने यन्त्र को सूर्य की किरणों से, स्थिर करके मानो देखो, सूर्या की किरणों से, वह यान गति करता रहता था। परन्तु देखो, आधुनिक काल का विज्ञान देखो, सूर्य के ऊपर कुछ अनुसन्धान कर रहा है। उसका यह विचार है, आधुनिक काल के वैज्ञानिकों का, कि सूर्य की जो नाना प्रकार की किरणें हैं, जो प्रातःकाल होते ही, विद्युत् को बिखरना प्रारम्भ कर देती हैं और विद्युत मानव को जीवन देती है हम इन किरणों को जानना चाहते हैं। हम उन कान्तियों को अपने यन्त्रों में लाना चाहते हैं! परन्तु वह इतनी सफलता में अब तक नहीं पहुंचे हैं जितनी सफलता पुरातन काल में थी। पुरातन काल में मानो देखो, महात्मा ध्रुव और देवर्षि नारद मुनि अपना विद्यालयों मे मानो देखो, वह हिमालय की कंदराओं में विद्यमान थे। विचार कर रहे थे आचार्य से ये प्रश्न किया क्या हे भगवन! मैं सूर्य की किरणों को अपने में कैसे आदान प्रदान कर सकता हूँ? उन्होंने मानो ब्रेल, अस्वातम्, कृतिका ये नाना प्रकार की धातु ले करके उसका एक यन्त्रों का निर्माणित किया। परन्तु सूर्य की किरण जैसे आती रही, मानो निचले भाग में वहाँ का परमाणुवाद एकत्रित होता रहा। देखो, सूर्य की किरणों में, एक मानो देखो, सर्ववस्तुत है देखो, जिसे हम शक्तिशाली जन्म कहते हैं, मानो देखो, जो खनिजों के रूप में, पृथ्वी के गर्भ में रहता है वह परमाणु रूप से, सूर्य की किरणों के साथ, गमन करता रहता है। वह परमाणुवाद मानो देखो, उसमें आना जैसे ही प्रारम्भ हुआ, यन्त्रों के द्वारा निचले स्थलो में यन्त्र विद्यमान है उससे परमाणुवाद एकत्रित हो रहा है। उस परमाणुवाद के द्वारा देखो, यन्त्र का निर्माण होने जा रहा है। यन्त्र का जब निर्माण हुआ तो सूर्य की किरण के साथ वह विज्ञान मानो गति करता

रहता है।

याग का विज्ञान

हमारे ऋषि मुनियों ने एक वाक् बहुत ही विचित्र कहा है। आज देखो, हमारे ऋषि मुनियों ने, अध्ययन करते हुए, सृष्टि के प्रारम्भ से यह कहा कि मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। मानव को याग करना चाहिए! मानो देखो, आधुनिक काल में या पुरातन काल की वार्त्ता तो मैं प्रगट करने के लिए तो क्या मैं आधुनिक काल के मानो नाना प्रकार के जितने भी रूढ़िवादी हैं, वह तो याग को यही कहता है कि यह तो मानो देखो, एक प्रकार का पाखण्ड है। परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ अरे, भोले प्राणी! जब तू, अपनी नासिका के द्वारा सुगन्ध को लेता है तो इसको पाखण्ड कैसे कह सकता है? परन्तु वह पाखण्ड इसीलिए कहता है क्योंकि वह मार्ग ऐसा कठिन है वह ऐसा मार्ग है जहाँ न राष्ट्र है और न वहाँ किसी प्रकार की ईर्ष्या है और न किसी प्रकार की पद की लोलुपता रहती है। परन्तु देखो, जब पद की लोलुपता होगी, सम्प्रदायवादी बन करके, मानो देखो, रूढ़िवादी बन करके, अपने अपने धर्मावलम्बी का एक मानो घोष करके राष्ट्र तक सीमित उनका जीवन रहता है उनकी सम्प्रदाएं रहती हैं, परन्तु देखो, राष्ट्र से ऊँचे हो करके देखो, जब तुम याग पर चिन्तन करोगे तो याग का विज्ञान तुम्हारे हृदय में समाहित हो जाएगा। परन्तु देखो, जब मानव यही नहीं विचार रहा है। एक देखो, यदि याग करने वाला देखो, आहार को पवित्र बनाता है। याग करने वाला वैज्ञानिक बन रहा है, याग करने वाला सुगन्धि को स्थापित करना चाहता है। याग करने वाला अन्तरिक्ष में अग्नि को जब मुखारबिन्दु में आहुति प्रदान करता है, वह सूक्ष्म बना करके, वायुमण्डल में प्रसारण कर देती है। वायुमण्डल में वह परमाणु मानो ओत प्रोत हो करके अशुद्ध विचारधारा वाले परमाणुओं को निगल जाते हैं। स्वच्छ परमाणु को वह आभा में परणित करा देते हैं। मानो जैसे पृथ्वी के गर्भ में सूर्य मानो जल को शक्तिशाली बनाता है, इसी प्रकार मानो देखो, याग का भी कोई रस है और याग का रस क्या है? वह स्वाहा है। याग का रस स्वाहा है मानो देखो, आगे ऋषि कहता है वाजपेयी याग करने वाला क्या

देखो, इस मानब ब्रहे इस याग का जो रस है इस याग का जो रस बन करके बन करके अन्तरिक्ष में छा जाता हैं जब अन्तरिक्ष में छा जाता है मानो पाण्डित्य की वैदिक ध्वनि के द्वारा, होताओं के द्वारा, याग के द्वारा और यज्ञमान के संकल्प के द्वारा। ये परमाणु बन करके अन्तरिक्ष में गति करता रहता है और वह अन्तरिक्ष में गति करता है और वायुमण्डल के बनने पर राष्ट्र की प्रतिभा बनती है। समाज की प्रतिभा बनती है वहाँ चरित्र और मानवता का देखो, ऊर्ध्वा में गति करता है। मानव का आहार और व्यवहार विचित्र बनता रहता है। आहार जब पवित्र बनता है तो व्यवहार पवित्र बनता है और जब व्यवहार पवित्र बनता है तो उसका विज्ञान का खण्ड भी विचित्र होगा, पवित्र होगा और जब विज्ञान ऊँचा होगा तो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बन करके परमात्मा को प्राप्त हो सकता है।

शुद्ध भाव से राष्ट्र कल्याण

मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से विवेचना देते हुए कहा है कि यहाँ रूढ़ियाँ नहीं होनी चाहिएं। राष्ट्र को चाहिए क्या रूढ़ियों को समाप्त करना है। बुद्धिमानों को ला करके, उनके क्रिया कलापों को ला करके समाज के संग नियुक्त किए जाएं, जिससे समाज में एकता के सूत्र की चर्चा आ जाए। आधुनिक काल का मानो राजा कहता है क्या एकता के सूत्र में आ जाओ। परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ, मैं आधुनिक काल के परमाणुवाद को जो अन्तरिक्ष में गति कर रहा है शब्दों में मानो मैं यह कहता हूँ हे भोले राजन! तू एकता के सूत्र में इस राष्ट्र को लाना चाहता है, एकता के सूत्र में तेरी मन की प्रवृत्ति भी नहीं है। जब तेरी मन की प्रवृत्ति एकता के सूत्र में, या राष्ट्र को ऊँचा बनाने में लग जाएगी उस समय मानो तू अपने ऐश्वर्य को त्याग करके अरे, जब राष्ट्रवेत्ता ही यहाँ माँस और प्राणियों का रक्त पान करके समाज को एक सूत्र में लाना चाहते हैं यह कैसी अद्भुदता मुझे दृष्टिपात आ रही है।

ब्रह्मचर्य का अभिप्रायः

आज मानो मुझे स्मरण आता रहता है वह अश्वपति का काल मेरे पूज्यपाद गुरुदेव एक

समय मुझे मानो वाजपेयी याग हुआ था एक समय, महाराजा अश्वपति के यहाँ मुझे बोले कि हे पुत्रों! समा ब्रणे मानो आज तुम याग में चलें, महाराजा अवश्वपति के यहाँ से एक याग का निमन्त्रण आया है। मानो जब याग में पहुंचे, तो महाराज अश्वपति ने यह कहा है क्या याजनो! तुम मेरे याग को जब सफल कर सकते हो? जब मानं ब्रीहि असुतो होगा परन्तु देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा, हे राजन! हम तुम्हारे याग में जब उपस्थित हो सकते हैं जब तुम मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसि बन जाओगे। आज मानो देखो, जब पूज्यपाद गुरुदेव ने ब्रह्मचर्य को कहा तो उन्होंने कहा, भगवन! मुझे स्वीकार है। देखो, आज मेरे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने पूर्व छ माह तक पूर्व ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान कराया। ब्रह्मचर्य का अभिप्रायः क्या है? क्या प्रत्येक श्वास की गति को मुद्रित हो करके ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो देने का नाम ब्रह्मवर्चोसि है। मानो जब वह ब्रह्मवर्चोसि बन करके ओ३म् रूपी सूत्र में श्वास को पिरो देता है उस समय राजा याग करता है। यज्ञमान याग करता है, होता जन भी मानो ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोए जाते हैं। वह वाजपेयी याग राष्ट्र के कल्याण के लिए जब राजा तपस्वी है, ब्रह्मवेत्ता है, ब्रह्म की वार्त्ता कहता है, वह समाज को ब्रह्म की चर्चा कराता है तो वह राजा ऐसा है जो समाज को एक सूत्र में ला सकता है।

परन्तु मैं जहाँ उस काल की वार्त्ता प्रगट कर रहा हूँ जहाँ मैं आधुनिक काल की चर्चा करता हूँ, अरे, दूसरे के रक्त पान करने वाले प्राणियों! तुम समाज को एक सूत्र में लाना चाहते हो, तुम प्राणी मात्र को जब नहीं जानते तो सूत्र में तुम कैसे सूत्रित कर सकते हो! परन्तु देखो, यह वाक् मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराया था, कि आधुनिक काल का विज्ञान भी अधूरेपन में है। आधुनिक काल का विज्ञान संकुचित्त हो गया है। वह मांसों का पान करने वाला, दूसरे के रक्त को पान करने वाला प्राणी मानो वैज्ञानिक है परन्तु जिस विज्ञान की घोषणा वह आज कर रहा है, कल जब घोषणा करेगा तो उसी धारा की विपरीतता उसे प्राप्त हो जाएगी। मानो क्यों हो रही है? कुछ समय पूर्व मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था, आधुनिक काल के माँस भक्षण करने वाले वैज्ञानिकों ने ये घोषणा की क्या अद्यतम् क्या चन्द्रमा

जो है उसमें प्राणी नहीं है।

प्राण और जीवन शक्ति से पिण्ड निर्माण

परन्तु देखो, उसमें अग्रहा नहीं है, मैं यह जानता रहता हूँ वैज्ञानिकों से, जब चन्द्रमा में जल नहीं है, जब चन्द्रमा में प्राण शक्ति नहीं है, जब चन्द्रमा में मानो जीवन शक्ति नहीं है, तो तुम्हें ये पृथ्वी के रज कहाँ से प्राप्त हो गए? जहाँ पृथ्वी के रज होंगे वहीं प्राण शक्ति होगी, वहीं वायु में मानो देखो, जल होगा क्योंकि जल ही पृथ्वी के पिण्ड को बनाता है। यह मानो देखो, वैदिक सिद्धांत है, क्या पिण्ड जितने भी बनते हैं, चाहे यही पिण्ड पृथ्वी का पिण्ड है, चाहे यही पिण्ड मानो चन्द्रमा के रूप में है चाहे यही मानो पिण्ड स्वाति रूपी पिण्ड में है, चाहे यही सूर्य के रूप में पिण्ड बना हुआ है। इन सब में एक प्राण शक्ति है और प्राण शक्ति आपो में रहती है। यदि आपो नहीं होगा, तो देखो, प्राण शक्ति स्थिर नहीं कर सकता और जब आपो नहीं है, तो जल नहीं रह सकता। जल नहीं रह सकता तो पिण्ड नहीं बन सकता। परन्तु देखो, पिण्ड बनता ही प्राण और जीवन शक्ति से है। मानो देखो, इस प्रकार की आभा मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह परिचय देना चाहता हूँ पूज्यपाद आधुनिक काल का विज्ञान भी अधूरेपन में नृत्य कर रहा है, क्यों कर रहा है उसके मूल में उनका आहार और व्यवहार पवित्र नहीं रहा है। उसके मूल में केवल यह है।

महाराजा कुम्भकरण का जीवन

हमारे यहाँ ऋषि मुनियों ने, महर्षि कणाद ने और भी नाना वैज्ञानिकों ने राजा रावण के विधाता कुम्भकरण ने और जब यह भारद्वाज मुनि के यहाँ घोषणा कराई गई कि हम कुछ यन्त्र का निर्माण कर रहे हैं, और वह यन्त्र यहाँ से उड़ान उड़के, चन्द्रमा में जाएगा और चन्द्रमा से हम और भी आगे उड़ान उड़ सकते हैं। यह घोषणा की, मानो यह घोषणा आज से नौ लाख वर्ष पूर्व महाराजा कुम्भकरण ने अपने विद्यालय में घोषणा की थी। और यह कहा था, उस घोषणा में, क्या सम्भवा देवं ब्रह्मे देवा सम्भविते देवाः यह वेद का मन्त्र है यह वेद का मन्त्र यह कहता है क्या हम चन्द्रमा में जा सकते हैं,

हम चन्द्रमा से ऊर्ध्वा और भी लोकों में जा सकते हैं इसी यन्त्र की आभा को ले करके परन्तु वह घोषणा एक धारा में रही, वह घोषणा ज्यों की त्यों अकाटय में रही परन्तु देखो, महाराजा कुम्भकरण का जीवन था, मैंने कई काल में यह प्रगट कराते हुए कहा था, वह दूसरों का रक्त पान नहीं करते थे मानो वह जल को पान करते थे और जल में मानो देखो, दुग्ध बना करके अन्न को पान करते थे। महाराजा कुम्भकरण ने देखो, पिचतर वर्षो तक तो देखो, उन्होंने मानो पिचतर वर्ष उन्होंने देखो, कणक का दुग्ध बना करके उसको अग्नि में तपा करके पान करते थे। पिपल और वृक्षो के मानो पत्रों का पिपाद बना करके पान करते थे। पचतर वर्ष का जीवन उनका ऐसा तपस्वी रहा।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया हैं महाराजा कुम्भकरण को जब संग्राम होते मृत्यु की शैय्या प्राप्त हुई उस समय 485 वर्ष की आयु थी। मैं यह विचारता रहता हूँ कि उनके जीवन की धाराओं में कितनी विचित्रता विद्यमान है। परन्तु जब मैं आधुनिक काल के वैज्ञानिकों को दृष्टिपात करता हूँ, आधुनिक काल का वैज्ञानिक मानो एक ही तत्त्व पर आज घोषणा कुछ कर रहा है जब उसका आगे तत्त्व प्राप्त होता है आगे उसी घोषणा में देखो, नाना प्रकार का भेदन प्राप्त होता रहता है। उसके मूल में मैंने वर्णन किया है उसके मूल में उसका आहार और व्यवहार विद्यमान है। परन्तु देखो, राष्ट्र की इसी प्रकार राष्ट्र का विधान है राष्ट्र की प्रतिभा है परन्तु राष्ट्र का मानो देखो, जब विधिवत् निर्वाचन कर रहा है राष्ट्र की प्रणाली निर्माण आज हो रहा है, कल उसी धारा को नष्ट करने के लिए तत्पर है, क्योंकि उसमें देखो, कितना स्वार्थवाद है। जब देखो, आधुनिक काल जो विधानम् ब्रह्मणे सम्भवः देवः जो निमार्णं ब्रीहि जो दूसरों को दण्ड देने की आज घोषणा हो रही है कि राष्ट्र कहता है दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए। इस प्रकार का नहीं दिया जाना चाहिए। मृत्यु दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए। परन्तु द्वितीय काल में मृत्यु दण्ड दिया जाता है। उसके मूल में क्या है? उसके मूल में है मानो देखो,

उनके विचारों का अधूरापन है।

भगवान मनु द्वारा राष्ट्र निर्माण

देखो, भगवान मनु के काल को, आज मनु सिद्धान्त को या मुन प्रणाली को ले करके जब राष्ट्र का निर्माण किया जाता है, उस राष्ट्र की, मनु जी के सिद्धांत की राष्ट्र की परम्परा को मानो देखो, यह संसार स्वीकार करता है, यह संसार एक आभा में लाता है एक धारा में लाता है, जो दण्ड उन्होंने दण्डित किया हैं क्यों किया है? उसके मूल में क्या है? भगवान मनु का जीवन जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव किसी काल में प्रगट कराते रहते थे। उन्होंने एक समय वर्णन करते हुए कहा था कि भगवान मनु का जो तप है, वह नितांत रहा है। भगवान मनु जब तपस्या करते थे, उन्होंने सौ वर्षों तक देखो, तपस्या की और मुद्रित हो करके अपने हृदय से वेद के मन्त्रों का तारतम्य मिला करके मानो देखो, राष्ट्र का निर्माण किया। और यह उन्होंने सबसे प्रथम उन्होंने घोषणा की क्या धर्म जो है राष्ट्र धर्म की रक्षा करने के लिए है। मानो देखो, राष्ट्र का जितना निर्माण होगा उतना मानो विधिवत् होगा, उतनी धर्म की रक्षा होगी। देखो, धर्म की रक्षा करना, और मानवता का उत्थान करना, और विधिवत् चारो वर्णो की व्यवस्था उन्होंने निश्चित किया है आधुनिक काल में तो प्राणी उसको पाखण्ड कह रहा हैं ये चर्चा तो मैं कल ही प्रगट करूंगा। मुझे इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है आज जो मैं मानो देखो, इस प्रकार की विवेचना करता रहूँ। यह तो संसार वन है। मैं इन वनों में जाना नहीं चाहता हूँ।

मांसाहार से राष्ट्रीयता का अभाव

पूज्यपाद गुरुदेव को यह वर्णन करा रहा हूँ कि दूसरों के रक्त पान करने वाला कदापि भी अपने राष्ट्र में एक सूत्र में समाज को नहीं ला सकता। परन्तु देखो, मेरी एक ही घोषणा है आज संसार में जो अपने मन की प्रवृत्तियों को राजा बन करके एक सूत्र में प्रवृत्तियों को नहीं ला सकता, ब्रह्म की चर्चा नहीं कर सकता, ब्रह्म की घोषणा नहीं कर सकता, समाज को एक सूत्र में लाने की घोषणा कर रहा है यह इसकी केवल विडम्बना

मात्र रह जाती है। आज मानो देखो, आज का विचार विनिमय क्या है? मैं एक विचार दे रहा हूँ। क्या संसार में यदि राजा को अपने राष्ट्र को एक सूत्र में लाना है समाज को एक सूत्र में लाना है, इस पृथ्वी मण्डल को एक सूत्र में लाना है तो मनु जी के सिद्धांत को ला करके विद्यालयों को पवित्र बनाया जाए। और देखो, जितना भी विज्ञान है उसको मानो देखो, आत्मीयता से मन और प्रकृति के तंतुओं से चिन्तन किया जाए। आहार और व्यवहार को ऊँचा बनाने से उसका चिन्तन किया जाए तो राष्ट्र एक सूत्र में आ सकता है, अन्यथा यह राष्ट्र की एक विडम्बना रह जाती है! आज का विचार विनिमय क्या है? मैं आज का विचार यह दे रहा हूँ कि मानव जब दूसरे के रक्तों का पान करेगा उसके हृदय में स्वार्थपरता आ जाती है और जो स्वार्थी प्राणी होता है वह अपने पुत्र को भी नष्ट कर देता है। परन्तु देखो, स्वार्थी प्राणी के लिए संसार में दर्शनों की भाषा में कोई स्थान नहीं रहता। इसीलिए देखो, अति स्वार्थ होना ही समाज की विनाशता का कारण है। आधुनिक समाज काल का जो स्वार्थपरता में मानो देखो, विशेषज्ञ बन रहा है। इसीलिए देखो, यह समाज एक दूसरे प्राणी, प्राणी को नष्ट करना चाहता है

आज का विचार विनिमय हमारा ये मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से अब आज्ञा पाऊँगा आज का हमारा यह विचार क्या क्या कह रहा है कि परमपिता परमात्मा की आराधना करने वाला प्राणी अपने में महान् बन करके अपनी आभा को ऊँचा बनाता हुआ इस संसार सागर से पार हो जाता है और तपस्वी जीवन को ऊँचा बनाता है। तपस्वी ही देखो, संसार की आभा को ऊँचा बना सकता है वही समाज को सूत्र में ला सकता है यह आज का विचार अब मैं पूज्यपाद गुरुदेव से से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! आज मेरे प्यारे! महानन्द जी ने अपने बहुत से हृदय की विडम्बनाओं को, हृदय में इनके जो उद्गार थे, उन्होंने अपने उद्गार दिए। परन्तु इन उद्गारों में एक ऐसी सार्थकता, ऐसी महत्ता है मानो यह वाक् पुरातन काल में यह कदापित उच्चारण नहीं कर सकते थे, आज जिन वाक्यों का प्रतिपादन कर रहे थे। आज का विचार हमारा समाप्त होने जा रहा है शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। आज का विचार

समाप्त

८ 20 03 1983 पुष्प 43 पुरातन काल की गुरु शिष्य परम्परा व आधुनिक काल

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। मानो जिस आभा में सदैव रमण करने वाला रमणं ब्रह्मे वर्चो देवाः हिरण्यमयी रथाः वाचनमा देवं हृदयः वाचा रथेषु मंगलौ वरणेसु धर्वर्चतम् मेरे प्यारे! हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा की प्रतिभा मानो इस संसार में ओत प्रोत है। जब हम परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर, परम्परागतों से ही, प्रायः अनुसन्धान करते रहते हैं। आज का हमारा वेद का मन्त्र ये कह रहा था हे यज्ञन्मथौ देवाः हे यजन्नमाः वरुणश्चं ब्रह्म लोकाः हे याज्ञिक पुरुषो! तुम अपने में महान और विचित्र बनने के लिए सदैव अपनी महिमा का वर्णन, महिमा का गान गाना ही हमारा कर्त्तव्य है। परन्तु जब हमारा ज्ञान और विज्ञान उस महान वैदिक साहित्य के आधार पर, इस मानव समाज में प्रसारण हो जाता है तो उस समय मुनिवरो! देखो, यह समाज अपनी महिमा का प्रभु की आभा में रमण करने लगता है।

तो आओ मेरे पुत्रो! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है? क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र नाना यागों की चर्चाएँ करता रहता है और अपनी अपनी आभा में, प्रत्येक मानवीयतव, अपनी मानवता का सदैव दर्शन कराता रहता है। जब हम मानवता का प्रायः दर्शन करने लगते हैं, तो वेद का वाक् हमें नाना प्रकार की वार्त्ता प्रगट करता हुआ अपने में महान और विचित्र बना देता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र ये कह रहा है कि वरुणश्चं दिव्यां गतेसु सर्वं आभ्यां रुद्रः मेरे पुत्रों! देखो, बहुत पुरातन काल से ही हमारे यहाँ नाना ऋषि मुनि, राजा इस प्रकार के हुए हैं जिन्होंने यागों के ऊपर महान अपने जीवन को ऊँचा बनाने के लिए सदैव अपनी मानवता का दर्शन होता रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का

हमारा वेदमन्त्र ये कह रहा है कि सम्भवा साधनं ब्रह्मे मानो यह नाना प्रकार के याग, राजा के राष्ट्र में होने चाहिएं। जिन यागों से समाज में एक महानता का प्रायः दर्शन होता हैं आज मैं कोई विशेष विवेचना नहीं दूंगा, क्योंकि मेरे पुत्र ने बहुत सी वार्त्ताएं प्रगट की है। मानो यह आत्मा परमात्मा के सम्बन्ध की और यागों के सम्बन्ध की जब हम बेटा! चर्चाएँ प्रायः करते रहते हैं तो हमारा मानव जीवन एक महानता का प्रदर्शन कराने लगता है। तो हमें उस महानता की ज्योति के ऊपर ज्योतिवान् हो करके अपने जीवन को महान बनाने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। आज मैं विशेष विवेचना नहीं दूंगा क्योंकि भगवान कृष्ण ने नाना प्रकार की चर्चाएँ करते हुए, याग के सम्बन्ध में अपना व्यक्तव्य देते हुए यह कहा था अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत प्रोत हो करके सम्भवा रूद्रे भवे सम्भवा वाचन्नमाः देवं दधि रचतो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि यागां ब्रह्मेः मेघाः वरणप्रवेः मानो मेध ही वरुण बन करके हमारे अन्नाद को प्रतिभाषित करता रहता हैं।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद का मन्त्र, वेद की प्रतिभा हमे उस मार्ग के लिए प्रेरित कर रही है जिस मार्ग पर जाने के पश्चात् हमारा जीवन पवित्र बनता है। आज मैं विशेष विवेचना न करता हुआ, अब मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने दो विचार दे सकेंगे। पुनः की भांति अपने दो विचार दे सकेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् दधिमा रथं आप्यां लोकं सर्वे सुभद्राः यम भविता दधि ब्रह्मा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, अभी अभी, कुछ यागों की चर्चा कर रहे थे और याग के सम्बन्ध में अपना विचार व्यक्त करते हुए, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने भगवान कृष्ण और नाना राजाओं की वार्त्ता उन्होंने प्रगट की। मानो पुरातन काल से ही, ये वार्त्ताएं परम्परागतों से ही, मानो राष्ट्रीयता में क्या, मानव समाज में एक आभा बन करके रही है।

याग का स्वरूप

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जब द्वापर के काल में भगवान कृष्ण ये विवेचना

देते रहते थे, कि प्रजन्नां भो सम्भवा मानो भगवान कृष्णा याग करते रहते थे। भगवान कृष्णा का एक याज्ञिक जीवन एक महानता में रहा है। उन्होंने कहा है कि अन्तरिक्ष में यही परमाणु ओत प्रोत हो जाते हैं और अन्तरिक्ष मानो याग के ही परमाणुओं से ही, यह वायुमण्डल अन्तरिक्ष एक महानता की ज्योति में परणित हो जाता है। परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ये कहा करते थे जब हम चरणों में ओत प्रोत हो करके यह वार्त्ता प्रगट करते रहते थे कि महाराज! ये याग क्या है? तो पूज्यपाद गुरुदेव एक मन्त्र उच्चारण किया करते थे और वह मन्त्र था यागं भवो सम्भवा अन्तरिक्षां वायु अग्नं ब्रह्मे वर्चा मानो यह जो याग है यह अग्नि है। यह जो याग है यह मानव की आत्मा है। यह जो याग है मानो देखो, वायु की आभा में रमण करने वाला वायुश्चं कहलाता है। तो हम जब वाक् कहा करते थे तो उसकी विवेचना कराने के लिए सदैव तत्पर रहते थे, और यह कहा करते थे सम्भवा देवं दधि ब्रह्मणा लोकं हृदा मानो देखो, यह आत्मा ही मानव का हृदय, संसार का हृदय है और यही मानो देखो, याग कहलाता है। अग्नि में जब समिधा मानो प्रत्येक वस्तु का सूक्ष्म रूप बना करके अन्तरिक्ष में ओत प्रोत हो जाता है तो अन्तरिक्ष मानो एक जल की प्राण वायुमण्डल में छा जाती है। उससे ही नाना प्रकार के परमाणु अपनी आभा में गतियाँ करते रहते हैं।

तो विचार विनिमय क्या? मेरे पूज्यपाद गुरुदेव परम्परागतों से ही, मानो देखो, इस प्रकार की विवेचना करते रहे हैं। आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ।

याग और विज्ञान

तुम्हें यह विचार देने के लिए आया हूँ जैसा मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि आधुनिक काल का जो विज्ञानवेत्ता है, वह इस वाक् को अब स्वीकार करने जा रहा है कि अग्नि में घृत को भस्म करने से, अग्नि में उसको स्वाहा कहने से उसके परमाणुवाद से दूषित वातावरण शान्त हो जाता है। परन्तु आधुनिक काल का विज्ञानवेत्ता क्या? पुरातन का काल में तो मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब भारद्वाज मुनि के

यहाँ याग भी होता था, तो विज्ञान की चर्चाएँ भी होती रहती थीं। वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण, याग के पश्चात् किया जाता था। मुझे एक समय स्मरण है एक समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक समय मध्य रात्रि में कुछ अध्ययन और चिन्तन और मनन कर रहे थे। परन्तु मनन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव के हृदय में एक मानो शंका की कृत्तियाँ उत्पन्न हो गई और वह शंका क्या थी? कि याग और विज्ञान के सम्बन्ध में कुछ विवेचनाएँ हो गई और परन्तु देखो, उनके गम्भीर मुद्रा में परणित हो करके चिन्तन और मनन होने लगा। पूज्यपाद गुरुदेव बोले कि चलो आज हम याज्ञवल्क्य मुनि के आश्रम में प्रवेश करेंगे और भारद्वाज अमरेत ऋषि के द्वार पर पहुंचेंगे। तो मुनिवरो! देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव और हम मानो देखो, प्रातःकालीन होते ही वहाँ से प्रस्थान किया। भ्रमण करते हुए वह याज्ञवल्क्य, मुनि के द्वार पर पहुंचे। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ मानो नाना प्रकार का देखो, विज्ञान में उनकी प्रायः गति थी और विज्ञान एक आभा में गति कर रहा था। पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा कि हम यह जानना चाहते है, ऋषिवर! क्या विज्ञान का और याग दोनों का क्या समन्वय है? तो उस समय याज्ञवल्क्य ने कहा कि याग ही विज्ञान है और विज्ञान ही याग है। मानो जब यह कहा कि विज्ञान ही याग है तो उन्होंने कहा कि यह कैसे? हमें इसका निर्णय कराओ।

याग ही विज्ञान है

याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा कि हे ऋषिवर! आप तो गम्भीर मुद्रित हैं। गम्भीर मुद्रा में जाने वाले हैं आप नहीं जानते? क्या या मानो आप यह जानने के लिए आए हैं कि कितना बुद्धिमान है? उस समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा नहीं। यह अपमानित होने के लिए नहीं, यह तो केवल जानकारी के लिए हम जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि हे प्रभु! यह जो संसार है यह एक याग में परणित है। प्रत्येक मानव याग कर रहा है, चाहे वह भौतिक विज्ञानवेत्ता हो, चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता हो, चाहे वह साधारण क्रिया कलाप करने वाला मानव हो, परन्तु देखो, वह सब याग में परणित हो रहे हैं और वह विज्ञान मानो देखो, उसकी आभा बन करके रहता है और आभा बन करके मानो ओजस्व

बन करके महानता को प्राप्त करा देता है।

याग

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वाक् स्वीकार कर लिया। उन्होंने यह निर्णय दे दिया कि संसार का नाम ही याग है, राष्ट्र का नाम ही याग है। परन्तु मानव के द्वारा जितना भी व्यापक कर्म है, व्यापकवाद है, रूढ़ियों से पृथक् है, अज्ञान से दूरी है, आत्मा के अनुकूल है, वेद की प्रतिभा उसे छूती रहती है, वह सर्वत्र एक प्रकार का याग ही माना गया है।

परन्तु मैं आज विशेष विवेचना यागों के सम्बन्ध में पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत विस्तृत यागों के सम्बन्ध में व्याख्याएं कीं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वहाँ से भी गमन किया, भ्रमण करते हुए माता अरुन्धती और वशिष्ठ मुनि के द्वार पर पहुंचे। माता अरुन्धती और वशिष्ठ मुनि महाराज प्रातःकालीन ब्रह्मचारियों के मध्य में वह याग करते थे, याग का जब क्रिया कलाप चल रहा था तो हमारा जब वहाँ समग्र हुआ तो ऋषि ने कहा आईए भगवन! आसन दिया, विराजमान हो गए। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज से पूज्यपाद गुरुदेव ने नम्रता से कहा कि हे ब्रह्मवेत्ता! हे ब्रह्मनिष्ठ! आज हम आपसे कुछ जानने आएं हैं। महर्षि बोले कि आपको क्या शंका हो गई है? आप तो आदित्य ब्रह्मचारी हैं। ब्रह्म का चिन्तन करते रहते हैं। योगश्वरी को, ब्रह्मवर्चोसि बनते रहते हैं। उन्होंने कहा, प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि मैं सम्भवः देवधं ब्रह्मे मानो देखो, यह जो याग जो तुम कर रहे हो यह क्या है? उन्होंने कहा यह हमारी आत्मा है। यह जो याग है यह हमारा आत्मा है ऋषि ने कहा कि आत्मा कैसे है? वशिष्ठ बोले कि आत्मा इसीलिए कि बिना याग के मानव का मूल्य ही क्या है संसार में? मानो बिना याग के मानव का कोई मूल्य नहीं, और याग कहते हैं शुभ कर्मों को। कोई भी मानव जितना भी आत्मीय कर्म करता है, सुकर्म करता है, जितना भी सुकर्म होता रहता है वही मानो देखो, आत्मा के अनुकूल याग कहलाता है। मानो देखो, यह वाक् जब वशिष्ठ ने कहा तो ऋषि प्रसन्न हो गए। पूज्यपाद गुरुदेव ने प्रसन्न हो करके कहा, धन्य है ब्रह्मवेत्ता। मानो देखो, यह

सब निवारण होता रहा।

महाराजा हनुमान की विज्ञानशाला

आओ मुनिवरों! देखो, जब वैज्ञानिकों के मध्य में हम एक समय मानो भ्रमण करते हुए, महाराजा हनुमान की विज्ञानशाला में पहुंचे। महाराजा हनुमान की विज्ञानशाला एक भव्य विज्ञानशाला थी। मानो देखो, वहीं महाराजा गणेश जी भी और देखो, महर्षि तत्त्वेतकेतु ऋषि महाराजा ये तीनो अपने विद्यालय में अनुसन्धान करते थे। आश्रम में अनुसन्धान करते रहते थे। वेद का अध्ययन करना, वेद की प्रतिभा को जानना, वेद के अनुकूल विचारों को व्यक्त करना और याग कर्म करना, अग्न्याधान करना, उसी के द्वारा देखो, अपने आश्रम और मानवीयता को वह सदैव पवित्र बनाते रहते थे, परन्तु जब पूज्यपाद गुरुदेव वहाँ पहुंचे तो उन्होंने उनका स्वागत किया और यह कहा आइए भगवन! और वे विराजमान हो गए। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा, कहिए भगवन! हम तो कुछ जानने के लिए आए हैं? उन्होंने कहा, क्या जानना चाहते हो ऋषिवर? उन्होंने कहा, कि विज्ञान से याग का क्या सम्बन्ध है?

याग में विज्ञान

मेरे प्यारे! महाराजा हनुमान ने अपना उत्तर देते हुए कहा, कि याग का जो समन्वय है, याग का जो विज्ञान से सम्बन्ध है, बिना याग के विज्ञान नहीं और देखो, बिना याग विज्ञान बिना याग के नहीं। उन्होंने कहा जब हम विज्ञानवेत्ता बनते हैं तो वह जो अग्नि का परमाणु, भेदन किया हुआ परमाणु है, उसी को जानने के लिए हम सदैव तत्पर रहते हैं। मानो देखो, जिस परमाणु को याग में भेदन हो जाता है, अग्नि के द्वारा उसका शोधन हो जाता है, उसी परमाणु को हम ला करके, यन्त्रों में यन्त्रित करते हैं। मानो देखो, जो याग नहीं जानता, वह विज्ञान भी नहीं जानता। मानो देखो, विज्ञान में अधूरापन नहीं होना चाहिए। होता है तो उसके मूल में केवल एक ही वाक् है क्या, उसमें याग नहीं है। याग कहते हैं समर्पित करने को।

हे यज्ञमान! जैसे तू अपनी यज्ञशाला में, मानो अग्नि को अपने को समर्पित कर देता है,

अपने को समर्पित करने वाला याज्ञिक कहलाता है। हे यज्ञमान! तेरा मन, वचन और कर्म मानो देखो, याग में परणित रहना चाहिए, मैं आज यज्ञमान के प्रति अपनी कामना आधुनिक काल में, वर्तमान के काल में जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है मानो हमारी आकाशवाणी जहाँ जा रही है वहाँ एक याग हो रहा है, यागां ब्रह्मे पूर्णा रुद्राणि भो हे ब्राह्मणा! हे याज्ञिक पुरुषों! मेरा हृदय से अग्रात रहता है, क्या तुम्हारा आयु दीर्घ हो करके और वेद का प्रसार जितना भी आ जाए मानो उतना यह समाज ऊँचा बनेगा। परन्तु देखो, वह क्रियात्मक जीवन होना चाहिए। हे यज्ञमान! तेरा सौभाग्य है जो आज मानो, तेरे द्रव्य का सुदपयोग हो रहा है और तेरा द्रव्य देवताओं को प्रदान किया जा रहा है। देवताओं को साकल्य आहुति के द्वारा मानो वायुमण्डल में प्रसारण किया जा रहा है। देवता उसे पान करते है। वे देवता कौन हैं, जो पान कर रहे हैं? पूज्यपाद गुरुदेव इसकी बहुत विचित्र व्याख्या किया करते हैं। वे कहा करते हैं पूज्यपाद ने कई काल में वर्णन कराया है कि समा वर्णनं ब्रह्मे यागां भविते श्वंजनं अस्ते देखो, यागां ब्रह्मे यह जो देवता हैं, यह वासना ही तो पान करते हैं। ये सूक्ष्म परमाणु और तरंगों का पान करके यही स्थूल जगत को निर्माणित करते हैं। मानो देखो, यह वाक् पूज्यपाद गुरुदेव ने प्रगट किया। आज मैं पूज्यपाद गुरुदेव के वाक्यों की ही मानो पुनरूक्तियाँ कर रहा हूँ। उन आभा में परणित कर रहा हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई पुरातन काल में बहुत सी विवेचनाएँ दी हैं। आज मैं विवेचना देने विशेष नहीं आया हूँ।

हे यज्ञमान! तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। द्रव्य का सदुपयोग, जिस गृह में यागों के द्वारा होता है, उस गृह में मानो द्रव्य की आभा, द्रव्य का आना प्रारम्भ हो जाता हैं उसकी आभा एक आभा बन करके रहती है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में ये वर्णन कराया है मुझे आज मैं केवल इसकी सूक्ष्म विवेचना दे रहा हूँ और वह विवेचना क्या है, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। हे वेद के पठन पाठन करने वालो! तुम्हारे जीवन में, तुम्हारी आयु में दीर्घता आ जाए, जिससे यह धर्म, वेद प्रकाश ही प्रकाश हो जाए। वह प्रकाश होना चाहिए, परन्तु जहाँ मैं आधुनिक काल के इस वाक्यों में जाना चाहता हूँ मैंने बहुत पुरातन काल में कहा है, कि हे

याज्ञिक पुरुषों! तुम्हारे राष्ट्र में विज्ञान होना चाहिए। परन्तु विज्ञान में एक महानता होनी चाहिए। देखो, आधुनिक काल का विज्ञान, मानव को त्रास दे करके, मानव को भयभीत कर रहा है। त्रास दे करके प्राणी को प्राणी से भक्षण कराने की प्रवृत्ति में लगा हुआ है। हे वैज्ञानिकजनों! मानो देखो, तुम्हारा मानवीयतव विज्ञान में पूर्ण रूपेण होना चाहिए। तुम्हारे विज्ञान में त्रुटियाँ नहीं होनी चाहिएं। परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने भी और हमने भी कई काल में ये चर्चा करते हुए कहा था यह विवेचना देते हुए कहा था, कि तुम्हारा याग जब, महान् बनेगा जब तुम समाज को, साहस समाज की रूढ़ि की नष्ट करने की विवेचना तुम प्रत्येक गृह गृह में परणित करने लगोगे।

मुझे स्मरण आता रहता है मैं राजा से कहा करता हूँ हे राजन्! यदि तू अपने राष्ट्र को सदाचारी और महान् बनाना चाहता है तो तेरे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में याग होने चाहिए। माता पिता मानो देखो, गृहपथ्य अग्नि का पूजन करने वाला हों। अपने गृह में सुगन्धि देने वाला हो। जहाँ वह पदार्थों की सुगन्धि देता है, वहीं वह जहाँ पदार्थों में लगा हुआ है, वहीं वह विचारों की सुगन्धि देना, उसका कर्त्तव्य है। विचारों की सुगन्धि देना ही, एक मानवीयता कहा जाता है। जब राष्ट्र अपने में विचारवान बन जाता है, राष्ट्र में सात्विकता आ जाती है, धर्म के मर्म को जानने लगता है, मानो देखो, उस राजा को यह जानकारी होगी, कि तेरे राष्ट्र में सुगन्धि होनी चाहिए। विचारों की सुगन्धि हो। मानो पदार्थों की सुगन्धि हो। अग्न्याध्यान होना चाहिए तेरे राष्ट्र में। परन्तु जब यह समाज, अपने में अपनेपन को नहीं विचार रहा है, तो मानव, मानव का ह्रास अवश्य हो जाएगा। राजा के राष्ट्र में, नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ बनी रहती हैं, मानो देखो, अधर्म को धर्म कहा जाता है, देखो, गुरू परम्परा का हास होता जा रहा है, मानो देखो, गुड़म्बावाद चल गया है।

आज जब मैं यह विचारता हूँ कि गुड़म्बावाद किसे कहते हैं? गुड़म्बावाद उसे कहते हैं जब अनाधिकारी को अधिकार दिया जाता है। मानो देखो, एक मानव गुरु का शिष्य बनना चाहता है, जब वह गुरु का शिष्य बनना चाहता है। तो पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में, दर्शनों की चर्चा करता है, और वह याग की चर्चा करता है, सुगन्धि की चर्चा करता

है, तो उसे वह जो आधुनिक काल का जो गुड़म्बावाद है उसे वह पाखण्ड कह करके शान्त कर देता है। परन्तु जब मैं यह कहता हूँ कि हे भोले! तू आत्मा की चर्चा कर, तू मानव को अपने उपदेश दें। मैं यह कहा करता हूँ कि संसार में नाना शिष्यों को गुरुओं को आवश्यकता नहीं है। एक संदीपन के यहाँ मानो तीन सौ बहत्तर ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे। एक कृष्णा का नाम ही ऊँचा रहा। परन्तु देखो, यहाँ महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ, नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे, परन्तु एक राम ही विचित्र बन गया। मानो देखो, आधुनिक काल की मैं चर्चा करूं, तो मानो नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे परन्तु एक शंकर ही ऊँचा बन गया। जब मैं यह चर्चा करता हूँ देखो, मथुरा की सम्भवा सम्भवे जमनोत्री के किनारे मानो तट पर एक ही गुरु के यहाँ नाना शिष्य अध्ययन करते थे, परन्तु दयानन्द ही एक ऐसा प्रतिभाशाली बन गया। क्या मानो नाना शिष्यों की आवश्यकता नहीं रहती। शिष्यं ब्रहे ये जो नाना प्रकार का गुड़म्बावाद है, इसमें संस्कृति का हास होता जा रहा है। इसमें मानो द्वितीय जो राष्ट्र है, जैसे ये भारत भूमि है परन्तु जो द्वितीय राष्ट्र हैं वह राष्ट्र आ आ करके उन्हे द्रव्य अर्पित करते रहते हैं। यह गुड़म्बावाद में, दर्शन शास्त्र को नष्ट किया जा रहा है। परन्तु मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना देने नहीं जा रहा हूँ। यहाँ गुड़म्बावाद बहुत की बड़ी प्रतिभाषित हो रही है। यहाँ नाना प्रकार के मोहम्मद के मानने वाले हो, ईसा के मानने वाले हो और भी नाना प्रकार के गुड़म्बावादी हों परन्तु द्रव्य आ रहा है देखो, दर्शन शास्त्र के विनाश करने के लिए। राष्ट्रीयता को मानो राष्ट्रीयता, जिनका धर्म और रूढ़ि बन गई है क्या वह इस समाज को कैसे ऊँचा बना सकते हैं?

परमात्मा का राष्ट्र

मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह कहा था कि यागाः याग संसार में कोई भी ऐसा रूढ़िवादी धर्म नहीं है जिसमें याग की प्रतिभा न हो। देखो, मोहम्मद के मानने वाले सुगन्धि करते हैं। मानो जिसमें नाना प्रकार की ध्वनियों के द्वारा वह सुगन्धि करते हैं। देखो, ईसा के मानने वाले सुगन्धि करते रहते हैं। और भी

नाना प्रकार के मानो कोई भी दुर्गन्धि में रहना नहीं चाहता संसार में। प्रत्येक मानव यह चाहता है कि मेरे यहाँ सुगन्धि होनी चाहिए, कोई भी मानव हो इस संसार में, सुगन्धि चाहता है चाहो वह किसी को मानने वाला हो, चाहे वह किसी भी रुद्र आभा में रहने वाला हो। कोई राष्ट्र संसार का ऐसा नहीं है जो सुगन्धि नहीं चाहता है। हम यह चाहते हैं, हमारी एक ही घोषणा है कि जहाँ सुगन्धि पदार्थों की होती है, वहाँ विचारों में भी सुगन्धि होनी चाहिए। विचारों में भी दर्शन होना चाहिए। विचारों में भी वेद रूपी प्रकाश होना चाहिए, जिससे नाना प्रकार का रूढ़िवाद समाप्त हो सके। परन्तु देखो, रूढ़िवाद को नष्ट किया जाता है? मैं उच्चारण कर रहा था, एक ही शिष्य बहुत होता है। मानो देखो, यहाँ देवर्षि नारद मुनि के विद्यालय में देखो, पांच सौ बहत्तर ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे परन्तु एक ध्रुव ऐसा ब्रह्मचारी हुआ, जो लोक लोकान्तरों की यात्रा करता था। देखो, श्वेतकेतु ऋषि के यहाँ, नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे, परन्तु एक शिष्य हनुमान ऐसा हुआ, जो मानो सूर्य विद्या के ऊपर उनका अधिपथ्य बन गया। जब यहाँ और भी विचार आता है, नाना ब्रह्मचारियों का अध्ययन और उनकी महानता का वर्णन आता है, तो मानो देखो, ये समाज ऊँचा बनता हैं। जब यहाँ गुरु अस्वनां ब्रह्मे लोका कृष्ण का जीवन स्मरण आता है, तो जीवन की प्रतिभाएं स्मरण आने लगती हैं।

तो विचार विनिमय क्या है आज हमारा कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, मानो चिन्तन और मनन तो प्रत्येक प्राणी को करना चाहिए। मैं यह नहीं कहता हूँ क्या आज संसार में चिन्तन नहीं होना चाहिए, परन्तु चिन्तन के साथ उसका अध्ययन होना चाहिए, मानवीय अध्ययन होना चाहिए, जिसके ऊपर हम अपनी अन्तरात्मा और शरीर को दोनों में सुसज्जित बना करके, परमात्मा के राष्ट्र में जा सकें। क्योंकि परमात्मा का राष्ट्र तो यह सर्वत्र जगत् ही कहलाता है। इस राष्ट्र में हम जाना चाहते हैं।

विचार विनिमय क्या? मैं विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। मानो देखो, स्वानधन ऋषि महाराज के यहाँ नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे, द्वापर के काल में, परन्तु एक व्यास ऐसा हुआ जिन्होंने देखो, वेदांत के ऊपर अपनी विवेचना दी। मानो इसी प्रकार कणाद ऋषि हुए। कणाद ऋषि मानो स्वानकेतु ऋषि के यहाँ अध्ययन करते थे। परन्तु अध्ययन

की प्रतिक्रियाँ चलती रहती। एक ब्रह्मचारी वही ऐसा हुआ जिन्होंने विज्ञान के ऊपर अपनी लेखनी बद्ध की, और वेद की आभा को ले करके। तो यहाँ नाना शिष्यों की आवश्यकता नहीं है, केवल यदि एक शिष्य महान् बन जाए, तो गुरु का जीवन सफल हो जाता है। मानो देखो, गुरु की आभा महान् बन जाती है, और यदि वह नाना जो शिष्य बनाते रहते हैं, उनमें दर्शनों का ह्रास होता रहता है। अनाधिकारी को अधिकार देना, अनाधिकारी को जब कर्त्तव्य मान लेते हैं तो गुरु और शिष्य दोनों ही नष्ट हो जाते हैं। मानो देखो, इस प्रकार मुझे स्मरण है पूज्यपाद गुरुदेव यह प्रगट कराते रहते थे जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के आश्रम में प्रथम समय पहुंचा तो पूज्यपाद ने मस्तिष्क का अध्ययन करते हुए कहा, जाओ गायत्री की गोद में चले जाओ, तो मैं गायत्री की गोद में चला गया। पूज्यपाद गुरुदेव का जीवन तपस्वी था, क्रियात्मक था। मानो तीन असुतम प्रातःकालीन मानो देखो, अन्त पहर में अपने आसन को त्यागना, नाना प्रकार की प्रतिक्रियाओं में रमण होना, प्राणायाम करना, साधना में तल्लीन रहना जब मैं उनके जीवन को दृष्टिपात करता तो आश्चर्य में रहता, गायत्री की गोद में चला जाता था। गायत्री की गोद में जब मैं चला गया तो मानो देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव नाना प्रकार की औषधियों का पान कराते थे और अन्न नहीं देते थे, दूषित अन्नाद को नहीं देते थे परन्तु देखो, वह विचारं ब्रह्मे, मैं महान् बन गया पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत प्रोत हो करके।

परन्तु विचार विनिमय क्या? मैं यह विचार इसीलिए दे रहा हूँ कि अनधिकार को जब अधिकार दिया जाता है तो नष्ट हो जाता है और अधिकारी को अधिकार देने से मानो महान् बनता है। मानो देखो, आधुनिक काल का गुरूडम्बावाद ऐसा है जैसे कानावती बालक के कानों में उच्चारण करते रहते हैं और वह मानो अपनी वाणी से कुछ नहीं उच्चारण करता। वह कहते हैं कि तुम्हें जो गुरु मन्त्र दे रहा हूँ इसे किसी को उच्चारण कर दिया तो यह तुम्हारा अनिष्ट हो जाएगा। मानो तुम पापी बन जाओगे। जब इस प्रकार की वार्त्ता मैं स्वीकार करता हूँ तो मैं बड़ा मग्न होता हूँ और यह कहता रहता हूँ कि दर्शनों का कैसा ह्रास हो रहा हैं मानो देखो, यह तो वह यथार्थ कहते हैं कि गुरुओं

की वार्त्ता आन्तरिक, बाह्य जगत् में नहीं जानी चाहिए, जो चिन्तन तुम्हें परमात्मा की अनुभूतियाँ होती हैं उन परमात्मा की अनुभूतियों को गोपनीय बना करके उसके ऊपर गम्भीर अध्ययन किया जाए। यहाँ तक तो यथार्थ है परन्तु जहाँ कानावती वाली वार्त्ता आ जाती है वहाँ मानो देखो, दर्शन का ह्रास होता है। दर्शन का जहाँ ह्रास होगा और देखो, वह जो मानवीयता है उसका भी ह्रास हो जाता है। उसमें कठोरता आ जाती है, उसमें अनिष्ठता आ जाती हैं, उसमें एक कृतिका नहीं रहती और याग, जैसे कर्मो को कहते हैं, यह तो सब इसी लोक की चर्चा है। परन्तु मैं जो गुरु मन्त्र दे रहा हूँ, यह परलोक की चर्चा है। परन्तु देखो, जब अरे, भोले प्राणियों! जब तुम्हारा निचला लोक नहीं बनेगा तो ऊपर ला कैसे बनेगा? मानो देखो, निचला लोक यदि तुम्हारा पवित्र बन गया है तो तुम मानो ऊर्ध्वा के लोक तुम्हारा स्वतः बन जाएगा।

तो विचार विनिमय क्या? आज मैं यह चर्चा दे रहा हूँ। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा अब पाने जा रहा हूँ। क्योंकि मैं इसकी विवेचना न करता रहूँ विचार विनिमय यह कि प्रत्येक मानव को अपने जीवन को ऊँचा बनाना है, महान् बनाना है, आभामयी बनाना है, जिससे जीवन एक महानता की ज्योति में महान् बन जाए। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उच्चारण कर रहा हूँ, हे यज्ञमान! आज तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तुम्हारी मनोकांक्षा, शुद्ध कामना तुम्हारी पूर्ण हो। ऐसा मेरा मानो अस्वान है, अब पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! मेरे प्यारे! महानन्द जी ने, अभी अभी कुछ चर्चाएँ की। परन्तु वह जो चर्चाएँ हैं, वह एक महान् और विचित्र और मानो कुछ कटुता भी उसमें थी। परन्तु कोई वाक् नहीं। उनका स्वभाव बना हुआ है। आज मैं भी यज्ञमानों को अपने हृदय से जैसा महानन्द जी ने प्रेरणा दी, कि यज्ञमान का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, ब्राह्मण वेदां ब्रह्मे ऊँचा ऊँचा आभा में रमण होता रहे। यह आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा। शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। लाक्षागृह बरनावा।

९ 01 08 1983 पुष्प 44 धर्म क्या है? ऋषियों का संवाद

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों

का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन किया जाता है क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, जैसे यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र उस महामना देव की गाथा गा रहा है अथवा उसका उद्गीत गा रहा है। उसके विज्ञान का वर्णन कर रहा है क्योंकि जितना भी यह जगत् है यह स्वर सिद्धान्त है, स्वर विचार है, वह एक ही सूत्र में पिरोया हुआ है।
बहुत समय से हम सूत्रों की चर्चा करते रहते है। सूत्रों की महिता बड़ी विचित्र मानी गई है क्योंकि जो भी मानव सूत्र में परणित हो जाता है वह सूत्रित हो जाता है। वेद के मन्त्र में कोई सूत्र माना गया है। जैसे शब्द हैं शब्द में वृत्तियां मानी गई हैं परन्तु कर्तव्य में एक प्रतिभा है जिसे हम सूत्र के रूप में परणित करते रहते है। माला के सम्बन्ध में अथवा सुरा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की विवेचनाएं हमारे वैदिक साहित्य मं आती रहती हैं, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, माता वसुन्धरा का वर्णन आता रहता है। वसुन्धरा भ्ी किसी सूत्र में पिरोई हुई हैं वैदिक साहित्य में वसुन्धरा पृथ्वी का वाचक माना है। वसुन्धरा माता का पर्यायवाची माना है। परमपिता परमात्मा भी उसका वाची माना गया है। मुनिवरों! प्रत्येक वेदमन्त्र अपने में परणित हो रहा हैं अपने में अपनेपन की आभा को प्रकट कर रहा है जिससे मानवीय जीवन एक आभा बन करके रहता है, उसमें सूत्रित हो करके रहता है, सूत्र कहते किसे हैं जैसा मुनिवरों! पुरातन काल में हमने निर्णय कराया। आज भी मुझे वह समय प्रायः स्मरण आ रहा है जैसे एक मानव मानव से कटिबद्ध हो रहा है वह उसका सूत्र माना गया है जैसे शब्द हैं, शब्द में कटिबद्ध होने वाले शब्दों की ध्वनियों को शब्दों के रूप को भी सूत्रों के रूप में परणित माना है। जैसे माला में एक सूत्र है, मनकों में एक सूत्र है, मनके और सूत्र का

समन्वय होने से यह माला बन जाती है। इसी रकार संसार का यह सिद्धान्त है कि दो वस्तुश्रों के मिलाने से तीसरी वस्तु की स्वतः क्रिया हो जाती है जिससे शब्दों की रचना हो जाती है। जैसे हमारे यहाँ जड़ श्रौर चेतना दोनों का समन्वय होने से सृष्टि का प्रादुर्भाव हो जाता है। सृष्टि श्रपने में कोई सृष्टि नहीं है परन्तु जड़ श्रौर चेतना का समन्वय होते ही तीसरे शब्द की रचना हो जाती है। इसीलिए हमें विचारना चाहिए वह जो तीसरा शब्द ब्रह्म वाचा वह दोनों सूत्र के रूप में परणित रहते हैं।

तो मुनिवरों! श्राज मैं सूत्र की ख्वचर्चा करना नहीं चाहता हूँ। केवल विचार विनिमय क्या? श्राज मैं उसी क्षेत्र में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ, इससे पूर्व कुछ शब्दों की रचना हो रही थी, विवेचना हो रही थी, गाढ़ी वृत्तियों में रमण करने वाले एक जनसमूह की चर्चा हो रही थी। जनसमूह में महर्षि सोमकेतु, दद्दड़ गोत्रीय श्रौर श्रंगिरस गोत्रीय दोनों ऋषि श्रपने श्रासन पर विद्यमान थे। परस्पर विचार विनिमय कर रहे थे, उन्होंने ज्योति के सम्बन्ध में जो वर्णन किया है, ज्योतिवाद को श्रपनाया है, ज्योति हमें श्रात्मा से प्राप्त होती है। ज्योति के ऊपर परम्परागतों से ही, मानव श्रनुसन्धान करता रहा है। वैज्ञानिकों के समीप जब ज्योति का सिद्धान्त पहुंचा तो वैज्ञानिकों ने ज्योति को ही श्रग्निमय स्वीकार किया हैं श्रग्नि में जो नाना प्रकार के श्रणु है, परमाणु हैं, उनमें जो कृतियां कहलाती हैं, श्रन्तरिक्ष में गति करती रहती हैं, उन परमाणुश्रों के विभाजन करने से उन परमाणुश्रों में एक प्रकाश का पुंज माना गया है। परन्तु विचारने में श्राया कि श्रग्नि में प्रकाश कहाँ से श्राया? यह श्रग्नि स्वतः श्रपने में प्रकाशित रहती है, यह श्रग्नि जड़वत् रहती है। तो मुनिवरों! इस सिद्धान्त में सोमकेतु ने कहा है कि श्रग्नि में ज्ञान श्रौर प्रयत्न न रहने के कारण जड़वत् कहलाता है श्रौर यदि हम इसको इस रूप में लेते हैं कि श्रग्नि में चैतन्यमयी परमाणुश्रों की प्रतिभा है जिससे नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण होता रहता है। नाना प्रकार के परमाणुश्रों को विभक्त करने से एक एक परमाणु दृष्टिपात श्राता है। उस परमाणु का विभाजन करते हैं तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड का चित्र उसमें विद्यमान रहता है। तो मुनिवरों! उस महान् श्राभा में रमण करने के लिए हम तत्पर होते हैं तो ऋषि कहता है, महर्षि सोमकेतु श्रौर दोनों ऋषियों का विचार विनिमय हो रहा था श्रौर

सोमकेतु कह रहे थे कि हम अग्नि को अपने में जड़वत् माना करते हैं परन्तु इसमें जो सत्ता है, इसमें जो दाहु शक्ति है वह दाह शक्ति केवल प्राण की मानी जाती हैं उसमें सर्व भौम प्राण विद्यमान रहता है। इसीलिए अग्नि के द्वारा नाना आयुर्वेदाचार्य चिकित्सा में परणित हो जाते हैं। वह दाह प्राण का होता है। प्राण शक्ति के सूक्ष्म होने पर मानव रुग्ण हो जाता है और यदि इसमें प्राण शक्ति सुचारु रूप से अपने में प्रकाशित रहती है तो वह अग्नि अस्वतम् प्राण स्वरूप बन करके मानव के लिए लाभप्रद बनती है। तो विचार विनिमय क्या, कि प्राण की ही शक्ति से यह वायु गति कर रही है। प्राण के द्वारा ही जब पृथ्वी के गर्भ में परणित होते हैं, वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश करते हैं नाना प्रकार का जो पिपाद बन रहा है, धातु पिपाद का निर्माण हो रहा है परन्तु वह जो निर्माण में निर्माणाकृति हो रही है, कहीं जल में प्राण शक्ति विशेष चली गई है, तो वह धातु के रूप में प्रकट हो करके वाहनों में गति देता रहता हैं यदि वही सूर्य की किरण स्वर्ण की अकृतों में तपाने वाले परमाणुओं को तपा देती है और वह स्वर्ण की धातु बन करके रहती हैं। इसी प्रकार धातु पिपाद का जो निर्माण होता रहता है वह केवल अग्नि के द्वारा सूर्य से, सूर्य द्यौ से प्रकाश ले करके अग्नि से प्रकाश ले करके इस संसार को प्रकाशमान बना रहा है। इस वसुन्धरा के गर्भ में नाना प्रकार की प्रतिभा को जन्म दे रहा है।

तो मेरे प्यारे! सोमकेतु ऋषि ने इन वाक्यों के ऊपर टिप्पणी देते हुए कहा है कि वही प्राण शक्ति आपो में प्रवेश हो करके प्राणमयी शक्ति बन जाती है। अन्न को महान् बनाना है तो जल से ऊर्ध्वा ली जाती है जल से शक्ति लेते हैं। शक्ति के द्वारा खनिज पदार्थों में एक परिपक्वता आ जाती है। खनिजों में एक रस आ जाता है। वह रस अमृत कहलाता है। उसको पान करने वाला मानव अपने में महान् और पवित्र बन जाता है। विचार विनिमय क्या? यह नाना प्रकार की ऊर्ध्वा ले करके द्यौ मण्डल से मानव इस ब्रह्माण्ड को अपनेपन में अन्तरात्मा के ऊपर इसकी सार्थकता का अस्वत् हो जाता है। तो वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है सोमकेतु कि जब हम पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में इस शिक्षा को पान करते रहे हैं, उससे हमें यह सिद्ध हुआ है कि आत्म

प्रकाश जो मानव के समीप रहता है वह ज्ञान का कुञ्ज है परन्तु प्राण अपने में ज्ञान का कुञ्ज नहीं है, चाहे वह सूर्य में रमण करने वाला हो, चो वह चन्द्रमा में रहने वाला हो, चाहे द्यौ में गति करने वाला हो, चाहे वह मेघ कृतियों में रमण करने वाला हो परन्तु वह जड़वत् रहता हैं आत्मा ज्ञान और विज्ञान का कुञ्ज माना गया है। उस अन्तरात्मा के प्रकाश से ही मानव प्रकाशित होता रहता है। आत्मा ऐसा महान् है शरीर में, द्वितीय तत्त्वों से प्रकाश आ रहा है परन्तु आत्मा के प्रकाश से जब उसका समन्वय होता है उसी समय वह प्रकाश ज्ञान युक्त हो जाता है। प्राण सत्ता वायु मण्डल से आ रही है, उसका जो गमन हो रहा है उसकी जो प्रतिभाषिता हो रही है वह केवल आत्मा के सन्निधान से हम जान रहे हैं कि वायु गति कर रहा है। सूर्य का प्रकाश आ रहा है, प्रकाश दे रहा है, खनिजों का निर्माण कर रहा है। मानव के शरीर में प्रकाश दे रहा है, नेत्रों को प्रकाशित कर रहा है, नेत्र उससे प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु उस तेज प्रकाश का आत्मा से समन्वय रहता है। विश्वभान और विशेष प्राणों का जब तक समन्वय नहीं होता तब तक हम चित्त के मण्डल की रचना भी नहीं कर सकते। चित्त के मण्डल में संस्कारों की उद्बुद्धता भी नहीं आ सकती इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि आत्मा ही एक कुञ्ज है। चन्द्रमा कान्ति दे रहा है, प्रकाश दे रहा है, मधुरमयी प्रकाश दे रहा है, जीवनवाहक अकृतियों में चन्द्रमा अस्वत् दे रहा है परन्तु वह तभी तक है जब तक आत्मा शरीर में विद्यमान है, जब तक चन्द्रमा सोम देता है, सोम को पान करता है। आत्मा का सोम, चन्द्रमा का सोम, दोनों का जब समन्वय होता है तो सोम की प्रतिभा का जन्म हो जाता है क्योंकि जीवन की संसार में मृत्यु नहीं होती किसी भी काल में। जीवन सदैव अपने में जीवन रहता हैं जीवन सदैव अपने में आत्मा का प्रकाश बन करके रहता है। आत्मा तत्त्व ही इस संसार को ऊँचा बनाता है। जहाँ विज्ञान की चर्चाएं, जहाँ विज्ञान की प्रतिभा का दिग्दर्शन होता रहता है वहाँ आत्मा की विवेचना भी होती है।

यही वाक्य जब महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुंचा क्योंकि महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज उस समय बहुत महान् वैज्ञानिक थे। वह एक एक अणु से चित्रों का पगठन

करते रहते थे ब्रह्मचारी सुकेता और भारद्वाज मुनि महाराज एक समय अपने आसन पर विद्यमान थे। उनके हृदय में यह वाक्य आ समाहित हुआ कि यह जो मानव की प्रवृत्तियां चलती है, इस मानव की प्रवृत्तियों का कैसे ज्ञान हो? यह जो मानव चंचलता की प्रवृत्ति बना देता है एक अपने में सूक्ष्म में विशाल वृक्ष बनाता है, यह कैसे बनाता है? तो उन्होंने इस प्रकार के एक अणु को ले करके यन्त्र में प्रवेश किया और यन्त्रों से उसको प्रतिभाषित करने लगे। जैसे वट वृक्ष है, वट वृक्ष को कृतियों में ले करके उसके अन्तःकरण में उस वट बीज के गर्भ में सर्वत्र वृक्ष की प्रतिभा को ले करके उन्होंने सूक्ष्म से अंकुर को महान् बनाया है। सूक्ष्म से विशाल अकुंर को लाने का प्रयास किया है परिणाम क्या है? मुनिवरों! इसी प्रकार महर्षि भारद्वाज ने एक अणु को े करके उसकी विशालता को दृष्टिपात किया और उनकी विशालता में व्यापकता में परणित होने वाला वृक्ष कहलाता है। जैसे मानव के शरीर में अन्तरात्मा विद्यमान है। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ जो अन्तरात्मा का चित्रण कर सके, जो अन्तरात्मा का कोई चित्र ले सके। क्योंकि चित्र वहीं तक आता है जहाँ तक चित्रावलियों की सीमा होती है। इतना सूक्ष्मतम् यह अन्तरात्मा है जो मानव के शरीर को गति दे रहा है। मानव का शरीर गति कर रहा है। गतिवान हो रहा है और इतने स्थूल शरीर को वही सूक्तम विस्तार में ला रहा है। विस्तार में जा करके वह वहीं कटिबद्ध हो जाता है। वहीं उसकी सीमा बद्ध हो जाती है।

यह कैसा प्रभु का विज्ञान है? मैं इस विज्ञान की इसलिए चर्चा कर रहा हूँ क्योंकि हमारा वेदमन्त्र इसी प्रकार का आता जा रहा है। वेदमन्त्र विज्ञान की चर्चा कर रहा है। वह जहाँ ज्ञान की, आध्यात्मिकवाद की चर्चा कर रहा है वहीं मुनिवरों! भौतिकवाद की भी चर्चा कर रहा है क्योंकि भौतिक विज्ञान के मार्ग को जान करके आध्यात्मिकवादी बनता है प्राणी। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके आज तक कोई ऐसा आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता नहीं हुआ जिन्होंने इन्द्रियों के विषय को नहीं जाना हो। इन्द्रियों का विषय भौतिक विज्ञान कहलाता है। इन्द्रियो के विषय को जान करके उसे हृदय में समावेश करते हुए उसके पश्चात् मानव आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है। आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता आत्मा

की चर्चा कर रहा है। भारद्वाज मुनि कहते हैं, अन्तरात्मा को यन्त्रों से नहीं जाना जता। जहाँ वैज्ञानिकों के समीप आत्म की चर्चा आती है, वहाँ वैज्ञानिक भी मौन हो जाता है। आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता उस काल में जागरूक हो जाता है और जागरूक हो करके, अन्तरात्मा की प्रतिभा को जान करके, अन्तर्हृदय को जान करके प्रभु से मिलान करता है।

प्रभु क्या? प्रभु इस संसार की चेतना है, सर्वत्र ब्रह्माण्ड की चेतना है, प्राण स्वरूप की चेतना है। जैसे पृथ्वी के गर्भस्थल में नाना रसों का आदान प्रदान हो रहा है वहाँ प्रकृति का सूक्ष्मतम तन्तु मनस्तत्व भी है और परमात्मा की कृतियों में रमण करने वाला सामान्य प्राण अपने में क्रियाशील बनाता हुआ रसों का आदान प्रदान हो रहा है। नाना प्रकार उन्हीं रसों को अपने में आदान प्रदान होता रहा है। वहीं कसैला बन करके रस आ रहा है, वही कड़वाहट में आ रहा है मधु में आ रहा है। नाना प्रकार की धाराओं को अपनाता हुआ वही रस रसों के आधार पर नाना प्रकार की वनस्पतियों का जन्म होता है। नाना प्रकार की वनस्पतियां रसों का स्वादन ले करके वह वनस्पतियां बन करके मुनिवरों! शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रियां कहलाती हैं। पांचों ज्ञानेन्द्रियों का जो विज्ञान है वह रसों में समाहित रहता है। रसों का विज्ञान पृथ्वी के गर्भ में समाहित रहता हैं वह जो ब्रह्माण्ड ब्रह्मे वाचः उससे आयु के वेद का निर्माण होता है, आयु की प्रतिभा का जन्म होता है क्योंकि वनस्पतियां आयु का कुञ्ज कहलाती हैं क्योंकि नाना प्रकार की वनस्पतियों को जान करके ही, वैद्यरात बन करके नाना प्रकार की नक्षत्रों की धाराओं में उसे पृथ्वी से लेता है उसको खरल बनाता है, रस बनाता है। उसमें जीवन शक्ति प्रदान करके एक दूसरे रसों से, एक दूसरी वनस्पतियों का मिलान करके उसमें रसों का एक नृत्य होने लगता है। वही रस आयुर्वेदाचार्यों का जीवन बन करके मानव की प्राण शक्ति बन करके वह रुग्णों के विनाश का मूल बनता है।

विचार विनिमय क्या? महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने इसके ऊपर निर्णय देते हुए कहा है, आचार्यों की आभा को ले करके, वेद मन्त्रों के सूक्तों को ले करके, उन्होंने कहा है कि हम एक एक सूत्र के ऊपर विज्ञान को ला सकते हैं। एक एक वाक्य के ऊपर

विज्ञान आ सकता है। वैज्ञानिक धाराओं में महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ एक अणु को ले करके उसका चित्रण किया। सृष्टि का चित्रण जब हुआ तो उसका समन्वय प्राण से लिया। प्राण से जब उसका समन्वय हुआ तो प्राण मुनिवरों! कहीं ब्रह्म की, परमात्मा की छाया बन करके रहता है। कहीं आत्मा की छाया बन करके रहता है। शरीर में आत्मा है तो प्राण है, प्राण है तो आत्मा है। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड में प्राण है तो चेतना है और चेतना है तो प्राण है। दोनों का एक दूसरे से समन्वय रहता है। इसी प्रकार अन्तरात्मा के सन्दर्भ में हम परमात्मा को स्वीकार करते हैं तो यह प्राण दस भागों में रहता है, दस ही भाग प्राण के इस ब्रह्माण्ड में हैं। कोई उत्पत्ति कर रहा है, कोई प्राण दूरभाषी कररहा है। कोई प्राण ऊर्ध्वा को अस्वतों से मिलान करा रहा है। यह प्राणों की दस प्रतिभा कहलाती है। दस के आगे कोई प्राण की प्रतिभा का जन्म नहीं होता। संसार में नौ शब्दों तक गणित रहता है। जितनी गणना है संसार की नौ तक रहती हैं। आगे उसमें बिन्दुओं की रचना का एक नृत्य होता रहता है। मेरे पुत्रो! इसी प्रकार प्रभु ने जब संसार रचाया, सृजन किया तो उसमें एक ऐसी प्रतिभा को जन्म दिया है कि मानव उसमें जब चिन्तन करता है तो संलग्न हो करके। अपने में अपनेपन को जान करके प्रभु की महती में रत्त हो जाता है, प्रभु की महती में रत्त हो करके अपने को महान् बनाता है।

तो विचार विनिमय क्या? बेटा! मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, तुम्हें संक्षिप्त परिचय देने आया हूँ और वह परिचय क्या है? मैं तुम्हें वहीं ले जाना चाहता हूँ जहाँ महर्षि भारद्वाज ब्रह्मचारी सुकेता दोनों अपनी विज्ञानशाला में अणुओं के द्वारा विज्ञान को जान रहे थे। महर्षि भारद्वाज ने ब्रह्मचारी सुकेता से कहा, हे सुकेता! यह जो शरीर में हमारे आत्मा विद्यमान हैं जो प्रकाश का कुञ्ज कहलाता है, जो प्रकाश के देने वाला है, पञ्च यज्ञशाला को जो जागरूक कर रहा है। पञ्च यज्ञों में जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है, भिन्न भिन्न रूपों में दृष्टिपात आने वाली उस अग्नि को चेताने वाला वह अन्तरात्मा ही मुझे दृष्टिपात आता है। एक समय उनके आश्रम में रेवक मुनि आ विराजमान हुए, कहीं से सोमराजा इन्द्र भ्रमण करते महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम आ पहुंचे। आश्रम में आ जाने के पश्चात्

ऋषि ने स्वागत किया, अतिथि सत्कार किया, विराजमान हो गए। विराजमान हो करके अस्वतो ब्रह्मेः वाचः ऋषि ने कहा, कहो भगवन्! कैसे आगमन हुआ?

तो मेरे पुत्रो! गाड़ीवान रेवक ने कहा कि महाराज! आज मैं प्रातःकालीन चिन्तन कर रहा था, कई समय से चिन्तन चल रहा था और चिन्तन में यह आ रहा था कि वायुमण्डल में जो शब्दों की गतियां हो रही हैं, वह जो शब्द अन्तरिक्ष में विद्यमान है चित्रों के सहित विद्यमान रहता है परन्तु वह शब्द के द्वारा जाता है और यह शब्द ही हमारे अन्तर्हृदय में गति कर रहा है। जब हम ब्रह्मरन्ध्र में एक अन्नाद ध्वनि को अपने में सृजन करने लगते हैं, अपने में जब अनुसरण करने लगते हैं तो ध्वनियां आती रहती हैं। उन शब्दों में ध्वनियों की रचना होती रहती है। हम उस ध्वनि को केवल अनुभव से यह कहते हैं कि इससे शब्दों की रचना है। वह शब्द भान शब्द जो है वह प्रकृति के रूप में गति करता रहता है। रात्रि जब छा जाती है माव जब शान्त मुद्रा में रात्रि पहर में भान शब्द के ऊपर अनुसन्धान करता है तो इसमें से शब्द उत्पन्न होता है। जिसको भ कहते हैं उसी से मानव शब्द की रचना कर लेता है। तो यह रचना कैसे की जाती हैं। इसका कैसे अनुभव होता है। तो मुनिवरों! महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने गाड़ीवान रेवक से कहा कि हमने यह श्रवण किया है कि जिस काल में ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने एक समय इस भान का अनुभव किया था। अगिरस गोत्र में एक ऋषि हुए हैं जिनका नाम स्वेत्ताम् ऋषि कहलाता था, स्वेत्ताम् ऋषि ने भी इस भन का अनुभव किया। यह भान शब्द तो प्राण से उत्पन्न होता है।

इसीलिए मुनिवरों! संसार में आत्मा की कोई भाषा नहीं होती। इससे सिद्ध हुआ भारद्वाज मुनि ने कहा कि आत्मा की कोई भाषा नहीं होती। आत्मा का यदि कोई शब्द है तो वह भान शब्द है जो प्राण और मन दोनों का सन्निधान होते ही मिलन होते ही उस शब्द की रचना हो जाती है। उस शब्द का नामोकरण भान कहा गया है। जितनी भी भाषाएं हैं संसार की, किसी भी राष्ट्र की, किसी भी समाज की, किसी भी माता पिता के संदर्भ में आने वाला जो बाल्य है परन्तु भान शब्द की रचना होती है। बालक जब माता के गर्भ से जन्म लेता है संसार में आता है तो ओ३म् ब्रह्मे एक ही शब्द की रचना

होती है, उसे भान शब्द के संग सम्बन्धित किया गया है। ज्यों ज्यों वह माता पिता के प्रतिनिधित्व में आना प्रारम्भ कर देता है त्यों त्यों उसकी भाषा की रचना होने लगती है क्योंकि उसकी जो रसना है तालु है दोनों का मिलान होने से शब्द की रचना का बाहरीय जगत् से सम्बन्ध रहता है। आत्म सम्बन्ध की जो चर्चाएं हैं उसका भाषा पिपाद आत्मा तक से समन्वय हो जाता है। जब चित्त के मण्डल को ले करके यह आत्मा शरीर को त्याग देता है तो भाषा पिपाद माता की प्रतिभा शरीर तक रह जाती है। उसके अन्तःकरण तक रहती है चित्त के मण्डल तक रह जाती है। चित्त के मण्डल में शब्द के साथ चित्र गति करता हैं जब वह शब्द नग्न रह जाता है केवल चित्रान्त रह जाता है तो उसकी भाषा का प्रतिरोध, उसी चित्र के आधार पर उसकी रचना यन्त्रों में प्रायः दृष्टिपात आती रहती है।

बेटा! मैं तुम्हें बहुत गम्भीर क्षेत्र में ले गया हूँ महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अगाथ इसकी रचना की है। रचना करने के पश्चात् भारद्वाज मुनि महाराज ने इसी के आधार पर गाड़ीवान रेवक की आभा को ले करके उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया है। यन्त्र में जैसे मानव का शब्द गति कर रहा है, शब्द जैसे जा रहा है, उसका चित्र और जितने आकार का वह शब्द है उनके चित्र उनकी विज्ञानशाला में दृष्टिपात आने लगे। वह शब्द का यन्त्र कहाँ कहाँ रमण करता हुआ किस किस प्रकार की वायु में गति करता हुआ, जैसे इन्द्रकेतु नाम की वायु होती है, सुरुचि नाम की वायु होती है जैसे स्वेत्ताम् बाजकेतु नाम की वायु होती है इनमें भ्रमण करता हुआ वह द्यौ में प्रवेश करता हुआ, अन्तरिक्ष में ओत प्रोत हो जाता है। उसमें गति करने लगता है इससे यह सिद्ध हुआ कि शब्द की जो रचना है, वह जो शब्द है वह सदैव नित्य रहता है, अन्तरिक्ष में गति करता रहता है परन्तु वह केवल निरश्रोत्र रहता है। वहाँ आत्मा का प्रसंग नहीं आता। केवल प्राण की धाराएं, प्राण की प्रतिभाएं मन की सूक्ष्मताएं चित्त को धाराओं में प्रवेश होती रहती हैं।

तो मेरे पुत्रो! मैं कहाँ चला गया हूँ? मैं दूरी नहीं जाना चाहता हूँ। उन चित्रें को जो अन्तरिक्ष में लय हो गए हैं, यन्त्रों के द्वारा ऋषिजन उसको दृष्टिपात करते रहे हैं उन

यन्त्रों को अपने में यन्त्रित करते हुए उस सागर से पार होने का प्रयास किया है। तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ब्रह्मचारी सुकेता, राजा सोमकृति इन्द्र और गाड़ीवान रेवक से कहा कि महाराज! आप तो महान् तपस्वी हैं और तपस्या के अनुभव में तुम क्या दृष्टिपात करते हो? तपस्या किसे कहते हैं। तो गाड़ीवान रेवक मुनि ने यह कहा कि हमें तपस्या उसे कहते हैं अन्तर्मुखी हो करके बाहरीय जगत् में जो दृष्टिपात किया है उसको आंतरिक जगत् में प्रवेश करके उसका वही चिन्तन करते हैं, मनन करते हैं। जैसे एक मानव ने एक वृक्ष को दृष्टिपात किया है। उसके आकार को ले लिया उसके स्वरूप को ले करके उसके अंग उपांगों को ले करके उसके ऊपर अध्ययन करना, उसकी गम्भीर मुद्रा में प्रवेश हो जाना और गम्भीर मुद्रा में प्रवेश हो करके उसे अन्तिम छोर तक ले जाने का नाम ही मुनिवरों! मानसिक चिन्तन कहा जाता है और वह चिन्तन ही, उसको प्रभु से जब समन्वय कर देते हैं, चेतना से उसका समन्वय होता है, उसका नाम हम तपस्या कहते हैं। इन्द्रियों का जैसे विषय है, उन इन्द्रियों का विषय है दृष्टिपात करना, श्रोत्रों का विषय है शब्द को ग्रहण करना, त्वचा का विषय है प्रीति समय और रुद्रों को जानना, इसी प्रकार रसना का विषय है रसों का स्वादन करना, घ्राण का विषय है सुगन्धि को दुर्गन्धि को इस जगत् में आदान प्रदानता में जगत् को दृष्टिपात करना, एक एक इन्द्रिय के ऊपर अनुसन्धान करने से ऐसा प्रतीत हुआ है कि मानव के श्वास से ही हमयह विचार लेते हैं कि इस मानव का श्वास कितना कटुमय है, कितना यह साधक है, कितना वृत्तियों में रमण कर रहा है, कितना यह साधक हैं? श्वासों से भी साधक की प्रतीति होती है। नेत्रों में ज्योंति है वह ज्योति में नेत्रों के ऊपर अनुसन्धान करने से नेत्रों में जो विज्ञान का तपस्या का प्रतिपादन समाहित हो जाता है, उससे भी हम विज्ञान के द्वारा जानकारी कर लेते हैं कि यह किस प्रकार के विचारों वाला है? नेत्रों से किस रूप से यह संसार को दृष्टिपात करता है? वाणी के रूप में वाणी ही उद्गार गाती हुई वाणी यह सिद्ध कर देती है कि यह वैज्ञानिक है या भौतिक वैज्ञानिक है, या अन्तर्मुखी हो करके चिन्तन करने वाला है या आत्मा के ऊपर चिन्तन करता रहता है। तो इन्द्रियों का सर्वत्र विज्ञान जब हमारे समीप आता है तो उससे

हमारा जीवन एक भव्यता में परणित हो जाता है। उस भव्यता के परणित होने के पश्चात् हृदय विशाल बन करके हृदय में विशालता आ जाती है। वही धर्म है जो मानव के हृदय में इन्द्रियों का अनुसन्धान यथार्थता में रूपों में दृष्टिपात करना, हृदय में समाहित कर देना, हृदय में ही संसार का धर्म समाहित रहता है।

तो विचार विनिमय क्या? धर्म किसे कहते हैं? धर्म के ऊपर ऋषि ने टिप्पणी करते हुए यह कहा है कि धर्म वह है जो ईश्वरीय कृतियों में अस्वातों में रमण करने वाला है इसमें ईश्वर की प्रतिभा कहलाती है। ईश्वर की प्रतिभा क्या है? बेटा! यह जो हृदय है इसका समन्वय परमात्मा के हृदय से जब तक समाहित नहीं होता तब तक आध्यात्मिक विज्ञान की प्रतिभा नहीं आ सकती और आत्मा के विज्ञान को आत्मा की प्रवृत्तियों को जानना ही, आत्मा की शंका लज्ञा को जानना ही धर्म की प्रतिभा कहलाती है। आत्मा ही चैतन्य है, आत्मा के प्रकाश से ही हम संसार के प्रकाश को दृष्टिपात करते हैं। आत्म चिन्तन से ही हम संसार को ब्रह्म में स्वीकार करते हैं। आत्म चिन्तन से ही प्राण का, परमात्मा का एक समूह स्वीकार करते हैं इस प्राण को ही आत्मा की छाया स्वीकार करके इसको अपने में धारण करते हुए, आत्म चिन्तन ही इस संसार की प्रतिभा को जानता है। विचार विनिमय क्या? आज मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, केवल संक्षिप्त परिचय देने आया हूँ जो ऋषि मुनि इसके ऊपर अनुसन्धान करते रहे हैं। विचारवेत्ता विचारते रहते हैं कहीं विज्ञान में जाते हैं तो कहीं ज्ञान में जाते हैं। कहीं साधना में प्रवेश करते हैं कहीं मुनिवरों! जनता जनार्दन में ब्रह्म को स्वीकार करते हैं कहीं स्वतः ब्रह्म में समाविष्ठ हो जाते हैं। नाना प्रकार का अनुसन्धान, नाना प्रकार की धाराएं सदैव मानवीयता में रमण करती रहती हैं।

तो विचार विनिमय क्या? महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने महाराजा, सोमकृतिभा इन्द्र से गाड़ीवान रेवक को और ब्रह्मचारी सुकेता इत्यादि जो विद्यमान थे, उन्होनें आत्म चिन्तन को सबसे महान् कहा है। आत्मा के साथ प्राण का औश्र मन के साथ प्राण का इन तीनों के समन्वय का नाम ही महान् गम्भीर चिन्तन कहा जाता है। परमात्मा के रूप में, परमात्मा की प्रतिभा में रमण करने वाला जो एक नृत्य हो रहा है वह एक

आभा में रमण कर रहा है, आभा में रुद्र रूप धारण करके मानव को परमाणुवाद की दिशा दे रहा है। उससे वैज्ञनिक परमाणुवाद को ले करके, वह परमाणु चाहे मुख से उत्पन्न हो रहा हो प्राण सरीका ले करके वायु में गति करा रहा हो, यन्त्रों में प्राण शक्ति के द्वारा वह परमाणु समें स्वतः आ जाता है। आ जाने के पश्चात् परमाणु का विभाजन करके प्रवृत्तियों की प्रतीति होने लगती है। यह मानव कैसी प्रवृत्ति वाला है? यह प्रवृत्ति समाधिष्ट से सम्बन्ध रहती है, चिन्तन से सम्बन्ध रहती है और इसी का समन्वय भौतिक यन्त्रों में प्रवेश हो जाता है।

भौतिक यन्त्रों से विचारों में और विचारों से चिन्तन में और चिन्तन से यह चित्र के मण्डल में और चित्र के मण्डल का समन्वय इस पार ब्रह्म परमात्मा की अनुपम छाया जो प्राण है, जो संसार में गति कर रही है परमाणुओं को लिए हुए गति कर रही है, वाय उसी के वेग से गति कर रहा है, अग्नि उसी के वेग से प्रकाशित हो रहा है। सूर्य की किरणें उसी के वेग से पृथ्वी मण्डल पर आ रही हैं चन्द्रमा की कान्ति इसी पृथ्वी पर उसी वेग से आ रही है। नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की जो छाया है वह भी उसी के वेग से आ रही है। कहीं अरूणधती का प्रकाश आ रहा है, कहीं जेठाय नक्षत्रों का प्रकाश आ रहा है, नाना प्रकार के प्रकाशों का समूह वे परमपिता परमात्मा का सर्व भौम प्राण है उसप राण के साथ में जो चेतना है उस चेतना के साथ में एक प्रकाश का परमात्मा का जो कुञ्ज है वह उसके साथ साथ आ रहा है।

देव का कैसा ऊँचा विज्ञान है बेटा! आज अब हम वैज्ञानिकों के समूह में प्रवेश करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान इतना विशाल है कि इसको जानने में अनेक जीवन बीत जाते हैं।

महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज लगभग 585 वर्ष की आयु में ऋषि यह प्रार्थना कर रहा था, हे प्रभु! मैंने नाना प्रकार के यन्त्रों को जाना है माता के गर्भस्थल में कौन कौन से माह में कौन कौन से अंग का, कौन कौन सी प्रतिभा का जन्म होता है वह भी यन्त्र मेरे यहाँ है। उसे माता के गर्भ से ही मैं दृष्टिपात कर लेता हूँ पुत्र पुत्रियों का निर्माण हो जाता है, परन्तु बिन्दु से मानव के चित्र का मैंने चित्रण किया है। उसके पश्चात् भी

इतना विशाल विज्ञान अणु परमाणुओं को जानने के पश्चात् भी इना विशाल विज्ञान है प्रभु! मेरी 585 वर्ष की आयु है परन्तु मैं तेरे विज्ञान को यदि 10, 000 वर्ष की मेरी आयु है और तेरे विज्ञान को जानता रहूँ तो प्रभु! वह आयु भी मेरी सूक्ष्म बन जाएगी। तो विचार विनिमय क्या? ऋषि कहता है कि प्रभु का विज्ञान बड़ा विशाल है, विशालता में उसका चिन्तन किया जाए। क्योंकि मैंने एक वाक्य कहा जीवन की मृत्यु नहीं होती और मृत्यु का जीवन नहीं होता मृत्यु अपने में कोई वस्तु नहीं कहलाता विचार क्या है? प्रकाश में रत्त रहना चाहिए प्राणी को। और वह प्रकाश क्या है? प्रत्येक वस्तु के विज्ञान को व्यापकता में जान करके परमात्मा से उसका समन्वय कर देना चाहिए। चाहे वह भौतिक विज्ञान हो, चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान हो, चाहे प्रतिभाषित हो, चाहे लोक में रहने वाला हो, वचाहे वह वायु मण्डल में यन्त्रों के द्वारा उड़ान उड़ने वाला हो। क्योंकि विज्ञान का कुञ्ज प्रभु ही माना गया है, सृष्टि का सृजन जिसने किया हैं वही मुनिवरों! सर्व विज्ञान का कुञ्ज है। अब तक कोई भी वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ जो इसका पार पा सके। आज एक वैज्ञानिक ने एक वाक्य निर्धारित किया है, एक रचना की है यन्त्रों के द्वारा परन्तु कुछ काल के पश्चात् वही वैज्ञानिक उसका खण्डन कर रहा है, द्वितीय वस्तु का मण्डल कर रहा है। यह मण्डल खण्डन क्यों है? यह इसलिए है क्योंकि मानव का जो ब्रह्म है यह विज्ञान केवल अल्पज्ञता में जाना जाता है। यदि उसको प्रभु से मिलान किया जाए तपस्या के द्वारा उसका अनुभव किया जाए अन्मर हृदय में, तपस्या के बाद जब लेखनियां बद्ध होती हैं, यन्त्रों में यन्त्रित होते हैं, वह विचार और चिन्तन अकाट्य रहता है। उसको संसार में कोई भी अधूरेपन में परणित नहीं कर सकता।

आज मैं बेटा! कहाँ का कहाँ चला गया? वाक्य चल रहा था महर्षि भारद्वाज का महर्षि भारद्वाज और सोमकेतु महाराज दोनों का विचार चलते चलते बहुत दूरी चला गया। विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! आज का हमारा वाक्य क्य कह रहा है? कि परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को हम अपने में धारण करते हुए और जैसे गान गाने वाला गाता ही रहता है उद्गीत गाता रहता है, गायत्रियों में गाता रहता है। उद्गीत गाता हुआ, आभा में रमण करता हुआ तीनों शब्दों में संसार की रचना है। वेद का मन्त्र प्रभु

का गान गा रहा है। माता का पुत्र जैसे माता का वर्णन कर रहा है, यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रहा है। वसुन्धरा बन करके उसी की गर्भ में यह अणु परमाणु नत्य करते रहते हैं। मानव अपने क्रिया कलाप से तपस्या के द्वारा, विज्ञान की प्रतिभा के द्वारा, वह भी तप है उसके द्वारा आणु को, परमाणु को जान करके यन्त्रों के द्वारा, अनुभव के द्वारा, चिन्तन के द्वारा, आत्मीय चिन्तन के द्वारा इस ब्रह्माण्ड को जानता रहता है। प्रभु की प्रतिभा को जानता रहता है। जानना ही उसका कर्त्तव्य है। जानना ही उसकी महानता कहलाती है। यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने, का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए, उस प्रभु की आराधना करते हुए, उस की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार होते चले जाएं। यह है बेटा! आज का वाक्। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा। सी 2 173 लोधी रोड़ नई दिल्ली

१० 17 08 1983 पुष्प 44 महानन्द जी द्वारा राष्ट्रवाद की चर्चा

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान करते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया हो आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस मनोहर वेदवाणी में, नाना प्रकार के यागों का चयन होता रहा है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं। परमपिता परमात्मा ने इस ब्रह्माण्ड रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया जिसके ऊपर परम्परागतों से ही, नाना ऋषि मुनियों ने भिन्न भिन्न प्रकार की टिप्पणियां की हैं अथवा उसको परोक्ष रूपों से जानने का प्रयास किया है और प्रत्यक्षवाद में उसके स्वरूप को ला करके मानव पवित्रतम बनने का प्रयास करने लगा। हमारे यहाँ ऐसा माना जाता है कि आदि सृष्टि में ब्रह्मा के चार पुत्र कहलाते थे जिनका प्रथम नाम अथर्वा था, द्वितीय का नाम रेणकेतु था, तृतीय का नाम स्वाचि था और चतुर्थ का नाम मृची था। तो यह ब्रह्मा के चार पुत्र यागों के चयन दृष्टिपात किया गया। यागों की रचना में मानव अपने में महान रहा है।

परम्परागतों से ही, याज्ञिक पुरुष बनते रहे हैं।
वेद का मन्त्र भी कहता है योजागां। हे मानव! तू जागरूक रह। याजगाम् ब्रह्मे वाचः तू याज्ञिग बन करके संसार में अपने जीवन को जागरूक बनाने का प्रयास कर। यूं तो संसार में प्रत्येक स्थलियों पर याग हो रहे हैं। अग्निहोत्र का नामोकरण भी याग माना गया है। परन्तु एक मेरी प्यारी माता अपने गर्भस्थल में जब शिशु होता है तो उस आत्मा से माता जब वार्त्ता करती है गम्भीर मुद्रा में विद्यमान हो करके, वह ध्यानावस्थित हो करके वह गर्भाशय में शिशु रहने वाला उस आत्मा से यह वार्त्ता करती रहती है। तो वह पवित्र याग कर रही है। वह कहती है यागाम् ब्रह्म लोकः कश्मश्वामू वही व्रतो कस्मो अस्ति माता अपने गर्भ के बालक से यह प्रश्न करती है, हे आत्मा! तू कौन है? परन्तु जब उत्तर नहीं मिल पाता तो चेतना ही सिद्ध होती है। तो उसके ऊपर माता चिन्तन और मनन करती रहती हैं। यहाँ नाना माताएं इस प्रकार की मुझे स्मरण हैं जिन्होंने पुत्र याग को जानने का प्रयास किया है। हमारे वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहा है। उन यागों में जैसे अग्निष्टोम याग है, वाजपेयी याग है, रुद्र याग है, विष्णु याग है, ब्रह्मयाग है, पुत्रेष्टि याग है और भी नाना प्रकार के जैसे कन्या याग का वर्णन भी आता रहता है, देवी याग का वर्णन भी आता रहा है। विभिन्न सामूहिक यागों और वृष्टि यागों का वर्णन भी वैदिक साहित्य में आता रहता है। यह नाना प्रकार के यागों का चलन हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, माना गया है।
आज मैं सूक्ष्म अपने विचार दूंगा क्योंकि मेरे प्यारे! महानन्द जी भी अपने कुछ दो शब्दों की विवेचना करेंगे। आज तो मैं इतना उच्चारण करने के लिए आया हूँ कि हमारा वैदिक साहित्य मानवीयता से गुंथा हुआ है जिसकी आभा में प्रत्येक मानव परम्परागतों से रमण करता रहा है। मैं तो इतना ही कहा करता हूँ पुत्रो! कि मेरी प्यारी माता को शिक्षित हो जाना चाहिए। जब वह लोक लोकान्तरों की, विज्ञान की माला बना लेती है तो इस ब्रह्माण्ड का और मानसिक जीवन का, दोनों का एक तारतम्य बन जाता है, एक माला बन जाती है। एक गान रूप में गाने लगता है। यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार की विद्याएं हमारे वैदिक साहित्य में आती रहती हैं जैसे अग्निष्टोम याग का वर्णन आता है

उसमें अग्नि विद्या के ऊपर मानव बहुत अनुसन्धान करता है। आपो सूत्रों का वर्णन आता है तो आपो पर बहुत अनुसन्धान करता है, आपो को जानने लगता है। कहीं वायु सूत्रों का वर्णन आता है तो वह यह जान लेता है कि अब जो तरंग गई है, इस तरंग में अमुक प्रकार का परमाणु गति कर रहा है।

तो ये विद्याएं मानव के समीप परम्परागतों से ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में नृत्य कर रही हैं। आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विवेचना देना नहीं चाहता हूँ। विचार यह है कि प्रत्येक मानव को अपने जीवन में एक महत्ता को धारण करना है, विचारशील बनना है और सामूहिक रूपों से अपने जीवन को परमात्मा की महत्ता जब स्वीकार करता है तो वह निरभिमानी रहता है। उसे रुग्ण भी नहीं होता। क्योंकि अपने हृदय में जब यह निष्ठित बना लेता है कि जिस सम्पदा को तू समाप्त कर रहा है वह सम्पदा तो मेरे प्यारे! प्रभु की है। क्योंकि यदि माता से यह प्रश्न किया जाए कि इस शरीर को मैं अपनी कृतियों से समाप्त कर रहा हूँ, इसका निर्माण कौन करता है? तो माता से प्रश्न किया, माता तो निर्माण करती है, तो माता उत्तर देती है मैं निर्माण नहीं करती, मुझे तो ज्ञान भी नहीं है। पिता से प्रश्न किया जाए तो कहता है मैं तो निमित्त हूँ, निर्माण करने वाला कोई और है। तो इससे सिद्ध हुआ कि निर्माण करने वाला वह प्रभु है और जिस वस्तु का निर्माण प्रभु ने किया है उसको प्रभु की आज्ञा, प्रभु की सम्पदा जान करके उसका भोग करना चाहिए। वह परमात्मा की सम्पदा है। परमपिता परमात्मा ने जैसी सम्पदा प्रदान की, आत्मा ले करके आया है वैसी उसे समर्पित कर देनी है। जब उसको समर्पित करने की भावना मानव के हृदय में आती है तो मानव अपने को ब्रह्मवर्चोसि बनाने लगता है। ब्रह्मवर्चोसि किसे कहते हैं? हमारे यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार की साधना ब्रह्मवर्चोसि में आती रहती हैं। उन साधनाओं में हमें रत्त रहना है। ब्रह्मवर्चोसि का अभिप्राय है ब्रह्मचरिष्यामि। ब्रह्मचरिष्यामि का अभिप्राय यह है कि ब्रह्मचारी रहना। ब्रह्मचारी कौन है? ब्रह्मचारी किसे कहते हैं? प्रश्न तो आते हैं। ब्रह्मचारी उसे कहते हैं जो प्रत्येक श्वास गति कर रहा है उसे ब्रह्म में विचरण कराने का नाम ब्रह्मचरिष्यामि कहते हैं। श्वास गति कर रहा है। स्वाभाविक रूपों से प्राण अपनी आभा में गति कर रहा है।

उसको सूत्र में पिरोना हैं उसको सूत्रित करना है और सूत्रित करके अपने जीवन को महान् बनाना है। तो आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, अब मेरे प्यारे! महानन्द जी दो शब्दों की विवेचना करेंगे। (शब्द ध्वनि से) इनकी बारम्बार प्रेरणाएं प्राप्त होती रहती हैं। ये अपनी वार्त्ताएं मानो देखो, बड़े गम्भीर और मानवीय तत्त्वों की वार्त्ता प्रकट करते हैं।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् तमवर्णां ब्रह्मः वाचन्नमस्तुत ब्रह्मणः वाचन् नमः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, अमृत की वृष्टि कर रहे थे और अमृतमयी अपने शब्दों का प्रतिपादन, यह नित्य प्रति किया करते हैं। परन्तु आज मुझे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कुछ मानो प्रेरणा दी है क्योंकि यह तो सदैव आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों का समन्वय करते रहते हैं, नाना वंशों का वर्णन करते रहते हैं। परन्तु आज जो हमारा वाक्य है, समाज में यह कहाँ जा रहा है? आज सबसे प्रथम, हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ मेरा हृदय प्रसन्न हो रहा है, वहाँ एक याग का समापन हुआ है, पूर्णत्व को प्राप्त हुआ है, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव बहुत परम्परागतों में ही नाना प्रकार के यागों का नामोकरण भी बहुत सूक्ष्म रूपों से जाना जाता है। परन्तु एक समाज ऐसा बना, जहाँ यागों की पद्धति में अपभ्रंशवत् आया। एक वाममार्ग समाज बना जो ऊर्ध्वा में, वाममार्ग कहते हैं, जो सत्यता से विपरीत हो, जैसे आर्य अनार्य होते है। आर्य कहते हैं। श्रेष्ठ पुरुषों को, और अनार्य कहते हैं अश्रेष्ठ को। इसी प्रकार अनार्य समाज जब बना, तो यागों के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार की अशुद्धियां आईं। जहाँ ब्रह्मचारिष्यामि का अर्थ, पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी अभी प्रकट कराया, आधुनिक जगत् ने, उस अनार्य समाज ने, याग में ब्रह्मचारिष्यामि, क्या मानो इन्द्रियों की आहुति देना, उन्होंने स्वीकार कर लिया और यहाँ हिंसा का चलन हुआ। हिंसा का जब चलन हुआ, तो नाना प्रकार के सम्प्रदाय बन गए। उन सम्प्रदायों में भी रूढ़ि आ गई। जब सम्प्रदायों में रूढ़ि आ गई तो समाज अज्ञानता की धारा पर, अज्ञानता की एक रेखा पर विद्यमान हो गया। आधुनिक काल का जैसे वैज्ञानिक है, वह अज्ञानता की रेखा पर विद्यमान है। क्योंकि मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को बहुत

पुरातन काल में यह निर्णय कराया था, यह कहा था। याजागाम् ब्रह्मलोकां हिरएयं ब्रहे। हे यज्ञमान! तेरा जीवन सौभाग्य का बना रहे और अखरडता में परणित होता रहे। जिस मानव के जीवन में सौभाग्यवत् की वार्त्ता आती है उस मानव की सौभाग्यशालिनी जीवन की धाराओं में एक महानता की प्रेरणा आती रहती है। उन प्रेरणाओं का परिणाम, फलस्वरूप वह होता है कि वह अपनी महान् वेदी पर विचित्र बन जाता है। तो विचार क्या चल रहा है? मैं उच्चारण कर रहा हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय करा रहा हूँ, यह जो समाज और आधुनिक समाज और वर्तमान का काल चल रहा है, ये काल ऐसा भयंकर काल है जिसको कालिका मानिका समाज कहते हैं। यह समाज क्यों ऐसा है? क्योंकि राष्ट्रवाद में सूक्ष्मवाद है। राष्ट्रवाद कोई राष्ट्रवाद नहीं रहा है। हमारे यहाँ भगवान मनु का काल था जिसमें सबसे प्रथम, राष्ट्र का निर्माण किया था, परन्तु एक मछली से ले करके मानव तक की रक्षा होती थी। आज के समाज में, मछली की रक्षा तो दूरी तब है परन्तु मानव मानव की रक्षा नहीं कर रहा है। क्योंकि भगवान मनु के काल में गढेले में जब समुद्रो से मछली आ गई थी, और एक गढ़ेले में नियुक्त कर दी और मानो वह बारह वर्ष तक गढेले में पनपती रही। वह जब मछली विशाल बन गई तो उसने भगवान मनु से कहा, हे देव! मैं प्रबल हो गई हूँ, मेरी रक्षा हो गई क्योंकि समुद्र में एक मछली प्रबल है, तो वह सूक्ष्म मछलियों को आहार बना लेती है। मेरे प्यारे! मुझे ऐसा पूज्यपाद गुरुदेव ने निर्णय कराया था, कि मछली जल प्लावन में उनकी रक्षा के लिए बनी। इसी प्रकार मैं आधुनिक काल के राष्ट्र को मापने लगता हूँ, जब मैं भगवान मनु के राष्ट्र को मापता हूँ आधुनिक जगत को मापने लगता हूँ तो जहाँ मछलियों की रक्षा, राष्ट्र किया करता था, राष्ट्रों में रक्षा होती रहती थी, परन्तु आधुनिक काल में, राजा अपनी रक्षा करके दूसरे प्राणियों का भक्षण करने के लिए तत्पर रहता है। तो यह समाज कैसे बनेगा?

राष्ट्र के तीन सूत्र

भगवान मनु महाराज ने राष्ट्र का निर्माण करते हुए समाज को, तीन सूत्रों में कटिबद्ध

किया था, और वह तीन सूत्र क्या हैं? मानव के तीन सूत्र हैं, मानो देखो, सबसे प्रथम आहार है, उसके पश्चात् व्यवहार है, उसके पश्चात् मानव की चर्यता है। तो विचार आता है कि उसका आहार कैसा बन गया है मानव का? आधुनिक काल का मानव कैसा आहार कर रहा है? नाना प्रकार के प्राणियों का भक्षण कर रहा है। प्राणियों का भक्षण करता हुआ, वह मांसाहारी, दूसरों के रक्त का पान कर रहा है, और रक्तपान करता हुआ, वह दर्शनों की चर्चा करता है। वह अपने में महान् बनने के लिए सुरा सुन्दरी का गामी बन गया है। अरे, मानव! जब तू सुरा और सुन्दरी का गामी बन गया है तो यह समाज कैसे ऊँचा बन सकता है? जब तेरा आहार ही अशुद्ध बन गया है। हे राजन्! हे राजा! तेरा यह राष्ट्र कैसे पवित्र बनेगा? जब तेरे राष्ट्र में सुरा और सुन्दरी का गमन हो गया है, विज्ञान का दुरूपयोग हो गया है। तो यह अग्नि का कांड बनता चला जा रहा है समाज परन्तु देखो, राजा इसके ऊपर विचार विनिमय नहीं करता क्योंकि राष्ट्र एक आभा में लगा हुआ है। आज संसार पृथ्वी का जो राष्ट्रवाद है, वह एक ही आभा में लगा हुआ है, कि तेरी स्थली सुरक्षित रह जाए, तेरी जो मानो भूमिका है जिस स्थली पर तू विद्यमान हो गया है ये राष्ट्र मानव का चरित्र कहीं चला जाओ। मेरी प्यारी माता का चरित्र कहीं चला जाए परन्तु मेरी स्थली की रक्षा होनी चाहिए। जब इस प्रकार की मनो भावना राष्ट्रवाद में परणित हो जाती है तो राष्ट्र की रक्षा कैसे हो सकती है? यह तो अग्नि के काण्ड बनते चले जा रहे हैं। जब मैं विचारता हूँ किसी भी क्षेत्र में जाने के लिए, मैं जब शिक्षालय में प्रवेश करता हूँ, आधुनिक काल के तो शिक्षालय में न तो ब्रह्मचारी हैं, न आचार्य हैं। मानो देखो, शिक्षालय में जब मैं ब्रह्मचर्य के ऊपर मन्थन करने लगता हूँ, तो ब्रह्मचरिष्यामि ब्रह्मचारी प्राप्त नहीं होते और जब मैं आचार्यों के समीप जाता हूँ तो वह ब्रह्मचर्य के बनाने में असफल रहते हैं, तो विद्यालय कैसे ऊंचे बनेंगे? विद्यालय उस काल में ऊंचे बन सकते हैं जब आचार्य तपा हुआ होता है।

मुझे एक वार्त्ता पूज्यपाद गुरुदेव ने भी स्मरण कराई थी और मुझे भी कही थीं कि जो मुझे स्मरण है, कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने ब्रह्मचारियों से बोले कि मैं तप करने जा रहा हूँ। तो ब्रह्मचारियों ने एकत्रित होकर एक स्वर में यह कहा था, कि जिस

विद्यालय में आचार्य तपा हुआ होता है, वह विद्यालय महान बना करता हैं, आप तप करने के लिए जाइए। आचार्य को ब्रह्मचारी कहते हैं। मेरी प्यारी माता के जब मैं क्षेत्र में प्रवेश करता हूँ, या माताओं के आँगन में प्रवेश करता हूँ तो माताओं का जीवन कहीं का कहीं चला गया है। शृङ्गार में सदैव परणित रहना ही, उन्होंने अपना मुख्य एक उद्देश्य बनाया है, परन्तु जब मैं यह कहता हूँ, हे माता! तू अपने बालक को शिक्षा भी तो दे, परन्तु देखो, वह शिक्षा देने में, इकाई में परणित हो जाती है माता, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी उच्चारण कर रहे थे कि माता याग करती है और वह याग कैसे करती है? गर्भ से होने वाले पुत्र से, पुत्रियों से वार्त्ता प्रकट करती है। परन्तु आज मुझे आधुनिक काल में, माता दृष्टिपात नहीं आ रही हैं। जब माता का पुत्र उत्पन्न होने के पश्चात्, युवा हो करके माताओं के शृङ्गार को हनन करने वाला होता है, तो वह माता दुर्भागिनी कहलाती है।

परन्तु जब मैं इन वाक्यों को प्रकट करने लगता हूँ, तो पूज्यपाद गुरुदेव मुझे मौन होने के लिए कहते हैं। परन्तु जब मैं यह वार्त्ता उच्चारण करने लगता हूँ, हे माता! तू माता मल्दालसा जैसी क्यों नहीं बनती, तू माता कौशल्या जैसी क्यों नहीं बनती? जो राष्ट्र का अन्न भी ग्रहण नहीं करती थी। मेरे प्यारे! कला कौशल करके, अपने पुत्रों को उत्पन्न करना एक महानता का एक दिग्दर्शन कहलाता है। परन्तु जब मैं पूज्यपाद गुरुदेव के समीप यह वार्त्ता प्रकट करता हूँ, कि वैज्ञानिकों का समूह कहता है, आधुनिक काल जो विज्ञान का युग है वह विशाल युग चल रहा हैं, नाना प्रकार की चित्रावलियां हैं, जिन चित्रावलियों में महापुरुषों के चित्र होने चाहिए थे, उनका जीवन चरित्र होना चाहिए था, जीवन की चर्चाएं होनी चाहिए थीं, वहाँ उन चित्रावलियों में मेरी पुत्रियों के अश्लील चित्रण हो करके, मानव के मनोरंजन का एक साधन बनता चला जा रहा है। क्या यह विज्ञान का दुरूपयोग है? विज्ञान एक सांस्कृतिक आभा बन गया है। हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! जब यह सांस्कृतिक बन गया है तो सांस्कृतिक ही शब्द रहना चाहिए, इसमें अश्लीलता नहीं आनी चाहिए। यदि अश्लीलता आती है तो सांस्कृतिक कार्यक्रम कहाँ रहा? जब मैं यह विचारता हूँ कि संस्कृति का शब्द कहाँ जा रहा है? इस प्रकार का

राष्ट्र, इस प्रकार के प्राणियों में, एक प्राणी दूसरे प्राणी का भक्षण कर रहा है।
विचार विनिमय क्या? स्वार्थपरता इतनी है जैसे महर्षि भारद्वाज मुनि की चर्चा करते हुए, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक समय प्रकट कराया था, कि भारद्वाज मुनि ने यह कहा था, अधिकार की पुकार जब होने लगती है, कर्त्तव्यवाद जब विहीनता में चला जाता है तो समाज अग्नि का काण्ड बन करके रहता है। वह दशा इस काल में जो वर्तमान का वायुमण्डल बना हुआ है, (पुस्तक से) राष्ट्र बना हुआ है प्रायः इसमें यही क्रिया कलाप हो रहा है। जब मैं यह विचारता हूँ कि कर्त्तव्यवाद के लिए तत्पर नहीं है, अधिकार की पुकार हो रही है मेरा अधिकार प्राप्त हो जाए, चाहे रक्तभरी क्रान्ति समाज में आ जाए परन्तु अधिकार ही अधिकार पुकार रहा है। तो हे मानव! यह तो अग्नि का काण्ड बन करके रहेगा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में प्रकट कराया कि विज्ञान का जो युग होता है वह विशाल युग होता है। विज्ञान के युग में मानव को अपने चिन्तन में रत्त रहना चाहिए। विज्ञान के युग में परमाणुवाद, वायुमण्डल में जब मानव प्रवेश होने लगता है, वायुमण्डल में उन परमाणुओं को एकत्रित करके यन्त्रों का निर्माण किया जाता है जिससे मानव मानव का संहार करने वाला हो, मानव को नष्ट करने वाला हो, ऐसी प्रतिभा बनाता चला जाता है।
तो आज का विज्ञान, समाज को त्रास देता चला जा रहा है। समाज को अग्नि के मुख की वार्त्ता प्रकट कर रहा है। जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वार्त्ता मुझे प्रकट कराई, तो मेरा हृदय प्रफुल्लित हो जाता है, मैं यह कहता रहता हूँ यह स्वार्थवाद आधुनिक काल से नहीं, एक वाक्य पर संग्राम हो जाता है, एक ही वाक्य पर शान्तं ब्रह्मे वाचः शान्ति की स्थापना हो जाती है और एक वाक् पर अशान्ति आ जाती है। जब मैं यह विचारता हूँ कि मानव समाज में जब भी स्वार्थपरता आई तो उसी काल में नरसंहार हुआ। महाभारत का काल मुझे भली भांति स्मरण है। महाभारत के काल में महाराजा शान्तनु एक स्वार्थपरता में परणित हो गए। पुत्र से कहते हैं तुम ब्रह्मचारी रहो, मेरा संस्कार करा दो। इस कर्त्तव्य पर लगाने के लिए अनधिकार चेष्टा हुई और उस अनधिकार चेष्टा से परिणाम यह हुआ कि महाभारत में नरसंहार हुआ। वह कुरुक्षेत्र,

क्षेत्र भूमि बना और नरसंहार हो गया, कुटुम्ब में उसी शान्तनु की संतानों में। इसी प्रकार जब मैं यह विचारता हूँ आधुनिक जो काल है यह महाराजा शान्तनु से कितने गुणा नीचे चला गया है। यह नरसंहार होने जा रहा है। धीमी धीमी अग्नि प्रचण्ड हो रही है। समाज का प्राणी समाप्त हो गया है तो स्नेह से प्राणी आश्चर्य करते थे। आज का प्राणी वह है कि नर संहार हो रहा है, मार्गों में प्राणी निष्प्राण हो करके अस्वत हो रहा है, उसे कोई दाह करने वाला भी नहीं है। अरे, यह समाज बन गया है परन्तु आगे आने वाला समाज और भी निकृष्ट बनने जा रहा है।

विचार विनिमय क्या? मैं पूज्यपाद गुरुदेव से यह वाक्य वर्णन करने आया हूँ हे पूज्यपाद गुरुदेव! यह समाज कैसा बन गया है? आज मुझे बड़ा आश्चर्य आ रहा है। पूज्यपाद गुरुदेव कहा करते थे यह समाज अग्नि का काण्ड बनने जा रहा है। आधुनिक काल प्रायः ऐसा ही बन रहा है। मैं वहीं जाना चाहता हूँ, वैज्ञानिकजनों में प्रवेश करना चाहता हूँ। विज्ञान यह कहता है कि परमात्मा नहीं है, समाज भी नहीं कहता है। साहित्य की अवहेना हो रही है नरसंहार के कारण। विद्यालयों में साहित्य की अवहेलना हो करके उपाधि को प्राप्त किया जा रहा है। कोई राम के साहित्य को झुठला करके ही उपाधि को प्राप्त कर रहा है, विशेषज्ञ बन रहा है। कोई महाभारत के साहित्य को नष्ट करके यह कहता है यह कल्पना है, काल्पनिक है और उपाधियों को प्राप्त किया जा रहा है। तो विचार क्या है? यह समाज की सूक्ष्मता है। राष्ट्र जब विचारक नहीं है, साहित्य के ऊपर नाना प्रकार के कुठाराघात हो रहे हैं, वह साहित्य नहीं रहा। यह मानव कहाँ चला गया है? जब मैं यह विचारता हूँ आधुनिक स्वार्थवेत्ताओं ने जो राष्ट्र के स्वार्थवेत्ता हैं वह कहते हैं आर्य अनार्य है। आर्य जो शब्द है यह एक दूसरे पर आक्रमण करता चला आया हैं जब मैं यह विचारता हूँ, अरे, संसार में प्रभु की सृष्टि ही दो प्रकार की है आर्य और अनार्य, तो यह आर्य शब्द कहाँ से आ गया है? यह आर्यत्व कहाँ से आ गया है? जब मैं अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में प्रवेश करता हूँ तो ब्रह्मचारीजन कहते हैं कि यह आर्य कहीं से आए हैं और यहाँ आक्रमण किया गया है। परन्तु मैं यह जानना और चाहता रहता हूँ कि समाज में, संसार में, पृथ्वी पर क्या कहीं भी चले जाओ वहाँ

आर्य अनार्य दो ही शब्द हैं तो आर्यों का आना और गमन कहाँ से हो गया है? यह प्रश्न रुद्रेश्वर में चला जाता है। यह आभा समाप्त हो जाती है।

पूज्यपाद गुरुदेव से मैं प्रश्न करता रहता हूँ महाभारत के काल में यह आर्य और अनार्य संसार में छाया हुआ समाज था। एक कृष्ट मानव है, एक पवित्र मानव है। एक विचारक है, एक अविचारक है। यह समाज अज्ञान में परम्परागतों से सृष्टि के प्रारम्भ से यह समाज चला आ रहा है। सबसे प्रथम जब भगवान मनु ने राष्ट्र का निर्माण किया, राष्ट्रवाद इस पृथ्वी मण्डल पर नहीं था। भगवान मनु ने राष्ट्र का निर्माण किया था और यह कहा था, हे मानव! तू कर्त्तव्यवाद बन। मछली से ले करके प्राणिमात्र की रक्षा होनी चाहिए। राजा का राष्ट्र तभी ऊँचा बनता है। यहाँ अपने शिशु को अग्नि में तपा करके आहार कर रहा है समाज, जब मैं यह विचारता हूँ कि समाज कहाँ चला गया? यह राष्ट्रवाद कहाँ चला गया है? तो केवल मेरे समीप एक इकाई रह जाती है उच्चारण करने के लिए। तो विचार विनिमय क्या? विज्ञान आज के मानव को त्रास दे रहा है, अज्ञान में ले जा रहा है। अज्ञानम् ब्रह्म वाचः, बना रहा है। जब दार्शनिक समाज, पण्डित रहीं रहते, विचारक नहीं रहते, तो मूर्खों का एक समाज बन जाता है पामरों का समाज बन जाता है। उस काल में, समाज में गुड़म्बावाद की उत्पत्ति हो जाती हैं एक मानव गुरु बन करके शिष्यों को अज्ञान के क्षेत्र में ले जा रहा है।

तो विचार विनिमय क्या? पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे इतना समय नहीं दिया है, मैं केवल यह उच्चारण कर रहा हूँ कि आज जहां हमारी आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक प्रिय याग की रचना हुई हैं मेरा अन्तर्हृदय बड़ा प्रसन्न हो रहा हैं, मैं अपने में यह स्वीकार कर रहा हूँ, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरी आत्मा में सदैव एक शुभ प्रेरणा प्रकाशित होती रहे। हे यज्ञमान! तू अपने जीवन को महान् बनाता चल। तू संसार में द्रव्य का सदुपयोग करता चल। जिस गृह में यज्ञमान बन करके द्रव्य का सदुपयोग करता है, हूत करता है, देवताओं को हवि देता है, वह पुण्यवान कहलाता है। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। जीवन में द्रव्य का जितना सदुपयोग होगा उतना द्रव्य संसार में बलवती हुआ करता है। वह समाज बलवतियों में

परणित हो जाता है।

आज मैं गुरुदेव से उच्चारण करने आया हं कि जिस स्थली पर हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक याग का आयोजन पूर्णत्व को प्राप्त हुआ है। विचार विनिमय यह कि मैं विज्ञान के काल को, वैज्ञानिकों को भी दृष्टिपात कर रहा हूँ, पुरातन काल का विज्ञान भी हमारे समीप रहता है। आधुनिक काल का विज्ञान भी समीप रहता है। आधुनिक काल का विज्ञान पुरातन काल के विज्ञान से अभी तक इकाई पर है। परमाणुवाद भी है, अणुवाद भी है, नाना प्रकार के आग्नेय अस्त्र भी हैं। जलास्त्रों का भी प्रयास किया जा रहा है। रावण के काल से आधुनिक काल का जो विज्ञान है, वह इकाई में भ्रमण कर रहा है। कुछ शेष विज्ञान की धाराएं, मानव के समीप आई तो हैं, परन्तु वह काल कहाँ? पुरातन काल में एक यन्त्र का मैं वर्णन कर रहा हूँ जिस समय लक्ष्मण और रावण के पुत्र मेघनाद का संग्राम हो रहा था तो उस समय मेघनाद ने एक यन्त्र का ऐसा प्रहार किया कि नीचे जल हो गया और अन्तरिक्ष से अग्नि की वृष्टि होने लगी। जब अग्नि की वृष्टि होने लगी, तो राम ने यह विचारा यह तो सर्वत्र मेरी वानर सेना समाप्त हो जाएगी। राम ने एक वरुणास्त्र का जैसे प्रहार किया, तो उस अग्नि के जो परमाणु थे, यन्त्र के, शीतल परमाणु उसको आहार कर और सेना की रक्षा हो गई। परन्तु आधुनिक काल में वह विज्ञान अभी तक नहीं आया है।

सोमकृति रेखा

पूज्यपाद गुरुदेव ने एक समय प्रकट कराया था क्या भगवान कृष्ण एक रेखा को जानते थे जिसे सोमकृति रेखा कहते थे। जितने क्षेत्र में परमाणु शक्ति का संग्राम होता है, उसके मध्य में वह यन्त्र स्थिर किया गया था। उसका प्रभाव उतनी दूरी तक रहता था जहाँ वह रेखा थी। उससे बाह्य प्राणी परमाणुवाद से नष्ट नहीं होता था। आधुनिक काल का यन्त्रवाद ऐसा है आज प्रहार कर रहा है, राष्ट्र के राष्ट्र उससे भस्म हो जाएं। आधुनिक काल में उस रेखा का निर्माण अभी तक नहीं हुआ है। पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे बहुत से विज्ञान के सूत्र प्रकट किए हैं मैं उनमें जाना नहीं चाहता हूँ। विचार यह देना चाहता

हूँ हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! संसार में याग होते रहें। यागों का क्रिया कलाप होता रहे जिससे परमाणुवाद शुद्ध होता रहे। पुरातन काल से ही यागों की प्रथा में परमाणुवाद का शोधन होता रहा है। वायुमण्डल को वाणी से पवित्र बनाया जाता है। आहार की मैं चर्चा कर रहा था। आधुनिक काल में आहार नहीं रहा है। आहार में दूसरों का रक्त मानव पान करने लगा है। आहार में जब दूसरों का रक्त पान करने लगता है तो व्यवहार में भी वही क्रिया कलाप होता है और जब व्यवहार ऐसा होता है तो गृहों के वायुमण्डल अशुद्ध हो रहे हैं। प्रत्येक गृह में कहीं कलह हो रही है, कहीं पति पत्नियों में एक दूसरे के प्रति प्रीति नहीं रही हैं पिता पुत्र में प्रेम नहीं रहा है। इसके मूल में क्या है? उसका आहार है और व्यवहार है। जब आहार और व्यवहार शुद्ध नहीं रहा है तो उसके विचारों में शुद्धिकरण कैसे आ सकता है? विचारों में शुद्धिकरण तब आता है जब आहार पवित्र होता है। आहार के पवित्र होने पर व्यवहार प्रीति का होता है, स्नेह का होता है तो गृह का वायुमण्डल पवित्र बन जाता है, गृह में कलह नहीं रहती। एक मानव अशुद्धियों से वाणी का दुरूपयोग कर रहा है, उससे गृह का वायुमण्डल अशुद्ध बन जाता है।

तो विचार क्या कि आधुनिक काल का जगत् महान् तब बन सकेगा जब आहार और व्यवहार शुद्ध होगा। अब मैं पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाता हूँ, आज का विचार क्या, कि राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। हे राजन्! तू अपने मानव जीवन को ऊँचा बना। तेरी महत्त उसी में है जब तू सामूहिक प्रसार करता हुआ अंहिसा परमो धर्मः की धारा को अपनाएगा। संस्कृति तेरी इतनी ऊँची हो, जिससे समाज तेरी संस्कृति को अपनाने वाला हो। यह कन्याओं का नृत्य जो होता है यह राष्ट्र का दुर्भाग्य होता है। चित्रावलियों में नृतिकाओं का नृत्य होना उससे ब्रह्मचर्य के दूषित होने का सन्देह बना रहता है। आलस्य और प्रमाद का सन्देह बना रहता है। यह प्रजा निष्क्रिय बन करके एक दूसरे का भक्षण करने के लिए तत्पर हो जाती है।

अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा। हे गुरुदेव! मेरा तो एक ही मन्तव्य है, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मैं पुनः से अपने हृदय की प्रेरणा

प्रेरित कर रहा हूँ तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे क्योंकि हवि देना ही द्रव्य का सदुपयोग है। इससे मानव ऊँचा बनता है। महत्ता की प्रतिभा आती है। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! आज मेरे पुत्र ने मुझे नवीन नवीन चर्चाओं का प्रतिपादन किया। इनकी राष्ट्रवाद और समाजवाद की चर्चाएं होती रहती हैं। उन चर्चाओं में बहुत से वाक्य इस प्रकार के भी हैं जो उच्चारण नहीं करने चाहिएं। आज मेरे प्यारे! महानन्द जी राष्ट्र की चर्चा कर रहे थे। वाक्य तो बहुत ही प्रिय है कि राष्ट्र को ऊँचा बनना चाहिए और राष्ट्र के ऊँचा बनने वाला ही समाज पवित्र बनता है। जब समाज में आहार और व्यवहार दोनों में पवित्रता होती है तो स्वार्थवाद की प्रथा नहीं आती। जब स्वार्थवाद नहीं रहता तो मानव एक दूसरे से स्नेह करने लगता है क्योंकि स्वार्थपरता में ही कठोरता आती है। मेरा हृदय भी कह रहा है हे यज्ञमान! जीवन अखण्ड बना रहे। तेरे जीवन का सौभाग्य के प्रतिभा महान् बनी रहे। यह आज का वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। अब वेदों का पठन पाठन होगा। इसके पश्चात् यह वार्त्ता समाप्त हो जाएगी।

निवास स्थान : श्री रघुवीर सिंह आर्य कैथवाड़ी

११ 29 08 1983 पुष्प 44 राष्ट्र कैसे ऊँचा बने?

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वत्र ओत प्रोत है। मानो उसी की आभा में यह ब्रह्माण्ड आभायित हो रहा है। जितना भी जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। मानो उसी की आभा में यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड नृत्य कर रहा है। जैसे माता के गर्भस्थल में मानो शिशु का अंगों व उपांगों सहित वह उसमें नृत्य कर रहा है, इसी प्रकार यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो उसी की आभा में रत्त हो रहा है,

उसी के आँगन में यह ब्रह्माण्ड अपने में ब्रह्माण्डित हो रहा है जिसके ऊपर परम्परागतों से ही, मानव ऊँची ऊँची उड़ान उड़ता रहा है। इस संसार के सम्बन्ध में मानव अपने अपने विचारों से, अपनी अपनी आभाओं से, इस ब्रह्माण्ड का निरूपण किया है। मानो किन्हीं आचार्यों ने इस ब्रह्माण्ड को एक कल्पवृक्ष की भांति इसकी कल्पना की है और यह कहा है कि यह संसार एक कल्पवृक्ष है, जो मानव इसके नीचे विद्यमान रहता है, वह कल्पना करते ही उसको प्रत्येक वस्तु प्राप्त हो जाती है क्योंकि यह संसार एक प्रकार की कल्पना का क्षेत्र है। मानव बेटा! कल्पना कर रहा है, अपने में कल्पित हो रहा है वस्तु हो जाती है।

यज्ञमान का वायाकृति रूप

परन्तु दार्शनिकों ने कहा, नहीं यह संसार कल्पवृक्ष ही नहीं है, यह संसार तो एक प्रकार की यज्ञशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव याग कर्म करने के लिए आया है। क्योंकि यह प्रत्येक स्थलियों में याग हो रहा है। कहीं मानो देखो, देव पूजा का नाम याग है। हमारे यहाँ जितने भी सुकर्म हैं, उन सर्वत्र कर्मों का नाम याग माना गया है। तो इसीलिए वैदिक ऋषियों ने कहा है कि यह संसार तो एक प्रकार की यज्ञशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव याग कर्म करने के लिए आया है। एक समय महर्षि अटूटी मुनि ने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से कहा कि महाराज! यह संसार क्या है? तो ऋषि ने उत्तर दिया कि यह संसार याग है। याग का अभिप्रायः यह है कि जो भी कर्म हो रहा है वह सु कर्म होता हुआ सर्वत्र याग है। तो यज्ञशाला में विद्यमान हो करके जब यज्ञमान याग कर्म करता है याग करता है तो अपनी भावनाओं से, अपने साकल्य से, तरंगों के द्वारा मुनिवरों! देखो, उसको तरंगित करने लगता है। तो विचार क्या? मानो देखो, यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। मेरी प्यारी माता अपने पुत्र को जन्म देती है। उसे शिक्षा दे रही है, वह शिक्षित बन रहा है। परन्तु माता जब उसे शिक्षा देती है, तो एक पवित्र याग कर रही है, क्योंकि उसमें आता है इदन्नमम् यह मेरा नहीं क्योंकि मुझे तो यह भी प्रतीत नहीं कि निर्माण कैसे हुआ है? तो मुझे यह सिद्ध हुआ कि निर्माण वेत्ता कोई

और है। निर्माण होने वाला ही मानो कुछ और है। तो वह राष्ट्र की सम्पदा बन जाता है। वह समाज की सम्पदा बन जाता है। तो मुनिवरों! देखो, माता याग कर रही है। एक ब्रह्मचारी विद्यालय में अध्ययन कर रहा है। अध्ययन करता हुआ वह सु अध्ययन कर रहा है वह विचारो का अध्ययन, पोथियों का अध्ययन करते करते जब वह विचारों का अध्ययन करने लगता है तो स्वतः अपना अध्ययन करना प्रारम्भ कर देता है। तो मुनिवरों! वह याग कर रहा है। एक मेरी पुत्री है वह अपने आँगन में विद्यमान हो करके अध्ययन कर रही है, परन्तु जब वह स्वतः अपना अध्ययन करना प्रारम्भ करती है स्वतः अध्ययन करता है तो अपने आत्म चिन्तन में संलग्न हो जाती है, वह आत्मयागी बन जाती है। योगेश्वर बेटा! विचार रहा है तरंगों को, अपनी तरंगों से बाह्य जगत् का समन्वय कर रहा है, मिलान मिला रहा है। परन्तु देखो, वह अपनी तरंगों से तरंगो का समन्वय करता हुआ मेरे प्यारे! जब वह आत्मा और हृदय का दोनों की ज्योति को एक ज्योतिमयी, लिंगमयी बना लेता है तो मुनिवरों! आध्यात्मिक याग कर रहा है। इन्द्रियों के विषय को एकत्रित कर रहा है नेत्रों से ज्योति ले रहा है, घ्राण से मुनिवरों! मन्द सुगन्ध ले रहा है। श्रोत्रों से शब्द ले रहा है, त्वचा से प्रीति ले रहा है, वाणी से उद्गार ले रहा है। तो मानो देखो, यह कैसा उद्गम एक उद्गम् ब्रीहि उद्गम् स्वाहा कैसा उद्गार है यह? प्रत्येक इन्द्रियों के विषय का साकल्य सामग्री बनाता है। सामग्री बना करके, साकल्य बना करके हृदय रूपी जो यज्ञशाला में जो आध्यात्मिक अग्नि जागरूक हो रही है उसमें इस साकल्य की आहुति देता है और वह स्वाहा कह करके हृदय को उज्ज्वल बना करके प्रकाशवान बनाता है।

तो मुनिवरों! यह कैसा प्रिय, आध्यात्मिक याग कर रहा है। भौतिक याग के पिण्ड से बाह्य चला जाता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है। तो कैसा प्रिय याग हो रहा है? तो विचार एक विज्ञानवेत्ता है, विज्ञानवेत्ता अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है। उसके पूर्व विज्ञानशाला में विद्यमान होता है। तरंगों को गणित कर रहा है। तरंगों को अपने में समेट रहा है और समेटता हुआ, अपने में दृष्टिपात करता हुआ, मुनिवरों! देखो, विज्ञान की तरंगों में कहीं अणुवाद में जा रहा है, कहीं परमाणुवाद में जा रहा

है, कहीं चित्रावलीवाद में जा रहा है, कहीं सूर्य लोक की कल्पना कर रहा है, कहीं वायु की कल्पना कर रहा है, कहीं अग्निष्टोम में प्रवेश होता हुआ मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्माण्ड को अपने में दृष्टिपात करता हुआ मानो वह बाह्य जगत् को दृष्टिपात करके नाना प्रकार के वैज्ञानिक यन्त्रों में प्रवेश होता हुआ वह एक याग कर रहा है। तो विचार विनिमय क्या यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। मानव देखो, कन्या का पालन कर रहा है वह पितर याग हो रहा है। पति पत्नी दोनों गार्हपथ्य अग्नि की पूजा कर रहे हैं तो वह गृह याग कर रहे हैं। ब्रह्मचारी आचार्य कुल में प्रवेश करता हुआ आचार्य से गो मेध यागों का चयन कर रहा है, बुद्धि का चयन कर रहा है, विज्ञान का चयन कर रहा है। तो बेटा! वह गार्हपथ्य अग्नि की पूजा करता हुआ याग कर रहा है। गुरु शिष्य बेटा! अपनी स्थलियों पर विद्यमान हैं, आचार्य का दर्शन हो रहा है। दर्शन चल रहा है। मानो विज्ञान का दर्शन चल रहा है, शिष्य उसको ग्रहण कर रहा है। आध्यात्मिकवाद में प्रवेश हो रहे हैं। मानो एक ऊर्ज्वा को प्राप्त कर रहे हैं। उस ऊर्ज्वा के द्वारा उसको प्राप्त करते हुए द्यौ लोक में गमन करते हैं। तो बेटा! वह प्रिय एक याग हो रहा है।

तो विचार विनिमय क्या? वेद का मन्त्र कहता है यसो सम्भवः देवः सर्वत्राणि यागाम् ब्रह्मः वाचप्पृहि लोकः यह सर्वत्र एक याग के रूप में प्रवेश कर रहा है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को याग करना चाहिए। हमारे यहाँ ऋषि मुनियों ने जहाँ ब्रह्मयाग कहा है, वहाँ देव याग कहा है। जहाँ देव याग कहा है वहाँ पितर याग का वर्णन है। जहाँ पितर याग का वर्णन है वहाँ अतिथि याग का वर्णन है, बलि वैश्व यागों का वर्णन है। मानो देखो, याग में संसार को कटिबद्ध कर दिया है और यह कहा है कि यह संसार का प्रत्येक कार्य याग है। माता पिता से कहा कि तुम पुत्रेष्टि याग करो। सन्तान उत्पन्न करने का नाम भी मुनिवरों! देखो, याग ही माना है। यहाँ किसी प्रकारं ब्रहे व्रतां मानो वाणी उच्चारण कर रहा है, शोध की वाणी कह रहा है, यथार्थ कह रहा है। दर्शनों से गुथी वाणी कह रहा है। तो बेटा! यह कैसा प्रिय याग कर रहा है? माता लोरियों का पान करा रही है, मानो उसको बुद्ध, शुद्ध, निरंजन इस प्रकार का उपदेश देती हुई, अपने को महान् बना रही है। वह याग कर्म कर रही है। तो विचारकों ने कहा कि ये

संसार जहाँ कल्पवृक्ष है वहाँ मुनिवरों! देखो, ये विज्ञानशाला है। राजा राष्ट्र का पालन कर रहा है। प्रजा को मेध में ला रहा है। वह मेध और अश्व दोनों मिलाकर के अश्वमेध याग कर रहा है, प्रजा के सुखद के लिए वह नाना प्रयास कर रहा है कि मेरी प्रजा में किसी प्रकार का कोई ऋणी न रहे। एक दूसरे का ऋणी न रहे। इसीलिए याग हो रहा है। तो बेटा! ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। याग हो रहा है। यागों में मानव परणित हो रहा है, तो मुनिवरों! देखो, यागां ब्रह्म वाच प्रव्हे लोकः अब मेरे प्यारे! देखो, मैं कोई विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ। केवल याग के ऊपर कि प्रत्येक मानव को याग कर्म करना चाहिए। अब मैं अपने पुत्र से अश्वताम् ब्रह्मवाचः।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् दधिमा रथौ सर्वं आभ्यां रुद्रो भगा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी, कुछ अमृतमयी चर्चा कर रहे थे, और वह चर्चा क्या? कि यह संसार उन्होंने याग के रूप में परणित किया है, उन्होंने इस संसार को कहीं कल्पवृक्ष के रूप में परणित किया है। परन्तु इससे मुझे कोई मानो समन्वय नहीं है। विचार मैं केवल यह उच्चारण करने के लिए पूज्यपाद गुरुदेव को क्योंकि ये नित्यप्रति कुछ विज्ञान की चर्चा करते रहते हैं। आज भी विज्ञान के युग में प्रवेश कर रहे थे, और यज्ञमान का वायाकृति रूप उच्चारण कर रहे थे। मैं कोई विशेष चर्चाएँ, व्याख्याएं, या पूज्यपाद गुरुदेव को बुद्धिमता की चर्चा क्योंकि यह तो नित्यप्रति गम्भीर वाक्यों में संलग्न रहते हैं। यह आध्यात्मिक और विज्ञान में और भौतिकवाद की चर्चाओं में लगे रहते हैं। परन्तु मैं तो इतना उच्चारण करने के लिए आया हूँ, जहाँ यह हमारी आकाशवाणी जा रही है, वहाँ याग का एक प्रदर्शन दृष्टिपात कर रहा था। अपने में संमग्न हो रहा था। मानो जहाँ मैं प्रसन्न होता हूँ यागों को दृष्टिपात करके वहाँ मुझे अपार कष्ट की प्रतीति भी होती है।

परन्तु देखो, विचार क्या है, क्या मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अपने भोले भाले स्वरूपों में, अपनी प्रतिभा में प्रतिष्ठित रहते हैं। परन्तु आज मैं यागों का दर्शन कर रहा था। मेरा हृदय मग्न हो रहा था। हे वेद के पठन पाठन करने वाले पाण्डितव! तेरा हृदय सदैव पवित्र रहे। हे पाण्डितव मानो तेरा उद्गार पवित्र बना रहे। मेरी यह कामना रहती है कि

जो धर्म का, वेद का प्रसार करने वाले हैं, याग जैसे कर्मों की रचना करने वाले हैं उनके जीवन में सदैव सौभाग्य की धाराएं परिणित होती रहें। मानो उनका जीवन सदैव प्रसन्नयुक्त रहे। हे यज्ञमान! तेरा सौभाग्य है मानो जा देखो, तू अपने द्रव्य का जो सदुपयोग कर रहा है। यज्ञमान का अभिप्राय यह है जो द्रव्य का सदुपयोग करता है पाण्डितव के द्वारा, यागां ब्रह्मवाचो व्रते मानो देखो, याग के द्वारा, यागों में जब मानो तरंगें उद्बुद्ध होती रहती हैं, इन यागों का चलन, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, विचित्र माना गया है। जिन मानो देखो, याग की चर्चाएं, जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रश्न करता हूँ कि यागों की रचना का उद्गार कैसे उत्पन्न होता है? मानो उद्गम कैसे आता है? तो पूज्यपाद मुझे ये प्रगट कराते रहते हैं, क्या, यह तो सृष्टि के आदि से ही इसका चलन है। क्योंकि सुगन्ध और दुर्गन्धता में सृष्टि की रचना विद्यमान है। यह परम्परागतों से ही, क्रिया कलाप होता आ रहा है। हे यज्ञमान! मानो तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, क्योंकि सौभाग्य ही मानव का जीवन होता है। मानो देखो, मैंने कई काल में अपने पूज्यपाद से कहा कि आधुनिक काल का जो यह संसार है, परन्तु आधुनिक काल का जो वायुमण्डल है, यह दूषित हो रहा है। वायुमण्डल में दोषारोपण हो रहा है इसके मूल में क्या है? क्या विज्ञान का दुरूपयोग होना है। आधुनिक जो काल है उसमें विज्ञान का दुरूपयोग हो रहा है, विज्ञान के दुरूपयोग होने से ही समाज में, मानो देखो, संसार में एक रक्तभरी क्रान्ति के अवशेषों का जन्म होता जा रहा है।

मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह प्रगट कराया था कि आधुनिक काल का विज्ञान कहता है कि हम वैज्ञानिक हैं। परन्तु जब मैं पूर्व काल के विज्ञान को और आधुनिक काल के विज्ञान को जब एक दूसरे से मापने लगता हूँ, तो आधुनिक काल का विज्ञान अभी इकाई में भ्रमण कर रहा है। इसमें ऐसे ऐसे यन्त्रों का आधुनिक काल में निर्माण हो रहा है जिन यन्त्रों के द्वारा एक एक राष्ट्र का प्राणी नष्ट हो सकता है। परन्तु देखो, वायुमण्डल में, यन्त्रों की प्रतिभा को प्रसारित करने से ही मानव समाज समाप्त हो सकता है। परन्तु देखो, यह विज्ञान उसके पश्चात् भी विज्ञान में, इकाई में भ्रमण करा रहा हूँ। क्यों करा रहा हूँ? जब मैं उस काल को दृष्टिपात करता हूँ, महर्षि

भारद्वाज मुनि के विज्ञान में पहुंचता हूँ, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विज्ञान में प्रवेश करता हूँ तो ऐसा प्रतीत होता है कि ये विज्ञान की इकाई में है। मैं जब राजा रावण के राष्ट्र को दृष्टिपात करता हूँ, राजा रावण अपनी लंका में नाना वैज्ञानिकों के यहाँ अनुसन्धान करते रहते थे। अनुसन्धान करना कोई आश्चर्य नहीं है। यह परम्परागतों से आयुर्वेद भी विचित्रता में गति करता रहा है।
परन्तु देखो, विचार आता है पूज्यपाद आधुनिक काल के विज्ञान में, मानो देखा यन्त्रों में चित्र आ रहे हैं, परन्तु पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर गए हैं, और सूर्य की ऊर्ज्वा में लगा हुआ है आज का विज्ञान, कि सूर्य की ऊर्ज्वा को लेना चाहिए। परन्तु देखो, पुरातन का विज्ञान आधुनिक काल के विज्ञान ने भी एक यन्त्र में पुत्र की, पुत्री की उत्पत्ति भी की है परन्तु वह जीवन नहीं दे सकें है। परन्तु देखो, मैं जब यह विचारता हूँ कि पुरातन का विज्ञान कितना महान् और पवित्र रहा है? भारद्वाज की विज्ञानशाला में एक अणु को ले करके जब यन्त्र में उस अणु को प्रवेश कर दिया। प्रवेश करके मानो देखो, उसमें यन्त्रावलियों से सब कुछ देने लगे तो ऐसा मैंने दृष्टिपात किया है, पूज्यपाद गुरुदेव भी वहाँ जाते आते, यातायात बना रहता था क्या मानो उनके यहाँ रक्त के एक एक बिन्दु से मानव का चित्र आना, एक एक तरंगो से मानव का चित्र यन्त्रों में अस्वात आना, यह सब भारद्वाज के यहाँ रहता था। परन्तु ऐसे ऐसे यन्त्र जिनमें विद्यमान हो करके, भारद्वाज का वैज्ञानिक यन्त्र में विद्यमान हो करके, बहत्तर लोकों का भ्रमण करके एक ही यान मानो पृथ्वी मण्डल पर आ जाता था। तो इसीलिए आज का विज्ञान मानो देखो, लोकों में जा रहा है। आधुनिक काल का विज्ञान मानो देखो, एक चन्द्रमा में पहुंचा है। मानो एक मंगल की यात्रा में अभी तक सफलता को प्राप्त नहीं हो सका है। पुरातन काल का विज्ञान भारद्वाज का विज्ञान, रोहिणी वृत्ति का विज्ञान मानो देखो, यह पृथ्वी से उड़ान उड़ता हुआ शुक्र और मंगल की यात्रा करता हुआ वह बुध और मानो देखो, रोहिणी के मण्डलों में गति करता हुआ पुष्प नक्षत्रों में प्रवेश करता रहा है, बहत्तर लोकों का भ्रमण करता हुआ एक ही यान, मानो देखो, राजा रावण के काल में भी वह यान विद्यमान था। तो विचार विनिमय क्या? आज का मानव आधुनिक काल का जो

विज्ञान है वह अपने में अस्वात कहलाता जाता है परन्तु इकाई में रमण कर रहा है। जब मैं यह विचारता हूँ एक मानव अग्नि प्रदीप्त कर सकता है उसको शान्त नहीं कर सकता तो विज्ञान इकाई में रह गया है। क्योंकि परन्तु विज्ञान वह हाता है एक ने अग्नि प्रवेश कर दी तो एक ने वृष्टि करके उसको शान्त कर दिया। एक दूसरा परमाणु जब निगलने वाला होता है उस काल में, विज्ञान मानो आधुनिक काल में यदि परमाणु शस्त्रों का संग्राम होना प्रारम्भ हो जाएगा तो समाज नष्ट हो जाएगा। परन्तु महाभारत के काल में एक रेखा को ऐसा जान लिया था जितने क्षेत्र में परमाणु संग्राम हो रहा है उसका परमाणुवाद बाह्य नहीं जा रहा है। आधुनिक काल में वह यन्त्र नहीं आया है। राजा रावण के काल में भी इस प्रकार का विज्ञान रहा है जो लक्ष्मण उस रेखा को जानते थे। जो रेखा मानो पञ्चवटी पर जब माता सीता को देखो, राजा रावण ले गया था वह पञ्चवटी के निकट एक रेखा को कटिबद्ध कर दिया था, वह सोमवृत्तिका रेखा थी। उसके आन्तरिक भाग में आने के पश्चात् मानव भस्म हो जाता था और रहने वाला नहीं होता था। यह कैसा आश्चर्य का विज्ञान था। आधुनिक काल का विज्ञान उस रेखा को नहीं जान पाया है।

विचार विनिमय क्या? मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, आधुनिक काल का विज्ञान यह लगा हुआ है कि हम कैसे ये जाने कि दोषारोपण को कैसे शान्त करें? मानो अभी कुछ ही समय हुआ वैज्ञानिकों को एक समूह मानो देखो, विद्यमान हुआ उन वैज्ञानिकों ने यह कहा है कि गो घृत में एक विशेषता ऐसी है कि उसको अग्नि में अर्पित करके दूषित वायुमण्डल को शान्त कर सकते हैं। मैं यह कहता हूँ हे वैज्ञानिको! तुम आओ हमारे समीप आओ और आ करके इस विद्या को तुम ग्रहण कर लो। पूज्यपाद गुरुदेव ने बहत्तर यागों का कर्म काण्ड जानते रहते थे। परन्तु मैं भी जानता रहता हूँ। विचार क्या है मानो उस विज्ञान में, गो घृत में मानो देखो, याग करना यज्ञमान की पत्नी सहित, जब याग हो रहा है, उस याग से वायुमण्डल पवित्र हो रहा है। आधुनिक काल का जो मूर्ख प्राणी है जो यह नहीं जानता, अपंग होता हुआ वह ऐसे ऐसे कर्मों को पाखण्ड कहता है। पाखण्ड क्यों कहता है? क्योंकि वह याग के विज्ञान को नहीं जानता है। वह

केवल सुरापान करने वाला है जब उसने अपने आहार को पवित्र नहीं बनाया है तो वह कैसे मानो अपने को याग को पवित्र कह सकता है। जब वह अपने अन्तर्हृदय को ही नहीं जानता है। मानो रहा यह वाक् की पाखण्डता में परणित करने वाला पाखण्ड की परिभाषा को नहीं जानता है। यदि वह पाखण्ड की परिभाषा को जान लेता है कि पाखण्ड की परिभाषा यही है कि तू अनाचार कर्म कर रहा है, सुरापान कर रहा है, सुन्दरी का पान कर रहा है यही तो अनाचार, यही तो अवैदिकता है, इसी को तो समाज में पाखण्ड कहते हैं। तेरा अन्तरात्मा मुझे पाखण्ड कह करके पुकार रहा है। क्या हे मानव! तू याग जैसे ऊर्ध्वा कर्म को, ऊँचे कर्म को, देव पूजा को, साकल्य को जो वायुमण्डल में प्रसारित हो रहा है, यज्ञमान के हृदय को पवित्र बना रहा है, क्या तू उसी को पाखण्ड कहता है यह मानो देखो, एक पामर प्रवृत्ति वाले प्राणी होते हैं। परन्तु मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं देने आया हूँ मैं आधुनिक काल के पामरों की चर्चा करने नहीं आया हूँ, केवल यह विचार कि पुरातन काल का विज्ञान कितना ऊर्ध्वा गति में, पुरातन काल का विज्ञान, यागों के चित्र आते हैं, यज्ञमानों के यज्ञशाला में चित्र आते हैं। वह विज्ञान अब तक आधुनिक काल के द्वार पर पर नहीं आ पहुंचा है। सूर्य से ऊर्ज्वा को लेना, सूर्य की किरणों के साथ, यन्त्र गति करना परन्तु अब तक वह विज्ञान अब तक नही आया है।

महात्मा ध्रुव का विज्ञान, पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया था। ध्रुव का विज्ञान नारद मुनि के सहयोग से वह यान अन्तरिक्ष में गति कर रहा है। गति करता हुआ, वह ध्रुव मण्डल की यात्रा कर रहा है। यात्री बन रहा है ध्रुव का। उस यन्त्र की आयु लगभग मानो देखो, एक लाख, चौबीस हजार की आयु का यन्त्र अन्तरक्षि में गति करता रहता था। तो विचार विनिमय क्या? मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह आख्यिका वर्णन करने जा रहा हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव तो स्वतः प्रकाश है। जानते हैं विज्ञान को अच्छी प्रकार। परन्तु देखो, मैं तो उन्हें केवल एक अपनी धृष्टता ही प्रगट कर रहा हूँ।

विचार विनिमय क्या है हे यज्ञमान! मैं कोई विशेषता में चर्चा देने नहीं आया हूँ। केवल यह आधुनम ब्रह्मे वाचा हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे क्योंकि

अखण्डता ही तेरा जीवन है। वह गृह बड़े सौभाग्यशाली हैं, जिन गृहों में मानो देवपूजा के द्वारा द्रव्य का शोधन होता है। मानो वायुमण्डल में, शोधनात्मक प्रवृत्ति बन जाती है। विचार विनिमय यह है कि मानो देखो, यागां रुद्र भागा हे पाण्डितव! मेरा अन्तर्हृदय, वेद की ध्वनि को पान करता हुआ, प्रसन्नयुक्त होता रहता है। परन्तु एक पाण्डितव कहता है समूह चरे व्रतां देवा बहुत पुरातन काल हुआ उन्होंने चर्चाएं भी की हैं, मैं भी करता रहता हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन भी कराया था, क्या पुरातन काल में, महाभारत काल से पूर्व मानो देखो, वेद की ग्यारह सौ सताईस शाखाओं का निकास हुआ। ग्यारह सौ सताईस शाखाएं थी जो वेद की मानी गई हैं। मानो जो सर्वत्र ऋषि मुनियों का यह कथन रहा है क्या इनकी आभा ब्रहे यह राष्ट्र की सम्पदा है, यह विज्ञान का कुंज है, क्योंकि प्रत्येक शाखा एक विज्ञान का कुँज होता है। कुँजं ब्रह्मे कुण्डो नही कुँज कहलाता है कुँजो शमं ब्रह्मा वचप प्रीहि मानो देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रगट करा रहा हूँ कि आधुनिक काल में मानो देखो, संसार का जितना भी पुस्तकों का भण्डार है, इस पृथ्वी मण्डल की वार्त्ता कह रहा हूँ परन्तु देखो, वह विद्यालयों में क्या सम्भविता देवो ब्रह्मा वाचा देवं दधिमा वर्णानं ब्रह्म वाचो देवो सम्भवा वाचन्न नमो व्रतो देवा मैंने पूज्यपाद से से यह प्रगट कराते हुए कहा था कि यह संसार मानो अपनी अग्नि में स्वतः समाप्त हो गया था। विचार क्या? मानो देखो, यहाँ नाना सम्प्रदायों का, महाभारत के काल में, नाना सम्प्रदायों को चलन रहा है। इन सम्प्रदायों में देखो, वास्तव में ऋषि मुनियों का जो जीवन था, जिन्होंने अपनी अस्थियों को, मानो देखो, वह पोथियों में, शाखाओं में और स्मृतियों में नियुक्त कर दी थी वह साहित्य में मानो देखो, यहाँ के जैन काल ने, यहाँ के बौद्ध काल ने, यहाँ के यवन काल में वह कुंज अग्नि के मुखारबिन्दु समाप्त करने की चेष्टा की। परन्तु कुछ विद्वानों के मानो कुछ कण्ठस्थ रह करके साहित्य की रक्षा हो सकी। आज मैं इस सम्बन्ध में नहीं देने आया हूँ विचार यह देने के लिए आया हूँ कि जैन काल में यहाँ की पुस्तकों को मानो देखो, अग्नि के मुखारबिन्दु में यवन काल के राजाओं ने देखो, अग्नि के मुखाबिन्दु में जो पुराणी कहलाती हैं परन्तु देखो, मैं पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन करा रहा हूँ कि आधुनिक काल में यदि मैं

शाखाओं की गणना करने लगूं तो मानो एक सौ छत्तीस शाखाएं हैं, जो संसार के मानो देखो, पुस्तकालयों में विद्यमान हैं। पोथी रूप में विद्यमान है।

आज जब मैं यह विचारता हूँ कि जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है यहाँ के विद्यालयों, में यहाँ के पुस्तकालयों में लगभग दो चार संहिताएं प्राप्त होती है। परन्तु विचारना यह कि, मैंने एक समय अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन कराया था कि यह शाखाएं हिमालय की कन्दराओं में विद्यमान हैं। ऐसा मैंने वर्णन किया था परन्तु परन्तु देखो, वह शाखाए कहीं मानो देखो, हिमालय, बहुत विशाल है। इस हिमालय कि मैं किसी काल में देखो, दृष्टिपात करके ही उच्चारण करूंगा वह किस स्थलियों में हैं कौन सी स्थली में विद्यमान हैं। परन्तु देखो, वह शाखांए एक सोम्भुक ऋषि हैं, जो जैमिनी मुनि महाराज के वंशलज कहलाते हैं वह जीवन मुक्त हुए। उनके मानो शिष्य पर शिष्य कहीं हिलामय की कन्दराओं में हैं और उनके समीप वह मानो देखो, पुस्तकों का कुंज सब विद्यमान है परन्तु वह भोजपत्रों पर आधुनिक काल का जो पत्र चल रहा है लेखनी पाद है उस पर नहीं परन्तु भोज पत्रों की स्वाति पर है जिसके पृष्ठों की आयु भी विशाल होती है। उन आयु विशालों पर मानो देखो, वह शाखाएं विद्यमान है। देखो, वेद की पोथी भी विद्यमान रहती हैं। मन्त्रों की गणना भी उनके समीप है। विचार विनिमय क्या? मैं किसी काल में मानो उसका वर्णन करूंगा।

मैं तो इतना ही उच्चारण कर सकता हूँ क्या मानो जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है जिसके पास हिमालय है मानो जिसको साहित्य जो मानो हरद्वाशंस कहते हैं, हमारे यहाँ पुरातन काल में देखो, सप्त ऋषि वहाँ तप करते थे। सप्त ऋषियों से मानो देखो, दस कोटि गणना में आ करके मानो देखो, वह पूर्व दिशा में हिमालय की श्वेत कोटि स्थान में देखो, वह पुस्तकों का कुंज कहीं विद्यमान है। मानो वह बहुत ही विशाल है हिमालय मैं किसी काल में यह प्रगट करूंगा। क्योंकि जैमिनी मुनि महाराज ने देखो, हिमालय में तपस्या की है। उनके वंशलजों ने भी, जो जीवन मुक्त हुए, जीवन मुक्त का अभिप्रायः यह होता है कि वह किसी काल में माता के गर्भ में नहीं जाते। उनकी इच्छा हुई, वह अपने स्थूल में आ जाते है, इच्छा हुई तो वह सूक्ष्म में चले गए। सूक्ष्म और

स्थूल का अभिप्रायः यह क्या वह परमाणुवाद को जानते हैं जितने परमाणुओं से एक मानो वह जो ब्रह्म का तपोमयी, श्रोत कहलाया जाता है वह एक अणु है उस अणु के आँगन में वह परमाणु आ जाते हैं जिन परमाणुओं से माता के गर्भ में देखो, शरीर का निर्माण होता है। जीवन मुक्त आत्माएं, वह होती हैं जो इन परमाणुओं को जानती हैं वह मानो एक क्षण समय में जीवन को प्राप्त शरीर धारण कर लेते हैं, एक क्षण समय में सूक्ष्म वाले बन जाते हैं। मानो वह आत्मा जीवन मुक्त कहलाते हैं। मानो वह जीवन होते हुए जीवन मुक्त कहलाते हैं, यह जैमिनि महाराज भी इस प्रतिक्रिया को जानते थे। जैमिनी मुनि महाराज ने अपने शिष्य स्वाति को यह वार्त्ता प्रगट करायी। स्वाति ने समर्पणां वेतुक ऋषि को परणित करायी। समवाची ने मुनिवरों! देखो, वाचक ऋषि को यह वाक् प्रगट कराया यही क्रियाओं को प्रगट कराते हुए मानो देखो, उनका जो कुंज है पुस्तकं कुंज है अन्यथा देखो, यहाँ यवनों के काल में मोहम्मद के मानने वालो ने यहाँ का मानो देखो, नाना पुस्तकालय अग्नि के मुखारबिन्दु में परणित कर दिए है। मानो देखो, साहित्य समाप्त हो गया है। साहित्य जब अग्नि में चला जाता है जिस भी सम्प्रदाय का जिस भी आभा का जिसमें अकृत रहने वाला है, जब वह अग्नि में चला जाता है तो रह ही क्या जाता है उसके समीप, परन्तु देखो, जो भी है उसके ऊपर अनुसन्धान करना हमारा सबका कर्त्तव्य माना गया है। मानो देखो, यहाँ किसी का जन्म हुआ शृंगकेतु माता से, आधुनिक काल के पाण्डितव ने यह स्वीकार कर लिया क्या वह तो हिरणी से उसका जन्म हुआ होगा। मानो देखो, वशिष्ठ एक वेद में मन्त्र भी आता है। पञ्च जाया पुत्रः वशिष्ठः मानो देखो, वह पञ्च जाया है वह पांच ब्राह्मण हैं, उनकी एक पत्नी है। मानो उसका नाम अप्सरा है। उस अप्सरा के गर्भ से वशिष्ठ को माना है। मानो देखो, समाज ने जाना नहीं, वशिष्ठ मुनि महाराज जो महान् तपस्वी, ब्रह्मवेत्ता उनका जन्म अप्सरा से स्वीकार करते हैं। क्योंकि पाण्डितव में जब अज्ञान आ जाता है, जब रूढ़ि बन जाती है, रूढ़ि बन करके मानो देखो, साहित्य का विनाश हो जाता है। रूढ़ियों से साहित्य का विनाश होता है परन्तु देखो, ये रूढ़ियों को त्यागना चाहिए। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में यह प्रगट कराते हुए कहा था कि आधुनिक

काल के राजा को चाहिए कि अपने राष्ट्र में नाना प्रकार की रूढ़ि न रहने दे। ये जो नाना रूढ़ियाँ हैं, कहीं मोहम्मद के मानने वाले हैं, कहीं ईसा के मानने वाले हैं, कहीं मानो देखो, यहाँ जैन, महावीर के मानने वाले हैं। ये सब सम्प्रदाय हैं। मानो देखो, यह कहीं नानक के मानने वाले हैं। नाना प्रकार के जो सम्प्रदाय होते हैं, ये राष्ट्र का विनाश करते चले जाते हैं। साहित्य विनाश के मुख में चला जाता है। साहित्य की रक्षा रूढ़िवाद में नहीं रहती। मानो देखो, इनको विचार करके राजा का कर्त्तव्य है सब सम्प्रदाय वाले प्राणियों को एक पंक्ति लगा करके उनका शास्त्रार्थ होना चाहिए। भाषा के ऊँचे ऊँचे मर्मज्ञ, मानो भाषावादी होने चाहिएं और जो तर्क पर सिद्ध हो जाए उसको अपना करके धर्म और उस सम्प्रदाय की रक्षा करनी चाहिए। यह राजा का कर्त्तव्य है क्योंकि धर्म सम्प्रदाय नहीं होता धर्म एकोकी वचन है। मानो नाना यह रूढ़ियाँ कहलाती है। रूढ़ियों का विनाश होना चाहिए। हे राजा! यदि तेरे राष्ट्र में रूढ़ियों का विनाश नहीं होता है तो यह समाज एक दूसरे के मानो देखो, रक्त का पिपासी बना रहता है। एक दूसरे के रक्त का पिपासी बन करके तेरा राष्ट्र अग्नि के मुख में परणित हो जाएगा।

परिणाम क्या है मानो देखो, ये रूढ़िवाद समाप्त होना चाहिए, मैं रूढ़ियों की चर्चा यह कर रहा था, कि साहित्य कितना विनाश को प्राप्त हो गया है। विनाशता की वेदी पर चला गया है परन्तु देखो, जहाँ मैं हिमालय की चर्चा कर रहा था क्या गयारह सौ सताईस शाखाओं का कुञ्ज भोज पत्रों पर विद्यमान है परन्तु हिमालय कन्दराओं में है, हिमालय प्रणाम ब्रह्मे मानो देखो, उसकी आभा जहाँ हरदोस कहलाता है, वहाँ से लगभग चार योजन की दूरी पर हिमालय में वह स्थली विद्यमान है। परन्तु देखो, जहाँ कुछ ऋषि मुनि जीवन मुक्त हैं। वह अपनी आभा प्रगट करते हैं। साहित्य में अपने में पूर्णता को प्राप्त हो रहे हैं। विचारा जा रहा है चिन्तन में रत्त रहते हुए। आज मैंने यह चर्चाएँ की हैं। मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार मैं परिचय कराने के लिए आया हूँ कि यह समाज कैसा बन गया है? आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है वह मानो देखो, जहाँ मछली की रक्षा होती हो, जिस राष्ट्र में जिस राष्ट्र में मछली से प्राणीतव की रक्षा होती हो, आज मछली ही उसका आहार बन गई है। मानो देखो,

प्राणी, प्राणी का भक्षण करके, रक्त को पान करके अपने को विकासवादी स्वीकार कर रहा है। दूसरों के रक्तों को पान करने वाला कदापि विकासवादी नहीं बनता। ये समाज में मानो चमत्कार आते रहते हैं, समाप्त होते रहते हैं। अरे, विकासवादी वह होता है जो अपनी अन्तरात्मा को जानता है। जो परमात्मा की प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित हो जाता है। वे वास्तव में विकासवादी है। जिन राजाओं के यहाँ बुद्धिमान पुरुष होते हैं, ध्वनि करने वाले, वेद का पठन पाठन करने वाले संस्कृतज्ञ होते हैं, वह राष्ट्र पवित्र बना करता है। आज मैं अपने विचारों को यहीं विराम दे रहा हूँ। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह परिचय करा रहा हूँ कि आधुनिक काल का विज्ञान एक इकाई में रमण कर रहा है, इकाई में भ्रमण कर रहा है ये इकाई वाला ही विज्ञान है परन्तु विज्ञान अभी और ऊर्ध्वा में गति कर रहा है, करता रहेगा यह विज्ञान किसी की सम्पदा नहीं होती। परन्तु विज्ञान, पुरातन काल का विज्ञान उनके दृष्टिकोण अपनाने के कुछ और थे, आधुनिक काल के कुछ और हैं, परन्तु यह चर्चाएँ मेरे पूज्यपाद मुझे समय देंगे तो मैं उन वाक्यों की भी पुनरूक्तियाँ प्रगट करूंगा। आज का वाक् केवल यह है, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। आज का विज्ञान भी यह विचार रहा है कि वायुमण्डल जो दूषित बन गया है वह गो घृत के द्वारा अग्नि में प्रवेश करके उसका शोधन किया जा सकता है, साकल्य के द्वारा, मानो इसको हम पुरातन काल से जानते है। क्या साकल्य घृत के द्वारा वायुमण्डल का पवित्रवत् किया जाता है, दूषितपना समाप्त किया जा सकता है। तो यह वाक् तो अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा। पुनः हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। महानत्ता में परणित होता रहे, और संकीर्णता को त्याग करके व्यापकवाद में प्रवेश करता रहे। यह आज का वाक् अब समाप्त हो गया।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! आज मेरे प्यारे! महानन्द जी कुछ यागों के सम्बन्ध में, अपने विचारों को उद्धृत कर रहे थे, जिन विचारों में यह दाह है, यह अग्नि है क्या राष्ट्र और समाज कैसे ऊँचा बने परन्तु उसका एकोकीकरण करते हुए उन्होंने सम्प्रदायों के ऊपर अपना बल दिया। परन्तु इनके विचारों में एक दाह है उस दाह में तो हम

जाना नहीं चाहते है हमारा विचार यह चल रहा था कि यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है, यज्ञवेदी है। जैसा महानन्द जी ने कहा है यज्ञमान, पाण्डितव इनके जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और अपने द्रव्य का सदुपयोग करना, यह उनका सौभाग्य है। आज का विचार समाप्त। अब वेदो का पठन पाठन। नांगोला। दिनांक 29 08 1983।

१२ 17 01 1984 पुष्प 44 महर्षि वशिष्ठ द्वारा ऋषि विश्वामित्र की शंकाओं का निवारण

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस महामना देव की महिमा का गुण गान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है। कोई ऐसी स्थली नहीं है जहाँ वह पमरपिता परमात्मा न हो। कोई समुद्रों की तरंगें ऐसी नहीं है, कोई पर्वतों की गुफा भी ऐसी प्रतीत नहीं होती जहाँ वह मेरा देव विद्यमान न हो। परन्तु वेद का ऋषि कहता है कि वे परमपिता परमात्मा यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। यज्ञ उसका आयतन माना गया है। जितना भी संसार का शुभ और आत्मीय क्रिया कलाप है वह सर्वत्र एक याग के रूप में परणित किया है। इसीलिए परमात्मा को यज्ञमयी स्वरूप कहा जाता है। वह यज्ञमयी कहलाता है जिस याग के सम्बन्ध में परम्परागतों से ऋषि मुनि अध्ययन करते चले आए हैं उसके कर्म काण्ड के ऊपर भी नाना प्रकार की टिप्पणियां होती रहती हैं। क्योंकि कर्म काण्ड के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार का विचार रहा है और जिन विचारों से मानव उस प्रभु को अपने में धारण करना चाहता है, वह उसी क्रिया कलाप में परणित हो जाता है, उसमें वह दृष्टिपात होने लगते हैं।

तो विचार क्या मुनिवरों! देव का मन्त्र यह कहता है कि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है। यज्ञ उसका आयतन माना है। जैसे मानव के शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं। वह ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां ही उसका आयतन माना गया है। इसी प्रकार यह जो

ब्रह्माण्ड है यह उस परमपिता परमात्मा का आयतन हैं यह उसका भवन है अथवा उसका गृह है। उसमें देव रत्त रहते हैं। तो आज का हमारा वेदमन्त्र परमात्मा को शिशु के रूप में परणित कर रहा था। परमपिता परमात्मा का अमूल्य यह जो जगत् है यह शिशु रूप है। यह अनन्तमयी कहलाता है। जो भी मानव उसके ऊपर अनुसन्धन कने लगा वह विचार करता रहा। प्रत्येक स्थलियों पर पञ्च महाभूतों पर चिन्तन करते करते जब उसका अन्तोमयी प्रतीत नहीं हुआ तो वह मौन हो गया, विवेचना करता रहता। एक समय मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि टुण्डेश्वर ऋषि हुए हैं। बहुत पुरातन काल की वार्त्ता है टुण्डेश्वर ऋषि एक समय ऋषि मुनियों के समूह में विद्यमान थे और टुण्डेश्वर ऋषि ने यह विचारा कि मैं उस परमपिता परमात्मा को पाना चाहता हूँ अथवा उसकी प्रत्येक आभा में रत्त रहना चाहता हूँ।

तो मुनिवरों! संकल्पवादी बन करके टुण्डेश्वर ऋषि महाराज भयंकर वनों में चले गए। चिन्तन और मनन करने लगे। विचार करने लगे मुझे जब परमपिता परमात्मा को प्राप्त करना है और उसकी प्रत्येक आभा को मुझे जानना है तो सबसे प्रथम मानवीय जीवन के ऊपर मेरा अध्ययन होना चाहिए। तो वह प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर अनुसरण करने लगे, अन्वेषण करने लगे। जितना भी भौतिक विज्ञान इन पांचों इन्द्रियां के माध्यम से उसके समीप आने लगा तो टुण्डेश्वर ऋषि बोले यह तो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है। मैं चक्षुओं के ऊपर अनुसन्धान करता हूँ तो इसमें अग्नि का भण्डार मुझे दृष्टिपात होता है। इसमें सर्वत्र द्यौ मण्डल विद्यमान रहता है। मैं घ्राण के ऊपर अन्वेषण करने लगा तो उसमें प्राणस्तत्व विद्यमान है, जितना प्राण के आश्रित हो करके यह ब्रह्माण्ड गति कर रहा है। जब शब्द विज्ञान पर पहुंचे तो मुनिवरों! सूक्ष्म रूपों में जो प्राण जलाशयों में रमण करने वाला अपनी कल कल की आवाज प्रकट कर रहा है। अपनी ध्वनियां दे रहा है। वही ध्वनि मानव उच्चारण कर रहा है गान के रूपों में जब यह ध्वनि से गान गाने लगा तो ध्वनि इतनी मधुर बन गई कि सिंह और सर्प भी उसकी ध्वनि को सुनने के लिए तत्पर हो गए। जलचर, मार्ग में उड़ने वाले पक्षीगण भी मौन होने लगे। उन्होंने विचारा वह शब्द विज्ञान तो बड़ा अनुपम है। शब्द विज्ञान क्रियात्मक एकवेदसे उन्हें मन्त्र

प्राप्त हो गया, उसी शब्द विज्ञान पर अध्ययन करने लगे। उन्होंने एक याग का क्रिया कलाप रचाया। जब याग कर्म करने के लिए तत्पर होने लगे तो नाना प्रकार का साकल्य अग्नि में परणित करने लगे। वह साकल्य जैसे अग्नि में जाता, वह शब्द भी विद्युत की धारा पर विद्यमान हो करके द्यौ लोक में प्रवेश होता हुआ दृष्टिपात आने लगा। द्यौ लोक में शब्द हैं शब्द के साथ में चित्र हैं और चित्र के साथ में उनका क्रिया कलाप है जो अन्तरिक्ष में द्यौ लोक में विद्यमान है। मानव उनकी तरंगों में तरंगित हो रहा है। शब्दों में एक एक परमाणु ध्वनि कर रहा है। कैसी प्रिय ध्वनि है? वह ध्वनि कैसी विचित्र है? परमाणु एक दूसरे से संघर्ष कर रहा है। एक परमाणु दूसरे परमाणु का निर्माण कर रहा है। कहीं उत्पत्ति हो रही है परमाणु परमाणु वाद से। तो विचार क्या मुनिवरों! विचित्र ध्वनि, जिस ध्वनि को पान करता हुआ ऋषि मुनि, जो सूक्ष्म शरीर वाली आत्माएं हैं उनकी ध्वनि हैं, उनके शरीर के परमाणु वृत्तियों में रमण करने वो एक दूसरे से विचार विनिमय कर रहे हैं।

मेरे पुत्रों! कैसा विचित्र यह जगत् है। उस जगत् पर अनुसन्धान करता हुआ टुण्डेश्वर ऋषि महाराज विचारने लगा, वह अंगिरस गोत्रीय टुण्डेश्वर ऋषि महाराज विचारने लगा, वह अंगिरस गोत्रीय कहलाते थे। टुण्डेश्वर ऋषि महाराज अपने में मौन होने लगे। अरे, यह तो बड़ा विचित्र ब्रह्माण्ड है। इसके ऊपर मैं साकार रूप में यन्त्रों का निर्माण करने लगूं तो यन्त्रित हो जाऊंगा। वह शब्द विज्ञान बाहरीय जगत् में दृष्टिपात करते आंतरिक जगत् में ले गए। जब आन्तरिक जगत् में ले गए तो आन्तरिक जगत् में सूक्ष्म लघु मस्तिष्क में पहुंचे। लघु मस्तिष्क में जो ललाट का स्थन है उसमें जब ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने लगे तो वह शब्द विज्ञान, चित्र विज्ञान वैज्ञानिक धारा उसमें दृष्टिपात आने लगी। विचारने लगा यह तो मेरे पूर्वजों के चित्र भी रमण कर रहे हैं। अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके शब्द द्यौ लोक में जा रहे हैं। तो टुण्डेश्वर ऋषि महाराज मौन अवस्था को प्राप्त हुए। विचारने लगे, अब मैं क्या करूं? अग्नि की धाराओं में गतियां करने लगे तो विचार आता है अनन्त ब्रह्माण्ड दृष्टिपात करके टुण्डेश्वर ऋषि महाराज मौन हो गए और मौन हो करके समाधिष्ट हो गए और विचारने लगे मैं कहाँ जाऊं?

कोई स्थली ऐसी नहीं है जहाँ मैं अपने अवकाश को प्राप्त कर सकूं। यह तो नित्य ऐसा एक क्रिया कलाप हो रहा है जो एक क्षण समय भी शान्तना को प्राप्त नहीं होता। प्रत्येक स्थलियों में नृत्य हो रहा है। इस नृत्य के ऊपर मुझे चिन्तन करना है।
तो ऋषि उस नृत्य को अपने में धारण करने लगे। नृत्य को धारण करते करते अनन्त वाचः प्रवे! वाचनम् ब्रह्म! वाचः कृति देवः वह अपने में कृतिभाषित हो करके वह सतोमयी जगत् और प्राप्त होने लगी और प्राप्त होकरके वह सतोमयी जगत् और ब्रह्माण्ड में रत्त हो गए। टुण्डेश्वर ऋषि महाराज ने 105 वर्ष तक इस प्रकार का अध्ययन किया 105 वर्ष का अध्ययन इतना विचित्र अध्ययन था उनका कि उड़ान उड़ना, उस उड़ान में शान्त हो जाना प्रत्येक आभा में वह गति करते थे, उनका आहार क्या था? यह विचारना है बिलंग का एक वृक्ष होता है उस बिलंग के पंचांग को अग्नि में तपा करके उसे वह पान करे थे और 105 वर्ष तक उन्होंने इस प्रकार का कठोर तप किया और उस तप को करने के पश्चात् उन्हें जो अनुभूति हुई, उन्हें जो ब्रह्माण्ड की जानकारी हुई उसके ऊपर वह और भी अध्ययन और अपने में मौन हो करके समाधिष्ट होने लगे।
तो विचार विनिमय क्या? कोई भी साधक संसार में अपनी साधना में रत्त रहना चाहता है तो अपने मनस्तत्व को पवित्र बनाना होगा। इस मन की जो धाराएं हैं, उसकी उत्पत्तियां है वह अन्नाद के द्वार से उत्पन्न होती हैं। हमारे यहाँ ऋषि मुनियों ने इस प्रकार के पंचांग पान करके इतना निर्वाह किया और लेखनियां क्या दी हैं हमें, विचार क्या दिए हैं कि ब्रह्माण्ड के तथ्यों की चर्चाएं, ब्रह्माण्ड के तथ्यों की आभएं विज्ञान सहित उन्हें परणित किए हैं। विचार आता रहता है कि आहार और व्यवहार मानव के जीवन में सबसे प्रमुख माना गया है, चिन्तनीय एक विषय है, जो इसके ऊपर अध्ययन करता रहता है वह बेटा! ऋषित्व को प्राप्त होता है। टुण्डेश्वर ऋषि महाराज अपने में बहुत गम्भीर थे। यह अंगीरस गोत्रीय कहलाते थे। इनका जीवन सदैव ज्ञान और विज्ञान में परणित रहता था। तो मुनिवरों! इसी आभा को ले करके आज मैं तुम्हें वहीं ले जाना चाहता हूँ जहाँ महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने टुण्डेश्वर ऋषि महाराज की कुछ चर्चाएं प्रकट की थी। उन्होंने इस प्रकार का अध्ययन किया। महर्षि विवामित्र बोले प्रभु! आपके

यहाँ मैंने ब्रह्म उपाधि को प्राप्त किया है। मैं यह जानना और चाहता हूँ कि मैं धनुर्याग में बड़ा पारायण कहलाता हूँ।
आज के वेद मन्त्रों में धनुर्याग, अश्वमेध याग का वर्णन आ रहा था। परन्तु धनुर्यागों का विशेषकर वर्णन आता रहता है, जहाँ गो मेध, अजय मेध नाना प्रकार के यागों का चलन है। जहाँ हमारे यहाँ अश्व मेध यागों का चलन आता रहा है, क्रिया कलाप, राष्ट्र की धाराओं में इनयागों कच लन होता रहा है। तो विचार क्या? महर्षि विश्वामित्र ने कहा जब मैं राष्ट्रीय काल में था तो राष्ट्रीय काल में मैंने बहुत अश्वमेध याग किए हैं। अश्वमेध याग का क्रिया कलाप यह रहा है कि राजाओं से जा करके मैंने नम्रता से प्रार्थनाएं की हैं। उनको अपने ज्ञान, अपनी कुशलता, नम्रता से, कहीं कठोरता से विजय करके मैंने अश्वमेध याग किए हैं। अश्वमेध यागों में मैं अश्व की पूजा करता रहा हूँ। अश्व नाम सूर्य को कहा जाता है, अश्व नाम हमारे यहाँ घोड़े को पशु को भी कहा जाता है और अश्व नाम हमारे यहाँ राज का वर्णित किया गया है। तो मैं इन प्रकार प्रजा को सन्तुष्ट करता हुआ याग कर्म करता रहा हूँ। प्रजा उस काल में सन्तुष्ट होती है राजा की जब राजा के राष्ट्र में कोई एक दूसरे का ऋणी न रहे। तो मेरे राष्ट्र में कोई ऋणी नहीं रहा था।
तो प्रभु! उसी के संदर्भ में मैंने अश्वमेध याग का क्रिया कलाप सुकेतामुनि महाराज से प्राप्त किया था। सुकेतामुनि महाराज से अजय मेध और वाजपेयी यागों का चलन भी मैंने प्राप्त किया। परन्तु उसके पश्चात् मैंने धनुर्याग का चयन किया है। मैं धनुर्याग के सम्बन्ध में और जानना चाहता हूँ आप से कि धनुर्याग किसे कहते हैं? तो महर्षि वशिष्ठ ने ऋषि विश्वामित्र के सर्वत्र राज्य काल की वार्त्ता स्मरण करते हुए ऋषि ने कहा यह जो धनुर्याग है यह अस्त्रों शस्त्रों का याग कहलाता है अस्त्रों शस्त्रों का निर्माण करना, परमाणु वाद के ऊपर अध्ययन करना और क्रियात्मक उसको रूप देने का नाम धनुर्याग कहलाता है। धनुर्याग के सम्बन्ध में बहुत सी विवेचनाएं होती रहती हैं। परन्तु धनुर्याग का अभिप्राय केवल यह कि सुगन्ध तो करना है ही परन्तु अस्त्रों शस्त्रों यहाँ धनुर्याग कहा जाता है। धनुर्याग कौन करता है? एक तो राजा धनुर्याग करता है। एक किसी को

विजय करने के लिए धनुर्याग का क्रिया कलाप किया जाता है। एक धनुर्याग वह जो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता आध्यात्मिकवादी भी धनुर्याग में परणित होता है।
मेरे प्यारे! धनुः हमारे यहाँ प्राण को कही जाती है जो सर्वत्र एक प्राण एकोकी याग कर रहा है वह धनुर्याग कैसे होता है? उसके ऊपर आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ताओं का एक समूह, एक विचार है जो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने अपने वाक्यों में कहा है। उन्होंने कहा धनुर्याग का अभिप्राय यह जैसे धुनः होता है और उसके ऊपर एक कमान होता है, जब आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अपने प्राण सरीखे को जान करके और मन की कमान उसके ऊपर नियुक्त कर देता है तो उस समय आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता का लक्ष्य ब्रह्म बन जाता है। वह जो लक्ष्य ब्रह्म बन गया है, प्राण सरीखे के ऊपर मनस्तत्व की वृत्तिका एकाग्र हो जाती हैं तो वह ब्रह्माण्ड के रूपों में ब्रह्म की दृष्टिपात करने लगता हैं तो वह ब्रह्माण्ड के रूपों में ब्रह्म को दृष्टिपात करने लगता है। तो उस समय वह जो शरीर में ब्रह्मवर्चोसि है वह अमृत बन करके, उसकी ऊर्ध्वा गति बन करके ब्रह्मरन्ध्र में पंखुड़ियों की गति हो करके यह ब्रह्माण्ड उस महापुरुष के लिए एक खिलवाड़ बन करके आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अपने में ही उस ब्रह्म को दृष्टिपात करने लगता है। तो महर्षि वशिष्ठ ने इस धनुर्याग का आध्यात्मिक विज्ञान वेत्ताओं के सन्दर्भ में यह उत्तर दिया। महर्षि विश्वामित्र पुनः बोले कि प्रभु! मैंने बहुत पुरातन काल में, जब एक समय मैं राष्ट्रकाल में था तो मैं पांचाल राष्ट्र में चला गया। पांचाल राष्ट्र में एक गन्धर्व मुझे प्राप्त हुआ। वह गन्धर्व जब मुझे प्राप्त हुआ तो उस गन्धर्व ने मेरे से एक प्रश्न किया, हे राजा! तू राष्ट्रीय याग करने वाला है, तू उस गन्धर्व को जानता है जो तेरे राष्ट्र को स्थिर करने वाला है तो भगवन्! मैं उसको नहीं जानता था, मैं मौन हो गया।
तो भगवन्! मैं यह जानना चाहता हूँ जो राजा राष्ट्र में विद्यमान रहता है उसके राष्ट्र को स्थिर करने वाला गन्धर्व क्या है? उस समय महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा कि हे राजन्! तुम उसको नहीं जानते? जिस राजा के राष्ट्र में बुद्धिमानों को समूह सूचरित्रता से योगाभ्यास के द्वारा राष्ट्र के चरित्र को और राष्ट्र की प्रतिभा को ऊँचा बनाता है वह राष्ट्र देते हुए कहा कि वह गन्धर्व है, उस गन्धर्व को तुम जानो, तुमने जाना नहीं होगा।

यदि तुम जानते तो तुम्हें तपस्या करने के पश्चात् भी क्रोध की मात्रा नहीं आनी चाहिए। क्योंकि जो राष्ट्र के गन्धर्व को जानता है वह क्रोध को अपने में विजय करता हुआ अपने में समाहित हो जाता है। राष्ट्र में भयंकर विचारों की जो अग्नि गृहों में उत्पन्न हो जाती है वह अग्नि राजा के राष्ट्र में नहीं होनी चाहिए। राजा के राष्ट्र में अचरित्र की अग्नि जिस भी काल में अपवित्र बन जाएगी वह तरंगे राष्ट्र का भक्षण करके और अ गन्धर्व बन करके, अग्नि के काण्ड बन करके राष्ट्र का है विजयता को प्राप्त करना। राजा के राष्ट्र में बुद्धिमान पुरुष होने चाहिएं। राजा के राष्ट्र में चरित्र होना चाहिए। पुत्रियों की रक्षा होनी चाहिए। राष्ट्र में प्रजा सुखद को अनुभव करने वाली शान्ति ही उसका गन्धर्व माना जाता है। परन्तु जब विजय ब्रह्म वाचः देवम् ब्रह्मवः अपने स्वाभिमान को राष्ट्र को समाप्त नहीं करना चाहिए। वह गन्धर्व कहलाता है क्योंकि गन्धर्व नाम बुद्धि को कहा गया है। जिस राष्ट्र की बुद्धि ऊँची रहती है, गन्धर्व ऊँचा रहता है उस राजा का राष्ट्र पवित्र होता है। महर्षि विश्वामित्र मौन हो गये। उन्होंने कहाँ धन्य है प्रभु! वास्तव में मैं उस गन्धर्व को नहीं जानता था।

उसी समय उन्होंने एक प्रश्न किया कि प्रभु! जब मैं तपस्या काल में पहुंचा, तपस्या के गर्भ में परणित होने लगा तो मेरे हृदय में यह भावना उत्पन्न हुई कि जिस ऋषि की रक्षा करने वाले पशु है तो भगवन्! यह भावना मेरे अन्तर हृदय में क्यों उत्पन्न हुई इस हृदय की भावना को और जानना चाहता हूँ! मेरे पुत्रो! जब उन्होंने यह प्रश्न किया तो ऋषि कहता है हे राजन्! इसका नाम अभिमान कहलाता है। इसका नाम अभिमान है कि दूसरे के अधिकार को प्राप्त करना ही संसार में सबसे महान् एक पाप का मूल कहलाता है। अपने में धारण करना चाहता है और अपनी अन्तरात्मा की जो भाषा है, अन्तरात्मा की जो प्रेरणा है उसको वह दमन करता हुआ दूसरे के अधिकार को विमोचन करना चाहता है अपने में धारण करना चाहता है, वह पाप के मूल को एकत्रित कर रहा है और उसके अन्तःकरण में वह पाप का मूल चित्त के मण्डल में ओत प्रोत हो जाता है। वह चित्त की जो भावना हैं वही अपराध बन करके जन्म जन्मान्तरों का मूल

का कारण बना करता है।

ऋषि ने यह कहा, तुमने दूसरे के अधिकार को प्राप्त करने की जो इच्छाएं प्रकट की, तुम्हें यह अभिमान जो जागरूक हो गया राष्ट्रीय अभिमान आया परन्तु उसमें तपस्या का मूल बन गया, वह तपस्या के मूल में भी राष्ट्रीय कर्म रहा। यदि तपस्या के मूल में राष्ट्रीय कर्म नहीं रहता, अभिमान की मात्रा नहीं रहती तो तुम्हें क्रोध के संघर्ष की आवश्यकता न होती। ऋषि उनके चरणों में नत मस्तक हो गए। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! आप वास्तव में मेरे अन्धकार को दूरी कर रहे हैं। जो मेरे हृदयों में अन्धकार आया। आज भी मैं ब्रह्मवेत्ता बनने के नामोकरण पाने के पश्चात् भी मेरे अन्तर्हृदय में भिन्न भिन्न प्रकार की शंकाएं उत्पन्न हो रही हैं। मैं निशंक बनना चाहता हूँ। क्योंकि ब्रह्मवेत्ता मैं उसी काल में बन सकूंगा जब मुझे कोई शंका नहीं रहेगी। क्योंकि शंका वाला जो प्राणी होता है वह अपनी अन्तरात्मा को नहीं जानता। जो शंका में परणित हो जाता है, वह अन्तरात्मा से विमुख हो जाता है। वह बाहरोय जगत् में रत्त रहता हुआ वासना की आभा में, अग्नि में अपने को समाप्त कर देता है।

तो विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! वेद का ऋषि ऊँची ऊँची उड़ान उड़ने लगा। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने जब ऐसा कहा तो मुनिवरों! एक समय अप्रतम् वाचः क्या प्रभु! गन्धर्व याग का मुझे अधिकार है? उन्होंने कहा तुम्हें अधिकार है। तुम गन्धर्व याग कर सकते हो। ऋषि ने एक प्रश्न और किया कि महाराज! मैं गो मेध याग को, धेनु याग को जानना चाहता हूँ। मैंने कहीं यह श्रवण किया है कि धेनु को प्राप्त करने से पूर्व, धेनु याग होना चाहिए। तपस्या कर के ब्रह्मा उपाधि को लेने के लिए मैंने गमनकिया तो मुझे श्वेतकेतु मुनि के दर्शन हुए। स्वेतकेतु ऋषि ने कहा कहो ऋषिवर! कहाँ को तुम्हारा गमन हो रहा है? तब मैंने यह कहा था मैं ब्रह्म उपाधि को प्राप्त करना चाहता है। तब ऋषि ने यह प्रश्न किया तुम गो मेध याग, धेनु याग करना जानते हो? जो ब्रह्म उपाधि को प्राप्त करोगे। तो प्रभु! मैं धेनु याग के सम्बन्ध में गो मेध याग के सम्बन्ध में और जानना चाहता हूँ।

जब ऋषि ने यह प्रश्न किया तो महर्षि वशिष्ठ मुनि ने कहा हे मुनिवरों! तुम धेनु याग

को जानना चाहते हो। धेनु याग कहते हैं जो दुहना जानता हो। दुहना क्या है? जैसे यह बुद्धि है, हमारे यहाँ बुद्धि को धेनु कहा जाता हैं तुम्हें यह प्रतीत होगा जब स्वाति ऋषि महाराज से यह प्रश्न किया कि देवताओं की धरोहर धेनु के साथ मं रहती है, धेनु के द्वार पर रहती है। तो वह धेनु क्या है? धेनु ब्रह्मवाचो वृत्तिः धेनु नाम बुद्धि को कहा जाता है जो दूही जाती है। जिसके द्वारा मानव संसार रूपी समुद्रों में गुजरित करता रहता है और नाना प्रकार के रत्नों को ला ला करके उसका वह निर्माण करता रहता है। इसी प्रकार यह जो गन्धर्व है सम्भूति कहलाती है परन्तु यह जो धेनु है यह भी सम्भूति कहलाती है परन्तु इसका नाम बुद्धि नियुक्त किया गया है। यह बुद्धि है इसको कौन दुहता है? इसको बुद्धिमान दुहता रहता है। इसको ब्रह्मवेत्ता दुहता रहता है। ब्रह्म की आभा में परणित कराने वाली है। यह बुद्धि ही मेधा बनती है, ऋतभरा बनती है, प्रज्ञावी बन करके प्रभु की सृष्टि का दिग्दर्शन करती है। जब यह दर्शन करने लगती है इसमें प्राणों की कृतिकाएं होती हैं प्राणों की कृतिका से ही यह अपने में गतिशील रहती है तो इसीलिए यह दुही जाती है। इससे मानव नाना प्रकार की तरंगों को दुह करके भौतिक विज्ञान के मार्ग से हो करके और वह जब और दुही जाती है तो वह आध्यात्मिक मार्ग पर प्रवेश करके प्रभु के आँगन में उसका दिग्दर्शन करने लगती है।

हे ऋषिवर! तुम ब्रह्म उपाधि को प्राप्त करने जा रहे हो तो धेनु याग को तुम जानते हो? तब वशिष्ठ ने कहा तुम धेनु याग को जानते नहीं हो। धेनु याग का अभिप्राय यह है जैसे धेनु याग, गो मेध पशु को दुहने वाला उसके दुगध का आहार करता है, आहार करके तृप्ति करता है इसी प्रकार धेनु याग के कर्म करने वाला, धेनु याग को दुहने वाला परमाणुवाद से अपने राष्ट्र की तृप्ति करता है। परमाणुवाद से नाना प्रकार के अणु और महा परमाणुओं को जान करके उससे वह धनुर्याग करता है। धनुर्याग करके वह राष्ट्र में पौष्टिक बन जाता है। पौष्टिक बन करे उस याग के क्रिया कलाप के पश्चात् वह प्राण और सखा को जान करके अपने में, आध्यात्मिकवाद में प्रवेश होना जो जानता है, वह गो मेध याग और धेनु याग के कर्म को जानता है।

मेरे पुत्रो! जब आध्यात्मिकवाद महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने महाराजा विश्वामित्र को

प्रकट कराया तो ऋषि उनके चरणों में ओत प्रोत हो गए, उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु! आपने मेरे हृदय में जितनी भी ग्रन्थियां थीं उन सबका स्पष्टीकरण हो गया है। हे प्रभु! मैं याग में सांकल्य एक समय अर्पित कर रहा था। अश्वमेध याग में सांकल्य अर्पित कर रहा था तब मुझे एक समय वतेन्तु ऋषि ने यह कहा कि हे राजन्! तुम जो सांकल्य अर्पित कर रहे हो इसका देवता कौन है? तब मैंने ऋषिवर! कोई उत्तर नहीं दिया, मैं मौन हो गया। तो आज मैं भगवन्! उस साकल्य को जानना चाहता हूँ कि वह जो मैं अश्वमेध याग में साकल्य अर्पित कर रहा था, स्वाहा दे रहा था, देवताओं को हवि प्रदान कर रहा था तो मैं प्रभु! यह जानना और चाहता हूँ कि वह साकल्य का देवता कौन है? ऋषि ने कहा, उस साकल्य का देवता अग्नि है। वेद का ऋषि कहता है वशिष्ठ कि ही वही साकल्य अग्नि में प्रवेश करके द्यौ उसका देवता बन जाता है और द्यौ देवता बन करके उसका देवता सूर्य बन जाता है। सूर्य प्रकाश के द्वारा उसको प्रसारण करता हुआ पुनः द्यौ में प्रवेश करता है। वास्तव में उसका देवता सूर्य कहलाता है।

ऋषि ने जब यह उत्तर दिया तो महर्षि विश्वामित्र मौन हो गए। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु! मैं एक वाक्य और जानना चाहता हूँ। एक समय भगवन्! मैं गो मेध याग कर रहा था। मैंने वृतेन्तु मुनि के आश्रम में प्रवेश किया और वृतेन्तु ऋषि के यहाँ गो मेध याग हो रहा था। मैं वहाँ गो मेध याग करने लगा। जब मैं गो मेध करने लगा तो गो मेध याग में स्वेत मुनि आ पहुंचे अपने शिष्यों के सहित। तो स्वेत मुनि ने कहा, हे राजन्! तुम राजा हो, तुम गो मेध याग कर रहे हो। इस याग में जो तुम घृत की समिधामयी आहुति दे रहे हो, इस घृत का देवता कौन है? ऋषि ब्रह्मो वाचे ब्रह्मणाम् भगवन्! मैं मौन हो गया। मैं उस देवता को नहीं जानता था। तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा, हे राजन्!, हे मुनिवरों! तुम राजा से मुनि बने हो। परन्तु मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर जितना जानता हूँ उतना दे सकूंगा। गो मेध याग राजा करता है। राजा के यहाँ बुद्धिमान पुरुष होने चाहिएं और गऊओं की राजा के राष्ट्र में सेवा होनी चाहिए। गऊओं के दुग्ध के द्वारा जो घृत उत्पन्न होता है उसके द्वारा जो गो मेध याग किया जाता है वह ऊर्ध्वा में गति करता हुआ वह जो घृत है वह श्रद्धामयी कहलाता है। वह श्रद्धा का जो देवता है

उसको तुम जानना चाहते हो।

हे मुनिवरों! वह जो श्रद्धा का देवता है वह यह ब्रह्माण्ड है। और भी ऊर्ध्वा में गति जाएगी तुम्हारी तो श्रद्धामयी ब्रह्मः श्रद्धा ब्रह्मा को कहते हैं, श्रद्धामयी परमात्मा को कहते हैं। यह जो संसार रूपी यज्ञशाला है, ब्रह्माण्ड रूपी यज्ञशाला है इसका निर्माण करने वाला ब्रह्म है और इसमें श्रद्धा की जो आहुतियां लग रही हैं श्रद्धामयी जो अपने में अर्पित हो रहा है, एक दूसरे में आभा में रमण करने वाला एक सूत्र में जब अपने को पिरोया हुआ स्वीकार करोगे जैसे यह घृत का परमाणु श्रद्धामयी ओत प्रोत होने वाला है श्रद्धामयी जो सूत्र है उस प्राणस्तत्व को जान करके तुम दर्शित हो करके अपने में अर्पित हो जाओगे तो तुम्हारा आध्यात्मिकवाद महत्ता में ओत प्रोत हो करके वह ब्रह्म ही तुम्हारी श्रद्धा है। वह ब्रह्म ही उस गो मेध याग का देवता कहा जाता है। ऋषि ने जब इस प्रकार का उत्तर दिया तो विश्वामित्र इन वाक्यों को पान करके मौन हो गए और उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! आपके वचनों से मेरा अन्तरात्मा तृप्त हो गया है। ब्रह्म को ही श्रद्धामयी स्वीकार करके मैं आप में ओत प्रोत होना चाहता हूँ। उनके चरणों में ओत प्रोत हो गए और वह ब्रह्म विद्या का अध्ययन करने लगे, ब्रह्म का चिन्तन करने लगे। ब्रह्म का चिन्तन क्या है? ऊर्ध्वा ध्रुवा में गति करना ऊर्ध्वा से ध्रुवा में, ध्रुवा से ऊर्ध्वा में एक साधना का मूलाकृत बनता है। तो उस समय ऋषि ने एक प्रश्न और किया था उस काल में महर्षि विश्वामित्र ने कहा प्रभु! मैं साधना के देवता की और जानना चाहता हूँ। मैं साधना में परणित तो हो गया हूँ। परन्तु मैं साधना के देवता को जानना चाहता हूँ। उन्होंने साधना के देवता की विवेचना करते हुए कि ध्रुवा ऊर्ध्वा ही दोनों यह साधना के मूल रहस्य कहे जाते हैं। उन्होंने कहा, हे ऋषिवर जब तुम ब्रह्मवेत्ता बन गए हो तो तुम्हारी साधना का मूल यह है कि ध्रुवा में मनस्तत्व का क्षेत्र है और प्राणतत्व का क्षेत्र ऊर्ध्वा में हैं जैसे तुम्हारी श्वास प्रश्वासों की गतियां गति कर रही हैं, वह ऊर्ध्वा में, ध्रुवा में रमण कर रही है, सर्वत्र चित्र की प्रवृत्तियों का इसमें लय होन का नाम ही साधना के क्षेत्र की प्रतिभा कहलाती है। जब तुम प्राण सूत्र में चित्त की प्रवृत्तियों को मन के क्षेत्र में ला कर उनको अपने अन्तर्हृदय में आत्मा में स्थित परमात्मा में लय हो

जाते हो तो वही परब्रह्म साधना का देवता है।

उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! कोई संसार का ऐसा विषय नहीं है जो ब्रह्मवेत्ता पुरुषों से दूरो हो। धन्य है प्रभु! मैं यही चाहता था। तो मुनिवरों! श्रद्धामयी आभा में परणित हो करके ऋषि के चरणों में ओत प्रोत हो गए। उसी के संदर्भ में वह ब्रह्मवेत्ता बन गए। ज्येष्ठ पुत्र को राष्ट्र की प्रणाली का वर्णन करा दिया। परन्तु वह राष्ट्र की आभा में परणित हो गए और स्वतः तपस्वी बन करके वह ब्रह्म की प्रतिभा में रत्त रहने लगे।

यह है बेटा! आज का वाक्। आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा यह कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को जानते हुए उसकी प्रतिभा में रत्त रहते हुए अपनी मानवीयता को जान करके हम इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रकट करूंगा। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा।

१३ 18 01 1984 पुष्प 44 धर्म राष्ट्र व मानव का कर्त्तव्य है : महानन्द

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना प्रभु की महिमा का गुणगान गाया जाता है जिसको हमारे वैदिक ऋषियों ने विष्णु कहा है क्योंकि विष्णु कहते हैं पालन करने वाले को, जो इस संसार का नियन्ता है, निर्माणवेत्त है। वही उसका पालन कर रहा है वह योगों में परणित रहने वाला है। जितना भी संसार का शुभ कर्म है जिसे हम वाचनीय कर्म कहते हैं सर्वत्र क्रिया कलापों का नामोकरण यज्ञोमयी माना गया है। वह सर्वत्र याग कहलाता है। तो हमारा वेद का मन्त्र यागों के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार की धाराओं का वर्णन करता है। परन्तु नाना प्रकार के कर्मकाण्ड और नाना प्रकार के उद्गार उसी से उत्पन्न होते रहते हैं जो परम्परागतों से ही, मानव का अनुसन्धान का एक विषय रहा है। परमाणुवाद में रत्त रहना, यौगिक प्रणालियों को विचारना, मानवीय दर्शन पर अध्ययन करना और अग्न्याधान करके अग्नि

के गुणों को अपने में धारण करना यह परम्परागतों से ही, मानव का एक नृत्य रहा है और उसके ऊपर भिन्न भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ता रहा है। यहीं तक नहीं, किन्हीं किन्हीं आचार्यों ने, ऋषि मुनियों ने तो सूर्य की किरणों के साथ अपनी उड़ानें उड़ी हैं जैसे सूर्य की नाना प्रकार की किरणें आ रही हैं औ वह प्रकाश को ले करकें, विद्युत को ले करके आती हैं। तो बहुत से ऋषि मुनियों ने ऐसा क्रिया कलाप, ऐसी सूक्ष्म दृष्टि बनाई कि सूर्य की किरणों के साथ में उनका गमन रहा है।

बहुत पुरातन काल हुआ बेटा! बहुत ऋषि हुए हैं जिनका नामोच्चरण करने में भी हमारा अन्तरहृदय प्रसन्न होता है जैसे महर्षि प्रवाण, शिल्प और दालभ्य यह तीनों पुत्र एक ही माता के कहलाते थे। यह तीनों माता मल्दालसा के पुत्र कहलाते थे। माता ने जब उन्हें उद्गारों में परणित कर दिया अपनी विचारधारा धू धू करके बाल्यकाल में उनके अन्तःकरण में प्रविष्ठ कर दिया, जब प्रवेश कर दिया तो वह ब्रह्मवेत्ता भी बन गए। क्योंकि ब्रह्मज्ञान का जो उद्गार है वह माता के अन्तःकरण से उत्पन्न होता है और बाल्यकाल में ही वह माता उसे भस्म कर दती है। बहुत सी प्रिय मातायें मेरी ऐसी हुई जिन्होंने अपने गर्भस्थल से यह विचारते हुए कहा कि मैं अपने त्यागी पुत्रों! को जन्म देना चाहती हूँ। मैं तामस में या माया के उद्गार में उन बाल्यों को प्रवेश करना नहीं चाहती। राष्ट्रीय विचारों में भी लाना नहीं चाहती। केवल उनका जो द्रव्य हो वह जो पञ्चमहाभूत हैं उसमें उनके परमाणुओं का यान बनाते रहे और ब्रह्म को प्राप्त होते रहें। ऐसे माताओं के उद्गार रहे हैं। उन माताओं ने, मुझे बहुत सा काल स्मरण आता रहता है उन्होंने बहुत त्याग और तपस्या के द्वारा बाल्य को उत्पन्न किया। विचारधारा देते हुए बाल्य को ब्रह्मवेत्ता बना दिया। ब्रह्मवेत्ता आचार्य कुलों में नहीं बनते हैं। ब्रह्मवेत्ता ऊंचे संस्कारों से और माता के हृदय की तरंगों से जो उदबुद्धता होती रहती है उससे ब्रह्मवेत्ता बनते हैं। विचार क्या? मैंने बहुत पुरातन काल में इन विचारों को लिया था। आज बेटा! इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है जो इस सम्बन्ध में मैं अपने विचार प्रकट करता रहूँ। विचार विनिमय क्या है? मुनिवरों! आज हमें ब्रह्मवेत्ता या ब्रह्म का चिन्तन करना है या हमें विज्ञान की धाराओं में गमन करना है या याज्ञिक बन करके यज्ञमयी स्वरूप को विचार विनिमय

करना है। तो उसमें त्याग, तपस्या और मानव के मन की उदारता, उद्गारता के परमाणुओं का विच्छेद करना होगा। यदि परमाणु का विच्छेद नहीं होगा, इन्द्रियों की आभा में गति करने वाले परमाणुवाद को नहीं विचारा जाएगा तो आध्यात्मिक, यौगिकवाद में जा नहीं पा सकते। उनमें जाना हमारे लिए असम्भव हो जाएगा।
विचार विनिमय क्या? जैसा मुझे मेरे प्यारे! महानन्द जी भिन्न भिन्न प्रकार की प्रेरणा दे रहे हैं। इनकी प्रेरणा का जो श्रोता है वह उद्गारता में परणित रहता है। इनकी विचार धाराओं का स्रोत हमारे अन्तःकरण की प्रतिभा और उद्गारता बन करके बाहरीय स्वरूप बन करता है। तो विचार विनिमय क्या? यज्ञ के ऊपर इनके उद्गार प्रायः रहते हैं। आज हमारा भी यज्ञोमयी जीवन होना चाहिए। यज्ञ का अभिप्राय यह है कि हमारी प्रत्येक इन्द्रियां सुदृष्टियां करने वाली हों। प्रत्येक इन्द्रियों में सुसज्जिता आ जाए। इन्द्रियों की सुसज्जिता आ करके हम इस संसार रूपी यज्ञशाला को अच्छी प्रकार जान सकें। उसके पश्चात् यज्ञ वेदी पर अग्नयाधान करते हुए, अग्नि के गुणों को अपने में धारण करते हुए उसके समीप हमें देवताओं का यमा देवयाग करने के लिए तत्पर हो जाएं। यागों को हमारे यहाँ देव यागों में परणित किया गया है। जिनके देवता भी भिन्न भिन्न भद्र अस्ते वह देवता भी भद्र अपनी आभा को प्रकट करतेर हते हैं। मुनिवरों! आज का हमारा वाक्य यह कह रहा है कि हमारा वेदमन्त्र यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के याग उनका चलान, उनकी प्रतिभा मानवीय मस्तिष्कों में सदैव नृत्य करती रही है और वह करनी चाहिए याग करना हमारा कर्त्तव्य है। याग होना ही मानवीय जीवन की एक धारा है। हमारे यहाँ जब विद्यालयों में ध्वज की प्रणाली में जब उनको नामोकरण किया जाता तो पञ्च यागों का चलान प्रथम ही उनके यहाँ परणित किया जाता। आचार्य कहता है, हे ब्रह्मचारी! तू पञ्च यज्ञों का अधिकारी है। जब तक तेरा ज्ञान अग्नि के तुल्य न हो जाए, जब तब तुझे ध्वज बन करके पंचाग्नि में आहुति देनी है। पंचाग्नि की आहुति क्या हैं? सबसे प्रथम तो पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं। इनको सुसज्जित बना करके इनको पवित्र बना करके अग्नि के समीप विद्यमान होना है। ब्रह्म के समीप जाना है। ब्रह्म का चिन्तन करना है, जिसके आश्रित यह अग्नि अपना प्रकाश दे रही है। उसके पश्चात् अग्नि के समीप विद्यमान

हो करके देव पूजन करना है। देव पूजन के पश्चात् हमें अतिथि याग करना है। अतिथि याग के पश्चात् बलि वैश्व याग करना है। भूत इत्यादि यागों में इन पञ्च यागों का प्रचलन हमारे यहाँ विद्यालय में, जब ब्रह्मचर्य से रत्त रह करके उनकी वर्ण व्यवस्था बनायी जाती है उस काल में यह पञ्च प्रका के यागों का प्रचलन परणित किया जाता है। पञ्च प्रकार के यागों में पांचों इन्द्रियां भी आती हैं। पञ्च कर्म भी आते हैं। पञ्च महातत्त्वों की आभा आती है जिनसे मानव वैज्ञानिक बन सके।

तो मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या? ब्राह्मण कौन होता है? वेद का ऋषि कहता है ब्राह्मण कौन है? वेद के मन्त्रों में यही विशेषता मानी गई है कि उत्तर और प्रश्न होते रहते हैं। वेद का मन्त्र कहता है कि ब्राह्मण वह हैं जो पंचाग्नि में अपने को आहुति करने वाला है। ब्राह्मण कौन? जो परमपिता परमात्मा को, उस ब्रह्म को जो कण कण में स्वीकार करने वाला हो। एक एक परमाणु में जो तरंगित होने वाला है उसका नाम ब्राह्मण कहा जाता है। तो विचार विनिमय क्या जो ब्रह्म को एक एक तरंग में जानता हैं जहाँ मन जाता है वही ब्रह्म है। तो आलोचना समालोचना करने का प्रश्न भी नहींबन पाता। तो विचार विनिमय क्या? परमपिता परमात्मा की प्रतिभा को जानते हुए हमें अपने में महान् और पवित्र बनना है। तो आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ अब मेरे प्यारे! महानन्द जो अपने कुछ विचारों की आहुतियां प्रदान करेंगे, जितना भी जैसे यह अपने वाक्य उच्चारण कर सकें।

पूज्य महानन्द जीः मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अमृतमयी वाणी का प्रसारण कर रहे थे। इनकी अमृतमयी वाणी का उपदेश पान करते हुए हमारा अन्तरहृदय सदैव प्रसन्न रहता है। आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कर्म काण्ड के सम्बन्ध में और ब्राह्मण के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। कई समय से मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यागों के सम्बन्ध में, जैसे गो मेध याग, धेनु और अश्वमेध यागों के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। वह मानव का अपना कोई विचार नहीं होता। परन्तु जो वेद का शब्द कहता है, जो वेदमन्त्र कहता है उसके ऊपर पूज्यपाद अपनी विचार धारा व्यक्त करते रहे हैं। आज की हमारी सूक्ष्म यह जो

आकाशवाणी है यह मृत मण्डल और ब्रह्मे पृथ्वी मण्डलः यह आकाशवाणी जा रही है। वहाँ एक याग का आयोजन में दृष्टिपात कर रहा था। हमारा अन्तरात्मा गद् गद् हो रहा था। हे ब्राह्मण! वेद के उद्गान गाने वाले सदैव मेरी कामना रहती है उनका आया दीर्घ हो। जो वेद का जितना भी प्रसार हो सके उतना ही उद्गान गा सकें और नाना प्रकार की रूढ़ियों से उपरामता को प्राप्त हो सकें। क्योंकि मानव समाज में जब रूढ़ियों का प्रादुर्भाव हो जाता है तो रूढ़ियां समाज को निकृष्ट बना देती हैं अथवा पामर प्रवृत्तियां ला देती हैं। हे ब्राह्मण! तेरे आयु में दीर्घता और उद्गारता होनी चाहिए जिससे तू अपनी आयु को प्राप्त कर सके। आयु को प्राप्त वही ब्राह्मणजन कर सकता है जो शान्ति और उद्गार आत्मीय और मन के विचारों को जो सन्तुलन में नियुक्त कर देता है। जिसके हृदय में परमपिता परमात्मा विसवसनीय बना रहता है। जब तक विश्वसनीय परमपिता परमात्मा नहीं बना रहता, तब तक मानव के विचारों में बिखरापन रहा करता है और जितने विचारों में इन्द्रियों के विषय बिखर जाते हैं उतना आयु सूक्ष्म बन जाता है। इसलिए इन्द्रियों जो क्रिया कलाप है वह बिखरना नहीं चाहिए, यही ब्रह्मणत्व का एक नियम होता है उसी में पांडित्य होता है। उसी में ब्राह्मणत्व होता है। तो आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के सम्बन्ध में कोई वाक्य प्रकट करने वाला नहीं हूँ। विचार केवल यही कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यहाँ अश्वमेध याग, गो मेथ बाग, रोतु याग, विष्णु याग, वाजपेयी याग, भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चलन, उनके कर्म काण्डों में अपनी विचार धारा व्यक्त करते रहे हैं। मैं यह कहा करता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव इन विचारों को कहाँ से देने लगे हैं क्योंकि कुछ ही काल हुआ महाभारत काल के पश्चात् यहां जो यागों में रूढ़ियां आई हैं उन रूढ़ियों से यागों का विनाश हुआ है। जैसे पांडित्य न रह करके, केवल उलटे मार्ग को अपना करके गो मेध याग का अर्थ लगाया कि गो मेध गो की इन्द्रियों को आहुतियों में प्रदान कर देना चाहिए। यह अशुद्ध वाक्य है क्योंकि जब परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में ज्ञान के माध्यम से ऋषि मुनि उनके अर्थों को लाए कि याग मुक्ति की एक पहेली कहलायी जाती है। एक प्रतिभा कहलायी जाती है। तो जब प्रतिपदा प्रथम है तो उसमें हिंसा का प्रश्न कहाँ से आ गया? उसमें हिंसा नहीं

आनी चाहिए। क्योंकि किसी भी प्राणी की इन्द्रियों की आहुति अग्नि में प्रदान करना यह पामर व्यक्तियों का पामर एक कर्म है। इसी प्रकार अश्व नाम जहाँ राजा को लेना चाहिए था। वहाँ अश्व नाम घोड़े को लिया गया और घोड़े के अंगों की आहुति देना यह अश्व मेघ वालों ने स्वीकार किया। परन्तु यहाँ अश्व मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में वर्णन कराया कि काग भुजण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि ने एक समय रावण का अश्वमेध याग कराया। रावण के अश्वमेध याग में उन्होंने शुद्ध पवित्र आहुति देना और राजा का जो अभिमान है उसे नष्ट करना क्योंकि अश्व नाम अभिमान को भी कहा जाता है अश्व जहाँ प्रतिष्ठिता को भी कहा जाता है वहाँ अभिमान नहीं रहना चाहिए, प्रजा के प्रति राजा का अभिमान और राजा के प्रति प्रजा का अभिमान यह प्रजा और राज्य में दोनों में हानिप्रद है। इस प्रकार का याग करना अहा वह यागाम् भवति अस्तोः वह अश्वमेध याग कहा जाता है। परन्तु यहाँ अश्वमेध के महाभारत काल के पश्चात् घोड़े के अंगों की आहुति देना यह अश्वमेध याग स्वीकार किया। अर्थों का अनर्थ, पाण्डित्य न रह करके अशुद्धियों का प्रकार हो गया। परिणाम यह हुआ कि जहाँ अजयमेध याग का वर्णन आता है कि राजा को दूसरे राजा से ज्ञान के द्वारा विजय करना है, विज्ञान के द्वारा विजय करना है, विज्ञान के द्वारा विजय करना है वहाँ अजयमेध अजय नाम बकरी को ले करके उसके अंगों की आहुति देना प्रारम्भ कर दिया। उसी से यहाँ बलि प्रथा का जन्म हुआ। यहाँ मोहम्मद के मानने वालों ने उससे पूर्व काल में भी यह प्रचलित रहा कि बकरी की आहुति देना किसी पद पर स्वीकार कियाजो पामरों का कर्म है। उससे हिंसा की प्रवृत्ति प्रत्येक प्राणी और समाज में बलवती हो गई। इससे मुझे यह प्रतीत होता है कि यहाँ अज्ञानियों की सूक्ष्मता नहीं है। वह यागों से परणित हुई है। इसी प्रकार यहाँ और भी नाना प्रकार के पशुओं की बलि वर्तमान काल में भी प्रदान की जाती है। जहाँ पुत्र को नष्ट करना स्वीकार किया गया था परन्तु पुत्र को भी नहीं जहाँ अपने मन की बलि देनी चाहिए वहाँ दूसरे प्राणियों की बलि स्वीकार की है यह कितना पामर कर्म है।

मुझे स्मरण है यहाँ मोहम्मद के मानने वालों में एक बलि प्रथा का प्रचलन आता रहा

है। वहाँ परमपिता परमात्मा के एक आह्वान हुआ कि मुझे तुम सबसे प्रथम जो तुम्हारी सबसे प्रीति युक्त वस्तु है प्रदान करो तो उन्होंने बहुत से पशुओं की बलि प्रदान की। जब पशुओं की बलि प्रदान की तो वह स्वीकार नहीं की परमपिता परमात्मा ने । ऐसा कहते हैं परन्तु उसके पश्चात् जब पुनः आह्वान हुआ उन्होंने अपने पुत्र को नष्ट करना चाहा। पुत्र को जब नष्ट करने लगे तो उसके प्राणों की रक्षा हो गई। किस प्रकार हुई इस साहित्य में तो मैं जाना नहीं चाहता हूँ। परन्तु यह नहीं जानना बुद्धिमान कि सबसे प्रीति युक्त तो मानव का मन कहलाता है। इससे प्रीति युक्त कोई भी पदार्थ नहीं है संसार में। आज मानव मानव को नष्ट करने लगता है तो पुत्र को मृत्यु दण्ड दे देता है। अरे, सबसे प्रीतियुक्त वस्तु तो मन है न को अर्पित करके प्रभु की अपनी इन्द्रियों के विषयों की जहाँ बलि देना था वहाँ पशुओं की बलि देने लगे यह धर्म के ऊपर कितना एक पामर कर्म है इसके ऊपर मानव को विचार विनिमय करना चाहिए। इसके ऊपर राष्ट्र को विचार विनिमय करना चाहिए। आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है वह प्रजा में विभाजन चाहता है। वह रूढ़ियां चाहता है। भिन्न भिन्न प्रकार के धर्मों की चर्चा करता है। अरे, भोले प्राणी! धर्म तो एकोकी वचन है। तू प्रजा का विभाजन कर रहा है। तू अश्वमेध याग नहीं कर रहा है परन्तु प्रजा का विभाजन करके अपने स्वार्थ की पूर्ति करना चाहता है, इस प्रकार की विचारधारा वर्तमान काल में भी विद्यमान है।

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह निर्णय देना चाहता हूँ कि आधुनिक काल का जो विज्ञान है यह भिन्न भिन्न प्रकार का त्रास दे करके प्राणी को नष्ट करना चाहता है। इसके आत्मबल को नष्ट करना चाहता हैं एक मानव को यह त्रास दे रहा है तेरी मृत्यु हो जाएगी। विज्ञान में ऐसे ऐसे यन्त्रों का निर्माण हो गया है कि वायुमण्डल में त्यागते ही प्राणी नष्ट हो जाएगा। हां, बन गया है परन्तु इससे यह अभिप्राय नहीं कि मानव का प्रहजार करने से पूर्व ही उसके आत्मबल को नष्ट कर दिया जाए। यह नष्ट नहीं करना चाहिए। यागाम् ब्रह्म वाचो देवः पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा कि प्राणी को याग करना चाहिए। शुभ कर्मों में अपनी संलग्नता रहनी चाहिए। मनोनीत चिन्तन से चिन्तनीय उसका एक विषय बनाया जाए। यह राष्ट्र का, समाज का दुर्भाग्य होता है कि मोहम्मद के

मानने वालों का एक दिवस आता है, एक वर्ष में एक दिवस आता है उनके प्रत्येक गृह में एक मांस के रक्त, एक नदी के तुल्य बहने लगता है। क्या यह पामर कर्म नहीं है? यह मानवीय कर्म नहीं कहा जा सकता। इस कर्म को हमारे यहाँ पामर कर्म कहा जाता है। जब बलि देना है, अरे, भोले प्राणियों! तुम अपनी इन्द्रियों की बलि क्यों नहीं प्रदान करते।

मुझे स्मरण है पूज्यपाद गुरुदेव से एक समय मैंने प्रश्न किया था कि वाजपेयी याग का जब चलन हुआ महाभारत काल के पश्चात् तो वाजपेयी यागों में बैल की बलि का वर्णन आया कि बकासुर इत्यादियों का जब वृष्टि वृण वास्तु हुआ तो उस याग की प्रतिभा में काले हिरण का वर्णन आता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया कि याग को काला हिरण ले गया। उसने उसे बकासुर को प्रदान कर दिया और बकासुर ने उसकी सृष्टि कर दी और वृष्टि करते ही वहाँ बैल की बलि का वर्णन आता है। गऊ के बछड़े की बलि का वर्णन आता है परन्तु बलि के वर्णन को भोले प्राणी ने जाना नहीं, अज्ञानता के कारण नहीं जाना। परन्तु हमारे यहाँ यज्ञ के यज्ञ कृति काला हिरण कहते हैं धूम्र को और जब धूम्र मेघों में परणित हो गा, उस याग के परमाणुओं का नाम हमारे यहाँ कालोमयी हिरण कहा जाता है और बकासुर नाम मेघों का है। जब वह मेघों को प्रदान किया गया। मेघों ने उसकी पृथ्वी पर वृष्टि कर दी। जब वृष्टि हुई तो गऊ के बछड़ों ने पृथ्वी के ऊपर उसकी चमड़ी को वृत्त करते हुए उसमें बीज की स्थापना की वहाँ परिश्रम करने का नाम बैल की बलि माना गया है। इस प्रकार की जब साहित्य कृतियों में अपभृशता आ गई तो इसे मानव अज्ञानता के कारण नहीं जान पाता मैं तो यही कहूँगा। परन्तु आज मैं विचार देना नहीं चाहता हूँ।

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह वाक्य वर्णन करने आया हूँ कि यहाँ प्रत्येक याग में हिंसा की प्रवृत्ति आ गई है। जाने कहाँ से मानव के विचार आए परन्तु प्राणियों का कुछ सौभाग्य है कि वह अहिंसा से परणित यागों का चलन लेते आए है। यह भी परम्परागतों से मानव के हृदय में हृदयित रही है और वह हृदय के अंग को अंकुरित

करती हुई, अपने में परिणित होती हुई यहाँ तक चली आई। विचारधारा यह है प्रत्येक मानव का याग ही कर्म हैं वह याग चाहे आध्यात्मिक याग हो, चाहे वह भौतिक याग हो, चाहे वह सुगन्धि अग्नि का याग हो, चाहे वह इन्द्रियों के साकल्य का याग हो, सर्वत्र ही यह संसा यज्ञ रूप माना गया है। परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में यज्ञरूप यह ब्रह्माण्ड की रचना की है जैसा मेरा पूज्यपाद गुरुदेव इससे पूर्व काल में प्रकट कर रहे थे। वह कहा करते हैं कि यह जो संसार है यह एक यज्ञशाला है, मानव का शरीर एक यज्ञशाला है, मानव का गृह एक यज्ञशाला है। मानव का मुखारबिन्दु अग्नि में आहुति देना है। इस प्रकार की विचाराधाराएँ हमारे मानवीय मस्तिष्कों में आती रहती हैं। परन्तु मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा है कि समाज में रूढ़ियां नहीं रहनी चाहिएं। रूढ़ियां समाप्त नहीं होंगी तो यह राष्ट्र ऊँचा नहीं बनेगा, राष्ट्र ऊँचा नहीं बनेगा तो समाज भी ऊँचा नहीं बनेगा। परन्ु यहाँ रूढ़ियां पर रूढ़ियां बनती चली जा रही हैं। रूढ़ियां कहाँ आक्रमण करती हैं? प्रभु पर आक्रमण करती हैं, भगवान की मान्यताओं पर आक्रमण करती हैं। उसके क्रिया कलापों पर आक्रमण होता रहता है, सूक्ष्म विचारों पर आक्रमण होता रहता है। उस आक्रमण का परिणाम यह होता कि राष्ट्र में रूढ़ियां बन करके राष्ट्र का जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है। राष्ट्र में रक्तभरी क्रान्तियों का प्रचलन हो जाता है। उसका परिणाम यह कि विज्ञान का दुरूपयोग हो रहा है और विज्ञान के दुरूपयोग से कुछ काल रह रहा है जब अग्नि के काण्डों में मानव परणित हो जाएगा। आधुनिक जगत् में भी हो रहा है। एक मानव दूसरे प्राणी को नष्ट करके प्रसन्न हो रहा है।

परन्तु हे भोले! तुझे कोई नष्ट करेगा तू कितना प्रसन्न होगा? उस समय तेरी जो परीक्षा है उसका ज्ञान तुझे हो जाएगा। जब यह प्रतिभा मेरे हृदय में परणित होती रहती है तो यहाँ धर्म और रूढ़ियों के ऊपर प्राणी प्राणी को त्रास दिया जा रहा हैं। इसमें राष्ट्र ही दोषी है। राष्ट्र एक प्रकार का दूषित बना हुआ है। वायु मण्डल में दूषितता है क्योंकि उसमें स्वार्थवाद है। स्वार्थवाद ही मानव को नष्ट कर रहा है। जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कल के वाक्यों में कहा था कि मानव दूसरे के अधिकार को यदि अपने में धारण न

करे तो मानव का जीवन तटस्थ बन करके मानवीय क्षेत्र में परणित होता रहेगा। आज का विचार विनिमय क्या? मैं इन वाक्यों में विशेष जाना नहीं चाहता हूँ। विचार यह है कि गो मेध याग करना है तो गऊओं की रक्षा होनी चाहिए। अश्व मेध याग करना है तो राष्ट्र और प्रजा को ऊँचा बन करके राष्ट्र में हिंसा नहीं होनी चाहिए। धेनु याग करना है तो अपनी बुद्धियों को स्वतंत्र और विद्या की रक्षा करनी है। यदि यहाँ नर मेध याग करना है तो प्राणियों की रक्षा होनी चाहिए। यदि यहाँ वाजपेयी याग करना है वहाँ गऊ के बछड़े की बलि न दे करके पृथ्वी के उपयोग में लाना ही याग कहा जाता है। इसी प्रकार भिन्न भिन्न प्रकार के देवी यागों में भी प्रायः ऐसा होता है, देवी याग को ऊँचा बनाना है, महान बनाना है, प्रभु के लिए प्राणी को यदि अर्पित करना है तो अपने मन और प्राण को अर्पित कर दो तुम प्रभु के भक्त बन जाओगे। इन यागों में तुम्हें परणित रहना है।

जैसे मोहम्मद के मानने वाले हैं वह बकरे की बलियां देते रहते हैं। क्यों देते रहते हैं? जब यह पामर प्रवृत्ति तुम्हारी बन जाएगी तो प्रभु! के भक्त कैसे बनोगे? प्रभु तो सर्वत्र एकोकीचरण है। उन प्राणियों में भी प्रभु है। जिसको तुम बलि दे करके प्रभु को अर्पित करते हो। जब प्रभु को अर्पित करते हो कि मैंने यह बलि दे दी है प्रभु के नाम पर, क्या प्रभु उसको स्वीकार करेगा? अरे, जब तुम अपनी कुरीतियों की बलि प्रदान करोगे तब तुम्हें प्रभु स्वीकार कर सकेगा। इस प्रकार की विचारधाराएं प्रत्येक समाज में और राष्ट्रीयकरणों में आ जानी चाहिए जिससे समाज में एक मानवीयता का प्रसार, मानवीय दर्शन मानव के समीप आ जाए। आज मैं ऐसी कोई विचारधारा प्रकट नहीं कर रहा हूँ जो कटुता में विचारधारा हो केवल अपने विचार इसलिए व्यक्त कर रहा हूँ कि हिंसा हीं मानव की मृत्यु है और रक्षा ही मानव का जीवन है। रक्षा करो, रक्षा करने से जीवन का उत्थान होगा।

तो आज मैं विचाराधारा विशेष न प्रकट करता हुआ यज्ञमान के आँगन में जा रहा हूँ, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरे जीवन की प्रतिभा महानता में सदैव परणित रहती रहे। मेरी सदैव यह कामना रहती है कि ब्राह्मणजन अहिंसा को

अपनाकर के अपनी मानवीयता को ऊँचा बनाना यह तेरा कर्त्तव्य है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव का विशेष समय लेना नहीं चाहता हूँ। भिन्न भिन्न प्रकार के विचारों को यहाँ देने के लिए नहीं आया हूँ। केवल अपने विचार यह व्यक्त करना कि मानव का जीवन एक अहिंसामयी परमोधर्मी बनना चाहिए यह आज का विचार अब मैं समाप्त करने जा रहा हूँ परन्तु जहाँ तक यागों का चलन है कुछ ही काल रह रहा है जब संसार का वैज्ञानिक इसको अपनाने वाला है। मुझे अभी अभी यह प्रतीत हुआ कुछ समय हुआ कि समुद्रों के तट पर एक वैज्ञानिकों की सभा एकत्रित हुई। उस सभा में यह निर्णय हुआ है कि जो वायु का दूषण हो रहा है, यह जो वायु मण्डल दूषित हो रहा है, ऐसा कुछ समय तक चलता रहा तो यह प्राणी श्वास की गति के साथ ही नष्ट हो सकता है। उन वैज्ञानिकों का यह विचार है कि जो गो नाम का पशु है उसके धत में, दुग्ध में इस प्रकार के परमाणु अग्नि में परिणित करने से ऐसे परमाणुओं का प्रादुर्भाव हो रहा है जो परमाणुवाद अशुद्ध परमाणुओं को निगलता हुआ शुद्ध वायु मण्डल को उत्पन्न कर सकता है। शुद्धता का प्रसारण और अशुद्धता को नष्ट करना इन परमाणुओं का कर्त्तव्य है। यह परमाणु विद्या के ऊपर मैं विशेष विवेचना नहीं देता क्योंकि जितना भी घृतोमयी श्रद्धा है। इससे पूर्व काल में मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने घृत को श्रद्धा है। इससे पूर्व काल में मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने घृत को श्रद्धा का नामोकरण कहा है कि घृत क्या है संसार में श्रद्धा है। उस श्रद्धा के परमाणु जब मानव के मुखारबिन्दु से गृह में प्रवेश होते हैं तो वह गृह पवित्र बन जाता है। वायुमण्डल में पवित्रता आ जाती है और जब विचारों में पवित्रता नहीं रहती, उसमें सतोगुण नहीं रहता, उसमें तमोगुण और रजोगुण छा जाता है, विडम्बना छा जाती है तो वायुमण्डल में अशुद्धियां छा जाती हैं, गृह में अशुद्धियां आ जाती हैं। मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं पूज्यपाद गुरुदेव की शरण में पहुंचा था किसी काल में, तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने लगभग छह माह तक वाजपेयी याग किया। छह माह तक वाजपेयी याग करके वायुमण्डल जब पवित्र हो गया तो उसके पश्चात् योग साधना में हमें परिणित कराया। योग साधना में परिणित कौन होता है? कहाँ योग साधना सिद्ध होती है जहाँ वायुमण्डल पवित्र होता है। जहाँ वायुमण्डल में अशुद्धिया

होती हैं, वायुमण्डल में एक दूसरे के नष्ट करने की प्रवृत्तियां रहती हैं, उनके विचार गृहों में प्रवेश करते हैं तो वहाँ योग सिद्ध नहीं हो पाता। हमारे ऋषि मुनि परम्परागतों से योग सिद्धियों में रमण करते रहे हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक समय मुझे स्मरण कराया था कि एक समय महर्षि रोहिणीकेतु ऋषि महाराज जो रोहिणीकेतु अगस्त्य मुनि महाराज के महापिता थे, वह अपनी पत्नि से बोले कि हे देवी! चलो हम याग करने के लिए चलें। तो उन्होंने कहा कि महाराज! आपको याग करना है या साधना करनी हैं? उन्होंने कहा, साधना और याग दोनों का एक ही मन्तव्य है। सबसे प्रथम याग है। याग से वायुमण्डल को पवित्र बनना है, चित्रों को दृष्टिपात करना है उसके पश्चात् हम योग में सिद्ध हो सकते हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कुछ काल हुआ महर्षि च्यवन ऋषि की चर्चायें की। महर्षि च्यवन ऋषि महाराज, जिस समय उनका नेत्रोवर्णित हो गया तो उसी समय अश्वना कुमारों ने और प्रवाणकेतु ऋषि मुनियों ने आ करके उनकी आयु की कामना की, औषधि पिपाद बनाया। औषधि पिपाद क्या था? उन्हें लगभग दः वर्षों तक तो उन्होंने कुछ औषध्यिं एकत्रित करके अग्नि के समीप आहुति देते रहें। महर्षि च्यवन ऋषि यज्ञ में, अग्नि में आहुति देते रहे जिससे परमाणु उनके श्वास के द्वारा जा करके उनके शरीर में एक पौष्टिकता आ जाए। वह परमाणु श्वास के साथ गति करता है तो अशुद्ध परमाणु नष्ट हो जाते हैं, शुद्ध परमाणुओं का चलन हो जाता है। वायुमण्डल पवित्र हो जाता है। उससे योगाभ्यास प्राण की प्रतिभा शुद्ध रूप में ऊर्ध्वा और ध्रुवा में गति करती हुई मानव की अन्तरात्मा पवित्र बन जाती है। तो इस प्रकार मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे यह प्रकट कराया था। तो ऋषि ने भयंकर वनों में जा करके याग किया और अपने को शुद्ध वायुमण्डल में पवित्र किया और उसके पश्चात् योग सिद्ध होने लगा। हमारे यहाँ सबसे प्रिम अहिंसा के कर्म को अपनाना है। उसके पश्चात् अपनी इन्द्रियों को पवित्र बनाना है, इन्द्रियों से हिंसा का प्रारम्भ होता है। जब इन्द्रियां अहिंसा परमो धर्मी बन जाती है तो मानव का अन्तर्हृदय आंतरिकता में पालन करने की प्रवृत्तियां हो जाती हैं। आंतरिक पालन करने की प्रवृत्तियां जहाँ आयी तो ऊर्ध्वा में गति करने वाला, अन्तर्प्राण और मन की साधना बन करके प्रभु को मानव प्राप्त हो जाता है। तो हे

यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, यह मेरी सदैव कामना रहती है। आज मैं अपने विचारों को अब समाप्त कर रहा हूँ। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! आज मेरे प्यारे! महानन्द जी ने अपने बहुत विशुद्ध विचारों को प्रकट किया। क्योंकि यह परम्परागतों से ही, अपने विचार एक विडम्बनामयी देते रहते हैं। आधुनिक काल के राष्ट्र को चाहिए कि वह विवेकी राजाओं को समाज में परणित करें जिससे यह समाज का निर्माण कर सकें। नाना रूढ़ियों को समाप्त करके धर्म और मानवता की चर्चा कर सकें। क्योंकि आत्मा सभी में एकोकी है। आत्म चेतना एक रूप में है। प्रभु की मान्यता एक रूप में हैं तब उसमें विचारधारायें भिन्न भिन्न क्यों? उसमें स्वार्थ है क्योंकि भिन्न भिन्न विचारधाराओं में और विचारों में यदि अहिंसा हो तो प्रिय है और यदि उन विचारों में हिंसा की प्रवृत्ति है तो वह स्वार्थवाद है। जितना समाज में हिंसा का प्रचलन है वह केवल स्वार्थवाद है उसमें दूसरों का अधिकार न रहे। अपने को ऊँचा बनाना है, दूसरों को पामर बनाना है। यह प्रवृत्ति मानव में नहीं होनी चाहिए। आज का यह विचार मेरे प्यारे! महानन्द जी ने व्यक्त किया मुझे बहुत प्रियता में लगा। विडम्बनामयी शब्द हैं, राजा को स्वार्थवादी नहीं बनना चाहिए। राजा को धर्म की रक्षा करनी है। धर्म से उपराम नहीं होना है। जो राजा यह कहता है कि मैं धर्म निरपेक्ष हूँ यह कोई शब्द नहीं होता। धर्म मानव का कर्त्तव्य है, राजा का कर्त्तव्य है। धर्म तो मानव की इन्द्रियों से प्रकट होता है। सु का नाम धर्म है और अ अपवित्रता का नाम अधम हैं तो उसे कौन स्वीकार नहीं कर सकता। यदि राजा यह कहता है कि मैं इसको स्वीकार नहीं करता, हम सर्व धर्मों में अर्पित करते हैं तो सर्व धर्म की उपेक्षा, उसकी उपेक्षा करनी चाहिए। धर्म एक रहता है, मानवता एक है, मानवता के क्षेत्र में प्रतिभाषित है। नाना प्रकार के रूपों में जब हिंसा का चलन होता है तो दूसरे के अधिकार को लेक करके अपने स्वार्थ की पूर्ति करता है। अपने पुत्र के जीवन के लिए दूसरों की हिंसा प्रदान करता है, दूसरों क प्राण लेता है तोप ुत्र का प्राण कहाँ बच सकेगा।

विचार विनिमय क्या है कि मुझे बहुत पुरातन काल में मेरे पुत्र ने यह वर्णन कराया था

कि एक मानव प्राण की रक्षा करने के लिए दूसरे के प्राण को लेना चाहता है तो यह कहाँ तक हो सकता है? यह मानवता की दृष्टि में, मानवीयता क्या कहती है इस सम्बन्ध में यह, पामर प्राणियों का कर्म हैं जैसा मेरे प्यारे! महानन्द जी अभी उच्चारण कर रहे थे। आज का विचार अब हमारा समाप्त होने जा रहा है। इसके साथ जैसा मेरे प्यारे! महानन्द जी ने यज्ञमान के लिए कि उनके जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। उनके मनों की, हृदयों कामनाओं की पूर्ति हाती रहे। इसके साथ आज का विचार अब हमारा समाप्त होने जा रहा है। स्थान : ग्राम सुआहेड़ी समय : प्रातः 10 बजे

१४ 04 03 1984 पुष्प 45 ब्रह्माण्ड में सर्वत्र परमात्मा की महिमा

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महत्ती का वर्णन आता रहता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है। जितना भी हमें ये जगत् दृष्टिपात आ रहा है, मानो यह जगत् एक माला के सदृश्य हैं जिस प्रकार माला बनी हुई होती है उसमें नाना प्रकार के मनके होते हैं परन्तु वे मनके किसी सूत्र में पिरोए हुए हैं और वे जो सूत्र है, उस सूत्र में सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है। तो हमें उस सूत्र को जानने की आवश्यकता है। प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, उस सूत्र को जानने के लिए मानो अपने में कटिबद्ध रहता है और ये विचारता रहता है कि मैं उस सूत्र को जानने के लिए तत्पर हूँ, जिस सूत्र में ये सर्वत्र मनके पिरोए हुए हैं। जैसे हमारा मानवीय शरीर है ये मानो एक माला के सदृश्य माना गया है। जैसे ये ब्रह्माण्ड एक माला के सदृश्य है। जैसे माता के गर्भस्थल में, नाना प्रकार के परमाणु हैं और वे परमाणु भी किसी सूत्र में पिरोए हुए हैं। वे एक माला के रूप में माता का पुत्र मुनिवरों! देखो, बाह्य जगत् में प्रवेश करता है। तो परिणाम, ये जगत् और यह मानवीयता एक सूत्र में पिरोए हुए हैं नाना मनके एक ही सूत्र में पिरोएं हुए हैं जिस सूत्र को प्रत्येक मानव, ऋषि मुनि, एकत्रित हो करके अनुसन्धान करते रहे हैं

अथवा अन्वेषण होता रहा है।
मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जब ऋषि मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके, प्रत्येक वेदमन्त्र के सम्बन्ध में चिन्तन और मनन करते रहते थे। बेटा! बहुत पुरातन काल में हमने निर्णय कराया था, कि एक एक अणु के विभाजन करने से, ये सर्वत्र ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आता हैं। एक परमाणु का विभाजन हो रहा है और उस एक परमाणु के गर्भ में बेटा! ये ब्रह्माण्ड मानो एक सूत्र में पिरोया हुआ है।
तो विचार आता है कि एक एक परमाणु में बेटा! यह ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है। जिस ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में, परम्परागतों से बेटा! वैज्ञानिकजन प्रायः अनुसन्धान करते रहे हैं और विचारते रहे हैं, कि हम विज्ञानवेत्ता बन करके, उस परमपिता परमात्मा की महत्ती को जानना चाहते हैं। परन्तु देखो, जब इस भौतिकवाद से दृष्टिपात आने वाला जो जगत् है, जो इन्द्रियों से हमें दृष्टिपात आता है, मानो देखो, बाह्य जगत् को जाना, परमाणुवाद को जाना अन्त में मौन की प्रवृत्ति बन जाती है, वह मौन हो जाता है। इसीलिए आज परम्परागतों से वर्तमान के काल तक उस सूत्र के सम्बन्ध में, उस ब्रह्म के सम्बन्ध में, प्रत्येक मानव अन्वेषण करता करता बेटा! मौन हो जाता है। तो इसके सम्बन्ध में यह निर्णय नहीं किया जा सकता कि वे परमपिता परमात्मा एकोदर्शी है अथवा अनेकोदर्शी? क्योंकि अनेकां ब्र्व्हो ब्रह्म वाचो मेरे प्यारे! देखो, प्राण भी एक सूत्र में पिरोया हुआ है, प्राण भी एक सूत्र है परन्तु देखो, उसमें इन्द्रियाँ पिरोई हुई हैं। परमाणुवाद भी एक सूत्र है जिसमें बेटा! ये ब्रह्माण्ड देखो, ब्रह्म वाचो मानो देखो, वह परमाणु, प्राण में पिरोया हुआ है। तो इसीलिए उस ब्रह्म को बेटा! प्रणव भी कहते हैं। उस ब्रह्म को हम एक एकेश्वर्यवाद के आँगन में भी लाते हैं। परन्तु उसके सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार की विवेचना चलती रहती हैं।
आओ मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें, उस सूत्रों की चर्चा करूंगा जिन सूत्रों के ऊपर ऋषि मुनि अपने में अनुसन्धान करते रहते थे। आओ, मैं तुम्हें भारद्वाज मुनि आश्रम में ले जाना चाहता हूँ, मुझे वह ऋषि मुनियों का काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में ऋषि मुनि एक एक वस्तु के ऊपर अनुसन्धान अथवा अन्वेषण करते रहे हैं। मेरे प्यारे!

मैं तुम्हें भारद्वाज मुनि के आश्रम में ले जा रहा हूँ। एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के आश्रम में कुछ ब्रह्मवेत्ता, कुछ मानो विज्ञानवेत्ता आ पहुंचे। जिन ब्रह्मवेत्ताओं में महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलभ, महर्षि दालम्य महर्षि रेणकेतु, महर्षि सोमभान केतु, महर्षि विभाण्डक, महर्षि सोमकेतु, मेरे पुत्रों! देखो, विज्ञानवेत्ताओं में, महर्षि स्वयंकेतु, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी यज्ञदत्त ब्रह्मचारी रोहिणी केतु आदि ब्रह्मचारी और विज्ञानवेत्ता भौतिक विज्ञान के ऊपर अनुसन्धान कर रहे थे। परन्तु देखो, कुछ ब्रह्मवेत्ताओं में यह चिन्तन होने लगा कि यह जो सूर्य है यह प्रकाश कहाँ से लेता है? यह सूर्य क्या है? तो इसके ऊपर उनका विचार विनिमय होने लगा। विचार होते हुए एक मन्त्र उन्हें स्मरण आया ब्रह्मचारी सुकेता ने न्यौदा में से एक वेदमन्त्र का उच्चारण किया और वह मन्त्र कह रहा था सूर्यं ब्रह्मे प्रकाशं देवो ब्रह्मः द्यौ हिदत्प्रवः वस्तु देवः मानो देखो, ये यह विचार आया कि वेद का वाक्य यह कह रहा था कि यह जो सूर्य है यह प्रकाश का द्यौतक है यह प्रकाश के देने वाला है। प्रकाश दे आ रहा है। द्यौ से प्रकाश आ रहा है, उस प्रकाश को पा करके नेत्र हमारे प्रकाशित होते हैं, जब नेत्र प्रकाशित होते हैं तो मानो देखो, नेत्रों में जो परमाणुवाद है, अथवा हृदय गुफा से जिनका समन्वय रहता है, बेटा! वह परमाणु, वह तरंगें सर्वत्र एक प्रकार से जागरूक हो जाती हैं। जहाँ सूर्य उदय हुआ, प्रकाश आया, बेटा! देखो, वहाँ परमाणुवाद उदय हो गया है। प्रकाश के देने वाला, यह सूर्य है। यह प्रकाश दे रहा है प्रातः कालीन सूर्य प्रकाश को ले करके आता है। मानव उसमें अपने क्रियाकलाप प्रारम्भ करने लगता है। प्रकाश का मानो द्यौतक बन जाता है, उसी प्रकार से उसको पान करने वाला, मानव अपने को धन्य स्वीकार करता है और यह कहता है कि यह प्रकाश कहाँ से आ गया है? यह प्रकाश जो संसार की प्रत्येक वस्तु को तपा रहा है यह प्रकाश कहाँ से आ गया है तो बेटा! ऋषि मुनि इस सम्बन्ध में गम्भीर चिन्तन और मनन करने लगे। जब मनन करने लगे, वेदमन्त्र के ऊपर चिन्तन करते करते बेटा! प्रातःकाल से सायंकाल हो गया। कोई विचार कर रहा था कि सूर्य मानो देखो, वनस्पतियों में से हो करके, उन्हें तपाता चला आता है मानो देखो, उनमें अग्नि भरण कर देता है। वही सूर्य समुद्रो से,

जलों को ले करके, समुद्रों में बड़वानल नाम की अग्नि को प्रवेश कर देता है। कहीं मानो यह सूर्य है जो कृतियों में चन्द्रमा को अपना प्रकाश देता है। चन्द्रमा उसी प्रकाशमयी अमृत को धारण कर लेता है। तो बेटा! देखो, इस प्रकार का वेदमन्त्र का जब अपने में अवृत होने लगा तो ऋषि मुनि अपने में चिन्तन करने लगे, मेरे प्यारे! देखो, चिन्तन करते करते बेटा! बहुत समय हुआ, चिन्तन होता रहा, समय चलता रहा, परन्तु सायंकाल हो गया, सभा विसर्जन हो गई और ऋषि मुनि बेटा! अपने अपने कक्षों में जा पहुंचे। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि, महर्षि भारद्वाज मुनि के कक्ष में जा पहुंचे। महर्षि भारद्वाज मुनि से बोले, महाराज! यह वेदमन्त्र है, सूर्य की उसमें प्रसंगता आ रही है। सूर्य को प्रकाश का द्योतक कहा है। हमारे विचार में यह वाक्य नहीं आ रहा है, हम इसको जानना चाहते हैं? तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने बेटा! उसका निर्णय देना प्रारम्भ किया। महर्षि भारद्वाज मुनि बोले ने ब्रह्मचारी सुकेता से कहा तुम्हें इतना समय हो गया है हमारी विज्ञानशाला में एक अन्वेषण चल रहा है, एक विचार चल रहा है, मानो देखो, प्रकाश की प्रतिभा का वर्णन आता रहता है। नाना प्रकार के यन्त्रों का तुम निर्माण करते रहते हो, परन्तु इसके पश्चात् भी तुम संशय से रहित नही होते, इसके मूल में क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, तो ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा, प्रभु! आप हमें निर्णय कराईए। हम इस वाक्य को नहीं जानते।

तो मेरे पुत्रो! ऋषि भारद्वाज, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि अपनी यज्ञशाला का निर्माण ब्रहो वृतं देवाः अपनी यज्ञशाला में विरामान हो गए और विचार करने लगे, चिन्तन करने लगे कि यह सूर्य क्या है? ये सूर्य कैसे प्रकाश देता है? तो विचारते हुए अग्नि के ऊपर चिन्तन आ गया। यह जो सूर्य है यह वनस्पतियों को तपाता रहता है। पृथ्वी के गर्भ में जैसे बीज की स्थापना हुई तो बेटा! सूर्य की किरण, उसे तपाना प्रारम्भ कर देती है, वह सूत्र के रूप में मानो प्रत्येक अन्नाद को खनिज को परिपक्व बनाना प्रारम्भ कर देता हैं। वह परिपक्व बनाता रहता है। मानो कहीं सूर्य की किरण अग्नि के समुद्रों में प्रवेश कर जाती है। हमारे यहाँ बहुत समय हुआ एक समय जल प्लावन आया, तो ब्रह्मचारी सुकेता से भारद्वाज मुनि ने कहा कि मेरे पिता यह कहा करते

थे कि एक समय मानो देखो, अप्रतो ब्रह्म वाचो देवाः जब जल प्लावन आया, जल प्लावन के आने के पश्चात देखो, अग्नि वही सूर्य की नाना प्रकार की किरणे द्यौ से अग्नि के अंश ले करके समुद्रों में मानो अग्नि प्रदीप्त हो गयी। ऐसा कहीं वेद का मन्त्र भी आता है। वेद का मन्त्र कहता है सूर्यों समुद्रों अग्ने वाचो ब्रह्म देवा कहीं वेद का मन्त्र इस प्रकार का आता है, कि समुद्रों में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। जैसे अग्नि समुद्रों में प्रदीप्त हो जाती है, मानो देखो, अग्नि सूर्य मण्डल में भी कहीं कहीं अग्नि के आक्रमण होते रहते हैं।

तो विचार आया मुनिवरों! देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा मेरे पितर जब ऐसा कहा करते थे तो मैं उसके ऊपर अनुसन्धान करने लगा। विचारने लगा कि समुद्रों में अग्नि मानो देखो, कैसे प्रदीप्त हो जाती है। तो मेरे पुत्रो! देखो, सूर्य की जो नाना प्रकार की जो किरणें हैं जब मानो वह दोषों को ले करके, इस पृथ्वी के आवृतों को ले करके बेटा! जब अग्नि में प्रवेश करती हैं तो मुनिवरों! देखो, जलों का उत्थान होना प्रारम्भ हो जाता है, कहीं कहीं मुनिवरों! देखो, सूर्य की विशेष किरण चन्द्रमा पर आक्रमण करती हैं, चन्द्रमा समुद्र पर आक्रमण करता है, पूर्णिमा के दिवस, जब सूर्य की किरण और चन्द्रमा की दोनों की कान्ति का समन्वय होता है तो मुनिवरों! देखो, समुद्र में प्रायः अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। जब वह अग्नि प्रदीप्त होती है तो उस अग्नि को हमारे यहाँ बड़वानल नाम की अग्नि कहते हैं। यह जो बड़वानल नाम की अग्नि है यही द्यौ में रहती है। जब यह अग्नि प्रदीप्त हो जाती है तो उस समय जल प्लावन आता हैं। इस पृथ्वी का बहुत सा भाग मानो जल में प्रवेश कर जाता है। यही जल प्लावन भगवान मनु के काल में आया था। यही जल प्लावन महाराजा हिरणाकुश के काल में आया था। हिरणाकुश के काल में भी यह जल प्लावन की प्रतिभा आती रही है।

तो विचार विनिमय क्या, यह जो सूर्य है यह अग्नि का प्रतिवाचो वर्चो कहलाया गया है। इस अग्नि को ले करके मेरे पुत्रों! देखो, सूर्य और भी नाना प्रकार की अग्नि को ले करके किरणों के साथ साथ, जब यह गमन करती हैं बेटा! वही किरणें भिन्न भिन्न प्रकार के रूपों में प्रवेश करती हुई, वही अग्नि समुद्रों को तपाने लगती हैं। वही अग्नि

है। जो मेरे पुत्रों! देखो, काष्ठ, वृक्षों को ऊर्ध्वा में परिपक्व बनाने लगती हैं। मानो देखो, वही अग्नि है जो माता के गर्भस्थल में प्रवेश हो करके बेटा! सूर्य की नाना प्रकार की कान्तियाँ, माता के गर्भ को तपायमान कर देती हैं, माता के गर्भस्थल में, ऐसी ऐसी नाड़ियाँ होती हैं जिनका नाना प्रकार की किरणों से समन्वय रहता है। नाना प्रकार की किरणों से समन्वय हो करके माता अपने गर्भ को परिपक्व बनाने लगती है। माता नहीं बनाती परन्तु अमृतो ब्रह्म वाचो यह सूर्य तपायमान कर देता है।

तो विचार विनिमय क्या? यहीं नेत्रों का जो प्रकाश है मानो देखो, नेत्रों के प्रकाश से इसके प्रकाश से दोनों का समन्वय हो जाता है और मानव प्रकाशमान बन जाता है और यह कहता है कि दिवस आ गया है और दिवस आ गया है तो प्रकाश आ गया है। प्रकाश का ही नामोकरण दिवस कहा गया है। मेरे पुत्रों! देखो, माता अपने पुत्रों से कहती है हे पुत्रो! तुम जागरूक हो जाओ। देखो, यह भानु उदय हो गया है, ये सूर्य उदय हो गया है। प्रकाश आ गया है। इसी प्रकाश को ले करके मेरे प्यारे! माता अपने पुत्रों! को जागरूक कर देती है और प्रत्येक प्राणी उसी प्रकाश के आने से प्रभु का गुणगान गाने लगता है। मानो प्रत्येक प्राणी अपने में क्रियाशील हो जाता है, प्रत्येक प्राणी बेटा! मानो क्रियाशील हो करके अपनी आभा को त्यागने लगता है, वृक्ष अपनी आभा को त्यागना प्रारम्भ कर देते हैं। मानो देखो, जैसे सूर्य है, प्राण वायु देना प्रारम्भ कर देते हैं। सूर्य के उदय होते ही प्राण वायु प्रारम्भ हो जाती है वह मानो देखो, प्रभु का एक प्रसाद आ रहा है जो मानव उसे पान करता है, उसी किरण की आभा में प्रातःकालीन जो योगाभ्यास करता है, साधना करता है, अपने में, स्वीकार करता हुआ, अग्नाकृतियों का पालन करता है बेटा! वह धन्य हो जाता है। विचार विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें विशेष विचार विनिमय देने नही आया हूँ कि यह सूर्य हमारा प्रकाश है और यह कैसा अनुपम प्रकाश है? महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने, ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि से यही कहा था उस काल में, कि यह जो सूर्य है इसकी नाना प्रकार की जो किरणें हैं, इन्हीं किरणों को ले करके मानव अपने में अनुसन्धान

करता रहता है।
बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है, उस काल की वार्त्ताएं, मानो एक महर्षि भारद्वाज ही नहीं, मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा हनुमान की भी चर्चाएं आती रहती हैं। महाराजा हनुमान बाल्यकाल में जब ब्रह्मचर्य का पालन करते थे, ब्रह्मचर्यवत् में रहते थे, ब्रह्मचर्य का अभिप्राय मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन किया है, ब्रह्मचर्य का अभिप्रायः क्या है? क्या ब्रह्म को अपनी चरि बना लेना है। ब्रह्म को अपने में जब चरने लगता है मानव, ब्रह्म क्या है? जिसे वह चरता है, प्रत्येक श्वास को एक सूत्र में जो पिरो लेता है, जो पिरोना जानता है ब्रह्मवाचो ब्रह्मवचि कृति देवाः मानो देखो, वह ब्रह्मचारी कहलाता है। ब्रह्मचर्य का अभिप्राय मैंने तुम्हें कई काल में कहा है, एक समय मुझे स्मरण है महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने यह प्रश्न किया कि महाराज! यह ब्रह्मचर्य क्या है? तो उन्होंने कहा कि ब्रह्मचर्य को तुम जानना चाहते हो, ब्रह्मचर्य वह है जिस सूत्र में मानो देखो, तुम्हारे शरीर के मनके पिरोए हुए हैं उसको हमारे यहाँ ब्रह्मवर्चोसि कहते हैं। जिस सूत्र में प्रत्येक श्वास पिरोया हुआ है और शब्द में चित्र पिरोया हुआ है, प्रत्येक श्वास के साथ में जो चित्र गति कर रहा है उन चित्रों को जानने का प्रयास करता है, प्रत्येक परमाणुवाद, प्रत्येक श्वास की गति की आभा में जो रत्त हो जाता है वह ब्रह्मचरिष्यामि कहलाता है। बेटा! वही गतो ब्रह्म हिरण्यं ब्रह्म वाचो मानो देखो, अपने में अपने को पिरोना जानता है।
आओ मेरे पुत्रो! मैं विचार देता हुआ दूरी न चला जाऊं विचार यह चल रहा था कि यह जो सूर्य है यह प्रातःकाल में उदय होता है, प्रकाश ले करके आता है। यही नाना प्रकार की किरणों जब प्रातःकालीन माता के गर्भस्थल में जो जरायुज होता है, माता उस समय गायत्री में जब अपने में ध्यानावस्थित हो जाती है, सूर्य के प्रकाश को अपने में ध्यानावस्थित कर लेती है। तो जानो कि वह सूर्य की तपस्या में परणित है। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है मानो देखो, बहुत पुरातन काल था जब यह विद्याएं माताओं के हृदय में, माताओं की एक निधि बनी हुई थी और वह निधि क्या थी, जैसा तुम्हें स्मरण होगा, एक समय सम्भूति ऋषि महाराज अपने में विद्यमान थे, सम्भूति ऋषि महाराज

व उनकी पत्नी दुर्गेश्वती यह जानती थी कि मैं सूर्य की पवित्र विद्या में रत्त रहना चाहती हूँ। उन्होंने महर्षि दुर्वासा, महर्षि स्वाति कृतकेतु ऋषि महाराज से इस विद्या को पान किया था और वह विद्या क्या थी? वह सूर्य विद्या थी जिसके ऊपर मानव अपने में ध्यानावस्थित हो जाता है। माता यह चाहती है कि सूर्य जैसे प्रकाश देता है, नाना प्रकार की किरणें संसार को प्रकाशमान बना रही हैं मैं इसी के गुणों वाले सन्तान को जन्म देना चाहती हूँ। तो माता उस समय तपस्या में तल्लीन हो करके, कुछ वेद मन्त्रों का उच्चारण करती रहती है सूर्याणि ब्रह्मवाचो वृत्ति देवा मानो देखो, कुछ शब्दों का ध्यानावस्थित हो करके इस मन्त्र की आभा में प्राण के ऊपर मन की धारा को जानती हुई सूर्य के प्रकाश में प्रकाशित होती हुई, अपने प्रकाश को सूर्य से प्रकाशित करते रहते हैं तो जानो वह तपस्विनी बन करके अपने गर्भ से सूर्य के गुणों वाले पुत्र को जन्म देना चाहती है। तो मुनिवरों! देखो, वह जो प्रकाश है वह अपने में अद्वितीय माना गया है।

विचार क्या? यह प्रकाश यह माताओं की विद्याएं हैं, यह माताओं की निधि मानी गई है, इस निधि की चर्चा मैं कल प्रकट करूंगा। आज तो इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा हैं विचार विनिमय केवल क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महत्ती का वर्णन करते हुए अपने में अपनेपन को जानते हुए इस संसार सागर से पार होना चाहते हैं। प्रत्येक मानव के हृदय में यह आशंका लगी रहती है कि मैं प्रकाश में जाना चाहता हूँ, उस प्रकाश के द्यौतक को जानना चाहता हूँ, जो मानो देखो, हमें प्रकाश देता है जिसके प्रकाश से, हम प्रकाशित हो रहे हैं, वह प्रकाश हमें ही नहीं जब पृथ्वी के गर्भ में जाते हैं जो बेटा! देखो, खनिज तप रहा है माता के गर्भस्थल में प्रवेश करते हैं तो जरायुज तप रहा हैं बेटा! समुद्रों में जाते हैं तो जलाशय तप रहे हैं। समुद्र तप रहा है जब चन्द्रमा के गर्भ में प्रवेश करते हैं तो सूर्य से चन्द्रमा की आभा तपायमान हो रही है। इसी प्रकार प्रत्येक मानो देखो, अप्रतम परमाणु तप रहा है, अणु तप रहा है। किरणें तप रही हैं और जो तपता है मुनिवरों! वही संसार को तपाता है और जो स्वतः नहीं तपता, वह संसार को भी कदापि नहीं तपा सकता। बेटा! देखो, सूर्य तपता है सूर्य

प्रातःकाल से सायंकाल को वह अस्त होता है इसीलिए वह सूर्य कहलाता है, वह प्रकाशक कहलाता है, वह आदित्य कहलाता है, वह रोहिणीकेतु कहलाता है, वह सोमभानु कहलाता है, वह प्रतिका कहलाता है, मानो उसके नाना पर्यायवाची शब्दों की विवेचना आती रहती है। वह विष्णु के रूप में मानो देखो, पालन कर रहा है। रुद्र के रूप में मानो देखो, रुद्रेश्वर प्रकाश दे रहा है। वह विष को निगल करके, संसार को अमृत देने वाला हैं। तो विचार विनिमय क्या? हमें सूर्य की आभा में रमण करना है वह जो सूर्य हमारा प्रकाशक है।

मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ प्रकाश आया, प्रातःकालीन प्रकाश आया एक समय आयुर्वेदाचार्यों से यह प्रश्न किया गया, कि सूर्य की किरणों का गऊ के शरीर से क्या समन्वय रहता है? तो मेरे पुत्रों! देखो, इसमें अश्विनी कुमारों ने और महात्मा दधीचि ने अनुसन्धान करते हुए यह कहा कि यह जो सूर्य का प्रकाश मानो गऊ के शरीर पर प्रवेश करता है मानो देखो, मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया तो सूर्य एक प्रकार की नाड़ी होती है। उस नाड़ी का समन्वय यन्त्रों से होता है। उस नाड़ी के साथ में एक सुभम्री नाड़ी होती है उस नाड़ी का अभिप्राय वह सूर्य की श्वेत अवृतकेतु किरण को अपने में धारण करती है और धारण करके यन्त्रालयों से उसका समन्वय होता है। तो इसीलिए गऊ का जो एक एक शरीर का परमाणु है, एक एक अंग है मानो वह सूर्य की किरणों में पिरोया हुआ है। वह पिरोए हुए होने से गो घृत की, गो दुग्ध की आयुर्वेदाचार्यों ने बहुत प्रशंसा की है। आयुर्वेदाचार्यों ने उसकी प्रशंसा करते हुए यह कहा है कि यह जो सूर्य है यह प्रकाश का द्यौतक ही नहीं, यह प्राण का द्यौतक है यह प्राण को सञ्चार करने वाला है। मेरे पुत्रों! यह द्यौ से प्रकाश लेता है, द्यौ से अपने में भरण करता है, संसार को उसे वमन कर देता है, उसको मानव पान करता है और जीवन में पान करके प्रकाशमान होता है।

तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता, हुआ केवल तुम्हें यह वाक् प्रगट करने के लिए आया हूँ, क्या यह जो सूर्य है बेटा! इसके ऊपर मानव परम्परागतों से तपस्या करता रहा है, अनुसन्धान करता रहा है। बेटा! महर्षि भारद्वाज

मुनि महाराज ने बेटा! एक मन्त्र का किसी काल में उच्चारण किया था और वह वेदमन्त्र था सूर्याणि गच्छत् प्रवाः व्रते देवाः अप्रतो वाचम् व्रणी व्रता कृतोः मेरे पुत्रों! देखो, इस वेदमन्त्र की कुछ आख्याकिया ले करके, भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने में यह निर्णय किया था, कि यह प्रकाश है, परन्तु यह अणु है मेरे प्यारे! यह परमाणु है। यही नाना प्रकार के आक्रमणों का कुंज कहलाता है जिससे मानो देखो, तरंगे उत्पन्न होती रहती हैं। उन तरंगों से मानव का जीवन सञ्चार होता है, प्राणीमात्र जीवन का सञ्चार होता है। तो मेरे पुत्रो! जब उन्होंने यह कहा, वेदमन्त्र को उच्चारण किया तो वह उसके पश्चात भी यह उसके गर्भ में जाते हुए भी उसको अच्छी प्रकार नहीं जान पाए। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के जीवन में यह प्रायः आता रहता है, कि उनके जीवन में बेटा! एक प्रतिभा आई और वह तपस्या में परिणत हो गए, वह तपस्या में तल्लीन हो गए, और तपस्या करने लगे। जब बेटा वे! तपस्वी जीवन में मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्म का चिन्तन करने लगे। अपने को ब्रह्म में, ब्रह्म को अपने में पिरोने का प्रयास करते रहे। सूर्य की नाना प्रकार की जो किरणें हैं जो विज्ञान को बहाने वाली हैं, जो मानव के जीवन का सञ्चार करने वाली हैं, उन किरणों के ऊपर अनुसन्धान करने लगे। जब अनुसन्धान करते करते, अन्वेषण करते करते बारह वर्ष हो गए तो यह निश्चय हुआ, महर्षि भारद्वाज को कि मैं इसके ऊपर मानो अवृत कर सकता हूँ।

विचार विनिमय करते हुए, वह अपने में यह जान पाए, कि यह सूर्य नाना प्रकार के परमाणुओं को, अणु को देने वाला है, और उस अणु से मानव का जीवन सञ्चार होता है। मानो देखो, उस अग्नि के द्वारा नाना प्रकार की किरणों से यह द्यौ से प्रकाश ले करके मेरे पुत्रों! यह वनस्पति को तपाता है और तपा करके उसके परमाणु वह पृथ्वी से रजोकृति ले करके वह वायुमण्डल में गति करते हैं। उसी से द्यौ का निर्माण होता है। द्यौ से पुनः यह प्रकाश लेते हैं। तो बेटा! देखो, भारद्वाज मुनि इस आभा में परिणत हो गए। परिणत होते हुए उन्होंने उसके पश्चात् उन्होंने एक वैज्ञानिक यन्त्र का निर्माण किया था जो सूर्य की किरणों के ऊपर अनुसन्धान करते रहे। अनुसन्धान करते करते, अन्वेषण होते होते, मेरे पुत्रों! देखो, उनमें किरणों को उन्होंने यन्त्रों में दृष्टिपात किया।

मानो देखो, जो कोई किरण गो के ऊपर जीवन दे रही है, कोई और पशुओं के ऊपर दे रही है। माता के गर्भ में, जो गर्भाशय है, उससे जो जीवन सञ्चार हो रहा है, जो वाहन किरणें जाती हैं, उन वाहन किरणों को बेटा! वह यन्त्रों में लाना चाहते थे। परन्तु महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने पुनः तपस्या की। तपस्या करने के पश्चात् यन्त्रों का निर्माण किया। ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, यज्ञदत्त, ब्रह्मचारिणी शबरी, पनपेतु, सोमकेतु ऋषि ये ब्रह्मचारी जब अध्ययन करते थे, तो अध्ययन काल में बेटा! जब ये जान पाए कि वास्तव में हमें जानना है मेरे पुत्रों! उन किरणों को अपने यन्त्रों में लेने लगे। जब किरणों को लेने लगे, उन किरणों में से परमाणुवाद का संघर्ष होता रहता है। उन संघर्ष वाले परमाणुओं को और यन्त्रों में लेना प्रारम्भ किया।

परिणाम यह हुआ कि मुनिवरों! देखो, बहुत पुरातन काल हुआ, बेटा! वह यन्त्र भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में निर्माणित हुआ था, जो बेटा! किरणों के बाद, वह यन्त्र गति करता हुआ, नाना पृथ्वियों की मुनिवरों! वह चित्र लेता रहता था। जितनी सूर्य की परिक्रमा करने वाली पृथ्वी थी, जहाँ जहाँ वह किरणें जाती थीं तो एक सौनित वृत्त कहलाता है। जिसको सौनित वृत कहते हैं वेद में सौनित वृत कहते हैं सूर्य को जो नाना पृथ्वियों को ले करके गति करता है। नाना पृथ्वियों का यह कुंज कहलाता है। जैसे माला सूत्र में पिरोई हुई रहती है ऐसे ही नाना पृथ्वियाँ बेटा! मानो देखो, सूर्य की किरणों में पिरोई हुई रहती हैं और उसी से जीवन पृथ्वी में प्रतिभाषित होता रहता है। वेद के आचार्यों ने बहुत पुरातन काल में निर्णय दिया था आज मैं भी उन वाक्यों की पुनरुक्ति दे रहा हूँ। मानो देखो, एक यन्त्र भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में ऐसा था, जो बेटा! देखो, पृथ्वी के अन्तर्गत, जितने मण्डल हैं, वह मानो कुछ गतियाँ सूक्ष्म मण्डल रहते थे। पार्थिव मण्डल जो सूर्य की परिक्रमा करते थे, वह मानो देखो, उन यन्त्रों में उनके चित्र आते रहते। और बेटा! अणुकृतियों का समूह आता रहता तो बेटा! उन चित्रों को ले करके उसके ऊपर ऋषि मुनि अन्वेषण करते। विचार विनिमय करते, मेरे पुत्रों! देखो, यह यह चिन्तन में आया चिन्तन करते करते और साकार रूप बनाते

बनाते यह आया कि जितनी ये पृथ्वियाँ हैं उनके यन्त्र में, लगभग तीस लाख पृथ्वियाँ थीं, जिनके चित्र यन्त्रों के द्वारा भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में प्रायः आते रहते थे। तो बेटा! वह क्रियात्मक ऋषि मुनियों का जीवन जब स्मरण आता है, तो मुनिवरों! देखो, हृदय गद् गद् हो जाता हैं, मैं यह कहा करता हूँ कि यह जो तीस लाख पृथ्वियाँ हैं क्या मानो देखो, हो सकता है इतना ही महर्षि भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में उनके चित्र प्रतियों की आगान्ता भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में प्रायः आते रहते थे। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, सूर्य की नाना प्रकार की किरणों वह कौन सी किरण कितने समय पर कौन सी पृथ्वी पर जाती है वह सर्वत्र वह चित्र उनकी विज्ञानशाला में, निर्माणित हुआ था बेटा! मानो यन्त्र में आते थे जो निर्माणित हुआ था और उसका नाम चित्रभीम् केवराव्राणित चित्र कहते थे जिसमें बेटा! वह उन पृथ्वियों का दर्शन करते थे।

तो विचार विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, मुनिवरों! देखो, मैं आज तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार यह देने के लिए आया हूँ, कि यह जो सूर्य है यह प्रकाश का द्योतक है, यह प्रकाश के देने वाला है। यह मानव के नेत्रों का ही प्रकाशक नहीं है। वैज्ञानिकों के मानो देखो, जीवन का प्रकाश भी माना गया है। यही द्यौ से प्रकाश ले करके, मानव को जन जीवन देता है, आनन्दवत् बना देता है। तो विचार विनिमय क्या, इस सूत्र की चर्चा, मैं इसके पश्चात् भी करूंगा। आज का विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! यह सूर्य मानो वैज्ञानिकों का पुंज कहलाया गया है आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ताओं का स्रो कहलाया गया है। परन्तु देखो, यह ब्रह्मचारियों का आदित्य रूप कहलाया गया है। मेरे प्यारे! कृषकों का यह बड़वानल वृत्तिका नाम की अग्नि का रूप कहा गया है। मेरे प्यारे! देखो, जल प्लावन के समय, विनाश के समय, इसी सूर्य को रुद्र के रूप में परणित करते हैं, क्योंकि यह रुद्र रूप जब धारण कर लेता है, इसकी नाना प्रकार की किरणों आ करके जल प्लावन को ला करके राष्ट्र के राष्ट्र को नष्ट कर देती है।

तो विचार विनिमय क्या? मेरे पुत्रों! यह सूर्य प्रकाश का एक कुंज है, परन्तु देखो, अपने अपने समय पर, यह अपनी अपनी आभा को धारण कर लेता है। विचार विनिमय क्या,

यही किरणों, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करती हैं, गर्भ में प्रवेश करके नाना प्रकार धातु पिपाद का निर्माण करके उन धातुओं में मेरे पुत्रों! देखो, कौन से परमाणु विद्यमान होते हैं, कौन सी आभा विद्यमान होती है? ये सूर्य तपाता रहता है, निर्माणित होता रहता है अभ्यस्त बनता रहता है। जैसे समुद्रों में बड़वानल नाम की अग्नि उत्पन्न हो जाती है, ऐसे ही किसी काल में माता के गर्भस्थल में भी बड़वानल नाम की अग्नि का प्रकोप हो जाता है और वह जो आत्मा, माता उसमें स्थिर हो करके, अधूरी अधूरी कृतियाँ आभाओं में पुत्रों का विनाश हो जाता है। परिणाम क्या, माता रुदन करती रहती है, परमाणुवाद की आभा में मैं जब तुम्हें ले जाऊंगा तो तुम्हें प्रतीत होगा यह कैसा मेरे प्यारे! प्रभु का अद्भुत जगत् है? कैसा वह मेरा प्यारा प्रभु प्रतिभाशाली है? उसी की प्रतिभा, उसी का विज्ञान है जिसको बिखरे हुए विज्ञान को वैज्ञानिक अपने में लाने का प्रयास करके उसका साकार रूप बना देता है। साकार रूप में उसे लाने का प्रयास करता हैं तो विचार क्या कि यह विशेष विवेचना में तुम्हें ले जाने नही आया हूँ। विचार विनिमय क्या है क्या मुनिवरों! देखो, हम तपस्वी बन करके और मानो देखो, हम अपने में वैज्ञानिकता को प्राप्त करते हुए हम सूर्य विद्या को जानने का हम प्रयास करें। यह विशेष विद्या है इसकी चर्चा कई काल में मैंने प्रकट की है, आज भी कर रहा हूँ। पुरातन काल में भी बेटा! हमने यह चर्चाएं विचार क्या है देखो, तपो ब्रह्म वाचो कि सूर्य का आयुर्वेदाचार्यों से कितना समन्वय है? बेटा! यह चर्चाएं मैं तुम्हें कल प्रकट करूंगा।

आज का विचार विनिमय क्या हम वैज्ञानिक बनें और सूर्य विज्ञान के ऊपर अपने जीवन को न्यौछावर करें। सूर्य विज्ञान के ऊपर बेटा! ऋषि मुनियों ने परम्परागतों से बेटा! बहुत प्रयास किया है आज मैं कोई विशेष विवेचना तुम्हें देने नही आया हूँ, विचार यह देने के लिए आया हूँ। क्या यह प्रभु का जो बिखरा हुआ जो विज्ञान है इसको वैज्ञानिकजन समय समय पर एकत्रित करते रहे हैं। यह चर्चाएं मैं कल प्रकट करूंगा कि कौन सूर्य ब्रह्म वाचो देवा मानो देखो, इसके ऊपर कितना अनुसन्धान हुआ है? कितने विचारकों ने कितनी अपनी अद्भुतता इसमें प्रकट की है? ये चर्चाएं हम कल प्रकट करेंगे। आज का विचार अब यह हमारा समाप्त होने जा रहा है आज का विचार

क्या? महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना प्रकार का अनुसन्धान, नाना ऋषि मुनि बेटा! अपने में ब्रह्मवर्चोसि का पालन करते हुए, अपने विज्ञान में रत्त रहते रहे हैं। मानो देखो, प्रभु की प्रतिभा को विचारता विचारता मानव विज्ञान की आभा में प्रवेश करता हुआ, भौतिकवाद में प्रवेश करता हुआ मानो देखो, वह प्रभु की नेति को निहारने लगता है और विचारने लगता है कि प्रत्येक परमाणु किसी न किसी कार्य को लिए हुए रहता है और किसी न किसी विशेषता पर अपनी आभा प्रकट करता रहता है। इसीलिए वह मेरी प्यारी माता वसुन्धरा, वह मेरा प्यारा प्रभु जो प्रतिभाशाली है जो इस ब्रह्माण्ड के कण कण में पिरोया हुआ है, कोई वस्तु ऐसी नहीं जहाँ वह चेतना अपना कार्य न कर रही हो जैसे माला में नाना प्रकार के मनकों में सूत्र पिरोया हुआ होता है। उस सूत्र में प्रत्येक प्राणी सूत्रित रहता है, उस सूत्र को हमें जानना है, उस सूत्र के ऊपर मनन और चिन्तन करना है। उस सूत्र का जो द्योतक (शब्द ध्वनि से) है वह चेतना है उसी में प्रत्येक प्राणीमात्र पिरोया हुआ है, परमाणुवाद पिरोया हुआ है, एक एक अणु पिरोया हुआ है, एक एक लोक पिरोया हुआ है, एक दूसरे की परिक्रमा में लगा हुआ है यह मेरे प्यारे! प्रभु की कैसी महत्ता है, आनन्दता है? इसके ऊपर प्रत्येक मानव अनुसन्धान करता रहा है, करता रहेगा। सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान के काल तक नाना वैज्ञानिक हुए हैं, परन्तु कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ जो प्रभु के विज्ञान को पूर्णरूपेण साक्षात्कार कर सके। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पाठ होगा। स्थान : लाक्षागृह, बरनावा समय : दोपहर 3.00 बजे।

१५ 05 03 1984 पुष्प 45 ब्रह्माग्नि सृष्टि की अनन्तता

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, मनोहर वेदमन्त्रों का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गाता ही रहता है, मानो उसका वर्णन करता रहता है और प्रत्येक वेदमन्त्र में,

यह विशेषता मानी गई है, कि जो मानव, जिन विचारधारा का होता है उन्हीं विचारों के ऊपर, मानव वेदमन्त्रों के ऊपर मनन करना प्रारम्भ करता है। तो मानो वह विद्या उसके समीप आनी प्रारम्भ हो जाती है। जैसे हमारे यहाँ, प्रत्येक वेदमन्त्रों के उच्चारण करने से यह प्रतीत हुआ कि प्रत्येक वेदमन्त्र में परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है, क्योंकि जितना भी ये जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है यह मानो उस परमपिता परमात्मा का आयतन माना गया है। अथवा यह उस ब्रह्म का मानो एक गृहस्थली, के रूप में, परणित किया जाता है। क्योंकि परमपिता परमात्मा का यह जगत आयतन है यह उसका स्थली है मानो उसी में वह वास कर रहा है। प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, बेटा! ये चिन्तन करता रहा है, कि मैं ब्रह्म हूँ अथवा ब्रह्म मेरे से कोई द्वितीय वस्तु है। प्रत्येक मानव परम्परोगतो से यह अनुसन्धान अथवा अन्वेषण करता रहा। एक मानव यह विचारता रहता है, तपस्या कर रहा है, ऋषि बन रहा है। परन्तु अपने में ये विचार रहा है यह संसार कहीं मुझे त्रैतवाद में प्रतीत होता है। कहीं मानो एकवाद में प्रतीत होता है जैसे त्रैतवाद में मानो जितने भी पदार्थ हैं, प्रत्येक पदार्थ में मानो त्रैतवाद की प्रतिभा आती रहती है।

जैसा मुनिवरों! देखो, यहाँ, जिस वस्तु से, जिस वस्तु का निर्माण होता है, जिस वस्तु का, जिस वस्तु से निर्माण हुआ मानो देखो, वह निर्माण क्यों हुआ है? वह निर्माणवेत्ता भी कोई है तो यह त्रैतवाद बन गया। मानो देखो, निर्माण करने वाला, जिसके ऊपर निर्माण हुआ है एक वह जिस वस्तु निर्माण हुआ है एक वह वस्तु कहलाती है तो मानो ये त्रैतवाद की प्रतिभा, मानव के हृदय में प्रतिष्ठित हो गई है और परम्परागतों से इस वाक् को वह विचार विनिमय करता रहा है और यह विचारता रहता है जैसे सूर्य की नाना प्रकार की किरणें हैं परन्तु किरणें जिस आभा से आ रही हैं, और किरणे जिस वस्तु पर जा रही है मानो देखो, और जो वस्तु अकृत हो रहा है, मानव उसका भोग कर रहा है वह वस्तु मानो तो प्रत्येक आभा में मानव को एक त्रैतवाद की प्रतिभा मानव के हृदय में प्रतिष्ठित हो जाती है। तो परिणाम मानो यह, कि एकेश्वरवादी यह कहता रहता है कि ब्रह्मो अस्मो ब्रह्म वाचा प्रव्हे मानो एकोकी ब्रह्म है। एकोकी ब्रह्म की जब

चर्चा आती रहती है कि हम सब ब्रह्म की आभा में परणित रहते हैं। प्रत्येक मानव कहता है जैसे विद्युत् की धाराएं चल रही हैं, एक ही विद्युत है उस विद्युत् में भिन्न भिन्न प्रकार की तरंगें मानी जाती हैं। परन्तु वह जो तरंगे है उन तरंगो में इसी प्रकार हम सब ब्रह्म की तरंग हैं और ब्रह्म मानो देखो, तरंग का स्रोत कहा जाता है। परन्तु इसके ऊपर नाना प्रकार की विवेचना होती रहती है, प्रश्न होते हैं, वेदमन्त्र प्रश्न करता है, वेद कहता है कि ब्रह्मो वाचा प्रति असवनते मानो देखो, वेदमन्त्र कहता है क्या ब्रह्म तो अनादि है। ब्रह्म मानो देखो, किसी वस्तु से उसका निर्माण नहीं हुआ। जिसका निर्माण नहीं हुआ, परन्तु देखो, उसका विभाजन वाली वस्तु का हम प्रमाण देते हैं। तो यह हमारे लिए शोभनीय नहीं बन पाता। परन्तु देखो, इसके ऊपर भिन्न भिन्न प्रकार की शाखाओं का जन्म हो जाता है। परन्तु अन्त में मानव जब यह विचारता है, कि यह जो इन्द्रियों का विषय है, मानो जैसे आंख का विषय है, चक्षु का, सम्भविते देवा श्रोत्रों का विषय है, घ्राण का विषय है, प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है एक मानव उसके ऊपर चिन्तन कर रहा है, और चिन्तन करता करता, मेरे प्यारे! देखो, अपनी एक शाला में विद्यमान हो जाता है। और शाला में जब विद्यमान हो करके, अग्नि के ऊपर निहारने लगता है, यह अग्नि कितने प्रकार की है? मानो देखो, सूर्यों के ऊपर, वह निहारने लगता है यह सूर्य कितने प्रकार के हैं? तो मेरे प्यारे! एक मानव यह विचारने लगता है कि मैं सूर्यों को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। यह सूर्य कितने हैं? और कहाँ कहाँ कितने सूर्यों की प्रतिभा मानी जाती है। तो मानव देखो, समाधिष्ट हो जाता है, कहीं मेरे पुत्रों! देखो, वह नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करना प्रारम्भ करता है।

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में मुनिवरों! देखो, महाराजा हनुमान और मुनिवरों! देखो, एक महर्षि शम्भुक ऋषि हुए हैं। शम्भुक ऋषि महाराज और महाराजा हनुमान एक समय बेटा! देखो, समुद्र के तट पर विद्यमान थे मानो समुद्र के तट पर विद्यमान हो करके यह चिन्तन और मनन कर रहे थे, अनुसन्धान कर रहे थे। अन्वेषण हो रहा था कि यह जो सूर्य है यह कितने प्रकार का है? तो मानो देखो, समुद्रों से इन सूर्यों का क्या सम्बन्ध रहता है? इसका क्या समन्वय है? तो विचारा गया

कि यह जो समुद्र में इसमें नाना प्रकार की धाराएं जाती हैं, आदित्य बनकर के सूर्य इसे तपाता है, जैसे ब्रह्मचारी मानो आदित्य बन करके ब्रह्मचर्य को तपाता रहता है, तपाता रहता है उसकी ऊर्ध्वागति बनाता है, इसी प्रकार सूर्य को आदित्य कहा जाता है। यह आदित्य जब समुद्र को तपाता है इसमें बड़वानल नाम की किरण को इससें मुनिवरों! देखो, ओत प्रोत करा देता है। जब इसमें समुद्र में भरण हो जाता है तो मानो देखो, समुद्रों से कहीं जल प्लावन नहीं आता तो मेघों की उत्पत्ति हो जाती है। जब मेघों की उत्पत्ति हुई, इनका दोनों का संघर्ष हुआ तो विद्युत् का जन्म हो गया। जब विद्युत् का जन्म हो गया, तो मुनिवरों! देखो, प्राण विद्युत भ्रण कृते मानो देखो, इसमें ओत प्रोत हो करके मेघ मण्डलों से मुनिवरों! देखो, पृथ्वी पर वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है। मानो देखो, वृष्टि का चयन होने लगता है। उसी से नाना प्रकार की वनस्पतियों का मानो देखो, जन्म हो जाता है।

परिणाम मानो देखो, जब दोनों इस वाक् को विचार रहे थे, चिन्तन मनन करते हुए कि हम सूर्यों को दृष्टिपात करना चाहते हैं, तो मानो देखो, जब सूर्यों के ऊपर अनुसन्धान करने लगे क्या ये अग्नि बड़वानल नाम की अग्नि कहलाती है, जो मेघों को उत्पन्न करती हैं उसको श्रीदेकक नामक अग्नि कहा जाता है। मानो देखो, आह्वनीय अग्नि बन करके वह शान्ति की स्थापना कर देती है। परिणाम क्या? मानो देखो, सूर्य की नाना प्रकार की किरणों के द्वारा, मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार का चयन होने लगता है, आभा में मानव परणित हो जाता है। जब दोनों बुद्धिमान दोनों यह चिन्तन कर रहे थे क्या सूर्य तो एक ही दृष्टिपात आता है और पृथ्वी अनन्य दृष्टिपात आती है तो मानो देखो, उन्होंने बेटा! समुद्र के तट पर एक अपनी शाला का निर्माण किया और शाला में विद्यमान हो करके मुनिवरों! देखो, उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया था, किसी काल में बेटा! जिस यन्त्र का नाम पादुकाहिरणी वाचक यन्त्र कहते थे। मेरे प्यारे! देखो, महाराजा हनुमान उन पादुकाओं का अन्वेषण यन्त्रों ऊपर विद्यमान हो करके बेटा! समुद्र को मानो दूरी कर जाते थे। समुद्र को पार करना, जल के ऊपर मुनिवरों! देखो, ऐसे गति करना, जैसे पृथ्वी के ऊपर मेरे पुत्रों! देखो, मानव गति कर रहा है। इसी प्रकार वह यन्त्रों के

द्वारा इस प्रकार गति करते रहते थे, तो मानो देखो, उन्होंने उस यन्त्र का निर्माण किया तो इसी प्रकार सूर्य विद्या को ले करके, उन्होंने मेरे पुत्रों! देखो, समुद्र की प्रतिभा में रत्त होने लगे। यह जो समुद्र है यह महान् प्रतिभाषित कहा जाता है। यह जो समुद्र है यह मानो देखो, जरा समुद्रों वृतांत यह आपोमयी कहा जाता है। परन्तु देखो, जब सूर्य के ऊपर अन्वेषण और अनुसन्धान करने लगे तो मेरे पुत्रों! देखो, महाराज हनुमान और ऋषि दोनों विचार विनिमय करते बेटा! मौन हो गए।

यह विचारने लगे कि इस परमाणुवाद को, सूर्य की किरणों को, हम किस काल तक जानेंगे? परन्तु देखो, उनके समीप एक वेदमन्त्र आया मातौ ग्रणां ब्रह्म वाचो आदित्यां गति वर्णो वस्तुते गति वचताः वेद का मन्त्र क्या आया, कि माता के गर्भ में, जब एक शिशु रहता है तो माता के गर्भ में, उस शिशु को कौन तपायमान करता है? कौन तपाता है, तो मुनिवरों! वेदमन्त्र कहता है आपो ही ब्रहे मानो देखो, वह जो सूर्य की, नाना प्रकार की किरणें आ रही हैं, सूर्य की नाना जो धाराएं आ रही हैं वही उसको तपाती रहती हैं। माता के रीढ़ के विभाग में, मेरे पुत्रों! एक सोवित नामक एक नाड़ी होती है तो सोवित जो नाड़ी होती है उसमें तो सूर्य किरणों का मानो देखो, प्रवेश होता है और वह सूर्य की किरणें बालक की नाभि अप्रतोः मानो देखो, उसके रीढ़ से उसका समन्वय होता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, वह प्रकाश, वह आभा वह मुनिवरों! देखो, आपो को उसमें प्रवेश कराकर तपायमान करती रहती है। मानो देखो, यह सूर्य की एक प्रतिभा कहलाती है। तो मेरे पुत्रो! ऐसा हमारे वैज्ञानिकों ने, आध्यात्मिकवादियों ने भी और भौतिक विज्ञानवेत्ताओं ने भी इसके ऊपर अन्वेषण किया, अथवा विचार विनिमय किया है कि यह जो सूर्य है, यह प्रति आग्रित कहलाता है। मानो देखो, हम सूर्य के ऊपर क्या मैं बेटा! हनुमान की यह चर्चा कर रहा था कि महाराजा! हनुमान ने जहाँ यन्त्रों का निर्माण किया, तो एक समय बेटा! वह मौन हो गए। यह विचारा कि पृथ्वियाँ तो नाना रूपों में दृष्टिपात आती हैं और एक पृथ्वी नहीं है नाना पृथ्वियाँ हैं जो सूर्य की परिक्रमा कर रही हैं

जैसा मुनिवरों! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराते हुए कहा था कि तीस लाख पृथ्वियाँ

हैं जो सूर्य की परिक्रमा कर रही हैं। मानो यह वैज्ञानिकों को, ऋषि मुनियों को अपनी गणाना में बेटा! यह दृष्टिपात आता रहा है। तो उन्होंने विचारा क्या इतनी पृथ्वियों को कैसे कैसे यह सूर्य प्रकाश देता है? तो मानो बेटा! देखो, इस प्रकार का हवि वृत करते हुए उन्होंने विचारा कि यह सूर्य भिन्न भिन्न प्रकार की किरणों द्यौ से ले करके मानो यह उनमें प्रकाश देता रहता है। यह प्रकाशित करता रहता है, प्रतिभाषित होता रहता है जिससे मुनिवरों! देखो, नाना पृथ्वियाँ, इसकी परिक्रमा करती रहती हैं। जैसे मुनिवरों! देखो, उन्होंने प्रमाणा अकृत किया कि जैसे मधुमक्खी होती है, एक मानो देखो, विशेष जो राजा की मानो देखो, धर्म वृत्तिका, मानो एक मक्खी होती है, जिसको रामअवधित्त कहते हैं, नाना मक्खियाँ उसकी परिक्रमा करती हैं, उसकी रक्षा करती हैं, इसी प्रकार नाना पृथ्वियाँ बेटा! एक सूर्य की परिक्रमा करती रहती हैं। जिस प्रकार एक परमाणु है नाना प्रकार के परमाणु उसकी गतियाँ करते रहते हैं, जैसे माता के गर्भ में एक बिन्दु पहुंचा है परन्तु शिशु नाना परमाणु एक ही रहता है मेरे पुत्रों! देखो, जो नाना परमाणु उसमें गति करके माता के गर्भ में बेटा! वह स्थिर हो जाते हैं और वह एक ही कण से मुनिवरों! देखो, वह नाना परमाणु उसकी रक्षा करने के लिए बाह्य नाना देवता उसकी रक्षा करके मेरे पुत्रों! एक मानव के रूप में यह संसार में मानव जन्म ले लेता है। यह प्राणी बन करके आता है, यह मनस्तत्व बन करके आता है। इसी प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, एक दूसरा परमाणु एक दूसरे परमाणु की परिक्रमा कर रहा है।

बेटा! एक यन्त्र का महाराजा हनुमान ने बेटा! निर्माण किया था किसी काल में, बेटा! समुद्रों के तट पर, उनकी एक विज्ञानशाला थी। एक मानो देखो, उस विज्ञानशाला में विद्यमान हो करके एक समय बेटा! महाराजा हनुमान, शोभनी केतु ऋषि महाराज और ये दोनो विद्यमान हो करके मानो इनके यहाँ कुछ ब्रह्मचारी भी अध्ययन करते थे, जैसे सुरेका एक ब्रह्मचारी था, वह उसने मानो देखो, वेद के ऊपर अन्वेषण करते हुए वेदमन्त्रों की धाराओं के ऊपर विचार विनिमय करते हुए कहा कि भई! असरो वृत्ति ब्रह्म वाचा ये जो सूर्य है मानो यह नाना पृथ्वियों को गति देने वाला है। नाना पृथ्वियों के गर्भ में नाना प्रकार का खनिज देता रहता हैं। विचार आने लगा कि एक सूत्र बना हुआ है,

उस सूत्र में यह रहने वाला है। तो मानो देखो, उन्होंने बेटा! उस समय एक यन्त्र का निर्माण किया था, जो यन्त्र मुनिवरों! देखो, जैसे एक अणु है और उस अणु की धाराओं का जब विभाजन किया, उसमें से नाना परमाणुओं का जन्म हुआ, और जन्म हो करके यह विचारा कि एक रक्त का बिन्दु है, एक रक्त के बिन्दु में एक परमाणु है, बिन्दु के परमाणुओं की वे जब गणना करने लगे तो परमाणुओं की गणना करते करते बेटा! उन्हें एक माह हो गया, एक वर्ष हो गया एक वर्ष के पश्चात बेटा! उन्होंने यह निर्णय दिया कि हम इसके परमाणुओं को मानो पूर्ण रूपेण गणना में नहीं ला पाए हैं। परन्तु हमने अरबों खरबों जिसकी गणना समाप्त हो जाती है हमारी गणना में इसकी इतना परमाणुवाद हमें एक ही बिन्दु में यन्त्र में कुछ दृष्टिपात आया। तो मानो देखो, उसका मेरे पुत्रों! देखो, उसी का यन्त्र बना और यन्त्र बना करके जो मुनिवरों! देखो, भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में बेटा! वही परमाणुवाद का यन्त्र पहुंचा उन्होंने बेटा! रक्त के बिन्दु से मानव के शरीर का निर्माण मुनिवरों! देखो, उसमें दृष्टिपात आता रहा।

तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ केवल तुम्हें यह परिचय देने के लिए आया हूँ, क्या मुनिवरों! देखो, महाराजा हनुमान इत्यादि जो सूर्य की विद्या को जानने वाले थे, सूर्य की विद्या को निगलने वाले, अपने में धारण करते रहते थे, मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने यन्त्रों का निर्माण किया और उसके पश्चात् एक समय बेटा! जब वह विज्ञान में रक्त हो गए, तो दोनों मौन हो गए। समुद्र के तट पर मौन हो गये, उन्होंने यह अपना निश्चय किया कि प्रभु! हम की सृष्टि को मानो इस भौतिक विज्ञान को, हम अणुवाद को इन मानो नेत्रों से दृष्टिपात नहीं कर सकते। हम नेत्रों से विहीन हो जाते हैं, हम मन उनके ऊपर चिन्तन नहीं करता। मन से विहीन हो जाते है। मानो देखो, श्रोत्र ध्वनि को श्रवण करता करता मानव देखो, मौन हो जाता हैं, परिणाम यह कि प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों का मन्थन करके और उन्होंने हृदय रूपी गुफा में बेटा! इन्द्रियों के साकल्य को एकत्रित करके, आध्यात्मिक याग करने के पश्चात् मेरे पुत्रों! वह मौन हो गए, और यह निर्णय किया कि हम ब्रह्म को न तो साकार उच्चारण कर सकते हैं, परन्तु हम उसमें जब प्रवेश कर जाते हैं। तो हम उसका वर्णन

करने में असमर्थ हो जाते हैं।

तो मेरे पुत्रों! देखो, यह वाक् महाराजा हनुमान और देखो, शोभनी ऋषि ने बहुत पुरातन काल में बेटा! अपना यह निर्णय दिया था। यही निर्णय बेटा! देखो, महाराजा महर्षि भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में यह निर्णय दिया गया। परन्तु विचारने में यह आया कि ब्रह्मो अस्मि ब्रह्म वाचा मानो इसमें जब मानव प्रवेश कर जाता है, उस मानव का, उस वस्तु का मेरे पुत्रों! देखो, इन्द्रियों से उसका वर्णन करने में वह असमर्थ हो जाता है। जहाँ तक मानव का सम्बन्ध है मैंने कई काल में यह वर्णन कराया है कि बहुत गम्भीर वाक् होते हैं, गम्भीर चिन्तन होते हैं, ब्रह्म के सम्बन्ध में। मानो देखो, वेद में आया है वसुन्धरा का वर्णन आया है, कहीं गो मेध याग का वर्णन आया है, कहीं मानो देखो, धेनु शब्द आया है, भिन्न भिन्न प्रकार के शब्दों में बेटा! ब्रह्माण्ड निहित हो जाता है। ब्रह्माण्ड निहित हो करके उसी में मानो रत्त हो जाता है, मौन हो जाता है। इन्द्रियों से मानो देखो, उपरामता को प्राप्त हो करके बेटा! प्रकृति शून्यवाद में जब प्रवेश करता है तो वह स्वतः शून्य हो जाता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, आज मैं, इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ विचार केवल हमारा यह चल रहा था कि हम मुनिवरों! देखो, विज्ञानवेत्ता बनें। हम सूर्य के ऊपर अपना विचार दे रहे थे। मानो देखो, वह जब दोनों ऋषि मौन हो गये, महाराजा हनुमान भी, शोभनी ऋषि भी समुद्र के तट पर बेटा! वह मौन हो गए। याग करते थे, यागों में भिन्न भिन्न प्रकार के परमाणुओं का चयन करते थे, और इस प्रकार मानो देखो, चयन करके आगे भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रों! देखो, वह मौन हो गए। प्रत्येक इन्द्रियों के साकल्य को एकत्रित करके हृदय रूपी गुफा में वह मौन हो गएं और मौन हो करके बेटा! यह जो शून्य प्रकृतिवाद है, यह जो रचनावाद है मुनिवरों! देखो, इसके गर्भ में प्रवेश करते थे। मुनिवरों! देखो, जैसे तेरह लाख पृथ्वियाँ मानो देखो, गति कर रही थीं, इसी प्रकार नाना प्रकार की किरणें बेटा! देखो, प्रत्येक पृथ्वी को तपायमान कर रहीं थी। वही किरणें बेटा! इस पृथ्वी को तपा रही हैं, वही किरणें द्वितीय पृथ्वी को तपा रही हैं, वहीं किरणें मानो तृतीय पृथ्वी को तपा रही हैं। वही किरणें जा करके चन्द्रमा

को शीतलवत बना रही हैं। वही किरणें बेटा! मंगल को प्रकाश दे रही हैं। वही किरणें बुद्ध में प्रवेश कर रही हैं। वही किरणें मेरे प्यारे! देखो, बृहस्पति में प्रवेश करती हुई बृहस्पति को आभायुक्त बना रही हैं। परिणाम क्या? मुनिवरों! देखो, वह किरणें, भिन्न भिन्न प्रकार की आभाओं में रत्त हो रही हैं। मेरे पुत्रों! देखो, आगे ऋषियों ने विचारा, एक शनि मण्डल है, उस शनि मण्डल के अन्तर्गत मानो देखो, जब उसके गर्भ में पहुंचे अपनी समाधिष्ट के द्वारा तो मुनिवरों! देखो, एक ही शनि मण्डल के गर्भ में जब प्रवेश किया तो एक ही शनि मण्डल बेटा! इतना विशाल मण्डल है, मेरे पुत्रों! जिसको पांच सूर्य प्रकाशित कर रहे हैं पांच सूर्यों का प्रकाश मानो देखो, उसे प्रकाशित कर रहा है और वह प्रकाश आ रहा है वह प्रकाश में रत्त हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वहाँ प्रकाश की प्रतिभा अस्वत हो रही है। विचारा आता रहता है विचार आता रहता है मेरे पुत्रों! इससे विचारा जाए क्या वह जो शनि मण्डल है बेटा! देखो, जिसमें पांच सूर्य प्रकाश दे रहे हैं उसमें मानो देखो, कितनी पृथ्वियों का निर्माण हो सकता है?

तो विचारने से बेटा! प्रतीत हुआ कि यह जो प्रभु का ब्रह्माण्ड है, प्रभु का यह रचाया हुआ जो जगत् है यह इतना अनन्तमयी माना गया है क्या मानो देखो, एक परमाणु है, एक अणु है, एक कृतिका है, एक सुद्रीति है, मानो देखो, इन चारों का जब समन्वय किया जाता है तो असंख्य सूर्य बेटा! उस परमाणुवाद में, बेटा! देखो, समाधि में ऋषियों को दृष्टिपात आते रहे हैं। तो मेरे पुत्रो! मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाने के लिए नहीं आया हूँ, क्योंकि भौतिकवाद का जो विज्ञान है, बिना समाधि, बिना आध्यात्मिकवाद के बेटा! देखो, विज्ञान की इकाई में रमण करता रहता है। इकाईयों में रमण करता हुआ, अपने में बेटा! देखो, इकाई है, परन्तु देखो, वह समोवृत्तियों में बेटा! अनेकता मानी गई है। तो विचार विनिमय क्या आज मैं बेटा! विशेष चर्चाएँ या अपने विचारों को मैं दूरी नहीं ले जाना चाहता हूँ। तुम्हें यह विचार देने के लिए आया हूँ, क्या प्रत्येक मानव बेटा! अपनी अपनी प्रतिभा में रत्त हो जाते है। तो बेटा! देखो, हनुमान जी व शोभनी ऋषि के समीप एक वेदमन्त्र आया और वह वेदमन्त्र यह कहता था स्वाचं वचत्तप्रमाः पुरातन ब्रह्म वाचोः देवं घृति पृतिस्याः वाचं शनिव्रतोः वाचं ब्रह्म वाचोः वाचं ब्रह्मे ब्रह्मा

अग्नि रुद्र भागः। जब बेटा! यह वेद का मन्त्र उन्हे स्मरण आया वेदमन्त्र को चिन्तन में लाते हुए जब अनन्य यह ब्रह्माण्ड, अनन्य देखो, यह शनि दृष्टिपात आने लगे तो बेटा! इसी वेदमन्त्र को, अपने अनुभव को ले करके वह महाराजा शिव के द्वार पर पहुंचे। हिमालय में बेटा! महाराजा शिव, माता पार्वती मानो देखो, वह अनुसन्धान करते थे। उनके बाल्य मानो देखो, महाराजा गणेश जी वह भी अनुसंधान करते थे क्योंकि गणो वृतं ब्रह्म वाचो उनकी बुद्धि में बेटा! इतनी प्रखरता थी कि लेखनी कदापि भी उनकी शान्त नहीं होती थी। वह लेखनीबद्ध करते रहते थे अपने विचारों को। मेरे पुत्रों! देखो, वह पिता के चरणों में ओत प्रोत है, चरणों में विद्यमान हो करके बेटा! वह अनुसन्धान कर रहा हैं, विचार रहा हैं। इतने में बेटा! हनुमान और शोभनी ऋषि दोनों उनके समीप पहुंचे। मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा गणेश जी, ने अपने आसन को त्यागकर कहा, आइए भगवन! मानो देखो, उन्हें आसन दिया। वह आसनों पर विद्यमान हो गए। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा क्या, क्या चिन्तन है? मेरे पुत्रों! देखो, जैसे गणेश जी ने कहा कि क्या चिन्तन है तो शोभनी ने और महाराजा हनुमान जी ने कहा कि प्रभु! यह एक वेदमन्त्र है, हमने श्रवण किया है कि आप लेखनी बद्ध करते रहते हैं। लेखनी का जो सम्बन्ध है वह मानव के हृदय से है और यह जो हृदय है यह ब्रह्म का आयतन है क्योंकि यह जो जगत् है। यह ब्रह्म का हृदय है और हृदय ब्रह्म का आयतन है इसीलिए आपका जो हृदय है सब हृदय मानो देखो, ब्रह्म का आयतन है आपने उस ब्रह्म के गृह को जान लिया है, लेखनीबद्ध करते हुए। तो प्रभु! जिस वेदमन्त्र में हम प्रवेश हुए हैं, इस वेदमन्त्र को ले करके आपके समीप आ पहुंचे हैं। तो मेरे पुत्रों! जैसे ही महाराज गणेश जी ने इस वेदमन्त्र के ऊपर चिन्तन और लेखनीयाँ बद्ध की तो उन्होंने कहा कि वाक् तो तुम्हारा यथार्थ है, परन्तु देखो, यह वेदमन्त्र तो कुछ ऐसा कहता है कि नाना शनि हैं और नाना शनि है जो मानो देखो, अग्नि की धाराओं को अग्नि उनको रथ बना करके देखो, गतियाँ दे रही हैं। वेदमन्त्र कुछ ऐसा कह रहा है।

मानो देखो, एक ब्रह्माग्नि है, वह जो ब्रह्मग्नि है वह इस रथ को बना करके मानो नाना लोक लोकान्तरों के रथ बनाकर के उनको गतियाँ दे रही हैं और उनमें विशेषता यह है

एक मण्डल, एक लोक दूसरे लोक से मानो प्रतिभाषित नहीं हो रहा है। यह मानो देखो, इसको ब्रह्माग्नि कहते हैं, विचित्र अग्नि कहते हैं, इसके ऊपर मानव परम्परागतों से अनुसन्धान करता रहा है। तो मेरे पुत्रों! महाराजा गणेश जी ने जब ऐसा कहा तो दोनों शान्त हो गए। मुद्रित हो करके मेरे पुत्रों! शोभिनी ने कहा कि महाराज! हम आपके चरणों में इसीलिए आए हैं क्योंकि आपका बहत अनुसन्धान है, आपका बहुत अध्ययन है। तो महाराजा गणेश जी ने कहा मेरी माता इसका उत्तर दे सकेंगी और मैं जितना जानता हूँ मैंने इतना उत्तर दिया है। तो मेरे पुत्रों! देखो, माता पार्वती के समीप पहुंचे। जब माता पार्वती के समीप पहुंचे तो माता ने कहा आओ, पुत्रों! भवितं प्रहा मानो देखो, उन्हे आसन दिया और कुछ आतिथि किया और उन्होंने कहा तुम्हारा क्या प्रश्न है? उन्होंने कहा, मातेश्वरी! हम ब्रह्माग्नि को जानना चाहते हैं। वह जो ब्रह्माग्नि है, जो मानो देखो, इस ब्रह्माण्ड के प्रत्येक लोक लोकान्तरों को रथ बना करके, और जैसे पृथ्वी को मानो देखो, सूर्य की किरणें रथ बना करके, वाहन बन करके पृथ्वी को गति दे रही हैं और सब प्राणी हम मानो इस पृथ्वी ऊपर विद्यमान हैं तो यह पृथ्वी रथ के तुल्य है और यह गति ब्रह्मवाचो मानो देखो, इसमें हम सब विद्यमान हैं तो हम ब्रह्माग्नि को जानना चाहते हैं। जो ब्रह्माग्नि सब लोक लोकान्तरों का रथ बनाए हुए है। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह जब यह वाक् उन्होंने कहा तो माता पार्वती ने कहा, हे पुत्रों! सम्भवः देवो ब्रह्मे वाचनमः मानो देखो, जैसे माता अपने पुत्रों को धारण करती है तो माता उस समय रथ कहलाती है परन्तु देखो, माता रथ है और माता का नामोकरण ही उस समय आह्वनीय अग्नि कहलाती है।

माता का नाम ही उस समय ब्रह्मवर्चोसि अग्नि कहलाती है। अहा जिस आभा में यह मानव विद्यमान रहता है जिसको ब्रह्मवर्चोसि कहते हैं। ब्रह्मवर्चोसि है, ब्रह्माग्नि से इसका समन्वय रहता है। ब्रह्माग्नि से समन्वय रह करके यह उस मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसि परमाणुओं के ऊपर ये प्रत्येक मानव मानो देखो, उसके ऊपर विद्यमान हो करके देखो, गति कर रहा है और कैसे गति कर रहा है? इसको मानो ब्रह्म देखो, वाचो समा ब्रीहि व्रता जो मानव समाधिष्ट होने वाला है, वह इसका उत्तर दे सकता है। मैं तो केवल

इतना उत्तर दे सकती हूँ क्या मानो देखो, यह जो ब्रह्माण्ड है यह ब्रह्माग्नि के ऊपर विद्यमान हो करके मानो यह सर्वत्र गति कर रहा है और गति करके यह रथ बना हुआ है, मैं तो इतना जानती हूँ। तो मुनिवरों! देखो, महाराज हनुमान, शोभनी ने कहा कि मातेश्वरी! हमारी संतुष्टि नहीं हुई। तुम्हारे प्रश्नों से हमारी सन्तुष्टि नहीं हुई हम ब्रह्माग्नि को और रूप से भी जानना चाहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा क्या तुम महाराजा शिव के द्वार पर जाओ। मानो देखो, जिस महाराजा शिव के देखो, कण्ठ में सर्पों की माला रहती है। मानो वह ध्याना मुद्रित जब हो जाते हैं तो सिंह उनके चरणों की वन्दना करते हैं। सर्पराज कण्ठ में ओत प्रोत हो जाते हैं। ऐसे महापुरुष के द्वार पर जा करके तुम्हें मानो देखो, इसका उत्तर तुम्हें प्राप्त होगा।

मेरे पुत्रों! देखो, वह महाराजा हनुमान, शोभनी ऋषि, गणेश जी और माता पार्वती यह चारों मुनिवरों! देखो, भ्रमण करते हुए उस स्थली पर पहुंचे जहाँ महाराज मुनिवरों! देखो, शिव वे अपने में तपस्वी जीवन व्यतीत कर रहे थे। उस समय वह बारह वर्ष के लिए तपस्या में चले गए थे और तप करने के लिए उन्होंने यह कहा था, अपनी देवी से हे देवी! मैं इस भौतिक विज्ञान से मैं बहुत ही मानो देखो, उपराम हो गया हूँ मैं ऊब गया हूँ, इससे मैं उपराम होना चाहता हूँ। स्थित होना चाहता हूँ मानो मैं तपस्या करने जा रहा हूँ, ब्रह्मवर्चोसि बनना चाहता हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, वह भयंकर वनों में तप कर रहे हैं। और अपनी समाधि में ओत प्रोत हैं। कण्ठ में मुनिवरों! देखो, सर्पों की माला है। मानो देखो, चरणों की वन्दना करने वाले सिंहराज हैं। मेरे पुत्रों! देखो, त्रिवर्धा, त्रिगुणों को ले करके और त्रि दोषों को एक सूत्र में लाने का वह प्रयास कर रहे थे। मेरे पुत्रों! मानव के शरीर में तीन प्रकार के दोष कहलाते हैं, तीन प्रकार के गुण कहलाते हैं। मानो देखो, इसको रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण कहते हैं। मुनिवरों! देखो, उन्होंने जब वह प्रतो ब्रह्म वाचा उनके चरणों की वन्दना की तो उन्होंने बेटा! नेत्रों की कृतिका मानो देखो, प्रतिभाषित की और उन्होंने कहा, हे हनुमान! तुम कैसे विद्यमान हो? उन्होंने कहा, प्रभु! आपको प्रतीत है, मेरी माता अञ्जना ने आपकी तपस्या की थी। जब मानो मैं माता के गर्भस्थल में था, इतना तो जानता नहीं, मुझे स्मरण नहीं है मेरी

माता ने मुझे यह वर्णन कराया है कि मैंने महाराजा शिव की तपस्या की है। मैं शिव की तपस्या करते करते, शिव उसे कहते हैं तीनों गुणों से जिसका उपराम होने वाला हो। तीनों गुणों से उपराम जो हो गया हो मानो त्रिदोषों को अपने में, एक सूत्र में लाने वाला उसका नाम शिव कहलाता है। क्योंकि न तो उसे संसार के मान अपमान, न सर्पराज, न सिंहराज, हिंसक प्राणी भी मानो देखो, उसकी वन्दना करने लगते हैं। ऐसा मेरी माता कहा करती थीं क्योंकि मैं उस तपस्या का फल हूँ। मैं माता का फल हूँ क्योंकि माता मुझे इस प्रकार की शिक्षा देती रहती थीं।

तो इसीलिए हे प्रभु! मैं आपके चरणों में आ पहुंचा हूँ। मैं यह चाहता हूँ भगवन! मैं एक वाक् आपसे जानने के लिए आया हूँ। महाराजा शिव ने कहा बोलो क्या चाहते हो उन्होंने कहा प्रभु! मैं ब्रह्माग्नि को जानना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने प्रत्येक अग्नि के ऊपर चयन किया है। हम समुद्र के तट पर विद्यमान हो करके समाधिष्ट हो करके आकाश गंगा में, नाना प्रकार के शनि मण्डलों को हमने जाना है। लगभग देखो, यह शोभनी ऋषि हैं। और हम हैं समाधिष्ट में हो करके यन्त्रों में प्रवेश करके हमने लगभग एक आकाश गंगा में लगभग हमने बहत्तर अरब लगभग शनि मण्डलों को जाना है और उन शनि मण्डलों को जान करके उसमें एक एक मण्डल को तपाने के लिए पांच पांच सूर्यों को हमने दृष्टिपात किया है और एक सूर्य में तीस लाख पृथ्वियाँ भ्रमण कर रही हैं। तो प्रभु! उसमें एक वेदमन्त्र आया है, ब्रह्मोग्नि वाचा प्रव्हे यह सब ब्रह्मग्नि में रमण कर रहे हैं तो प्रभु! हम उस ब्रह्मग्नि को जानना चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, शोभनी ऋषि ने भी उनके चरणों की वन्दना की और यह कहा कि प्रभु! हम वास्तव में उस ब्रह्माग्नि को जानने के लिए आए हैं। हमने यह श्रवण किया है कि आप इस विद्या को जानते हैं, आपने इस विद्या के ऊपर बहुत अनुसन्धान किया है। तो मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा, क्या तुम अब तक नहीं जाने हो? क्या ब्रह्मग्नि किसे कहते हैं उन्होंने कहा, प्रभु! हम नहीं जाने। हम मानो देखो, यन्त्रों के द्वारा, अनुभव के द्वारा, समाधि के द्वारा नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों में प्रवेश तो कर गए, परन्तु हम हम नाना प्रकार की आभा में रमण कर गए हैं परन्तु हम ब्रह्माग्नि को अब तक नहीं जाने हैं। क्योंकि हमें वह वेदमन्त्र कहता

है लोकां चरित्राणि असुतां देवा ब्रह्मवाचो अग्नि है, मानो देखो, वह ब्रह्म वाचा अग्नि है वह ब्रह्म का कृति कहलाता है। इतना तो हम जाने हैं परन्तु इसको हम अच्छी प्रकार नहीं जानते।

तो मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा शिव ने कहा, क्या, हे ऋषिवर! तुम जिज्ञासु हो, मैं तुम्हें इसका उत्तर सूक्ष्म दिए देता हूँ। तो मेरे पुत्रों! महाराजा शिव ने कहा, कि मानो जिन लोक लोकान्तरों को तुमने जाना है। एक एक रक्त के बिन्दु के ऊपर तुमने एक एक यन्त्र के ऊपर तुमने अनुसन्धान किया है, मानो देखो, वसुन्धरा पृथ्वी को जाना है। सूर्य प्रतिभा को तुमने जाना है। परन्तु इसमें सब ब्रह्माग्नि अपना क्रिया कलाप कर रही है यह भी तुमने जान लिया है। परन्तु उसके पश्चात् भी तुम्हें शंका बनी रही क्या ब्रह्माग्नि क्या है? जब तुम समाधि में चले गए, तो मानो तुम्हें ब्रह्माग्नि की कल्पना क्यों जागी है? मैं यह जानना और चाहता हूँ। महाराजा शोभनी ऋषि ने कहा, प्रभु! यह इसीलिए जागी है क्या हम उस अग्नि के ऊपर हमने लोक लोकान्तरों को दृष्टिपात किया है और दृष्टिपात करने के पश्चात भी हम ब्रह्माग्नि में जैसे यह पिरोए हुए हैं। हम ब्रह्माग्नि को भी जानना इसीलिए चाहते हैं कि कैसे पिरोई जाती है? असुतो ब्रह्मा यह तो हमने जान लिया मेरे पुत्रों! महाराजा शिव ने कहा, क्या ब्रह्माग्नि जब जानोगे, जब मानो देखो, तुम्हारा विचार, तुम्हारा एक एक परमाणु, तुम्हारे में मानो देखो, अहिंसा परमोधर्मी, अहिंसा में परणित हो जाए। अहिंसा में परणित कैसे होता है जैसे मानो यह जो तीनों गुण हैं रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण। सतोगुण पालन करता है, रजोगुण देखो, शासन करता है और तमोगुण उत्पत्ति का मूल कारण बना हुआ है। मानो देखो, उत्पत्ति होना और शासन होना, पालन होना मानो देखो, जब इन तीनों को तुम एक सूत्र में दृष्टिपात करोगे, मानो देखो, कहीं इसको विष्णु नामक तुम सतोगुण का नामोकरण पालन करने वाले को कहते हो, शासन करने वाला शिव कहलाता है मानो देखो, ब्रह्मा उत्पत्ति करने वाला है ऐसा तुम इनका नामोकरण उच्चारण करते हो।

जब इनको एक सूत्र में लाना चाहते हो, एक सूत्र में दृष्टिपात करना चाहते हो तो मानो देखो, यह जो तीनों गुण है यह जो त्रिवाद है त्रिवाद को जब एक सूत्र में ला करके,

मानो देखो, तीनों गुणों को एक सूत्र में पिरो करके तुम एकोकी सूत्र के ऊपर जिसमें यह तीनों गुण पिरोए हुए हैं, जब उसको जान लोगे तो उसके पश्चात् तुम ब्रह्माग्नि के समीप पहुंच जाओगे, क्योंकि देखो, जितना भी यह पृथ्वीवाद है, सूर्यवाद है जितना भी सृष्टिवाद है, यही तीनों गुणों के अन्तर्गत गतियाँ कर रहा है अथवा क्रिया कलाप कर रहा है और जिस समय तुम्हारा हृदय इससे उपराता को प्राप्त होगा इन तीनों गुणों से जब उपरामता को प्राप्त होगा तो तुम ब्रह्माग्नि के समीप जाने के लिए तत्पर हो जाओगे। क्योंकि जब तुम्हारा एक एक शरीर का परमाणु गति करता हुआ ब्रह्माग्नि में प्रवेश होने लगेगा, उस समय मानो तुम स्वतः अपने को ब्रह्माग्नि कहने लगोगे तो ब्रह्माग्नि तुमसे और तुमं ब्रह्मवाचो मानो देखो, द्वितीय भाव नहीं रहेगा, उसमें रत्त हो जाओगे। उस समय मानो देखो, एक वाद, ईश्वरीय वाद की विवेचना समाप्त हो जाएगी।

तो मेरे पुत्रों! देखो, भगवान शिव ने यह जब निर्णय दिया तो मुनिवरों! देखो, यह वाक् उन्होंने कहा, कि प्रभु! हम यह आपका वाक् स्वीकार तो हम कर रहे हैं हम कर रहें है कि उस काल में जब ब्रह्माग्नि में रत्त हो जाएंगे तो ब्रह्मग्नि में हम मानो रत्त हो करके अकृत जाएंगे तो प्रभु! हमारी जानकारी ही क्या रही? हम उसको और जानना चाहते हैं। उस समय उन्होंने कहा कि यह जानकारी जो है, यह अपवाद है। यह जो जानकारी है यह सब अपवाद है परन्तु देखो, जब उसमें लय हो जाओगे, अकृत हो जाओगे कि ब्रह्माग्नि वह ब्रह्मग्नि एक चेतना है, वह ब्रह्मग्नि है वह प्रकाशमयी है जिसके कारण देखो, यह पृथ्वी उसका आयतन बना हुआ है, जिसके कारण यह वायु उसका आयतन बना हुआ है जिसके कारण यह आपो उसको आयतन बना हुआ है, जिसके कारण मानो देखो, यह अवकाश यह आयतन बना हुआ है, यह ब्रह्माग्नि एक आयतन है। इस आयतन में जब तुम इसे अपना गृह स्वीकार करोगे, ब्रह्माग्नि में जब प्रवेश हो जाओगे तो यह तुम्हारा आयतन बनेगा। मानो देखो, नाना प्रकार का जो मानो तुम्हारे हृदय में जो अनेकवाद है वह तुम्हारे हृदय से अवृत हो जाएगा। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह वाक् जब शोभनी ऋषि ने श्रवण किया तो वह मौन हो गए उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! तो मेरे प्यारे! देखो, आध्यात्मिकवाद को भौतिक विज्ञान से उन्होंने बेटा! एक सूत्र में ला करके

ब्रह्माग्नि का निर्णय कर दिया।

तो विचार विनिमय क्या है पुत्रों! आज मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ तुम्हें केवल संक्षिप्त परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है क्या मुनिवरों! देखो, हम ब्रह्माग्नि में प्रवेश करना चाहते हैं, जिस अग्नि के ऊपर बेटा! सर्वत्र मानो देखो, आभा युक्त हो रही है। परमपिता परमात्मा का जितना ज्ञान है, विज्ञान है अथवा जितना भी यह जगत् है बेटा! उसके ऊपर निर्धारित हो रहा है। तो इसी प्रकार मानव को अपने में समाधिष्ट हो हो करके उन्होंने बेटा! प्रयास किया है क्या रजोगुण, तमोगुण, और सतोगुण से भी मानव को उपराम होना होगा, उसको भी त्यागना होगा। मेरे पुत्रों! देखो, उसके पश्चात् वह जो मोक्ष पगडण्डी है, विष्णु पुरी है उसमें प्रवेश हो जाओगे, अपने में प्रतिभाषित हो जाओगे। वेद जो प्रकाश है इस प्रकाश को जान करके संसार सागर से तुम पार हो जाओगे। तो आओ मेरे पुत्रों! मैं क्या विचार दे रहा था मुनिवरों! देखो, महाराजा हनुमान और शोभिनी। ऋषि दोनों दोनों अपने में बेटा! अनुसन्धान करते थे और महाराजा गणेश जी इसके ऊपर लेखनियाँ बद्ध करते रहते थे। क्योंकि लेखनी का सम्बन्ध मानव के हृदय से रहता है, मुनिवरों! देखो, मानव का की एक ऐसी हृदय ही उसकी प्रतिभा कहलाता है। जिससे मेरे पुत्रों! मानव का हृदय यह कहता है यह लेखनी तेरी अशुद्ध है और हृदय ही कहता है यह लेखनी तेरी मानो महान है देखो, हृदय ही इसकी प्रतिभा कहलाता है मेरे पुत्रों! देखो, वह ब्रह्म का आयतन कहलाता है। यह हृदय मानव का हृदय मानव का आयतन कहलाता है उसमें आत्मा वास करती रहती है।

तो आओ मेरे पुत्रों! मैं विशष विवेचना न देता हुआ, विचार यह चल रहा था बेटा! देखो, भिन्न भिन्न आभा में मानव को यह विचारना चाहिए। परमात्मा के समीप जो जाना चाहता है, मुनिवरों! वो जाना चाहता है जो मानव निराभिमानी बन करके यह कहता है और यह कहता है कि मैं इस विद्या को नहीं जानता। परन्तु देखो, द्वितीय बुद्धिमान के समीप जाते हैं उससे कहते हैं प्रभु! इस विद्या को तुम जानते हो? वह जितना निर्णय देना चाहता है, उतना निर्णय देता है। वह यह अभिमान न करे क्या यह नहीं जानता, यह मूर्ख है। यह मूर्ख नहीं है। कृतिघाती, यह पामर नहीं है। मेरे पुत्रों! देखो,

आगे बुद्धिमान के समीप पहुंचो। मुनिवरों! देखो, बुद्धिमान कहता है तुम योगियों के समीप जाओ! योगियों के समीप जाता है तो योगी कहता है मैं मानो देखो, योगी अप्रता मैं प्राण सूत्र तक पहुंचा हूँ। मैं प्राण सूत्र तक पंहुचा हूँ वह मुनिवरों! देखो, द्वितीय वैज्ञानिक के समीप जाता है। वह कहता है मैं केवल मानो देखो, ब्रह्म सूत्र में, प्राण सूत्र में अग्नि की धाराओं तक पहुंचा हूँ। आगे कहता है, आगे मुनिवरो देखो, कहता है लोक लोकान्तरों जिस प्रतिभा में पिरोए हुए हैं, मानो एक माला बनी हुई मैं उस माला तक पहुंचा हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, जब यह आता है क्या उस माला को जो धारण करता है, जो आयतन बनाता है बेटा! देखो, उस तक जाकर मानव मौन हो जाता है। प्रभु! की आभा में रमण कर जाता है और वह मुनिवरों! देखो, यहाँ अपने में मौन हो करके, अपनी प्रतिभा में, शान्त मुद्रित हो करके बेटा! अपने में यह अनुभव करता है कि मैं प्रभु के समीप चला गया हूँ। अनुभव क्या, मुनिवरों! देखो, यह भी उच्चारण करने में असमर्थ रहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, मानव को संसार में एक दूसरे की प्रतिभा को अकृत नहीं करना चाहिए। विचार विनिमय क्या? जो बेटा! अनुसन्धानवेत्ता होते हैं, जो निराभिमानी होते हैं, योगेश्वर होते हैं वह योगियों की कोटि में प्रवेश करके बेटा! योगियों से वार्त्ता प्रगट करते रहते हैं। परन्तु देखो, अपनी स्थलियों पर बाह्य जगत् रहता है। कल बेटा! मुझे समय मिलेगा मैं बाह्य जगत् के ऊपर अपनी कुछ चर्चाएँ दूंगा। मानो देखो, कुछ महानन्द जी के भी प्रश्न उत्तर होते रहते हैं, इनकी विचारधारा भी प्रारम्भ रहती है, परन्तु देखो, इनके कृतियों में वाक् रहते हैं, तो उनके इसके ऊपर भी प्रकाश दिया जा सकेगा।

विचार विनिमय क्या आज का हमारा वाक् क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए प्रभु की महिमा को जानते हुए, प्रभु की आभा में हम रमण करना चाहते हैं विचार विनिमय यह हो रहा था कि वह जो सूर्याणि गच्छ प्रवेः लोकाः बेटा! वह जो सूर्य है उसके अन्तर्गत बेटा! नाना पृथ्वियाँ गतियाँ कर रही हैं और सूर्य मानो देखो, शनि मण्डलों को प्रकाश देता है। पांच पांच सूर्य हैं जो प्रकाश देते हैं एक ही मण्डल को। तो बेटा! यह अनुपम जगत् है, यह प्रभु का विज्ञान है। यह प्रभु की

महत्ती मानी गई हैं। तो प्रत्येक वेदमन्त्र बेटा! प्रभु की गाथा का गान गा रहा है अथवा उसकी गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है। जैसे यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र उस ब्रह्म की गाथा गा रहा है और वर्णन कर रहा है क्या मानं ब्रह्मवाचों देखो, वह ब्रह्म क्या है? मेरे पुत्रों! विचार दे रहा है क्या यह बाह्य जगत् क्या है? इसके ऊपर बेटा! कल मैं एक वेदमन्त्र की तुम्हें विवेचना करूंगा जो बाह्य जगत् की चर्चाएँ आती हैं, जिससे बाह्य जगत् बन करके एक दूसरे में प्रतिभाषित हो रहा है।

यह वाक् बेटा! आज का अब हमारा समाप्त होने जा रहा है आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए बेटा! देखो, अपने में और अपने को प्रभु में स्वीकार करते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएं। यही बेटा! हमारा उद्देश्य है। जितना भी ज्ञान है, विज्ञान है, वह इसी के गर्भ में परणित रहता है। यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा, शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। अब वेदों का पठन पाठन होगा। स्थान : लाक्षागृह, बरनावा समय : दोपहर 3 बजे।

१६ 06 03 1984 पुष्प 45 ब्रह्मग्नि अग्नियों पर चर्चा

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत, अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। मानो वह सर्वज्ञता में मानो ओत प्रोत रहता है। वह एकोकी मानो सूत्र कहलाता है, जिस सूत्र में ये नाना प्रकार के मनके पिरोए हुए हैं। तो हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, मानव बेटा! उन सूत्रों को चह अपने में धारण अपने का प्रयास करता रहा है और उस माला को अपने कण्ठ में धारण करना चाहता है।

परम्परागतों से बेटा! वह अनुसन्धान कर रहा है। परम्परागतों से बेटा! आन्तरिक जगत् और बाह्य जगत् दोनों का समन्वय करता रहा है। परन्तु विचार आता है, कि जब आन्तरिक मुख हो जाता है, बाह्य जगत् को वह समेट लेता है अथवा वह सिमट करके आन्तरिक जगत् में प्रवेश करता है, तो बाह्य और आन्तरिक दोनों का एक स्वरूप बन जाता हैं दोनों की एक प्रतिभा बन जाती है। मानो वह प्रभु की महत्ती को अपने में निहारने लगता है।

तो बेटा! आज मैं तुम्हें विशेष विवेचनाओं में नहीं ले जाऊंगा। विचार केवल यह है कि मानव परम्परागतों से ही, नाना प्रकार के विचारों में विभक्त रहा है और वह विचारता रहा है ब्रह्म को एकोकी चरण में और अनेको की चरणों में प्रतिपादित करता रहा है। यह मैं कोई नवीन वाक्य तुम्हें प्रकट कराने नहीं आया हूँ। यह सदैव वाक्य वर्तमान बना रहता है। ये मानो न तो भूत काल है, न भविष्यत् है, केवल मुनिवरों! देखो, यह वर्तमान की एक रसता कहलाती है, जिसे एक रस कहते हैं वह प्रतिभाषित् हमारे अन्तर्हृदयों में होता रहता है।

तो आओ मुनिवरों! आज का हमारा वाक्य हमें कुछ प्रेरणा दे रहा है, हमें कुछ कृतियाँ दे रहा है। हमें एक आभा के लिए प्रेरित कर रहा है। मानो देखो, यज्ञं भविताः देवाः प्रत्येक मानव परम्परागतों से बेटा! याग के सम्बन्ध में, भिन्न भिन्न प्रकार की टिप्पणी करता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, कहीं ऋषि मुनियों ने इस याग को चित्रों में, निहारिकाओं में दृष्टिपात किया है। कहीं चित्रवेत्ताओं ने चित्रों का निर्माण करते करते चित्रों में दृष्टिपात किया है। हमारे यहाँ चित्रं देवः नाम का वर्णन आता है। आज का हमारा वेद का मन्त्र भी कुछ ऐसा कह रहा था चित्रं रथाः वह मानो देखो, चित्र रथ के रूपों में गति करता रहता है और मानव को वह दृष्टिपात आता रहता है। तो मेरे पुत्रों! विचार क्या मानो यही प्रसंग विचित्र हमारे आन्तरिक और बाह्य दोनों की प्रतिभा मानो इससे सुगठित रहती है।

तो आओ मुनिवरों! आज मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा हनुमान और श्वेतकेतु दोनों का महाराज शिव के द्वारा दोनों का विचार विनिमय

होता रहता था। मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने ब्रह्माग्नि के सम्बन्ध में विचित्र विचित्र प्रश्न किए तो महाराजा शिव उनका उत्तर देते रहे। मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा हनुमान ने कुछ वेदमन्त्रों को न्यौदा में, मन्त्रों की प्रतिभा का वर्णन किया और न्यौदा में से मन्त्रों का उच्चारण किया और उन्होंने कहा भविते देवाः ब्रह्मग्नि रुद्रो भागा प्रति देवाः उन्होने कहा प्रभु! ये मानो देखो, ब्रह्माकृति अग्निओं का वर्णन आ रहा है। क्या हे प्रभु! क्या यह सूर्य जो प्रकाश दे रहा है यह सूर्य जो बाह्य जगत् बना रहा है। यह कौन सी अग्नि कहलाती है? मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने यह वाक्य श्रवण किया। माता पार्वती एक स्थली पर विद्यमान हैं। महाराजा गणेश जी एक स्थली पर विद्यमान हैं। ब्रतकेतु और मुनिवरों! देखो, महाराजा हनुमान, अंजनी पुत्र एक स्थली पर विद्यमान हैं तब उन्होंने कहा हे हनुमन्तप्रहेः! तुम यह प्रश्न क्यों कर रहे हो? उन्होने कहा क्योंकि बाल्यकाल का नाम भी हनुमान का वृत्तिका कहलाता था। वह वृत्तिका ब्रह्मचारी कहता है कि प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ क्योंकि मेरी माता यह कहा करती थी जब मुझे वह बाल्यकाल में मुझे शिक्षा देती मानो देखो, यह यह कहा करती थी क्या तुम महाराज शिवं ब्रह्म वाचा मैंने शिव का तप किया है और मैंने अपने शिव को बाह्य जगत् में लाने का प्रयास किया है। मानो देखो, महाराजा शिव के नामोकरण मैंने कुछ मन्त्रों का उच्चारण किया है, जिसमें शिव का वर्णन आता है, मानो देखो, वह मेरे हृदय में अंकित हो रहे हैं। उन्हीं की शिक्षा दीक्षा मैं तुम्हें प्रदान कर रही हूँ। तो जब मेरी माता यह कहती थी जो मेरे मस्तिष्क का निर्माण हुआ है वह विज्ञान आभाएं मेरे हृदय और मेरे मस्तिष्क का दोनों का जो तारतम्य लग गया है उसमें नाना प्रकार की धाराओं का जन्म होता है। तो हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह जो मा सूर्य है इसमें कौन सी अग्नि भासित हो रही है जो बाह्य जगत् को तपाता है। कहीं माता के गर्भ में प्रवेश कर रहा है कहीं इसी अग्नि की नाना प्रकार की किरणों मानो देखो, जलाशयों में प्रवेश करती हैं, जलाशय का निर्माणं ब्रहे मानो उसको तपाती रहती हैं। वह कौन सी किरण ऐसी है जो समुद्रों की मानो देखो, मध्य में वह किरण है वह कान्ति है वह अग्नि है जो समुद्रों को तपाती

रहती है? तो प्रभु! मैं उस अग्नि को जानना चाहता हूँ।

मेरे पुत्रो! महाराजा शिव ने, कहा भगवान शिव ने कहा, हे शिवों ब्रह्मे हे हनुमान! मैं तप कर रहा हूँ। मैं मानो देखो, एकोकी का पालन कर रहा हूँ। मैं प्रभु की शरण में जाना चाहता हूँ और तुम मेरे समीप यह संसार की वार्त्ता को ले करके आए हो। इतना मुझे समय कहाँ है जो मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देता रहूँ। भगवान महाराजा शिव की वार्त्ता पान करते हुए महाराजा हनुमान ने कहा, ब्रह्मचारी व्रतकेतु ने कहा, हे प्रभु! ब्रह्मवाचो देवो ब्रह्मवा हे भगवन्! हम आपकी शरण में आए हैं। आप हमारे हृदय की वेदना को शान्त कीजिए क्योंकि हमारे हृदय की जो वेदना है वह जो हमारे हृदयों में मानो एक पिपासा जागरूक हो रही है, वह ज्ञानरूपी अमृत जब तक उसमें प्रवेश नहीं करेगा तो हमारे हृदय की पिपासा शान्त नहीं होगी। मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने ऐसा कहा, जान लिया कि यह जिज्ञासु हैं तो महाराजा शिव ने कहा, हे ब्रह्मचारी! मानो यह जो सूर्य बाह्य जगत् का निर्माण कर रहा है बाह्य जगत् को मानो ओजस्व दे रहा है, उसके द्वारा यह ब्रह्माग्नि तो है ही परन्तु द्यौ केतु, वाणिज्य केतु, स्वाकृतिका इन्द्र वाहिणिका के मानो देखो, नाना प्रकार की अग्नियों का चयन होता रहता है। इसमें भिन्न भिन्न प्रकार की अग्नियों का चयन होता रहता है जब मानो देखो, यही सूर्य की किरण माता के गर्भस्थल में एक ब्रह्माण्ड की रचना कर रही है। क्योंकि मानव का शरीर एक ब्रह्माण्ड के तुल्य कहलाता है और ब्रह्माण्ड की रचना हो रही है। तो मानो देखो, उसमें स्वातिकृतिका एक किरण होती है उसका प्रकाश जाता है बालक को प्रकाश आनन्दवत्त मानो उससे उसका बाह्य जगत् आभा में निर्माणित हो रहा है। मानो देखो, वही सूर्य है जो समुद्र की धाराओं में समुद्र के मध्य में एक मानो देखो, ऐसी दो योजन के लगभग कृतिकाम एक मानो देखो, जलाशय की धारा गमन करती है जिसके ऊपर बड़वानल नाम की अग्नि, रेणा केतु अग्नि, स्वानिकेतु अग्नि मानो देखो, इन अग्नियों का समावेश हो करके जल की धारा को तपाती रहती है और वही स्रोत पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करता रहता है। वही पृथ्वी की आभा में रत्त होता रहता है जिससे मानो देखो, समुद्र अपने में प्रतिभाषित और प्रकाशाम ले देखो, करके अमृत की धाराओं को जन्म देता रहता

है। अमृत की आभा में जगत् की आकृतियों में वह निहित रहता है।

तो विचार विनिमय क्या? महाराज शिव ने कहा व मानो वह जो इन्द्र नाम की किरण है वह अपनी आभा में गति करती रहती है। उससे यह समुद्र तपायमान रहता है। परन्तु जब तीनों अग्नियों में संघर्ष होता है, इन्द्र नाम की अग्नि बड़वानल नाम की अग्नि के ऊपर आक्रमण कर देती है। आक्रमण वो किस काल में करती है जब पृथ्वी के ऊपर जितना प्राणीमात्र है जब यह इस वायुमण्डल को दूषित कर देता है, जब यह वायुमण्डल को दूषित कर देता है अपने विचारों से दूषित कर देता है। पृथ्वी के गर्भ से खनिज को ले करके उस खनिज को बाह्य जगत् में मेरे पुत्रों! सूक्ष्म बना देता है और विज्ञान का दुरूपयोग हो जाता है, विज्ञान का दुरूपयोग होने पर इन किरणों में मानो देखो, ये पृथ्वी की तरंगें आ आ करके यह किरण को को ला करके, उन परमाणुओं को ला करके इन परमाणुओं का दोनों का संघर्ष होता है और जब संघर्ष होता है तो मुनिवरों! देखो, समुद्र में बड़वानल नाम की अग्नि के ऊपर मेरे पुत्रों! देखो, इन्द्र नाम की अग्नि आक्रमण करती है। जब यह आक्रमण करती है तो समुद्रों में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। जब वह अग्नि प्रदीप्त होती है तो उस काल में मुनिवरों! देखो, जल प्लावन आते रहते हैं। जब वह जल प्लावन आते हैं तो प्राणियों का विनाश होना प्रारम्भ हो जाता है। यह राजा राष्ट्र को एक प्रकार की मानो देखो, अपनी एक प्रतिशोध प्रकट करते रहते थे और प्रकृति का शोधन कहता है, हे राजा! तू अपने राष्ट्र को पवित्र बना। इससे तेरी विचार शक्ति पवित्र बनेगी। वह कहता है कि वह अपने में घोषणा कर रहा है। यह प्रकृति का आक्रमण घोषणा कर रहा है, हे ब्राह्मण! तू अपने में ब्रह्मत्व को प्राप्त करता हुआ ब्रह्मशक्ति को प्राप्त करता हुआ तू मानो देखो, उस प्रजा के विचारों का शोधन कर और जो राजा को मानो देखो, जो राजा बन गया है उस राजा को मानो देखो, घोषणा कर, हे राजा! तेरा जो निर्माण हुआ है वह केवल कर्त्तव्य का पालन करने के लिए हुआ है। तू प्रजा को एक अनुशासन देने के लिए हुआ हैं, यदि तेरे राष्ट्र में विचारों का प्रतिशोध हो जाता है, विचारों में घृणा हो जाती है, विचारों की प्रतिभा कृति हो जाती है विकृतता आ जाती है तो उन्हीं विचारों से इस वायु मण्डल का निर्माण होता है। इस

वायु मण्डल का जब निर्माण होता है, तो मानो देखो, के परमाणुओं में, अग्नि के परमाणुओं में मुनिवरों! देखो, भिन्न भिन्न प्रकार की सूर्य की जो किरणें गति कर रही हैं इनमें संघर्ष होता है। संघर्ष हो करके प्रकृति के नाना प्रकार के आक्रमण होते रहते हैं। तो विचार विनिमय क्या यह जो घृणा है यह भी मुनिवरों! देखो, एक प्रकार की बड़वानल नाम की अग्नि मानव के अन्तर्हृदयों में प्रवेश कर गई है। मानव के हृदय में जब यह प्रवेश कर जाती है तो इसकी ज्ञान वाहक जो नाड़ियाँ होती हैं जो विचार और चिन्तन करने वाली नस नाड़ियाँ होती हैं मानो देखो, इनका विनाश, यह मुनिवरों! देखो, अग्नि में भस्म हो जाती हैं और ज्ञान का विनाश हो जाता है। परिणाम क्या? मुनिवरों! देखो, इससे बाह्य आभा का जन्म हो जाता है। भगवान शिव ने बेटा! बहुत पुरातन काल में, महाराजा हनुमान से कहा, हे ब्रह्मचारी! व्रताः मानो देखो, इस अग्नि के ऊपर तुम्हें चयन करना है यह जो सूर्य की नाना प्रकार की किरणें इस पृथ्वी के परमाणुओं से, प्राणसूत्र में अपने विचारों को, परमाणुओं को ले करके मुनिवरों! देखो, आभा में गति कहलाती है। वायुमण्डल का अप्रेत हो रहा है। स्रोत हो रहा है उस स्रोत के लिए हमें सदैव अपने महानत्ता की आभा को धारण करना है। तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने भगवान शिव ने यह वाक्य कहा कि अर्जुनो ब्रह्मे अर्जुना ब्रह्म वाचो मानो देखो, यह जो एक अर्जुनात नामक एक वायु की तरंग होती है। उस वायु की तरंग का मानो समन्वय अग्नि की धाराओं से होता है और वह उन अग्नि की धाराओं का समन्वय सूर्य की किरणों से, श्वेत्ता नाम की जो किरण है, उससे होता है, जिसका सम्बन्ध गृहपथ्य नाम की अग्नि से रहता है। वह जो गृहपथ्य नाम की मानो अग्नि है अथवा धारा है उनका जब संघर्ष होता है तो मेरे पुत्रों! देखो, महाकृतियों में, बेटा! अग्नि के काण्ड प्रारम्भ हो जाते हैं विचारों के काण्ड मानो क्या राजाओं में सघर्ष होना प्रारम्भ हो जाता है। मेरी पुत्रियों के श्रृङ्गार को प्राणी हनन करने के लिए तत्पर हो जाता है।

तो विचार विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, मैं तुम्हें विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल तुम्हे परिचय देता चला जाऊं और वह परिचय क्या है जो भगवान मानो देखो, शिव अपनी चर्चा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कोई मानव प्रभु को पान करना चाहता है तो

मानव को अपने में मुद्रित होना ही है मुद्रित होना अनिवार्य है। जैसे मैं मानो देखो, गृह आश्रम को त्याग करके, मानो देखो, अपनी देवी से आज्ञा पा करके भयंकर वनों में आ गया और तप कर रहा हूँ। मैं अपने में मुद्रित होना चाहता हूँ। मानो देखो, मुद्रितता क्या है? मैं अपने कण्ठो ब्रह्म वाचो देवः मैं अपनी प्रवृत्तियों को ऐसा बनाना चाहता हूँ, जिससे सर्पों की माला बन जाए मेरे कण्ठ की। मानो देखो, कण्ठ में सर्पों की माला बन जाए। मेरी भुजाओं में मानो त्रिकोण अस्वता त्रिवर्धा उत्पन्न हो जाए। तो उन्होंने कहा कि मैं त्रिगुणों को जानने के लिए तत्पर रहूँगा। क्योंकि तीनों ही गुण ऐसे हैं संसार में जिन तीनों गुणों से यह स्वाभाविकता मानो अपनी अपनी धाराओं से सामान्यतव रहते हैं। जैसे मानव के हृदय में रजोगुण की प्रतिभाषिता हुई और तमोगुण की प्रतिभाषिता हुई। मानो देखो, रजोगुण, तमोगुण इन दोनों का एक ही तारतम्य रहता है। एक ही दोनों की धाराएं एकोकी में रमण करती रहती हैं। परन्तु विचार आता रहता है कि जब इन धाराओं का एक ही सूत्रों में धरणोसतो वाचन्नमां वाचों देवो वाचन्नमं ब्रह्म वाचों सम्भूति देवो ब्रह्म वाचा मानो देखो, इस प्रकार की धाराओं को ले करके मुनिवरों! देखो, अग्नि ब्रह्मा वाचक होती रहती है। तो मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा मैं उस अग्नि को धारण कर चुका हूँ जो अग्नि मानो शीतल बन करके आपो के रूप में आ गई है और आपो की रक्षा करती है। मैं एक समय मानो यह चिन्तन करने लगा हनुमान! क्या एक समय मेरे आश्रम में एक मानो देखो, रेणकेतु महाराज की कन्या आ गयी। मानो देखो, उस कन्या ने मुझे कहा, हे देव! मैं अपने गर्भ से महान् तपस्वी पुत्र को जन्म देना चाहती हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, उसने कहा कि आप मुझे कोई कुछ शिक्षा दीजिए। तो महाराजा शिव ने कहा, कि तुम आपोमयी जो ज्योति है, तू उसका पालन कर। मानो देखो, वह आपोमयी ज्योति का पालन करने लगी। वह अपने आश्रम को चली गयी। परन्तु मैंने चितंन प्रारम्भ किया कि मैंने आपोमयी ज्योति की उपासना करने के लिए तो मैंने कहा है परन्तु यह आपोमयी ज्योति है क्या? जो आपोमयी ज्योति कहलाती है तो मानो देखो, मैं अपनी सूक्ष्म दिव्य दृष्टि से मानो देखो, देवी के गर्भ में, जो आपो में जो तप हो रहा था, आपो में जो धारा गति कर रही थी, मैं उस आपोमयी धारा में

मानो देखो, दिव्य दृष्टि में प्रवेश कर गया। जब प्रवेश किया तो मानो देखो, आपो में एक बिन्दु होता है आपों में एक बिन्दु में परमाणु होता है उस परमाणु का समन्वय महतत्त्व से होता है। महतत्त्व का सम्बन्ध मानो चेतना से होता है। उसी चेतना का सम्बन्ध प्राण सूत्र से होता है। उसी प्राण सूत्र का सम्बन्ध परब्रह्म परमात्मा ब्रह्माग्नि से होता है। तो विचारा गया जब मैंने उसके समन्वय को उसकी मानो देखो, एक सूत्र को मैंने जानने का प्रयास किया तो उसी आपो का सम्बन्ध परमाणुओं से हो रहा है। उसी आपो का सम्बन्ध कृतिका से हो रहा है। तो मैंने देखो, उसी आपो का सम्बन्ध मानो देखो, शीतलता से हो रहा है। उसी आपो का सम्बन्ध सतोगुण से हो रहा है, उसी आपो का सम्बन्ध रजोगुण से हो रहा है, उसी आपो का सम्बन्ध तमोगुण से हो रहा है और तीनों मानो देखो, गुणों का जो समन्वय है, वह ब्रह्माग्नि के सूत्र में जब पिरोए जाते हैं तो बाह्य जगत् और आन्तरिक जगत् दोनों का एक ही सूत्र बना हुआ है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब भगवान शिव ने ब्रह्मचारी से कहा, हे ब्रह्मचारी! जब मैंने उसमें प्रवेश किया तो उसमें एक जो आपो है उस आपो को तपाने के लिए कहीं तो मानो देखो, सूर्य की सम्भूति किरण, बड़वानल नाम की अग्नि सम्भूति इन्द्र, कृतिका, कान्तिका, ऊषा, श्वेता श्वञ्जनी, मानो ये नाना प्रकार की जो किरणें थीं वह उसे नाना प्रकार की हवि प्रदान कर रही थीं। ला ला करके हवि प्रदान कररही थी शिशु को क्या लो यह हवि प्रदान करो मानो देखो, माता के रसना के निचले विभाग में एक अग्नि कृतिका नामक एक नाड़ी होती है। उस अग्नि से मानो कही देखो, नाना प्रकार की किरणों का सम्बन्ध रहता है और वह अग्नि और किरणों का जब समन्वय रहता है तो वह प्रत्येक परमाणु को ला ला कर अपनी स्थलियों पर स्थिर कर रही थी। जब यह स्थिर कर रही थी तो मैंने यह विचारा यह बाह्य जगत् कहलाता है। वास्तव में यही बाह्य जगत् है जो माता के गर्भस्थल में शिशु के रूप में विद्यमान है। उस शिशु के रूप को मुझे जानना है जो शिशु माता की लोरियों का पान कर रहा है। माता उससे निर्भय रहती है। मानो देखो, वह अभी तक उन किरणों की आभाओं में, देवताओं के लोक में वह पनप रहा है। माता चुम्बन कर रही है अपने कण्ठ में धारण कर रही है मानो देखो, वह

निर्भयता को अपना अनुभव कर रही है वही बाल्य मुनिवरों! देखो, जब युवा हो जाता है तो वही माता जो कल चुम्बन कर रही थी, मानो जो भूतकाल में चुम्बन कर रही थी वही माता वर्तमान काल में उस बालक से मानो देखो, अपने को कृतिका अनुभव कर रही है। यह अनुभव कर रही है बालक मेरा युवा हो गया है। मुझे अपने अंग प्रत्यंगों को बालक के समीप नहीं लाना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, यह कैसी मेरे प्रभु की रचना और भावनाओं का जगत् है? मेरे पुत्रों! देखो, माता उससे देखो, जो कल जो माता निर्भय थी आज उससे मानो देखो, भय से परणित हो रही है। मुनिवरों! उसके मूल में क्या है? यह बाह्य जगत् है। उसके मूल में रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण की जो प्रतिभाषिता किरणों ने प्रदान कर दी है, देवताओं ने जो उसमें भरण कर दिया है, मुनिवरों! वह बलवती जब हो जाता है, बाह्य जगत् की आभा रचना में मेरे पुत्रों! देखो, जब वह अन्धकार की कृतिका आ जाती है तो उस काल में बेटा! यह बाह्य जगत् की प्रतिभा का जन्म होता है।

तो मेरे पुत्रो! विचार विनिमय क्या, बेटा! भगवान शिव ने कहा, हे ब्रह्मचारी! यह बाह्य जगत् बन गया है। परन्तु यह बाह्य जगत् भी ब्रह्माग्नि से पिरोया हुआ है परन्तु ब्रह्माग्नि शान्त हो गई है। वह ब्रह्माग्नि अपने में कृतिकातिक हो गई है। मानो देखो, जब मैं उस अग्नि को ले करके, ब्रह्माग्नि के मानो देखो, अकृतों को त्याग करके, जब मैं यह चाहता हूँ मुझे वह जो शिशु बना रही थी, माता जिसका चुम्बन कर रही थी इसी प्रकार मैं अपने विचारों को बनाना चाहता हूँ। भगवान शिव ने कहा, हे ब्रह्मचारी! मुझे यह प्रतीत है क्या, जिस समय तुम अंजनी की लोरियों का पान करते थे, तो अंजनी तुम्हें शिक्षा देती रहती थी। मानो देखो, एक समय मैं भ्रमण करता हुआ, तुम्हारे गृह में प्रविष्ट हुआ, तो तुम्हारा जीवन ऐसा था, ब्रह्मचारी! क्या मानो देखो, एक सर्पराज आया और सर्पराज से बाल्यकाल में तुम्हारा खिलवाड़ हो रहा है। सर्पराज से तुम्हारा जब खिलवाड़ हो रहा है तो वह सर्पराज पर बालक आक्रमण कर रहा है, सर्पराज उसे अपने में मानो सहन कर रहा है। अपने में प्रतिभाषित कर रहा है। तो क्या हे ब्रह्मचारी! वह बाल्यकाल तुम्हारा नहीं रहा होगा, अब इस प्रकार का। मानो देखो, उस बाल्यकाल, उस शिशुकाल

को लाने के लिए मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्म के समीप पहुंचना है। जब वह बाल्य प्रवृत्ति मानव के अन्तर्हृदय में, मेरे पुत्रों! ज्ञान को समेट करके चली जाती है तो वह बाल्य प्रवृत्ति ही मुनि प्रवृत्ति बन जाती है और मुनि प्रवृत्ति बन जाती है तो ब्रह्माग्नि, ब्रह्म के समीप चला जाता है। तो परिणाम क्या? हे हनुमंतो ब्रह्मे! हे बालक! हे ब्रह्मचारी! मानो देखो, जब मैंने तुम्हारे चयन को दृष्टिपात किया था, वह चयन मैं अच्छी प्रकार जान गया। इसी चयन को ले करके मैंने माता के गर्भ में अपनी दिव्य दृष्टि से अपनी आन्तरिक भावनाओं को पहुंचाया। अपनी आन्तरिक योग की तरंगों से प्रवेश करके मैंने उसका अनुभव किया है।

अपनी कृतिकाओं में तृप्त हो मेरे पुत्रो! देखो, मुझे स्मरण है कि महाराजा! शिव ने एक पोथी का निर्माण किया था किसी काल में, जिस पोथी का नाम मानो देखो, शिशु वाचिका कहलाती थी, शिशु वाचिका नामक एक पोथी थी मानो देखो, उसका बेटा! हमने भी किसी काल में अध्ययन किया था। परन्तु आज तो मैं उस अध्ययन की प्रवृत्ति में नहीं जा रहा हूँ। विचार केवल यह है कि उन्होंने मानो देखो, वह अपनी प्रवृत्तियों को ले जा करके अपनी आभा में मानो आभाषित होते हुए, उन तरंगों से उन्होंने बाह्य जगत् में प्रवेश किया। भगवान शिव ने कहा, हे ब्रह्मचारी! मानो देखो, मैं वह जो शिशु माता के गर्भ में विद्यमान था और वह जो देवता गण वह सूर्य की नाना प्रकार की किरणों उस बाल्य को तपा रही थीं, अग्नि के रूप में, किरणों के रूप में, कान्ति के रूप में, शीतलता के रूप में, मानो देखो, शीतल प्रवृत्ति को मैंने अपने में, देखो, बाह्य जगत् में लाने का प्रयास किया और जब बाह्य जगत् में लाने का प्रयास किया तो मानो बाह्य जगत में मैं लाया भी परन्तु देखो, वही प्रवृत्ति मैंने भान की कि जिस शिशु के मानो देखो, वही शिशु सर्प के रूप में है वही शिशु सिहं राज के रूप में है वही शिशु मानो देखो, मृगराज के रूप में है। वही शिशु मुनिवरों! हिंसक प्राणियों के हृदय में है और वही शिशु देखो, अहिंसावादियों के हृदय में प्रवेश करता रहता है। जब दोनों का एकोकीकरण हो जाता है जब मानो दोनो प्रवृत्तियों का एकोकीकरण हो जाता है तो वह शिशु महान् आपो में प्रवेश करता हुआ आपोमयी बन करके वह शीतलता को लाता है।

उसकी तरंगे जब शीतल हो जाती हैं, उसका ज्ञान भी शीतल हो जाता है, उसका विज्ञान भी शीतल बन जाता है और वही शीतल तरंगें जब हिसंक प्राणियों के मानो देखो, बड़वानल नाम की अग्नि में प्रवेश करती हैं तो अग्नि शान्त हो जाती है। वह अग्नि अपने में प्रतिभाषित हो जाती है। पुत्रों! तो मुनिवरों! देखो, उस समय योगेश्वर अपने में यह स्वीकार कर लेता है कि सर्पराज मेरे कण्ठ में आ रहा है। सर्पराज मेरी माला बनी हुई है। मानो हिंसक प्राणी मेरे चरणों की वंदना कर रहे हैं क्योंकि मेरे जो आपो में शीतल परमाणु हैं वह बड़वानल नाम की अग्नि के ऊपर मानो आक्रमण कर रहे हैं। वह अपने विचारों में देखो, परमाणुओं को शान्त कर रहा हैं और शुद्ध, सात्विक परमाणुओं का आदान प्रदान हो रहा है।

तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! मैं तुम्हे विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ केवल परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है मानो देखो, जो ब्रह्मचारी को, मेरे पुत्रों! देखो, वह भगवान शिव ने किसी काल में वर्णन किया था, उन्होंने कहा था क्या हे ब्रह्मचारी! मानो देखो, तुम्हें यह अनुभव है यह नाना प्रकार की सूर्य की किरणों मानो देखो, प्रत्येक प्रत्येक सूर्य की किरण मानो पृथ्वी के ऊपर विद्यमान रहती हैं, माता के गर्भस्थल में पार्थिव परमाणुओं में ये किरणें आदान प्रदान करती रहती है। मानो देखो, यही किरणें हैं, जो अन्तरिक्ष में सम्पर्क हो करके प्रकृति के विशाल आक्रमण हो करके, मानो देखो, जल प्लावन आ करके राष्ट्रों के राष्ट्र मुनिवरों! देखो, अग्नि के गर्भ में प्रवेश कर जाते हैं। पृथ्वी के बहुत से भाग हैं निचली स्थलियों में प्रवेश कर जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वह परमाणु बन करके अन्तरिक्ष में गति कर जाते हैं। विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! विचार मैं विशेष देना नहीं चाहता हूँ तो आज मैं तुम्हें यह वर्णन कराने के लिए आया हूँ क्या मुनिवरों! देखो, भगवान शिव और व्रतकेतु हनुमान का विचार विनिमय चल रहा था। वृत्तिका समभूति ब्रह्मा वाचन्न नमे ब्रह्म वाचो मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्म वाच को हमें अपने में स्वीकार करना है। तो उन्होंने कहा, मैंने इस प्रवृत्ति को अपनाया है। मेरा जो श्रृङ्गार है वह त्रिभुज कहलाता है। हे हनुमान! मेरा जो भुज है मेरे भुजों मे त्रिभुज है मानो देखो, मेरा श्रृङ्गार यह सर्पों की

माला है। मेरा जो श्रृङ्गार है मानो देखो, वह देखो, हिंसक प्राणियों का जो वृत्ति का आसन है वह लगा हुआ है मैं उसको दमन करना चाहता हूँ। उसी अग्नि से मैं अपने को ब्रह्मचर्य बना करके, ब्रह्मचर्य भोज बना करके मैं उसका पिपाद बना करके उस ब्रह्मवर्चोसि को ब्रह्म के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ। मानो देखो, जब मैं ब्रह्मचर्य को अपनी आभा में ले जाता हुआ कृतिका धनस्वस्ति ब्रह्मा मानो ब्रह्म के समीप ले जाना चाहता हूँ, यह मेरी आकांक्षा रहती है। मैंने यह जो रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण का जो त्रि गुण है मैंने अपने में धारण किया है मानो देखो, इससे भी मैं उपराम होना चाहता हूँ, मानो देखो, रजोगुण में भी सतोगुण है, सतोगुण में भी रजोगुण है। मेरे पुत्रों! एक दूसरे के गुण, एक दूसरे में पूरक हैं। कोई भी रजोगुण जब अति हो जाता है तो वह पाप का मूल बनता है। तमोगुण जब अति हो जाता है तो वही पाप का मूल बन जाता है। जब सतोगुण विशेष बन जाता है तो जानो कि वह सतोगुणों से भी उपराम होना चाहता है। वह गुणातीत होना चाहता है। मेरे पुत्रों! देखो, गुणातीत बन करके वह प्रभु के आँगन में, प्रभु की गोद में प्रभु के उस आनन्दमयी स्वरूप को अपने में पान करना चाहता है। जैसे माता का पुत्र व्याकुल हो रहा है। माता का पुत्र व्याकुल होता हुआ क्षुधा से पीड़ित हो रहा है। माता सतोगुण में प्रवेश करती हुई अपनी प्रवृत्तियों को, बालक को अपने हृदय से आलिंगन कर लेती है, उसका चुम्बन करती है। चुम्बन करती हुई लोरियों को पान कराती है। उसकी सतोमयी जो तरंगें होती हैं वह बालक के उदर में प्रवेश करती है और उदर में प्रवेश करके मानो देखो, उन्हीं तरंगों से बालक के हृदय का, मस्तिष्क का, बुद्धि का, सर्वत्रता में मानो देखो, उसमें उत्सव तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! विचार यह है क्या यह मानव का बाह्य जगत् कहलाता है। और बेटा! आन्तरिक जगत् वह है जो मानव की एक एक इन्द्रिय के विज्ञान को जानना चाहता है मेरे पुत्रों! देखो, करता रहूँगा विरक्त रहता है को विजय करना चाहता है, एक एक इन्द्रिय के विज्ञान को जानना चाहता है। मैं इस विज्ञान की चर्चाएं करता रहूँगा क्योंकि मानव उसी के प्रकाश में रक्त रहता है। भगवान शिव ने कहा, हे हनुमान! यह जो मानव है यह अन्धकार में जाना नहीं चाहता है। यह प्रकाश में रहना चाहता है। प्रकाश इसे

प्रिय लगा करता है। इसीलिए देखो, प्रकाश में रक्त हो जाना चाहिए, मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने यह कहा कि मैं इसको अपने में धारण करके एकोकी सूत्र बनाना चाहता हूँ। एकोकी सूत्र में अपने को पिरोना चाहता हूँ। क्योंकि मैं एक मनका हूँ और ये जो ब्रह्म सूत्र एक धागा है, यह सूत्र है इसमें जिसमें यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है। इस सूत्र को जानना प्रत्येक प्राणी के लिए बहुत अनिवार्य हैं मेरे पुत्रों! देखो, मानव के हृदय में घृणा का स्रोत मानव की बुद्धि का विनाश कर देता है। सात्विक परमाणुओं का विनाश कर देता है। मानो देखो, प्रकृति के जब आक्रमण होते रहते हैं तो मुनिवरों! वे भी संघर्ष के रूप में परणित होता रहता है।

आओ, मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, तुम्हे केवल उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ मेरे पुत्रों! देखो, यह जो सूर्य है यह आभामयी कहलाता है, मुनिवरों! देखो, यह रजोगुण, तमोगुण की एक धारा कहलाता है। यही उत्पत्ति का मूल कारण है। मेरे पुत्रों! तमोगुण आता है तो उसमें भी शिशु की उत्तेजना वहाँ भी बड़वावृत्तिका कहलाती है। मेरे पुत्रों! जब इसमें रजोगुण की प्रतिभा आती है वहाँ भी एक आकृति कहलाती है। सतोगुण में भी सत्य और अग्नि की धाराओं का, शिशुओं का कृतिकाओं में जन्म होता रहता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या आज का विचार बेटा! मैं तुम्हे दे रहा हूँ बेटा! आज का विचार हमारा यह कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा को अपना ज्ञान और विज्ञान का पुंज स्वीकार करें। अपने में यह स्वीकार करें कि यह जो जड़ जगत् है, अथवा चैतन्य जगत् है सर्वत्र जगत् में यह ब्रह्म पिरोया हुआ है विचार आता है कि ब्रह्म वाचा देवाः मेरे पुत्रों! मुझे कल समय मिलेगा कल मैं तुम्हे जड़ और चैतन्य की चर्चा कर सकूंगा क्या जड़ और चेतन ब्रह्म जो पिरोया हुआ है अथवा जड़ जगत चैतन्य जगत देनों मानो देखो, वह ब्रह्म में वह ब्रह्म ही प्रतीत होता रहता है यह चर्चाएं बेटा! मैं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करें। भगवान शिव ने मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी से कहा, हे ब्रह्मचारी! तुम्हारा बाल्यकाल मुझे स्मरण है। तुम बाल्यकाल में जब अंजनी की गोद

में लोरियों का पान करते थे तो देखो, वह जो मेरी पुत्री अंजनी थी वह सदैव भगवान शिव की आराधना करती रहती थी परमात्मा की आराधना करती रहती थी और मानो देखो, वह यही चाहती थी क्या ये मेरा पुत्र विज्ञान का स्रोत बने। सूर्य का तप करती रहती थी क्योंकि शिव नाम सूर्य को भी कहते हैं। पर्यायवाची में सूर्य के तप में, किरणों में तपाती रहती थीं। मानो देखो, कुछ औषधियों का पान कराती रहती थी। मेरे पुत्रों! देखो, माता अंजनी ने एक सूर्यकेतु नामक एक औषध होती है और उसका नाम ही सूर्यवृत्तिका हैं एक औषध है सेलवृत्तिका जिसका सम्बन्ध चन्द्रमा से होता है। उसको देव वृतिका कहते हैं एक गारिडका होती है, एक चकामृत्युका होती है। मानो देखो, इन औषधियों का पिपाद बना करके और मानो देखो, सूर्य की किरणों में इसका पिपाद तपा करके मानो देखो, बुद्धि और सर्वत्र शरीर का देखो, उसमें लेपन करके, मुनिवरों! देखो, उन औषधियों की तरंगें देखो, बालक की नस नाड़ियों में, और मस्तिष्क में प्रवेश करती, मेरे प्यारे! उसे स्वस्थ बनाती रहती थी और स्वस्थ बना करके वह विज्ञान मस्तिष्क में प्रवेश करने से उसी के द्वारा सूर्य की किरणों में विशेष रूचि हो जाती है। परिणाम क्या? मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ यह विद्याएं परम्परागतों से माताओं के हृदय में रही हैं। मैं इन औषधियों के सम्बन्ध में या विशेष, आयुर्वेद में जाना नहीं चाहता हूँ। आयुर्वेद की विद्या में मैं प्रवेश करना नहीं चाहता हूँ केवल तुम्हें परिचय देना चाहता हूँ कि यह औषधि विज्ञान कितना विशेष, कितना महान् है? क्योंकि जिन औषधियों में सूर्य की किरणों का विशेष प्रभाव होता है। मानो जिनमें चन्द्रमा का कान्ति का विशेष प्रभाव होता है।

अब मैं बेटा! इससे आगे की चर्चाएं, मैं बेटा! तुम्हें कल प्रकट करूंगा। आज का वाक् समाप्त। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि भगवान शिव ने मानो देखो, मानो देखो, हनुमान को नाना प्रकार की गाथाएं प्रकट कराई और उनके जीवन की आभाएं प्रकट कराते हुए, उन्होंने कहा, तुम बड़े विशेषज्ञ हो। तुम्हारा मानो देखो, बाह्य जगत् आन्तरिक जगत् दोनों से समन्वय है, सूर्य विद्या पर तुम्हारा अधिपथ्य है। मानो देखो, वह बाह्य जगत् में जो इस विद्या को जानना चाहता है वह अपूर्णता में रहता है।

आन्तरिक जगत् में प्रवेश कर लेता है आन्तरिक जगत में पूर्ण से पूर्णता को प्राप्त कर लेता है। यह है मुनिवरों! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रकट करूंगा। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा। लाक्षागृह, बरनावा समय दोपहर : 3.00 बजे।

१७ 07 03 1984 पुष्प 45 ब्रह्माण्ड में सर्वत्र परमात्मा की महिमा

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का, गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महत्ती का वर्णन करते रहते है, क्योंकि वे महिमावादी है। उसका जितना भी ये जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा था। क्योंकि हमारे यहाँ दो प्रकार का यह जगत् माना गया है। एक जड़वत् है तो एक चैतन्वयवत् है। मानो वह हमारी दृष्टि में जड़वत् माना गया है।

जब ब्रह्माग्नि के समीप अथवा प्राण सूत्र की हम चर्चा करते हैं, तो वह भी हमें जड़वत् में दृष्टिपात नहीं आ रहा है। केवल उसमें एक चेतना है, प्राण सूत्र में पिरोई हुई है। परन्तु वह हमें जड़वत् दृष्टिपात आती है। क्या मानो देखो, जड़वत् उसे कहते हैं जो दूसरों की सहायता से शक्ति ले करके, दूसरे से ऊर्जा से करके, अपने को प्रतिभाषित करता है। तो मानो देखो, वह जड़वत् के रूप में परणित किया गया है। जैसे हमारा वेदमन्त्र कह रहा था जड़ो ब्रह्मा गो असुति देवाः मानो यह संसार जड़वत् के रूप में दृष्टिपात आ रहा है। इसके ऊपर मैं विशेष टिप्पणियाँ अथवा विचार विनिमय करने के लिए तो नहीं आया हूँ, केवल परिचय दूंगा और वह परिचय क्या है? इस वेदमन्त्र को ले करके आज हम बेटा! उसी स्थली पर जाना चाहते हैं, जिन स्थलियों पर विद्यमान हो करके, ऋषि मुनि बेटा! अपना अनुसन्धान करते रहे। क्योंकि प्रत्येक मानव के हृदय की जो वेदना है, अथवा उसका जो विज्ञानमयी स्वरूप है उसके ऊपर वह अपनी

महानता और उसकी महानत्ता की दोनों का समन्वय करने के लिए तत्पर रहता है।

तो मुनिवरों! देखो, ऋषि मुनियों का एक ही मन्तव्य रहा है क्या, बिन्दु से व्यापक और व्यापक को बिन्दु में दृष्टिपात करना। तो मानो इस प्रकार का यह विचार परम्परागतों से प्रारम्भ हो रहा है अथवा ये गति कर रहा है। एक परमाणुओं का जो संघर्ष हो रहा है, मानो उसका जो विभाजन अथवा उसकी जो प्रतिक्रिया होती है, विभाजन के पश्चात् वह एक महान् और विचित्र मानी गई है। बेटा! जब यह विचार आता है कि दार्शनिकजन अथवा वैज्ञानिकों का इसमें क्या मन्तव्य रहा है? मैं उस मन्तव्य पर तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में, नाना ऋषि मुनि बेटा! अपना अनुसन्धान अथवा अन्वेषण करते रहे हैं, विचार विनिमय करते रहे हैं।

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण है, जिस काल बेटा! देखो, समुद्रों के तटों पर, मेरे पुत्रों! देखो, एक समय महाराजा, अंजनी पुत्र हनुमान की मैं चर्चा कर रहा था, व्रेतकेतु की चर्चा हो रही थी। महाराजा शिव और माता पार्वती की भी चर्चा आ रही थी। हमारे यहाँ बेटा! परम्परागतों से ही, जहाँ मानव विज्ञान में रत्त होता रहा है, वहाँ मेरी पुत्रियां, माता भी अपना विज्ञान में महान पारायण रही हैं। जहाँ आध्यात्मिक विज्ञान मानव के अन्तःकरण में प्रवेश रहा है वहाँ मुनिवरों! देखो, विज्ञान और दार्शनिकवाद, विज्ञान और देखो, आध्यात्मिकवाद माता के हृदय से उसकी तरंगों का जन्म होता है। मेरे पुत्रों! मैं आज तुम्हें विशेषता में नहीं ऐसी मेरी पुत्रियां, मुझे स्मरण है जिन पुत्रियों के गान स्वरूप से ही मेरे पुत्रों! देखो, सर्पराज अपनी गति को शान्त कर देते। मानो देखो, मृगराज अपनी हिंसा प्रवृत्ति को दमन कर देते। तो ऐसा उद्गीत गाना ही हमारा कर्त्तव्य हैं ऐसा उद्गीत कौन सा है जिस उद्गीत को गान गाने से, मानो स्वरों से मधुर स्वर से जो उच्चारण और जिस मधुर स्वर में निर्भयता, हृदय की वेदना, आत्मीय चर्चा, हों वह जो मधुर गायन है, उद्गीत है बेटा! देखो, उससे प्रत्येक प्राणी वशी वर्णित हो जाता है। वह एक वशीकरण है, जिसको मानव मेरे प्यारे! विश्व को अपने में वशीभूत करने लगता है।

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या? मैं गायन या उद्गीत की विवेचना देने के लिए नहीं

आया हूँ बेटा! यहाँ प्रत्येक परमाणु संघर्ष करता हुआ गान गा रहा है, वायु वेदमयी गान गा रही है। अग्नि का जब मिश्रण जल के समीप होता है, तो बेटा! शीतलता का गान हो रहा है। मुनिवरों! देखो, जब इसी अग्नि में मानो वायु में अग्नि के परमाणुओं का भरण हो जाता है तो यह उद्गीत गाती रहती है। मानो उद्गीत गाती हुई मेरे पुत्रों! देखो, यही सूर्य की किरणों से अपना समन्वय करती हुई, इन्हीं किरणों का सम्बन्ध मुनिवरों! देखो, वह समुद्रों से होता है और समुद्रों से मधुर बेटा! वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है। मैं उस काल में जाना नहीं चाहता हूँ जिस काल में, मेरे पुत्रों! देखो, यहाँ ऋषि मुनि गान गा करके और वृष्टि की आभा को परणित करते रहे है। अग्नि काण्डों को शान्त करते रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, जल प्लावन को अपने रूपों में मानो देखो, धारण करते रहे हैं।

आओ मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है एक समय बेटा! महाराजा शिव और देखो, गणेश उनका पुत्र दोनों विद्यमान थे। तो मेरे पुत्रों! देखो, एक समय मानो देखो, विकृति बन गई और विकृति क्या? मानो देखो, वायु में अग्नि का प्रवेश हो गया और वायु में बड़वानल नाम की अग्नि का प्रवेश हो गया मानो देखो, यह जो ग्रह पृथ्वी को तपाने लगे। वह अति तपने के पश्चात् प्राणी का ह्रास होने लगा। जब प्राणियों का ह्रास होने लगा तो मुनिवरों! देखो, गणेश जी अपने पिता और माता के चरणों की वन्दना करने लगे और माता पिता की वन्दना करते हुए यह कहा क्या हे प्रभु! हे पितर! यह क्या हो रहा है? हे ममतव! हे माता! यह प्राणी तो ह्रास में जा रहा है। यह पृथ्वी अग्नि देखो, वायु से समन्वय करके यह विषों को वमन कर रही है। यह विष कैसे शान्त हो? तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार की विद्या वैदिक साहित्य में आती रहती हैं।

उन्होंने बेटा! जब स्वरों से गान गाना प्रारम्भ किया। बेटा! मध्य रात्रि में वह गान गाया जाता है, जब गान गाने लगे गान की जब स्वर ध्वनियाँ होने लगीं तो बेटा! ऐसा मुझे स्मरण है, पुत्रों! ऐसा काल मैंने श्रवण किया है क्या मुनिवरों! देखो, मेघों से मुनिवरों! देखो, वृष्टि प्रारम्भ होने लगी। जब मेघों से वृष्टि प्रारम्भ हुई तो मुनिवरों! देखो, यह विद्या जैसे गणेश जी पर यह विद्या थी, यह विद्या मुनिवरों! देखो, महाराजा हनुमान

जी भी जानते थे, इस विद्या को मेरे प्यारे! सम्पाति भी जानते थे, इस विद्या को मुनिवरों! देखो, कागभुषुण्ड जी भी जानते थे, इस विद्या को महर्षि लोमश मुनि भी मुनिवरों! अपनी गायन मंजरी में परणित करते रहते थे। तो आज मुनिवरों! मैं ऋषि मुनियों के क्षेत्रों में जाने के लिए नहीं केवल परिचय देना चाहता हूँ और वह परिचय क्या है, मुनिवरों! देखो, जड़वत् को मानो देखो, वृष्टि रूप में अपनी वैज्ञानिकता के द्वारा ऊर्ध्वा शक्ति देना। यह मुनिवरों! देखो, जड़वत् में वही विद्यमान हो करके बेटा! वृष्टि का रूप धारण कर लेता है। तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं राष्ट्रीय आभा में परणित करना चाहता हूँ। हमारे यहाँ राष्ट्र की पद्धतियों में भिन्न भिन्न प्रकार की मानो पद्धतियों का वर्णन आता रहता है।

जैसे हमारे यहाँ अश्वमेध याग की चर्चाएँ आती रहती हैं, अग्निष्टोम याग की भी चर्चाएँ आती रहती हैं। नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है। परन्तु उन यागों का मन्तव्य क्या? मानो देखो, परम्परागतों से याग की पद्धतियाँ चली आ रही हैं, वे मानव के हृदय में भी उन पद्धतियों का मानो एक नृत्य होता रहा है। वे पद्धतियाँ क्या हैं? मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्रवाद में भी सबसे प्रथम राष्ट्र की पद्धति, में बेटा! याग का चलन बहुत अनिवार्य माना गया है। क्यों माना गया है? क्योंकि यज्ञ एक शुभ कर्म हैं, यज्ञ एक मानव की आत्मीय कर्म है। याग एक देवताओं की पूजा है और देवता मानो वह जड़वत् में हो, चैतन्य में हो परन्तु उसमें देखो, याग दोनों में प्रवेश कर जाता है। जैसे मुनिवरों! देखो, यज्ञमान याग कर रहा है, स्वाहा उच्चारण कर रहा है, उससे अग्नि को उत्सव प्राप्त होता है उत्साह होता है, अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। मानो अपनी श्रद्धामयी जब घृत की आहुति यज्ञमान मानो अग्नि में प्रवेश करता है तो उस अग्नि का चयन ऊर्ध्वा में गति करने लगता है। मानो देखो, जो जड़वत् अग्नि हमें दृष्टिपात आ रही थी, उसी अग्नि के परमाणु हमारे शरीरों में प्रवेश होते हैं तो चैतन्य से उस जड़वत् का मानो दोनों का समन्वय रहता है। जब दोनों का समन्व्य रहता है वही परमाणुवाद मानव के शरीर में, घ्राण के, प्राण के द्वारा जब प्रवेश करते है, उससे मानो देखो, इस शरीर का वायुमण्डल पवित्र बन जाता है। बाह्य जगत् में जब यह मानव

प्रवेश करता है, तो बाह्य जगत् में वह परमाणु वायुमण्डल में प्रवेश हो रहा है। उस वायुमण्डल वाले परमाणु में, इस आन्तरिक परमाणु दोनों का जब समन्वय होता है अथवा मिलन होता है तो मुनिवरों! देखो, यह एक मानो देखो, जड़ और चैतन्य दोनों का समन्वय होते हुए दोनों हमें एक सूत्र में दृष्टिपात आने लगते हैं।
मेरे पुत्रों! मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें विवेचना देते हुए कहा था, मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ देखो, महाराजा हनुमान इतने विशाल वैज्ञानिक थे। मुझे उनके विज्ञान की चर्चाएं, मैंने तुम्हें कई काल में प्रगट की थी, मानो मुझे मेरे पुत्रों! महानन्द जी ने मुझे प्रगट कराया। जिनकी चर्चाए कल मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने दो विचार प्रगट भी करेंगे। परन्तु आज तो केवल इतना उच्चारण करने आए हैं कि महाराजा हनुमान का विज्ञान बड़ा विशाल था। महाराजा हनुमान, महाराजा श्वेत्तानन्द मानो देखो, यह और भी ब्रह्मचारी समुद्र के तट पर बेटा! देखो, विज्ञानशाला में अनुसन्धान करते रहते थे, अन्वेषण करते रहते थे, अनुसन्धान करते रहते थे, परमाणुओं का आदान प्रदान करते रहते थे। सूर्य की किरणों के साथ वह गमन करते रहते थे। सूर्य की किरणों के साथ यन्त्र गति करके मानो देखो, शत्रु का विनाश करके, यन्त्र उनके ही आँगन में प्रवेश कर जाता था। इस प्रकार के मानो सूर्य की किरणों के साथ उनका यन्त्र गति करता रहता था। तो मानो इस प्रकार का विज्ञान हमारे मानवीय मस्तिष्कों में, ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में, बेटा! नृत्य करता रहा है।
आज मैं तुम्हें उस विज्ञान में ले जाना नहीं चाहता हूँ। आज उस विज्ञान की मैं चर्चा नहीं कर रहा हूँ, केवल तुम्हें यह विचार देने के लिए आए हैं क्या परमपिता परमात्मा जो जड़वत् में, चेतन्वयवत् में विद्यमान है, इस चेतना का और जड़वत् का, दोनों का परस्पर समन्वय रहता है। दोनों का परस्पर जब समन्वय रहता है तो दोनों में ही जड़वत् में भी और चेतन्वयवत् में दोनों में मेरा देव विद्यमान रहता है। यदि दोनों में विद्यमान नहीं रहता तो दोनों का समन्वय नही हो सकता था। चैतन्य का, जड़वत् का समन्वय नहीं हो सकता था मानो देखो, जड़वत में एक गति है, चेतना है परन्तु देखो, उसमें ज्ञान शून्य है, और जो मुनिवरों! देखो, जो चैतन्य है वह ज्ञान में रत्त रहने वाला है

जहाँ मुनिवरों! देखो, जीवात्मा विद्यमान रहता है। जहाँ आत्मा विद्यमान रहता है वहाँ यह ज्ञान होता है। मानो देखो, उसको आहार का, व्यवहार का प्रत्येक वस्तु का ज्ञान होता है, विज्ञान में रत्त रहने वाला होता है। मानो देखो, जो जड़वत् है उस जड़वत् में केवल गुण है परन्तु देखो, उसमें गति नहीं है, उसमें ज्ञान नहीं है, वह केवल प्राण सूत्र से गति कर रहा है, वह प्राण सूत्र से ही मानो देखो, अपने में सुगन्धि प्रवेश कर रहा है। धारणा को अपने में धारण कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, उससे वह बलवती भी हो रहे है, देखो, ऊर्ध्वा में गति करके एक स्थली पर वह स्थिर भी हो जाते हैं। केवल वह प्राण सूत्र में पिरोए हुए हैं। जैसे पर्वत है, पर्वतों में गुण हैं, नाना प्रकार के धातु पिपाद का निर्माण हो रहा है। मेरे पुत्रों! वह निर्माण हो रहा है पृथ्वी देखो, जड़वत् है, परन्तु निर्माण कर रही है, खनिज को दे रही है। उसी का सम्बन्ध मानव के जीवन से विशेष होता है। मानव के जीवन से, चेतना से, उसका समन्वय रहता है। मानो देखो, समन्वय से ही वह दोनों एक सूत्र में पिरोए हुए रहते हैं।

तो आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना में जाना नही चाहता हूँ मेरे प्यारे! देखो, एक समय मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब मुनिवरों! देखो, बालक हनुमान मुनिवरों! देखो, विद्यालय में प्रवेश करते थे। वह मेरे प्यारे! देखो, महर्षि टोटलक ऋषि महाराज के यहाँ बेटा! देखो, अनुसन्धान और वह बाल्य शिक्षा को अध्ययन करते थे। मानो जब वह अध्ययन करते थे तो वह टोटली ऋषि महाराज से यह कहा करते थे कि भगवन! मैं यह जानना चाहता हूँ क्या, यह जो जड़वत् है, चैतन्यवत् है, इसमें दोनों में क्या अन्तर्द्वन्द्व है? उन्होंने कहा, दोनों में कोई विशेषता नहीं है, दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। जैसे मानो देखो, लोक लोकान्तरों हैं वह जड़वत् में दृष्टिपात आते हैं परन्तु उनका धीमा धीमा जो द्यौ से प्रकाश, वह जो प्राण सूत्र में प्रकाशित हो रहा है, मानो देखो, उनका धीमा धीमा प्रकाश आ रहा है, गतियाँ हो रही हैं। मानो चेतनावत् का नेत्र से उसका समन्वय रहता है और समन्वय रह करके मानो वह अपने में प्रकाशित और विज्ञान की धाराओं को अपने में लाने का प्रयास कर रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, बालक जब मुनिवरों! देखो, वह विद्यालय से किसी काल में उसे अवकाश प्राप्त होता तो बेटा! वह माता

अंजनी के द्वार पर पहुंचते। माता अंजनी से कहते सम्भवा देवा हिरण्यं रथा दिव्यं गता मानो देखो, वह माता के चरणों को स्पर्श करके कहते, हे माता! क्या आप भी इस सम्बन्ध में जानती हो कि जड़वत् में, चैतन्यवत् में कौन सा अन्तर्द्वन्द्व है?

तो मेरे प्यारे! माता ने कहा, पुत्र! मैं जानती हूँ परन्तु मैं इतना नहीं जानती जितना ऋषि जानते हैं। परन्तु माता से कहते हैं कि माता जानती हो तो निर्णय दो। तो मुनिवरों! देखो, अंजना यह उच्चारण करती, क्या हे पुत्र! जड़वत् का हमारे से समन्वय रहता है। यह जो पृथ्वी के गर्भ में जब मैं किसी काल में प्रवेश करती थी, तो मानो देखो, इसके गर्भ में जो निर्माण की शक्ति है, निर्माण का जो नृत्य हो रहा है, उसमें जो प्राण संचारित हो रहा है उस प्राण सूत्र में मानो देखो, ज्ञान नहीं है, वह ज्ञान से शून्य है परन्तु एक गति है, उस गति का मन से, प्रकृति से, जब समन्वय शून्य से होता है तो मानो नाना प्रकार के परमाणुओं का उद्गीत उत्पन्न होता है और वह जो परमाणुओं का उद्गीत है उनका दोनों का संघर्ष होता है। परमाणुओं का जब परस्पर संघर्ष होता है तो उससे मानो नाना प्रकार की तरंगे उद्बुद्ध होने लगती हैं और वह तरंगें जैसे उद्बुद्ध हुई? वही मानव के मस्तिष्को से उन तरंगों का समन्वय होता है। आत्मा की जो भावना है, आत्म जो चेतना है उस चेतना का, उन तरंगों का जब परस्पर समन्वय होता है तो विज्ञान के परमाणुओं का संघर्ष होना प्रारम्भ हो जाता है। वह मानव विज्ञान के युग में प्रवेश करने लगता है जहाँ से उस तरंग का उदबुद्ध हुआ है जहाँ से उस तरंग का निकास हुआ है वहाँ तक मानो वह अपनी मेघावी बुद्धि को ले जाता है वहाँ तक मेधावी को ले जा करके हे पुत्र! वह अपने में मानो देखो, विज्ञान को धारण करने लगता हैं। मेरे प्यारे! जब माता इस प्रकार का पुत्र को उद्घोष करती है तो माता का पुत्र मानो चरणों की वन्दना करके कहता है, हे माता! क्या तुम इस तरंग को कैसे जानती हो? उन्होंने कहा हे पुत्र! जब मानो देखो, मैं शान्त मुद्रा में, किसी काल में विद्यमान हो जाती हूँ तो प्रभु की सृष्टि को निहारती रहती हूँ और प्रभु की जो यह अनुपम सृष्टि है वह इतनी अनन्तवत् मानी गई है क्या मानो देखो, इन्द्रियों के ऊपर हम विचार करते

हैं, तरंगों के ऊपर, पञ्चमहाभूतों के ऊपर जब विचार विनिमय करते हैं।
तो मानो देखो, वह जो शमं ब्रहे कृतां देवा यह पञ्चवृत्तिका कहलाती है मानो देखो, इससे जब हमारा समन्वय होता है, हमारी धाराएं उससे मिलान करना प्रारम्भ करती हैं तो मानो देखो, वही उद्गीत, उद्घोष हो मेरे अन्तर्हृदय में एक प्रकाश, की तरंग उत्पन्न हो जाती है वह प्रकाश वह ज्ञान का कुंज है, वह मानो देखो, स्थिरता का कुंज कहलाता है। तो मेरे प्यारे! माता से हनुमान यह कहते हैं हे माता! क्या देखो, इस साधना से इसका क्या समन्वय रहता है? तो मुनिवरों! देखो, माता कहती है, हे बालक! मैं जब बाल्यकाल में अपने पूज्यपाद रोहिणीकेतु मुनि के द्वार पर अध्ययन करती थी, तो मेरे आचार्य यह कहा करते थे कि साधना का अभिप्रायः केवल यह है कि हम जितना भी यह बाह्य जगत् है, आन्तरिक जगत् है, दोनों का हम जब समन्वय करते हैं, दोनों का जब हम मिलान करते हैं तो हमें आत्म चेतना एक प्रकाश का कुंज दृष्टिपात आने लगती है। जैसे कोई मानव कहता है कि सूर्य का प्रकाश से ही मानव प्रकाशित नहीं होता। वह मानो देखो, जब प्रति है मानो जब आत्म चेतना के ऊपर हम प्रवेश करते हैं, आत्म चेतना पर रत्त हो जाते हैं तो आत्म चेतना में जब हम प्रवृत्तियों को ले जाते हैं, बाह्य जगत् को समेट करके जब प्रवेश कर देते हैं तो मानो देखो, आत्म चेतना का प्रकाश भी हमें प्रकाश ही प्रकाश दृष्टिपात आता है। कोई मानव वह इकाई की इकाई कहलाती है। मानो वही प्रकाश प्राण सूत्र की धारा कहलाती है। वही मानो देखो, प्रकाश ब्रह्म का कुंज कहलाता है जिस ब्रह्माग्नि में मानव प्रवेश करना चाहता है।
विचार विनिमय क्या? मेरे पुत्रों! देखो, माता के द्वार से जब ब्रह्मचारी लोहित ऋषि महाराज के द्वार पर जाते मानो देखो, जब वह लोहित ऋषि महाराज के द्वार पर जाते तो वह आचार्य से यह प्रश्न करते कि हे प्रभु! एक समय मेरी माता मानो देखो, मगध राष्ट्र में पहुंची थी और मगध राष्ट्र में मेरी माता और मैं दोनों मानो देखो, जब बाल्यकाल में था जब मगध राष्ट्र में पंहुची तो देखो, वहाँ एक गन्धर्व रहता था और वह गन्धर्व मानो सूर्य की परिक्रमा करता था। क्या भगवन! उस गन्धर्व को आप जातने हैं? तो मेरे प्यारे! देखो, लोहित ऋषि कहते, क्या हे ब्रह्मचारी! मैं मानो देखो, उस गन्धर्व को जानता

हूँ। तो हनुमान जी कहते कि महाराज! उस गन्धर्व को मुझे प्रगट कराइए। वह गन्धर्व कौन सा है जो सूर्य की परिक्रमा करता रहता है? तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, प्रथम भवः सम्भवते देवतस्वः प्रवः वाचननम् ब्रह्मः वाचो तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता हे ब्रह्मचारी! तुमने इस वेदमन्त्र की आख्या को जाना है अथवा नहीं? मानो देखो, इस वेदमन्त्र की प्रतिभा यह कहती है, इसकी आख्याकि यह कहती है क्या मानो यह जो नाना पृथ्वियाँ हैं यह सूर्य की परिक्रमा करती रहती हैं। सूर्य के अन्तर्गत गतियाँ करतीं रहती हैं तो मानो देखो, यह मगध ब्रह्मे यह वह गन्धर्व कहलाता है, जो गन्धर्व इस सूर्य की परिक्रमा करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ क्या मगध राष्ट्र में मानो देखो, वह जो गन्धर्व था, उस गन्धर्व ने एक समय मानो देखो, मेधावी से यह प्रश्न किया था, क्या तुम उस गन्धर्व को जानते हो जिस गन्धर्व का मानो देखो, सूर्य की परिक्रमा करता हुआ, वह सोहित आभा में रमण करने वाला गन्धर्व है क्या उस सोहित वाले मानो देखो, उसमें प्रवेश करता है उस गन्धर्व को तुम जानते हो? मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, प्रभु! मैं नहीं जानता। मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि गन्धर्व कौन है? तो मेरे प्यारे! देखो, लोहित ऋषि महाराज ने ब्रह्मचारी को चरणों में ओत प्रोत करके कहा, क्या वह जो गन्धर्व है मानो देखो, वह पृथ्वी के और सूर्य के मध्य में मानो देखो, सूर्य का, पृथ्वी का मिलान कराता है, वह गन्धर्व कहलाता है। उन्होंने कहा, हे प्रभु! मैं एक वाक् और जानना चाहता हूँ, एक समय मेरी माता ने यह कहा था, हे बालक! तू ब्रह्मचारी हो करके तू मानो देखो, उस आचार्य के समीप जो अध्ययन कर रहा है मानो तेरा आचार्य अप्रतो ब्रह्मः वाचः, मैं यह जानना चाहती हूँ हे ब्रह्मचारी! क्या वह गन्धर्व जो सूर्य और पृथ्वी के मध्य में जो मानो देखो, इन दोनों का मिलान कराना जानता है एक समय वही गन्धर्व ब्रह्माग्नि के समीप पहुंचा, तो ब्रह्माग्नि के समीप जा करके मानो देखो, वह गन्धर्व कहता है, हे अग्ने! तू मानो उस गन्धर्व को जानती हो, जो आत्म चेतना का ब्रह्म का मिलान कराना जानता है? तो उस अग्नि ने कहा, मैं नहीं जानती। मैं नही जानता।

तो मैं भगवन! मैं उस सूत्र को जानना चाहता हूँ? मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह

कहा, हे ब्रह्मचारी! तू तो बड़ा विचित्र है। तो उन्होंने कहा कि वह गन्धर्व मानो देखो, ब्रह्मचरिष्यामि है, वह गन्धर्व ब्रह्मचरिष्यामि है, जो मानो देखो, ब्रह्मग्नि का और ब्रह्मग्नि के समीप पहुंच करके वह ब्रह्म में लीन करा देता है वह ब्रह्म सूत्र कहलाता है। उन्होंने कहा, प्रभु! वह ब्रह्मसूत्र कौन सा ब्रह्म सूत्र है? उन्होंने कहा, वह ब्रह्म का सूत्र वह है जिसे हम ब्रह्म कहते हैं, ब्रह्मचरिष्यामि कहते हैं। चरी नाम प्रकृतिवाद का माना गया है और ब्रह्म नाम परमपिता परमात्मा का है। दोनों के समन्वय से सृष्टि का प्रादुर्भाव होता है। दोनों के मिलान से सृष्टि का प्रादुर्भाव हुआ और मानो देखो, वही सूत्र आत्म चेतना है जो दोनों के मध्य में विद्यमान हो करके वही अन्तरात्मा यदि प्रकृति के सूत्र में चली जाती है तो जड़वत् की उपासना करने लगती है। वह यदि ब्रह्म सूत्र में प्रवेश करना चाहती है तो ब्रह्म में लीन हो जाती है। तो मेरे पुत्रों! देखो, वह ब्रह्मचारी बोले कि हे प्रभु! यह वाक् मेरे आँगन में आ गया है जो माता मेरे से प्रश्न करती रहती थी। तो मुनिवरों! देखो, महाराज हनुमान, इतने बुद्धिमान मानो उनकी बुद्धि इतनी विचित्र थी कि सूर्य की जितनी विद्या थी जितनी किरणों थीं, उनके ऊपर देखो, बाह्य जगत् में, आन्तरिक जगत् में दोनों रूपों में उसका अनुसन्धान करते रहते थे।

मेरे पुत्रो! देखो, मुझे उनका जीवन जब स्मरण आता रहता है तो प्रायः हृदय गद् गद् हो जाता है और मैं यह कहा करता हूँ कि उन ब्रह्मचारियों का जो ब्रह्मवाचः है, मानो उनकी जो ब्रह्मशक्ति है, उनकी जो विलक्षण शक्ति है मानो देखो, वह सब ब्रह्मचारियों के हृदय में प्रवेश होती चली जाए, ऐसी मेरी सदैव कामना रहती है, विचार रहता है। इस विचाराधारा को ले करके मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाता है।

मेरे प्यारे! देखो, माता अंजना अपने बालक को तपस्वी बनाने में उससे उत्तर प्रश्न करती रहती थी। जब भी माता के समीप ब्रह्मचारी जाता, आचार्य से अवकाश प्राप्त होता, तो उनसे वह प्रश्न करती रहती थी। मानो देखो, एक समय उन्होंने यह कहा, क्या ब्रह्मो वाचप्रव्हे व्रतां उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! तुम मानो देखो, उस वाजपेयी याग को जानते हो, जिस वाजपेयी याग से यह संसार सुन्दर बनता है। उन्होंने कहा, मातेश्वरी! मैं जानता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी उस विद्या को जानते थे जिन ब्रह्मचारियों को उन

विद्या को भरण कराते थे जिसके गान गाने से उद्गीत की उत्पत्ति हो जाए। वही उद्गीत मेरे प्यारे! देखो, अग्नि का स्वरूप धारण कर जाए। वही उद्गीत जल का, आपो का रूप धारण कर जाए। उसी से मेघों की उत्पत्ति हो, जाए उसी से मुनिवरों! देखो, अग्नि काण्डों में देखो, वह मेरे पुत्रों! देखो, अवृत होता चला जाए। विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! देखो, वही दीपावली व्रत बनता चला जाए।

तो आज मैं बेटा! विशेष विवेचना न देता हुआ, तुम्हें यह परिचय देने आया हूँ क्या मुनिवरों! देखो, हम अपने जीवन को कितना महान् बना सकते हैं? मेरे प्यारे! देखो, महाराजा गणेश और देखो, ब्रहे मुनिवरों! देखो, हनुमान का दोनों का परस्पर मित्रता थी, दोनों का विचार विनिमय चलता रहता था, दोनों मानो देखो, पार्वती माता के समीप विद्यमान होते, उनसे भिन्न भिन्न प्रकार की शिक्षा लेते रहते थे। मेरे पुत्रों! देखो, जब विचार आता है तो वही जब विचार आता गम्भीर तो महाराजा शिव से प्रश्न करते रहते थे। मेरे प्यारे! देखो, एक समय महाराजा हनुमान ने यह कहा, महाराजा शिव ने से क्या भगवन! मैं मैं उस अमर वाणी को श्रवण करना चाहता हूँ जिससे मानव अमरावती को प्राप्त हो जाता है उस अमरावती को मैं जानना चाहता हूँ भगवन! तो मुनिवरों! देखो, महाराजा शिव यह कहा करते थे क्या वह अमरावती वाणी है जिसको पान करने से, धारण करने से अपनी आत्म चेतना में एक महानत्ता की ज्योति प्रवेश कर जाए यागां ब्रह्म लोकां हिरण्यं रथा जिससे यह समाज पवित्र बन जाए, तुम्हारा जीवन भी महान् बन जाए। मानो देखो, कैसे जीवन महान् बनता है? मन कैसे पवित्र बन सकता है, तपस्या से, तपस्या का अभिप्रायः क्या है? मन को पवित्र बनाना। मन पवित्र और इन्द्रियाणी गच्छतं इन्द्रियों के पवित्र होने पर मन की तरंगें पवित्र बनती हैं और मन की पवित्र तरंगें होने पर बुद्धि बन जाती है। बुद्धि से मेधा और मेधा से ऋतम्भरा प्रज्ञावी बन करके वह मानव प्रभु! से वार्त्ता प्रगट करता रहता हैं वह मानव की अमरावती वाणी है। वह अमरावती पुरी में चला जाता है। विचारता रहता है, यह प्रत्येक मानव अपने में रत्त रहता है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना, तुम्हें बहुत दूरी ले गया हूँ। विचार यह चल रहा

था जितना भी यह मुनिवरों! देखो, जितना यह जड़ जगत् और चैतन्य जगत् है मानो उस सर्वत्र जगत् में बेटा! उस ब्रह्म उसके मूल में दृष्टिपात आ रहा है। मेरे प्यारे! जैसे माता का पुत्र, माता ही माता दृष्टिपात आ रही है, पुत्र को दृष्टिपात करके, इसी प्रकार जड़वत् में, चैतन्यवत् में दोनों का जब परस्पर समन्वय होता है उसमें एक ब्रह्मसूत्र ही दृष्टिपात आने लगता है। बेटा! वह ब्रह्म सूत्र है, उसको अपने में पिरोना है। परन्तु देखो, यह अप्रता ब्रह्म वाचो देवाः मेरे प्यारे! विचार क्या है क्या आज हम बेटा! विज्ञान के युग में तो प्रवेश करना नहीं चाहते हैं। विज्ञान एक अपनी धारा में विशाल माना गया है। मानो देखो, दोनों प्रकार के विज्ञान को जड़वत् में जानना ही मेरे पुत्रों! देखो, वह आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करना है। हम जब जड़वत् को यह जान लेते हैं कि हमारी प्रत्येक इन्द्रियों में परस्पर दोनों के समन्वय होने से जैसे नेत्रों से, सूर्य और अग्नि दोनों का समन्वय रहता हैं इसी प्रकार घ्राण से पृथ्वी का समन्वय रहता है। श्रोत्रों से दिशाओं का समन्वय रहता हैं मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक इन्द्रियों का अपना अपना समन्वय रहता है। उस सर्वत्र विज्ञान को जान करके, प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को जान करके हम हृदय रूपी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, बेटा! आत्मा यज्ञमान बन करके, उसमें आहुति देता रहता है। आहुति दे करके वह आहुति मानो देखो, जड़वत् को शून्य बनाने वाली है। और जड़वत् का उससे समन्वय हो गया है, चेतन्वय का उससे समन्वय हो गया है। दोनों का मिलान करने से मेरे पुत्रों! देखो, वह ब्रह्म उसमें दोनों को कटिबद्ध करने वाली एक ब्रह्मचेतना मानी गई है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें आज विशेष विवेचना देना नहीं चाहता हूँ जैसे सूर्य है। सूर्य एक मण्डल कहलाया जाता है। जिस सूर्य मण्डल में बेटा! मैं जब प्रवेश करता हूँ उसके विज्ञान में प्रवेश करने लगता हूँ तो बेटा! यह तो सूर्य है, इसकी मानो तीस लाख पृथ्वियाँ गन्धर्व बन करके बेटा! इसकी परिक्रमा करती रहती हैं। ऐसा वैज्ञानिकों का, ऐसा ऋषि मुनियों का मत माना गया हैं परन्तु देखो, जो उनके अनुभव में यह वाक् आए हैं। परन्तु देखो, यह सूर्य है यह सूर्य एक आभा में रत्त होता रहता है। एक मण्डल है हमारे यहाँ जो एक मानो देखो, सौर मण्डल की धारा में रहता है, जो एक

निहारिका में रहता है, उस मण्डल का नाम रोहिणी कृति वर्णचकेतु मण्डल कहलाता है। मानो देखो, उस मण्डल को मेरे प्यारे! देखो, उस मण्डल के समीप रोहिणी कृतिका मण्डल के समीप लगभग मुनिवरों! देखो, बहत्तर शनि हैं। जो मेरे प्यारे! उस मण्डल की परिक्रमा करते हैं और मुनिवरों! जैसा हमारा यह सूर्य है जो एक एक ऐसे पांच सूर्य एक शनि को बेटा! देखो, पांच सूर्य प्रकाशित करते रहते हैं। और ऐसे बहत्तर शनि हैं जो उस मण्डल की परिक्रमा करते रहते हैं। मानो देखो, बहत्तर शनि उसमें समाहित हो जाते हैं। तो बेटा! देखो, प्रभु का विज्ञान कितना विशाल है? मानो देखो, इसी प्रकार और तुम ऊर्ध्वा में गति करोगे बेटा! तो कहीं कहीं ऐसा दृष्टिपात आता है कि एक रोहिणी वांचकेतु कृतिभा अस्वानं ब्रह्मे वाचो कृति असुतो देवा एक कृतिका नक्षत्र है, उस कृतिका नक्षत्र के लिए बेटा! देखो, बहत्तर सूर्य प्रकाश देते हैं, एक कृतिका को बहत्तर सूर्य प्रकाश देते है और मुनिवरों! देखो, एक रोहिणीकेतु मण्डल कहलाता है रोहिणी कृतिका मानो देखो, वह जो कृतिका नक्षत्र है। वह बहत्तर नक्षत्र हैं बेटा! देखो, जो उसकी परिक्रमा करते रहते है तो विचार क्या? मुनिवरों! देखो, इस प्रकार एक मण्डलों की धाराए एक माला बनी हुई है। वह मानो देखो, जड़वत् है परन्तु एक दूसरे के सहायक बने हुए हैं। एक दूसरे के पूरक बने हुए हैं। एक दूसरे को सहायता दे करके, मेरे प्यारे! देखो, इन चैतन्य और जड़वत् दोनों का जब समन्वय होता है। तो उनमें बेटा! मानो ब्रह्मसूत्र बेटा! हमें दृष्टिपात आने लगता हैं तो मेरे पुत्रों! मैं आज कौन से युग में चला गया हूँ, यह तो युग बड़ा विचित्र युग है। मानो इस आभा में तो मैं जाने के लिए नहीं आया जब मैं यह विचारता हूँ कि निहारिकाओं के क्षेत्रों में प्रवेश करता हूँ, तो बेटा! ये बड़ा विचित्र एक लोक लोकान्तरों का एक मण्डल दृष्टिपात आता है। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है क्या वेदमन्त्र कहता है कि जड़ और चैतन्य दोनों में ही ब्रह्म दृष्टिपात आता है। तो मानो देखो, जड़वत् हम उसे कहते हैं जो ज्ञान से शून्य हैं क्योंकि लोक ज्ञान से शून्य है, परन्तु उससे तरंगें आ रही हैं। प्राण सूत्र में जो पिरोई है। तो परमाणुओं की जो गतियाँ हैं, उनका जो परमाणुओं का जो पिण्ड बना हुआ है उस पिण्ड में से तरंगें आ रही हैं। और वह तरंगें मुनिवरों! देखो, उस

चैतन्यवत् को प्रभावित करती हैं। इस चैतन्यवत को मेरे प्यारे! को चेतना में रत्त करती हुई मुनिवरों! देखो, उसमें गति परमाणुओं का जब एक संघर्ष हो करके तरंगों का जन्म होता है वही तरंगें मुनिवरों! देखो, ज्ञान और विज्ञान का कुंज बन जाती हैं। वही ज्ञान विज्ञान का कुंज बनती है।

मेरे पुत्रों! देखो, एक समय मुझे स्मरण है ब्रह्मचारी सुकेता ने मेरे पुत्रों! भारद्वाज मुनि से यह कहा था, तुम क्या करते हो? तो मुनिवरों! देखो, सुकेता ने कहा, प्रभु! मैं अध्ययन करता हूँ। मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि ने एक वेदमन्त्र उच्चारण किया, और वह वेदमन्त्र क्या था, सम्भविता ब्रह्म वाचो वर्णनं ब्रह्म वाचाकृत देवाः हे सुकेता! यह वेदमन्त्र क्या कहता है? उन्होंने कहा, प्रभु! मैं नहीं जानता। उन्होंने कहा यह वेदमन्त्र यह कहता है क्या देखो, इस परमाणुवाद का संघर्ष हो रहा है और यह संघर्ष सूर्य की ऊर्ध्वागति में संघर्ष हो रहा है और उसकी तरंगें आ करके मानव की बुद्धि मानव की, मेधावी का निर्माण कर रही हैं। इसको तुम क्या जानते हो? क्या इसके सम्बन्ध में कुछ जानते हो? ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा, प्रभु! मैं इस सम्बन्ध में कुछ समय के पश्चात् इसका उत्तर दे सकूंगा। बेटा! वह कहीं मानो समुद्र के तट पर और वह मौन हो गए। मौन हो करके मानो तरंगों को निहारने लगे। जब समुद्र की तरंगो को निहारने लगे, मन को एकाग्र करके मेधावी के रूपों में बेटा! अपने को ले गए। जब मेधावी में ले गए तो ऐसा उन्हे दृष्टिपात हुआ ब्रह्मचारी सुकेता को क्या मानो देखो, कि वह समाधिष्ट हो गए। समाधिष्ट हो करके परमाणुओं की गति में प्रवेश कर गए और प्रवेश करके मानो वही परमाणु उनके लघु मस्तिष्क में गति करने लगे। लघु मस्तिष्क में कहीं बेटा! देखो, कहीं सूर्य मण्डल से ऊर्ध्वा में गति करता हुआ बेटा! एक रोहणीकेतु मण्डल था और रोहिणीकेतु मण्डल के ऊर्ध्वागति में एक स्वाति नक्षत्र था, दोनों से जो तरंगें आ रही थीं उन दोनों का संघर्ष हो रहा था और संघर्ष होते हुए वही मानो देखो, भ्रमण करती हुई वही देखो, आभा सूर्य की किरणों से मिलान करती हुई, मानो देखो, वह वशिष्ठ मण्डल से मिलान करती हुई मेघावी में प्रवेश हो करके मानो देखो, मेधावी बुद्धि का निर्माण कर रही थी। तो मेरे प्यारे! देखो, वह वाक् को ले करके बेटा! ब्रह्मचारी सुकेता, भारद्वाज मुनि के

समीप आया। भारद्वाज मुनि के यहाँ एक यन्त्र इस प्रकार का था बेटा! जो प्रत्येक मण्डल का परमाणु मानो देखो, तरंगों में तरंगित होता हुआ, सूर्य की किरणों के साथ में उनके यन्त्रों में बेटा! देखो, वह संघर्ष होता हुआ मानो दृष्टिपात होता रहता था।

तो मेरे प्यारे! मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाने के लिए नहीं आया हूँ, विचार यह देने के लिए आया हूँ, क्या प्रत्येक मानव को बेटा! अपने में महान बनना है प्रत्येक मानव को अपने में मानो देखो, विचित्र बन करके साधना के क्षेत्रो में प्रवेश करते हुए ब्रह्म को बेटा! देखो, जड़वत् में, चैतन्यवत् में, दोनों में दृष्टिपात करके, मेरे पुत्रों! देखो, प्राण सूत्र को जानने का प्रयास करना है।

आओ मेरे पुत्रों! आज, मैं तुम्हें विशेष विवेचना ने देता हुआ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ मानो तुम्हें केवल सूक्ष्म परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है, क्या यह ब्रह्माण्ड बड़ा विचित्र है ब्रह्माण्ड की धाराएं बड़ी विचित्र हैं इनको जानना और अपनी मेधावी को ऊँचा बनाना, बेटा! देखो, ज्ञान जड़वत् को, चैतन्यवत् को जान करके माता अपने जीवन में, अपने में तपस्वी बन जाएं और राजा अपने में तपस्वी बन जाए, तो मेरे पुत्रों! देखो, यह समाज भव्य और पवित्र बन करके, विज्ञान के युग की धाराओं को ले करके बाह्य जगत् को विचित्र बना करके परमपिता परमात्मा को जड़वत् में, चैतन्यवत् में दृष्टिपात करके बेटा! इस संसार सागर से हम पार हो सकते हैं। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, तो तुम्हें बेटा! शेष चर्चाए कल मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने दो शब्दों की विवेचना कर सकेंगे। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा। स्थान : लाक्षागृह, बरनावा समय : दोपहर 3.00 बजे।

१८ 08 03 1984 पुष्प 45 धर्म की रक्षा हेतु राष्ट्र निर्माण

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ यह पाठ्य क्रम परम्परागतों से ही, विचित्र माना गया है। प्रत्येक मानव वेदज्ञ ध्वनि में रत्त रहने के लिए मानो सदैव पिपासी रहता है और यह विचारता रहता है कि मैं ध्वनि में परणित हो जाँऊ। यह जो प्रकाश

की ध्वनि है इस प्रकाश की ध्वनि में ध्वनित होता हुआ अपने में महान् बनता चला जाँऊ। परन्तु वेद का मन्त्र, हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है। वेद प्रेरणा का स्रोत्र बना हुआ है, प्रत्येक मानव जब उससे प्रेरणा पा करके मानवीयतव में परणित हो जाता है तो अपने में वह आनन्द और सुखद अनुभव करने लगता है, क्योंकि वह अन्तरात्मा का ज्ञान है। वह मानो वेदज्ञ ध्वनि है, वह प्रकाश है। उस प्रकाश में प्रत्येक मानव अपने को रत्त करना चाहता है। परन्तु जहाँ हमारा वेदमन्त्र यह नाना प्रकार की वार्त्ता प्रगट कर रहा है, हमें नाना प्रकार की प्रेरणा दे रहा है, हम उस प्रेरणा को पाकर के प्रेरित हो करके, अपने को महान् बनाना चाहते हैं।

हमारे यहाँ जड़वत् और चैतन्यवत् की चर्चाएँ होती रहती हैं। मुनिवरों! यह जड़ जगत् और चैतन्य जगत्, जितना भी हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में मानो वह मेरा प्यारा प्रभु दृष्टिपात आता रहता है। वह प्रभु कितना अनन्त है, बेटा! कितना महान् है। मानव जब उसके ऊपर चिन्तन करता रहता है, मनन करता रहता है, उसकी सृष्टि को निहारता रहता है, अणु और परमाणुओं में रत्त हो जाता है, उससे से जब वह उपरामता को उसकी प्रवृत्तियाँ रत्त हो जाती हैं तो बेटा! उसे प्रकाश ही प्रकाश दृष्टिपात आता है। मेरे प्यारे! अज्ञान की प्रतिभा नष्ट हो जाती है। अज्ञान की आभा नष्ट हो करके प्रकाश की प्रतिभा, मानव के समीप आनी प्रारम्भ हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना वैज्ञानिक हुए हैं। उन वैज्ञानिकों में मेरे पुत्रों! देखो, कुछ आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता हुए, कुछ मानो भौतिक विज्ञानवेत्ता हुए हैं। कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ, कोई आध्यात्मिकवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो मेरे प्यारे! देखो, उस परमपिता परमात्मा की सृष्टि अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान में मुनिवरों! देखो, पारायण हो। क्योंकि उसका ज्ञान और विज्ञान अनन्तमयी माना गया है।

मेरे प्यारे! जब यह मानव किसी वस्तु को जान लेता है, तो बिखरे हुए परमाणुओं को एकत्रित करता हुआ मानो देखो, नाना प्रकार के विज्ञान के युग में प्रवेश कर जाता हैं ये प्राण सूत्र में प्रवेश करता हुआ, मानो देखो, प्राण ही एक ऐसा है जो जड़वत् और

चैतन्यवत् दोनों का समावेश करता है। दोनों का मिलान करता है। आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान दोनों को मेरे प्यारे! यह प्रणव ही समावेश मानो देखो, मिलान करता है। दोनों का समावेश करता हुआ, अपने में मानो देखो, रत्त रह करके अपने में अनुभव को, अनुभवि कृतिका दृष्टिपात आने लगती है। आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आज मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने दो शब्दों की विवेचना कर सकेंगे, क्योंकि इनका सदैव विचार राष्ट्रवाद और वेदना पर रहता है। इनकी जो आन्तरिक वेदना है यह बड़ी विचित्र मानी गई है। मेरे पुत्रों! देखो, मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने विचार व्यक्त करेंगे केवल दो शब्दों की विवेचना कर सकेंगे।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् गतौ सर्वं भद्रां वाचन्नमाः यज्ञनस्तप प्रमाणां देवं दधिमा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी, कुछ ज्ञान और विज्ञान की चर्चा कर रहे थे, क्योंकि इनका प्रत्येक जो क्षण है, वह ज्ञान और विज्ञान और वेद की वार्त्ता प्रगट करते रहते हैं। परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! जब साहित्य में प्रवेश करते हैं, तो इनका साहित्य भी मानो इतना मार्मिक और विचित्र माना गया है जिससे हम अनुभव करते रहते हैं कि पूज्यपाद गुरुदेव! कहाँ चले गए हैं, जब ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ने में तत्पर हो जाते हैं, नाना निहारिकाओं की चर्चा करते हैं तो हम यह विचारते रहते हैं क्या इनका इस सम्बन्ध में कितना अनुभव है? मानो ऋषि मुनियों की वार्त्ता ले करके कुछ अपने अनुभव की भी चर्चा करते रहते हैं। परन्तु जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है जिस काल में जा रही है जो वर्तमान का काल प्रारम्भ हो रहा है, मानो देखो, मैं इसी क्षेत्र में प्रवेश करना चाहता हूँ। मानो किसी भी क्षेत्र में जब मैं प्रवेश करता हूँ। तो मुझे एक अग्नि का काण्ड दृष्टिपात आता है, किसी भी क्षेत्र में प्रवेश करता हूँ। तो मानो मुझे अज्ञान की प्रतिभा दृष्टिपात आती है। अज्ञान एक ऐसा पामर कर्म प्रही व्रता है जिसके ऊपर हम कोई विशेष टिप्पणियाँ नहीं दे सकते।

मानो विचार विनिमय क्या है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कई समय हुआ माता अंजनी के सम्बन्ध में, हनुमान ब्रह्मचारी के सम्बन्ध में, मानो देखो, शिव और माता पार्वती और

गणेश के सम्बन्ध में, नाना प्रकार की विवेचना करते चले जा रहे थे। जब मैं विचारता हूँ यह संसार, इन विचारों से पूज्यपाद गुरुदेव के विचारों से कितना दूरी चला गया है? कितना दूरी इस सम्बन्ध में विचार विनिमय करता है तो मेरा हृदय मानो दुःखित हो जाता है और मैं यह कहता रहता हूँ, हे मानव! समाज! हे वर्तमान के काल! तू कहाँ जा रहा है? बहुत समय से मानो देखो, काल में विकृतता आती चली जा रही है, जैसा मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराया था। जहाँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ये उच्चारण करते हैं क्या ब्रहे व्रतां मानो देखो, हनुमान जी देखो, समुद्रों के तटों पर विज्ञान को निहारते रहते थे, और विज्ञान के गर्भ में प्रवेश करके, नाना प्रकार के परमाणुओं में रत्त रहते थे। तो विचार आता रहता है कि वह इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण, जब करते रहते हैं परन्तु मैं जब आधुनिक काल में उस साहित्य पर उस मानो देखो, पृष्ठों पर, जब मैं दृष्टिपात करता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव को उच्चारण कराता रहता हूँ, क्या हे प्रभु! उसी महान वैज्ञानिक को जो सूर्य की सर्वत्र विद्या को निगलने वाला हो। मानो देखो, उस ब्रह्मचारी को, उस वैज्ञानिक को जिस वैज्ञानिक ने जब भगवान राम देखो, रावण को विजय करने के लिए पहुंचे, तो सर्वत्र मानो उनका वैज्ञानिक की प्रतिभा के बहुत से यन्त्र जो महाराजा सम्पात्ति के समीप मानो देखो, विद्यमान थे, वे राम को उन्होंने प्रदान किए थे। परन्तु आधुनिक काल का समाज जब उसको वानर पशु की दृष्टि से मानो उसका उद्गीत गाता है तो मानो मेरा हृदय चकित हो जाता है और मैं यह कहता रहता हूँ कि हे मानव! तू कहाँ जा रहा है? तू अपने साहित्य के पृष्ठों को तू नहीं जानता। परन्तु वे किस काल में लुप्त हो गए इसका वर्णन मैंने बहुत पुरातन काल में किया। मानो देखो, यह साहित्य देखो, यहाँ बौद्ध काल में समाप्त हो गया है।

जब यहाँ महाभारत काल के पश्चात् जब जैन काल पनपा, उस काल में साहित्य अग्नि के मुखारबिन्दु में प्रवेश कर गया। जब यहाँ यवन काल आया, मानो उनकी राष्ट्रीयता आयी, सम्प्रदायों की प्रतिभा आई तो देखो, वह अग्नि के मुखारबिन्दु में प्रवेश कर गया। वह साहित्य चला गया परन्तु देखो, जब मैं यह विचारता रहता हूँ क्या, वह साहित्य

कहां? मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जहां अंजनी को परन्तु आधुनिक काल का मानव बड़ा आश्चर्य में है कि माता को वानर नहीं उच्चारण कर रहा है, पुत्र को वानर कह रहा है। यह बड़ा आश्चर्य का एक विषय है। परन्तु देखो, यह महाराजा सम्पाति को जो वैज्ञानिक थे, जो राष्ट्रीयता के मर्म को जानते थे परन्तु उनको आधुनिक काल का मानव गरुड़ पक्षी के रूप में उसे परणित कर रहा है। गरूड़ पक्षी कह रहा है परन्तु देखो, यहाँ कागभुषुण्ड जी, जिनकी माता ने तपस्या करने के पश्चात्, अपने पुत्र कागभुषुण्ड जी ऋषि को मानो देखो, अपनी आभा में परणित करते हुए, लोरियों का पान करा करके, उसे ब्रह्मवेत्ता बनाया, उसे ब्रह्म निष्ठ बनाया। मानो देखो, महर्षि लोमश और कागभुषुण्ड जी दोनों का सम्वाद हमारे यहाँ एक प्रतिष्ठित माना गया है। वह प्रसिद्धियों में आता रहा है। परन्तु देखो, आधुनिक काल का प्राणी कहता है क्या वह मानो देखो, वह कागा था। वह कागा पक्षी था मेरे पूज्य गुरुदेव मैंने आपको कई काल में वर्णन भी कराया। आज भी उसकी विचारधारा को मैं प्रगट भी कर रहा हूँ क्या यह आधुनिक काल कहाँ चला गया? साहित्य के पृष्ठों को जब मैं देखो, अपने समीप लाना चाहता हूँ तो विचार आता रहता है क्या यह मूर्खो प्रति असुतो यह समाज पामर की आभा में रमण कर गया है। साहित्य के मानो देखो, उन पृष्ठों की जानकारी इनके हृदयों में नहीं रही है।

मुझे एक काल स्मरण आता रहा है भगवान देखो, हनुमान जी का, एक समय हनुमान जी देखो, माता पार्वती के समीप विद्यमान थे और गणेश जी भी उनके समीप विद्यमान थे। तो गणेश जी को यह कहा करते थे कि ये बड़े ऊर्ध्वामुखी कहलाता है जिसका ऊर्ध्वामुख रहता है, मानो यह विचित्र ब्रह्मचारी है, यह विचित्रता में परणित रहता है। मानो एक समय गणेश जी ने कहा, हे हनुमान! तुमने सूर्यविद्या को, अपने मुखारबिन्द में अर्पित कर लिया है, मैं उसे जानना चाहता हूँ। तो ऐसा मुझे स्मरण है, पूज्यपाद गुरुदेव से मुझे प्रतीत हुआ है, मैंने भी कुछ इसका अनुभव किया है, क्या उन्होंने कहा कि मैंने मुख में धारण की विद्या को अपने कण्ठ में धारण कर लिया है और मैं कण्ठ से उसको वमन करता रहता हूँ, ब्रह्मचारियों में वमन करता रहता हूँ, वैज्ञानिकों के समीप वमन करता रहता है। परन्तु देखो, हनुमान के एक पादुका प्रतिभा ऐसा यन्त्र था,

जो महाराजा हनुमान और श्वेतकेतु ब्रह्मचारी दोनों उन पादुका यन्त्र पर विद्यमान हो करके, वे यन्त्र केवल सूर्य की ऊर्ज्वा से गति करता रहता था, वह सूर्य की किरणों से गति करता था, सूर्य के ऊर्ज्वा को जानने वाला ब्रह्मचारी मानो देखो, समुद्र के तट पर अनुसन्धान कर रहा था। जब अनुसन्धान करता था तो उस विज्ञान की धारा में, मानो यन्त्र में विद्यमान हो करके सूर्य लोक में जाना चाहता था। उस विद्या को, नाना प्रकार की किरणों को जानने वाला जिन किरणों में इतनी ऊर्ज्वा है, इतना सूक्ष्म यन्त्र परमाणुवाद से निर्माण करने वाला हो, क्या वह किसी काल में क्या वानर पशु हो सकता है? यह आश्चर्य का विषय है।

परन्तु आधुनिक काल कह रहा है। इसीलिए इसको मैं यह उच्चारण नहीं कर सकता क्या उसको वानर नहीं कहा जा रहा है। परन्तु विचार विनिमय यह मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन करा रहा हूँ मुझे स्मरण है कि एक महर्षि लोमश, महर्षि सुकेता, महर्षि कवन्धी, महर्षि रोहिणी कृतिका और ब्रह्मचारी शौनित ऋषि महाराज एक समय कागभुषुण्ड जी के द्वार पर पहुंचे। महर्षि कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज दोनों का मानो दण्डक वन में दोनों का एक विचार विनिमय हो रहा था, दोनों का एक दूसरे के विचारों का आदान प्रदान हो रहा था तो जब यह आदान प्रदान हो रहा था तो ब्रह्मचारी उनके समीप पहुंचे। मानो देखो, कागभुषुण्ड जी से कहा, प्रभु! हम आपके समीप इसीलिए आए हैं कि उस प्राण सूत्र को तुम जानते हो, जिस प्राण सूत्र में ये पृथ्वी पिरोई हुई है, मानो ये पृथ्वी का प्रत्येक परमाणु पिरोया हुआ है, क्या उसको जानते हो? तो ब्रह्मचारी कवन्धी ने जब यह प्रश्न किया, तो कागभुषुण्ड जी ने कहा, मैं उस सूत्र को जानता हूँ और जितना जानता हूँ उतना मैं उत्तर दे सकूंगा। परन्तु देखो, मैं पृथ्वी सूत्र को जानता हूँ क्या पृथ्वी का सूत्र यह सूर्य है।

मेरे प्यारे! देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने एक समय मुझे वर्णन कराया था कि कागभुषुण्ड जी से मानो देखो, रोहित ब्रह्मचारी ने कहा कि महाराज! क्या उस सूत्र को जानते हो जिसमें सूर्य की प्रतिभा पिरोई हुई रहती है? मानो उसको उन्होंने द्यौ कहा, क्या द्यौ में सूर्य पिरोया हुआ है। उन्होंने कहा, कि महाराज! उसको जानते हो जिसमें द्यौ स्थिर

रहता है? उन्होंने कहा, द्यौ जहाँ स्थिर रहता है वह अन्तरिक्ष है। उन्होंने कहा, उसको जानते हो, जहाँ यह अन्तरिक्ष स्थिर रहने वाला है? तो उस समय उन्होंने कहा कि वह महतत्त्व है और महतत्व ब्रह्मग्नि से उसका समन्वय रहता है और ब्रह्मग्नि मानो देखो, वह है जो मानव को ऊर्ध्वा में गति करा देती है, जिसमें यह ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ रहता है। तो जिस काल में जब देखो, कागभुषुण्ड जी ने जब यह निर्णय दिया, तो ब्रह्मचारी मौन हो गए, तो ब्रह्मचारियों ने यह कहा कि हे भगवन! मैं यह जानना और चाहता हूँ कि उस सूत्र को जानते हो, जिस सूत्र में हम ब्रह्मचारी जन पिरोए हुए हैं, तो उस समय ऋषि ने कहा कागभुषुण्ड जी ने, क्या उस सूत्र का नाम माता है, तुम माता से पिरोए हुए हो। उन्होंने कहा, भगवन्! उस सूत्र को जानते हो? जिस सूत्र में माता पिरोई हुई है? तब उन्होंने कहा कागभुषुण्ड जी ने कहा कि उस सूत्र में मानो देखो, माता पिरोई हुई है मेरे प्यारे! जब ऋषियों ने यह निर्णय दिया तो वह मौन होने लगे उन्होंने कहा कि नहीं यह और जानकारी कर लो कि इसमें माता और पुत्र दोनों पिरोए हुए हैं वह क्या है? उन्होंने कहा प्रभु! वह क्या है क्या वही मानो देखो, जिसे आपो कहते हैं उस आपो में दोनों पिरोए हुए हैं और यह आपों में मानो देखो, सर्वत्र जगत् पिरोया हुआ है। मानव का सूत्र ही आपो में पिरोया हुआ है। उस आपो का समन्वय मानो देखो, एक अंकुर से रहता है। अंकुर का सम्बन्ध परमाणु से रहता है, परमाणु का सम्बन्ध अणु से रहता है, अणु का समन्वय प्रति अणु से रहता है, प्रति अणु का सम्बन्ध मानो देखो, ब्रह्माग्नि से होता हुआ परब्रह्म आभा कहलाता है।

तब मानो देखो, जब कागभुषुण्ड जी ने यह वर्णन कराया तो उस समय महर्षि ब्रह्मे वाचप्रव्हे ब्रह्मचारी मौन हो गए। जब ब्रह्मचारी मौन हो गए तो महर्षि लोमश मुनि ने यह कहा क्या भगवन! क्या उस सूत्र को जानते हो जिसमें यह वैज्ञानिक पिरोए जाते हैं? उन्होंने कहाँ हाँ उस सूत्र को मैं जानता हूँ, क्या वह सूत्र कौन सा है? क्या जिसमें वैज्ञानिक जन पिरोए जाते हैं उसका नाम देखो, अणु प्रतिभा, उसको तरंगवाद कहते हैं। वैज्ञानिक तरंगों में पिरोया हुआ है और तरंगें मानो ये पृथ्वी में पिरोई हुई हैं और पृथ्वी इस महान् आपो में पिरोया हुआ है, जल में पिरोया हुआ है और जल मानो

देखो, समुद्रों में पिरोया हुआ है और समुद्र मानो देखो, बड़वानल नाम की अग्नि में पिरोया हुआ है, बड़वानल नाम की अग्नि सूर्य में पिरोई हुई है, सूर्य मानो देखो, इस महा गन्धर्व लोकों में पिरोया हुआ है। गन्धर्व लोक मानो देखो, सौर मण्डल में पिरोए हुए हैं और सौर मण्डल, मेरे पुत्रों! देखो, सम्भवा देवो ब्रह्म वाचा प्रह्वी कृतं देवो ब्रह्मा वेद का ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारियों! तुम मेरे पुत्र हो मानो मैं इसका निर्णय कराए देता हूँ। हे पुत्रों! भवः सम्भवे देवाः मानो कागभुषुण्ड जी कहते हैं, हे पुत्रो! यह मानो देखो, यह आकाश गंगा है, यह सौर मण्डल में पिरोई होने से नाना लोक लोकान्तरों की माला बन करके इस माला में जो मानव रत्त हो जाता है, वह ब्रह्म की आभा में परणित होता हुआ मानो देखो, इसमें शान्त मुद्रित हो जाता है।

जब यह कागभुषुण्ड जी ने, मानो पुत्र का प्रतिपादन किया और ब्रह्मचारियों को पुत्र कहा तो उस समय ब्रह्मचारियों को शंका बन गयी। ब्रह्मचारियों ने कहा, प्रभु! आपने हमें पुत्र क्यों कहा है? उन्होंने कहा, ज्ञानां भवति देवा संसार में जो ज्ञान होता है वह पितर होता है और जो ज्ञान को श्रवण करने वाला होता है वह पुत्र के तुल्य होता है। मानो देखो, जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो ऐसा मुझे स्मरण है, पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में वर्णन कराया, परन्तु देखो, वर्णन कराते हुए जब कागभुषुण्ड जी का यह निर्णय दिया, तो उस समय मुझे यह आभा परणित आती रहती है जो मुझे उच्चारण करना है, जो इतने सूत्रों को जानने वाला हो, जो इतने वेद के मर्म को जानने वाला हो, क्या वह काग पक्षी कैसे हो सकता है? मैं यह जानना चाहता हूँ, परन्तु देखो, मेरी यह आकांक्षा बनी रहती है, इसका मुझे कोई उत्तर नहीं दे पाता। परन्तु देखो, कागा तो कागा ही रहता है। ऋषि को कागा क्यों कहते हैं? जैसे कागा जो पक्षी होता है, वह चंचल होता है, ऐसे ही ज्ञान में जो ऋषि चंचल बन जाता है। ज्ञान में जो मर्म को जानने लगता है वह विज्ञान में वह महान बन जाता है उसको मानो देखो, उसकी काग प्रवृत्ति उसे कहते हैं क्या वह अपने में इतना महान कि प्रत्येक विषय को जानने वाला प्रत्येक आभा को जानने वाला मानो चंचलता से उसका उत्तर दे सके और मार्मिकता में उसका उत्तर दे सकें, उसे काग प्रवृत्ति वाला ऋषि कहते हैं। मानो देखो,

इस प्रकार की मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने व्याख्या की।

आज मैं इस व्याख्या को देने तो नहीं आया हूँ। मैं पूज्यपाद से एक वाक् और प्रगट करने के लिए आया हूँ क्या, जब इस प्रकार का अज्ञान समाज में आता है तो समाज में भिन्न भिन्न प्रकार की रूढ़ियाँ बन जाती हैं। जब इस प्रकार देखो, ऋषि मुनियों को, अपने महापुरुषों को जिस काल में देखो, वानर या वानर प्रवीह या मानो देखो, उसे गृह अस्वतम् रीछ की दृष्टि से ये समाज पान करने लगता है, यहाँ जामवंत को रीछ की दृष्टि दी जाती है, मानो जामवंत देखो, वृद्ध थे और वैज्ञानिक थे। देखो, समुद्र के तटों पर वह विज्ञान के एक मचान को निर्माणित करते रहते थे, जिस मचान के द्वारा समुद्र में ऐसे ऐसे यन्त्रों को निर्धारित करने वाले थे, जिन यन्त्रों में देखो, वायुमण्डल से एक यन्त्र आ रहा है, उस यन्त्र के जो ऊर्ध्वा भाग में, आता है तो देखो, ऊपरी भाग में अपने यन्त्र को वह अपने में धारण कर लेता था। उस आकर्षण शक्ति से यन्त्र को अपने में खींच लेता था, उसे नष्ट कर देता था। इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करने वाले महाराजा जामवंत थे, मानो देखो, वह राजा थे। राजा रावण ने इन सबके राज्यों को पराधीन कर लिया था। मुझे ऐसा काल स्मरण है। पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन किया था परन्तु देखो, मैं इस आभा में नहीं जाना चाहता हूँ, जब मैं इस साहित्य के पृष्ठों के ऊपर दृष्टिपात करता रहता हूँ तो मुझे आश्चर्य आता है।

अब मैं आधुनिक काल के विज्ञान में, प्रवेश करना चाहता हूँ। आधुनिक काल का विज्ञान, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव से मैंने कई काल में प्रश्न किया। आज भी मैं वही प्रश्न का मानो देखो, पुनरूक्ति करने जा रहा हूँ। आधुनिक काल का जो विज्ञान है वह मानो देखो, कुछ जानता है और कुछ निचली इकाई में रमण कर रहा है। आधुनिक काल का विज्ञान वायुयानों का निर्माण कर रहा है, आग्नेय अस्त्रों का निर्माण कर रहा है, परन्तु नाना प्रकार के यन्त्रों में यंत्रित हो रहा है, जब अग्नि काण्ड का प्रहार कर दिया जाता है तो मानो देखो, जलाशय यन्त्रों की कोई कृतिका दृष्टिपात नहीं आती। मुझे ऐसा स्मरण है जब भगवान राम और रावण का संग्राम हो रहा था, तो महाराजा कुम्भकरण जी ने असुतो मानो देखो, यन्त्र का प्रहार किया था। महाराजा मेघनाद ने भी एक यन्त्र

का प्रहार किया था, वह यन्त्र ऐसा था क्या वह यन्त्रों का जैसे ही प्रहार किया तो नीचे जलाशय बन गया और अग्नि की वृष्टि होनी प्रारम्भ हो गई, सेना नष्ट होने लगी जब सेना नष्ट होने लगी तो त्राहि त्राहि हो गई। भगवान राम को महाराज जामवंत ने एक यन्त्र दिया था। भारद्वाज मुनि की शिष्या मानो शबरी ने एक यन्त्र दिया था, उसको वरुणास्त्र कहते थे। उन्होंने वरुणास्त्र को जैसे ही प्रहार किया, उस अग्नि को निगल गया और जल को अपने में शोषण कर गया और उस यन्त्र का प्रभाव समाप्त हो गया।

तो मानो देखो, इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण देखो, परम्परागतों से होता रहा है। वैदिक साहित्य में इस प्रकार के वेदमन्त्रों का उच्चारण भी होता रहता है। ऋषि मुनियों ने इन यन्त्रों का उद्घोष भी किया है। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान हो करके इन उद्घोषों का, मैंने इनका अध्ययन भी किसी काल में किया है। आज मैं उस अध्ययन की प्रतिभा में जाना नहीं चाहता हूँ। अग्रणीय आभा में ले जाना चाहता हूँ। मैं आधुनिक काल के विज्ञान की चर्चा कर रहा हूँ। मानो देखो, वरुणास्त्रों का निर्माण हो गया है। वरुणास्त्रों में आधुनिक काल का राष्ट्रवाद एक दूसरे राष्ट्र को नष्ट करने के लिए, विचारधारा बना रहा है, निर्माणित कर रहा है। यह प्राणी मात्र को नष्ट करने के लिए यन्त्रों के निर्माण मानो हो रहे हैं। वरुणास्त्रों का निर्माण भी होने लगा है परन्तु इतना रूपेण नहीं, जो महाराज इन्द्र के यहाँ से मेघनाथ को प्राप्त हुआ था। जो भगवान राम को जामवंत से प्राप्त हुआ। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज से मानो देखो, राम को प्राप्त हुआ था। कुम्भकरण देखो, यहाँ इस पृथ्वी मण्डल से उड़ान उड़ करके, और वह मंगल मण्डल में जा करके वहाँ से अग्नेय अस्त्रों का प्रहार करने वाला था। परन्तु वह नहीं हो सका क्योंकि भारद्वाज मुनि ने राम को यह निर्णय करा दिया था कि इस यन्त्र को तुम जान लो। तुम्हें किसी कार्य में आएगा। जैसे यन्त्र देखो, कुम्भकरण जी ने यान को ले करके चन्द्रमा में पहुंचा। वहाँ से यान से ही उस यन्त्र का प्रहार करने वाला था। राम ने, और जामवंत ने और सम्पाति ने, सुहाऊ ने इन्होंने सर्वत्र मिल करके यन्त्र का प्रभाव वायुमण्डल में छा दिया था जो उस यन्त्र का सब प्रभाव देखो, वो यन्त्र की विषैले परमाणुओं को अपने में निगल गया था। मानो इस प्रकार का

यन्त्रवाद आधुनिक काल में तो निर्माणित अब तक नहीं हुआ, परन्तु देखो, उसका प्रयास कर रहे हैं।
आधुनिक काल के वैज्ञानिक, जब देखो, सर्वत्र संसार का विज्ञान पृथ्वी मण्डल के, जब वैज्ञानिक जब समुद्र के तट पर विद्यमान होते हैं तो समुद्र के तटों पर एक स्थली ऐसी बनी हुई है जो मुझे भी स्मरण है, मानो वह स्थली ऐसी है जहाँ आधुनिक काल का यन्त्र जाता है वह यन्त्र समुद्र में प्रवेश कर जाता है। कोई समुद्री यन्त्र जाता है तो वह भी भस्माभूत हो जाता है। मानो देखो, यन्त्र का कोई द्वितीय भाग भी दृष्टिपात नहीं आता। मानो देखो, इस प्रकार के विज्ञान के ऊपर आधुनिक काल के वैज्ञानिक इसके ऊपर चिन्तन करते रहते हैं, मनन करते रहते हैं कहते हैं क्या वस्तु हैं? समुद्र में ऐसा भाग क्यों है? आधुनिक काल के वैज्ञानिकों को उस यन्त्र की कोई प्रतिभा उनके हृदय में नहीं आ समायी है। परन्तु देखो, एक वैज्ञानिक है, इस वैज्ञानिक ने यह कहा है कि इसमें मुझे ऐसा दृष्टिपात आता है जो हमसे पूर्वकाल में वैज्ञानिक हुए हैं, उनका कोई यन्त्र अन्तरिक्ष में है, या समुद्र की तह में विद्यमान है। ऐसा एक वैज्ञानिक ने निर्णय दिया, परन्तु आधुनिक काल के वैज्ञानिक इस पर नाना प्रकार की टिप्पणियाँ कर रहे हैं, विचार में नहीं आ रहा है।
परन्तु देखा मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता है कि द्वापर के काल में देखो, जो घटोत्कच्छ और श्वेति और देखो, बभ्रुभान यह किसी काल में इन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया था अन्तरिक्ष में जो मानो देखो, मंगल और जहां बुद्ध दोनों की आकर्षण शक्ति का मिलान होता है वहाँ उस यन्त्र का उन्होंने स्थिर करने का प्रयास किया। और मानो उसकी छाया समुद्र में प्रवेश करती रहती है और जो छाया के अन्तर्गत, जो यन्त्र आ जाता है। वह यन्त्र भस्माभूत हो जाता है। ऐसा मानो देखो, दृष्टिपात आता है। द्वापर के काल को कुछ समय हुआ है साढ़े पांच हजार वर्ष हो गए हैं परन्तु देखो, यह जो यन्त्र है इसका जो आयु है वह लगभग देखो, एक लाख पच्चीस हजार, बानवे वर्षों का इस यन्त्र का आयु निर्धारित कर दिया हैं तो ऐसा मुझे कुछ दृष्टिपात आया है जो मुझे साहित्य से प्रतीत हुआ है। आज मैं पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में केवल दो शब्दों की

नहीं मैं तो अनेक शब्दों की विवेचना कर गया हूँ। विचार केवल यह है कि आधुनिक काल के विज्ञान में देखो, केवल अग्नेय अस्त्रों का निर्माण हो रहा है। कुछ समय रह रहा है अग्नि के काण्डों में क्योंकि अग्नि के काण्ड होते रहते हैं। ये राष्ट्रवाद देखो, आधुनिक काल का, जितना भी राष्ट्रवाद है यह राष्ट्रवाद में देखो, विज्ञान का दुरूपयोग हो रहा है। जितना भी दुरूपयोग हो रहा है, आधुनिक काल में देखो, उतना ही संसार का विनाश होने जा रहा। उतना ही मानव अपने कर्त्तव्य से विहीन होता जा रहा है। आधुनिक काल के राजाओं को विचारना चाहिए कि वैज्ञानिक होने चाहिए, विज्ञान का युग आना चाहिए, परन्तु ये जो नाना प्रकार के वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण हो रहा है इन यन्त्रों का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए। इसमें आलस्य और प्रमाद नहीं होना चाहिए आधुनिक काल के विज्ञान से देखो, आलस्य और प्रमाद आ गया है। आधुनिक काल के विज्ञान से स्वार्थवाद आ गया है। आधुनिक काल के विज्ञान से मानव निर्बुद्धि बनता जा रहा है। क्यों बनता जा रहा है? क्योंकि विलासी होता जा रहा है। यह जो विलासता है, मानो देखो, यह मानव को ही निगल जाएगी। इसमें विलासता का कोई दोषारोपण नहीं होगा। एक समय वह आएगा जब विलासी प्राणी को देखो, विलास ही निगल जाएगा। परन्तु देखो, इसके ऊपर चिन्तन और मनन करना चाहिए। राजाओं को इतना स्वार्थवाद नहीं रहना चाहिए, क्योंकि राजा वह होता है जो राजा प्रजा के अनुकूल मानो देखो, गति करता है। जिसमें प्रजा का सुखद हो, जिसमें विज्ञान का सदुपयोग हो। उस मानो क्रिया कलाप को राजा को अपनाना चाहिए। आधुनिक काल का राजा उसे अपना रहा है जिसमें राजा का स्वार्थ सिद्ध हो जाए। मानो देखो, प्रजा का विचार कहीं जाए, धर्म और मर्यादा कहीं चली जाए, नाना प्रकार की रूढ़ियों को पनपाने जा रहा है और यह रूढ़ियाँ ऐसी हैं, हे राजा! यदि तेरे राष्ट्र में ये रूढ़ियाँ पनपती रही तो मानो एक समय आएगा तेरे ही राष्ट्र को ये रूढ़ि निगलती चली जाएगी। परन्तु देखो, रूढ़ियाँ ही राष्ट्र को निगलती चली जाती हैं। राजाओं के हृदयों की आभाओं को मृत्यु दण्ड देना प्रारम्भ कर देती हैं। जब मैं विचारता रहता हूँ कि आधुनिक काल में यह क्या हो रहा है? हे राजन्! आज तुझे देखो, महान् बनना है। हे प्रजा तुझे विचारना है क्या मानो

देखो, राष्ट्र में जितनी भी रूढ़ियाँ पनपती रहेंगी, संसार में रूढ़ियाँ ही मानो देखो, राष्ट्र की महानता को निगलती हुई और राष्ट्र को अन्धकार के क्षेत्र में ले जाती चली जाएगी। मानो देखो, मैं आज विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने मुझे सूक्ष्म सा समय दिया था परिचय देने के लिए। मैं परिचय दे रहा हूँ मैं आधुनिक काल के और देखो, भविष्य काल का कुछ सूक्ष्म सा मैंने परिचय दिया है और वह परिचय क्या है? आधुनिक काल का समाज मानो देखो, धर्म के मर्म को नहीं जान रहा है। प्रत्येक राजा कहता है हम सब धर्मों को स्वीकार करते हैं। अरे, भोले राजा! धर्म तो एकोकी वचन होता है तू सर्व धर्म कहाँ से ले करके आया। परन्तु विचार नहीं आता है सब धर्म नहीं होते धर्म केवल एकोकी वचन होता है साहित्य में व्याकरण की दृष्टि में किसी भी काल में चले जाओ परन्तु धर्म केवल एक हैं मानव के नेत्रों का धर्म केवल दृष्टिपात करना है। सु दृष्टिपात करता है तो मानव की पूजा होती हैं। मानव कु दृष्टिपान करता है तो वह कु दृष्टि ही मानव के नेत्रों को हीन बना देती है। जब यह विचार आता है, मानव वाणी से अशुद्ध उच्चारण करता रहता है, शुद्ध उच्चारण करना वाणी का धर्म है। पवित्र उच्चारण करना वाणी का धर्म है। जब वाणी से अशुद्ध उच्चारण करने लगता है तो एक समय वह आता है वाणी का जो रचयिता है वह वाणी की प्रतिभा को छीन लेता है, वाणी विहीन हो जाता है प्राणी। जब श्रोत्रों से ऊँचे और महान् दार्शनिक शब्दों को ग्रहण करता रहता है तो मानव के मोक्ष संस्कारों को जन्म देता है और जब उन्हीं श्रोत्रों से दूसरों की निन्दा मानो घृणामयी शब्द दूसरों के लिए अशुद्ध श्रवण करता रहता है।

तो एक समय आता है क्या देखो, उसकी श्रवण शक्ति की प्रतिभा नष्ट हो जाती है। मानो प्रत्येक इन्द्रिय का यही विषय, यही उसका धर्म है। अरे, राजा! तेरा यह कर्तव्य है क्या तू पांचों इन्द्रियों के विज्ञान को ले करके तू प्रत्येक मानव के धर्म की चर्चा करेगा, देखो, एकोकी धर्म की चर्चा करेगा तो मानवीय धर्म ही तेरा राष्ट्र है। मानवीय धर्म ही तेरा जीवन है, परन्तु देखो, इस प्रकार की धाराओं को ला करके ही मुनिवरों!

मानव समाज को ऊँचा बना सकता है, पवित्र बना सकता है।

आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब दर्शनों की गाथा को प्रगट करते हैं, विज्ञान में प्रवेश करते हैं तो इनका विज्ञान का चिन्तन इतना गम्भीर है क्या मानो देखो, हम भी किसी काल में उसके ग्रहण करने में असमर्थ बन जाते हैं। परन्तु देखो, विचार आता रहता है क्या मानव को दर्शनों की आभा में तो जाना ही चाहिए। दर्शनों की प्रतिभा में रत्त रहना चाहिए। क्योंकि मानव का दर्शन ही मानव को ऊँचा बना सकता है। मानो देखो, राष्ट्र का दर्शन ही राष्ट्र को ऊँचा बना सकता है। देखो, यहाँ प्रतिभाशाली बन करके अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहिए। प्रत्येक मानव यहाँ, नाना प्रकार के सम्प्रदायों में, जब राष्ट्र परिणत हो जाएगा, उसे सम्प्रदाय नहीं कहता है राष्ट्र। राष्ट्र उसको नाना धर्म कह रहा है। अरे, राजन! क्या तू शिक्षा को नहीं जानता है? परन्तु यह विचार में नहीं आता। नाना धर्म कह रहा है। नाना धर्मज्ञ ब्रह्मे धर्म तो एकोकी ही वचन है तू उसका पालन कर। राष्ट्र में उस का प्रसार होना चाहिए। जब राष्ट्र में उसका प्रसार होगा तो मानवीयता ऊँची बन करके तेरा राष्ट्र मानो देखो, गन्धर्व राष्ट्र बनेगा। यहाँ गन्धर्व राष्ट्र बन करके मानवीयता आती चली जाएगी। मानो देखो, इस प्रकार की प्रतिभा प्रत्येक मानव के हृदय में आनी चाहिए।

आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाता रहता हूँ क्या हे प्रभु! अब मुझे आज्ञा दीजिए क्योंकि मैंने जो उच्चारण किया है वह मानो देखो, एक परिचय के रूप में दिया है। आज का विचार विनिमय क्या है क्या हम परमपिता परमात्मा को तो अपने मध्य में तो लेना नहीं चाहते है आधुनिक कृतिका में परन्तु विचार केवल यह है क्या यह जो संसार है। यह एक दूसरे की प्रतिभा में पिरोया हुआ है। क्या हे मानव! तू अपने साहित्य को, अपने ऋषि मुनियों को, अपने महापुरुषों की तुम उस दृष्टि से पान करो जिस प्रकार के मानो वह हुए हैं। जिस प्रकार की उनकी विद्याएं रही हैं। जिस प्रकार का उनका विज्ञान रहा है। जिस प्रकार उनकी धारणा रही हैं। इस प्रकार के तुम अपने विचारों को बना करके अपने साहित्य को महान् बना करके, साहित्य की प्रतिभा को ले करके तुम अग्रणीय बनते चले जाओ, जिससे तुम्हारा

मानवीयतव ऊँचा बन जाए। क्योंकि संसार में एक वेद का मन्त्र ऐसा है जो निष्पक्ष वार्त्ता कहता है। वेद का मन्त्र ऐसा है जो प्रकाश को पुकार रहा है। वेद की पतिका ऐसी है जिस पतिका को ले करके मानव अपने राष्ट्र को ऊँचा बना सकता है। राष्ट्र मानो देखो, एक धर्म मानवीयता को ले करके ऊँचा बना सकता है क्योंकि धर्म की रक्षा के लिए राष्ट्र का निर्माण होता है। क्योंकि धर्म की रक्षा हो, मानव कर्त्तव्य का पालन करे और जहाँ कर्त्तव्य से विहीन प्राणी हो जाता है, जब राष्ट्र ही कर्त्तव्य से विहीन हो जाता है, राजा ही कर्त्तव्य से विहीन हो जाता है तो प्रजा बिखर जाती है। प्रजा मानो देखो, कर्त्तव्य विहीन, अकृतियों में नष्ट हो जाती है।

तो विचार विनिमय क्या है? प्रत्येक मानव को विचारना है, कि राष्ट्र का निर्माण, उस काल में हुआ जब प्रजा ने अपने कर्त्तव्य के पालन में विहीनता मानो दृष्टिपात आने लगी, तो उस समय श्रेष्ठ पुरुषों का एक समाज बना। समाज बन करके एक शासक मानो देखो, शासन की आवश्यकता हुई। वह शासन बना और उस शासन को समाज में लाने के लिए, धर्म की रक्षा करने के लिए, धर्म क्या है जो मानव की अन्तरात्मा की तरंगें होती हैं, जो मानो देखो, अपनी अन्तरात्मा की महानत्ता होती है उसका नाम धर्म है। धर्म की रक्षा करना ही, मानवता की रक्षा करना ही ज्ञान और विज्ञान में पिरोया हुआ प्राणी, दर्शनों में परणित होता हुआ राजा को उसकी रक्षा करनी चाहिए। ऐसा मेरा मन्तव्य रहा है। सदैव मानो देखो, वैदिक साहित्य इसी आभा को पुकार रहा है, याग की चर्चा कर रहा है, तप की चर्चा कर रहा है, और ज्ञान और विज्ञान की चर्चा करके, इस सागर से पार होना चाहता है। प्रत्येक मानव का यही मन्तव्य रहा है।

आज का विचार हमारा क्या? क्या मानो देखो, इन महापुरुषों को तुम पशु की दृष्टि से अथवा उन राजाओं को तुम पशु की दृष्टि से दृष्टिपात न करके, अपने पूर्वज, जो वैज्ञानिक हुए हैं हमें ऊँची ऊँची प्रेरणा देने वाले हुए हैं उनको हमें उसी रूप से दृष्टिपात करना है, वास्तव में जिस रूप में उनका निर्माण और उनकी महानत्ता का प्रतिभाषित इस जगत् में होता रहता है, ऐसी मेरी सदैव प्रेरणा रहती है। ऐसा ही मेरा मन्तव्य रहता है। अब मुझे समय मिलेगा, तो मैं पूज्यपाद गुरुदेव के आदेशानुसार कुछ चर्चाएँ

कल भी कर सकता हूँ यदि मुझे पूज्यपाद गुरुदेव आज्ञा देंगे तो आज का यह विचार हमारा समाप्त हो गया है।
पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! मेरे प्यारे! महानन्द जी ने आज अपने विचार व्यक्त किए। उनके विचारों एक महान्, एक वेदना है, इनके विचारों में एक दाह है। जैसे अग्नि की तरंगें देखो, ऊँचे परमाणुओं को ले करके, उनकी दाह बनी रहती है। जिस प्रकार वायुमण्डल में नाना प्रकार के परमाणु गति करते रहते हैं, और उन परमाणुओं में दाह होती है कि मैं शुद्ध परमाणुओं को द्यौ तक पहुंचा दूँ। मानो शुद्ध ही परमाणु, शुद्ध ही विचार मानो देखो, वह अन्तरिक्ष में प्रवेश करते हुए द्यौ मैं प्रवेश करते हैं। अशुद्ध परमाणु, मिथ्या परमाणु वह भू में रमण करके वहीं दमन हो जाते हैं। मानो दमन हो करके उसी को प्राप्त होते हैं जिनके वह अशुद्ध परमाणु है। इसी प्रकार जैसा जिसका भाव रूपों में गति करता रहता है, उसकी प्रतिष्ठा उसी में निहित रहती है। तो विचार विनिमय क्या है, मानो देखो, विचार क्या कि हम अपने विचारों में महानत्ता की प्रतिभा का दर्शन हो। दर्शन करते हुए ज्ञान और विज्ञान में रत्त रह करके मानवीयता की रक्षा होती रहे। क्योंकि मानव जो धर्म है, मानव जो प्रतिभा है वह बहुत ऊर्ध्वा में रहती है। मानो धर्म की चर्चा तो कल ही प्रगट की जा सकेगी।
आज का विचार तो केवल, हमें यह आज्ञा दे रहा है कि हम मानो देखो, प्रभु को अपने ज्ञान और विज्ञान स्वरूप में दृष्टिपात करें। क्योंकि परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञान स्वरूप माने गए हैं। वो वसुन्धरा के रूप में मानो परणित रहता है। जैसे वसुन्धरा के गर्भ में, माता के गर्भ में बालक पनपता रहता है, शिशु ओजस्वी बनता रहता है, इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है, यह परमपिता परमात्मा का गर्भाशय है। इस गर्भाशय में सर्वत्र प्राणी विद्यमान हैं। वह मानो परमात्मा से चेतना पा करके, प्रकाश पा करके, वह तत्त्वों से प्रकाश पा करके अपने में चेतनित हो रहे हैं। अपने अपने धर्म रूपों में परणित हो रहे हैं। मानो देखो, अपनी अपनी प्रतिभा का, वह अपने स्वरूप में गान गा रहे हैं। इसी प्रकार मानव को अपने में गान गाना चाहिए। क्योंकि गान गाने वाला मानव सर्व प्रिय होता है। जो गान गाता है गान क्या है? गान कहते हैं उद्गीत को। उद्गीत कहते हैं।

मानो साम को उदगीत कहते हैं जिसमें प्रभु की प्रतिभा का वर्णन आता है। जिसमें प्रभु के गान रूपों का प्रभु! का गान हम कैसे गांए कैसे श्रोत्रों में उसे परणित कर सकते हैं कैसे हम प्राणसूत्र में उसे पिरो सकते हैं। मानो देखो, जो प्राण सूत्रों को जानता है, प्राण को ऊर्ध्वा में, मध्यम में, ध्रुवा में प्राण की गति को जानता है, वह वास्तव में गान गा सकता है।

मुझे स्मरण है क्या, यहाँ बहुत से इस प्रकार के वैज्ञानिक हुए, जो गान के रूप में मुझे स्मरण है जैसे गान गाने वाले यहाँ राजा नल हुए हैं। राजा नल जब गान गाते थे, मन मग्न हो करके तो मानो देखो, जहाँ जिन स्थलियों पर रहते थे तो वह लगभग देखो, चार चार कृतिका के मध्य में मानो देखो, वह दीपावली बन जाती थी। जब वह गान गाते थे तो जिस नगर में रहते थे उस नगर की दीपावली बन जाती थी। दीपावली कैसे? क्योंकि प्राणों का ऊर्ध्वा, मध्यम और ध्रुवा तीन प्रकार की गति होती है प्राण की परन्तु देखो, प्राण सूत्र को जो जानता है वह जानता है कि इसकी माला बनानी है। जो प्राण सूत्र को जानता है कि मुझे ऊर्ध्वा में कुम्भाकार बनाना है, प्राण को मन की आभा में परणित कर देना है तो मानो वही प्राण सूत्र बन करके, मानव की प्रतिभा बन करके, विज्ञान का एक स्रोत बन जाता है तो इसी प्रकार मैं आज के विचारो में क्या महानन्द जी ने मेरे पुत्र ने अपने विचार व्यक्त किए हैं, मानो देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी की चर्चाएँ, मानो देखो, उनका विज्ञान, उनकी प्रतिभा उनका ज्ञान, उनका योग कितना मार्मिक और कितना महान् था। विचारों का आदान प्रदान महर्षि लोमश और कागभुषुण्ड जी का होता रहता था। मुझे वह काल स्मरण है। उनकी सभाओं में कई काल में देखो, विचार श्रवण करने का सौभाग्य भी प्राप्त होता रहा है।

तो विचार विनिमय क्या है आज के विचारों का, कि मेरे पुत्र ने जो अपनी वेदना प्रगट की है, अपने दाहमयी जो वाक्यों को प्रगट किया है उन विचारों को हमें महान् बना करके, मानो देखो, हे प्रजाओ! राष्ट्र को पुकार करो कि हे राजा! तू अपने विचारों में, हमारे विचारों को ले, हमें अपने विचार दे करके धर्म और मानवीयता की रक्षा करते हुए, राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाना चाहिए। परन्तु देखो, वास्तव में सत्य उच्चारण

करने में देखो, किसी प्रकार की धृष्टता नहीं होनी चाहिए। उसमें महानता रहनी चाहिए। तो आज का विचार समाप्त कल समय मिलेगा तो मैं कुछ प्राण सूत्र मध्यं और देखो, ऊर्ध्वा की चर्चाएँ कल करेंगे। कल समय मिलेगा तो महानन्द जी को सूक्ष्म सा समय प्रदान किया जा सकेगा समय की वार्त्ता है, आज का विचार विनिमय समाप्त समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। स्थान : लाक्षागृह बरनावा समय : दोपहर 3.00 बजे।

१९ 09 03 1984 पुष्प 45 अपने महापुरुषों के जीवन साहित्य से प्रेरणा प्राप्त

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, तो यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती ही रहती है। इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने गए हैं। जो मानव उसके अपना वरण बना लेता है, अथवा उसे वर लेता है वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है।

तो मुनिवरों! आज का हमारा, वेदमन्त्र हमें क्या कह रहा है? हमारा वेदमन्त्र ये प्रश्न कर रहा है, कि हमारे जो नेत्र हैं यह किसके प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं? प्रत्येक मानव के हृदय में, यह आशंका लगी रहती है, जिस भी काल में मधुर चिन्तन करने के लिए मानव तत्पर होता है, तो उस काल में यह विचारता है, कि हमारे जो नेत्र हैं इनमें जो ज्योति प्रकाश आ रहा है परन्तु वह ज्योति देने वाला कौन है कौन प्रकाशक बना हुआ है तो इसके सम्बन्ध में भिन्न प्रकार का विचार विनिमय होता रहा है मानो देखो, कहीं हम सूर्य को नेत्रों का प्रकाशक स्वीकार करते हैं। परन्तु जब और बाह्य जगत् में जाते हैं तो चन्द्रमा को अमृत बाहिनी मानो रेणुका में प्रकाश हमें दृष्टिपात आने लगता है।

वह जो मानो चन्द्रमा है जो किसी सूत्र में पिरोया हुआ एक मनका है, मानो वह चन्द्रमा अमृतमयी कहलाता है। जैसे आज का हमारा वेदमन्त्र चन्द्रो गतप्रमाणा ब्रह्मे वाचा अमृता वह मानो अमृत है, अमृत के देने वाला है। मानो वह मानव के शरीर में अमृत को भरण कर देता है। तो कहीं चन्द्रमा को नेत्रों का प्रकाशक भी कहा है। मानो वही चन्द्रमा है जो अमृत को दे रहा है, बहा रहा है। अमृत की आभा में मानव को प्रदान कर रहा है, यह प्रकाश है, अनुपमता है। मानो देखो, जहाँ हम और गम्भीर चिन्तन प्रारम्भ करते हैं तो वहाँ यह प्रकाश, यह अमृत भी मानो देखो, शून्य बिन्दु पर प्रवेश करने लगता है। अरे, प्रकाश को देने वाला कौन है? कौन प्रकाश दे रहा है मानव विचारता रहता है कि कौन प्रकाश का द्योतक है?

बेटा! एक समय मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! मैं उसी काल में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ, जिस काल में ऋषि मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके इन वेदमन्त्रों के ऊपर चिन्तन और मनन करते रहते थे। मेरे पुत्र महानन्द जी ने, इससे पूर्व काल में मानो एक बहुत ऊँची विज्ञान की चर्चाएँ की थीं, और वह विज्ञान की चर्चाएँ मानो ऐसे गम्भीर, ऐसे अगाध समुद्र में प्रवेश हो करके इन्होंने ऐसी मानो एक वार्त्ता समुद्र में से लाए, इस परमात्मा का जो जगत् है यह संसार रूपी एक समुद्र है। मानो यह विज्ञान की प्रतिभा विज्ञान के कणों को लेकर के इन्होंने एक वार्त्ता प्रगट की कि आधुनिक काल की एक इन्होने चर्चा की है क्या समुद्र के मानो देखो, सौ वृत्ति में अगाध में एक ऐसा यन्त्र मंगल और बुद्ध की आकर्षण शक्ति के मध्य में इन्होनें वर्णन कराया था। मानो उस यन्त्र का मुझे भी पूर्व कालो से मानो देखो, द्वापर के काल में उस यन्त्र का निर्माण हुआ था। यन्त्र का जब निर्माण हुआ था तो वह यन्त्र बड़ा विशेषज्ञ और वैज्ञानिकों के मध्य की प्रतिभा आती रहती है। मानो मेरे पुत्र ने यह वर्णन कराया था कि आधुनिक काल का विज्ञान, इस इकाई में रमण कर रहा है इस इकाई के क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है। परन्तु देखो, महाराज बब्रीक, वभ्रुभान और घटोत्कच्छ ये मानो देखो, ये पूर्व अपने ही एक ही देखो, हस्तिनापुर में जो एक वंशलज था। उस वंशलज में इनका जन्म हुआ। मानं ग्रते देखो, बभ्रुभान, महाराजा अर्जुन का पुत्र था। बब्रीक भी

उन्हीं का पुत्र था और यह घटोत्कच्छ मानं ग्रते भीम के पुत्र कहलाते थे। परन्तु तीनो विशेषज्ञ वैज्ञानिक थे। ऐसे महान् वैज्ञानिक थे कि वेद के अगाध समुद्र में जाकर के, एक एक वेदमन्त्र के ऊपर अन्वेषण करते हुए मानो देखो, यह अपने में कृत्य करते रहते थे। उन्होंने एक यन्त्र जो अग्नि की धाराओं में, मानो देखो, अणु की प्रतिभा में रमण करते हुए एक कृतियों में उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया था। तो उस काल में मुनिवरों! एक समय उनके समीप मानो देखो, महर्षि शमीक ऋषि महाराज एक समय भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रों! वह बब्रीक के आश्रम में पहुंचे। जब बब्रीक की शाला में उन्होंने प्रवेश किया तो बब्रीक ने ऋषि का स्वागत किया और शमीक ऋषि से कहा स्वधनो वेदा बर्णा प्रही वर्त्ता क्या हे वैज्ञानिको! तुम इस चिन्तन में भी किसी काल में पहुंचे हो, जैसे वेद का मन्त्र कहता है प्रकाशां भविता प्रकाशां रुद्रा प्रकाशां नेत्रा द्यौ प्रकाशं लोकं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता है, क्या हे ब्रह्मचारी! हे कृत्य करने वाले! हे वैज्ञानिकों! यह मन्त्र क्या कहता है? यह मन्त्र यह कहता है कि इस मानव के नेत्रों का प्रकाशक कौन है? माता के गर्भस्थल में नेत्रों का निर्माण होता है, प्रत्येक इन्द्रियों का निर्माण होता है। निर्माण वेत्ता कौन है और उनमें ज्योति प्रदान करने वाला कौन है? इस ज्योतिर्मयी लिंग को हम जानना चाहते हैं। वैज्ञानिक रूपों से तो मेरे प्यारे! तो शमीक और जैमनं ब्रीहि व्रेतकेतु मुनि महाराज बेटा! जब उन्होंने यह प्रश्न किया तो मुनिवरों! उस समय तीनों वैज्ञानिक, इस अनुसन्धान में लग गए। क्या वेद का मन्त्र तो कहता है क्या यह ज्योति लिंग कहाँ से प्राप्त होता है? नेत्र वास्तव में किसी की सहायता से प्रकाश को प्राप्त होते हैं। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, क्या इसका हम निर्णय दे सकेंगे कुछ काल के पश्चात् हम इसके ऊपर अन्वेषण करेंगे। तो मुनिवरों! देखो, बब्रीक ने, बभ्रुवाहन ने और मुनिवरों! देखो, वह घटोत्कच्छ तीनों वैज्ञानिक मानो देखो, चिन्तन करते करते भगवान कृष्ण के द्वार पर पहुंचे।

एक समय बेटा! जब यह ज्योति लिंग उनके विचार में नही आया विज्ञानशाला में से भ्रमण करते हुए बेटा! वह भगवान कृष्ण के द्वार पर पंहुचे भगवान कृष्ण एक समय बेटा! समुद्र के तट पर विद्यमान हो करके एक यन्त्र का निर्माण कर रहे थे जिससे

मानो देखो, सूर्य के ऊपर छा जाने से परमाणुवाद मानो देखो, रात्रि लिंग उत्पन्न हो जाए। रात्रि के तुल्य यह दिवस अप्रतियों में रमण करने लगे। तो मानो देखो, जब वह उनके द्वार पर पंहुचे तो भगवान कृष्ण ने कहा, आओ, हे वैज्ञानिको! आओ, मेरे पुत्रो! वह विराजमान हो गए। विराजमान हो जाने के पश्चात भगवान कृष्ण ने कहा, कहो बब्रीक तुम्हारा, आगमन कैसे हुआ? तुम तो तीनों ही महा विज्ञान के गर्भ में भ्रमण करते हो, आज तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? तो महाराजा बब्रीक ने कहा, हे प्रभु! यह वेदमन्त्र है और वेदमन्त्र कहता है क्या हमारा जो नेत्रों में प्रकाश आता है, क्योंकि निर्माण करने वाला प्रभु है। निर्माण होता है माता के गर्भ से। क्योंकि वही उसकी स्थली बनी हुई है, तो यह निर्माण हो गया है और जिस वस्तु का निर्माण होता है, वह जड़वत् है। निर्माण करने वाला चैतन्य है। परन्तु देखो, हम यह जानना चाहते हैं उसमें ज्योति लिंग को कौन भरण करता है? तो मेरे पुत्रो! देखो, इस चिन्तन में भगवान कृष्ण भी लग गए और भगवान कृष्ण ने उस समय यह कहा कि मेरे विचार में तो यह आता है क्या यह जो अग्नं ब्रह्मवाचो मानो देखो, उनमें जो प्रकाश आता है वह एक अणु है, वह एक परमाणु है। वह एक अणु की वृत्ति कहलाती है। मानो देखो, वह प्रकाश देखो, अणु के गर्भ में एक आत्मा विद्यमान है, आत्म ब्रह्मे उसे अणु कृति को हम आत्मा कहते हैं, कृतिका भी कहते हैं। मानो वह इस शरीर में विद्यमान है, और विद्यमान हो करके उस आत्मा का प्रकाश गति करता है। आत्मा का प्रकाश जब गति करता है वही मानो देखो, इस प्रकृति के परमाणुओं से मिलान करता हुआ, अपने में मानो साकार और सूक्ष्म स्वरूप को धारण करता रहता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने, भगवान कृष्ण ने यह उत्तर दिया, उन्होंने कहा, प्रभु! मैं विज्ञान की दृष्टि से दृष्टिपात करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, तो विज्ञान तो यह कहता है, वेद का मन्त्र भी तुमने दृष्टिपात किया होगा। हे वैज्ञानिकों! वेद का मन्त्र कहता है आत्म ब्रह्मि व्रतां ज्याति प्रमाणां भविते ग्रतप्रव्हा अस्ते मानो वेदमन्त्र यह कहता है क्या एक परमाणु है, परमाणु के गर्भस्थल में एक सूक्ष्म और परमाणु है। मानो देखो, उस परमाणु में, इतनी शक्ति है, जब उसका विभाजन किया जाता है अथवा उससे जब

परमाणु उससे संघर्ष करने लगते हैं तो वह परमाणु मानो देखो, अग्नि का चयन करते हैं। अग्नि का चयन करते हुए वही सूक्ष्मवत् बन करके मानो आत्म ज्योति के रूप में प्रगट होते रहते हैं। वह आत्म ज्योति कहलाते हैं जो अनुभव का विषय है। वह इन्द्रियों का विषय नहीं है। देखो, प्रकृति का विषय नहीं है, तरंगों का विषय नहीं है, मानो वह समाधि और आनन्दवत् का विषय कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक् उन्होंने प्रगट किया, तो उन्होंने कहा प्रभु! हमने एक यन्त्र का निर्माण किया है मानो उसके ऊपर तुम अपनी टिप्पणी दो, उन्होंने कहा क्या हमने एक यन्त्र का निर्माण किया है क्या मंगल के और बुद्ध के मध्य में एक यन्त्र का निर्माण किया है और वह यन्त्र का आयु मानो लाखों वर्षों का है और उस यन्त्र में से गति प्रवाह होते रहते हैं, समुद्रों से उसका मिलन होता है तो उस मिलन में, उस छाया में दीपावली की छाया में जो भी यन्त्र आ जाता है वह भस्माभूत हो जाता है। उस यन्त्र का एक कण भी प्राप्त नहीं होता। क्योंकि वह परमाणु इतने शक्तिशाली हैं, इतनी शक्तिशाली ऊर्ज्वा है, जिस ऊर्ज्वा से सूर्य प्रकाश देता है, जिस ऊर्ज्वा से द्यौ अपने में द्यौ बनी रहती है, जिस मानो देखो, जिस अग्नि के द्वारा, जिन जिन परमाणुओं से देखो, वह गति करने वाला जगत् एक सूत्र में गति कर रहा है, वही इस प्रकार मानो देखो, ऐसा यन्त्र हमने निर्माणित किया है। उसकी छाया पृथ्वी पर आती है और पृथ्वी पर भी समुद्र के एक भाग में जाती है और समुद्र के जैसे ही भाग में पहुंची, वहाँ से वह परमाणुओं को निगलना प्रारम्भ कर देता है। जब वह परमाणुओं का निगल लेता है मानो देखो, वह आभात अप्रति नाम के परमाणु हैं, जिन परमाणुओं का समन्वय ले करके एकत्रित करके हमने अन्तरिक्ष में से एक मानो देखो, यन्त्रानं वृत्त बनाया है और वह यन्त्र उसमें स्थिर है और उसकी छाया जाती है वह यन्त्र मानो देखो, पृथ्वी मण्डल के मानो यन्त्रों को अपने में निगल जाता हैं। अहा जब इस प्रकार के यन्त्र का उन्होनें निर्णय कराया, तो भगवान कृष्ण ने कहा, भई! वाक् तो तुम्हारा यथार्थ है। चलो, यन्त्र को दृष्टिपात करते हैं। मेरे प्यारे! वह अपनी विज्ञानशाला में ले गए, विज्ञानशाला में उन यन्त्रों को उन्होंने दृष्टिपात किया। मेरे पुत्रों!

देखो, इस प्रकार का प्रतिपादन विज्ञान के युगों में प्रायः होता रहा है।
कल मेरे पुत्र महानन्द जी ने इस वाक्यों का विश्लेषण किया। इनके हृदय में एक दाह बनी रहती है। राष्ट्र के प्रति जो इनकी दाह बनी रहती है। वह बड़ी विचित्र है। मानो देखो, राष्ट्रवाद में एकोकी धर्म और मानवीयता की प्रतिभा होनी चाहिए, ऐसा मेरे पुत्र उच्चारण कर रहे थे। जैसे यज्ञशाला में विद्यमान हो करके याग करने वाला यज्ञमान मानो अपने हृदय को शुद्ध पवित्र बनाता है। याज्ञिक बना करके अपनी मानवीयता की आभा को ले करके अपने मानो देखो, जगत को महान् बनाता है। इसी प्रकार राजा को अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। धर्मज्ञम् ब्रह्म वाचोः क्योंकि धर्म और मानवता एक ही सूत्र में पिरोए हुए हैं। यदि धर्म चला जाए तो मानवता नहीं रहती और मानवता चली जाती है तो धर्म विकृत हो जाता है। दोनों एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। दोनों एक दूसरे की प्रतिभा में रत्त रहते हैं। मानो देखो, सूर्य का प्रकाश आ रहा है, वह प्रकाश ही उसका धर्म कहलाता है। मानो वह प्रकाश देने वाला प्रकाश दे रहा है, उस प्रकाश में नाना प्रकार की प्रतिभा विद्यमान है जिसको प्रत्येक प्राणी अपने में ग्रहण करता है। उन्हीं मानो किरणों को पान करने वाला, अमृतमयी धारा में जाने वाला अमृत को ग्रहण करता है। उन्हीं किरणों को धारण करने वाला मानो देखो, विषैले सर्प इत्यादि जो योनियाँ हैं वह विष को ग्रहण कर रही हैं, उनमें से विष को अपने में सींचन कर रही है। इसी प्रकार योगीजन जब योगाभ्यास करते हैं तो सूर्य की किरणों के द्वारा मुनिवरों! देखो, अपने मानवीय जीवन को योग में प्रतिभाषित कराते हैं। इसी प्रकार देखो, वही प्रकाश, मेरे पुत्रों! देखो, वही विज्ञान की आभाएं विज्ञान के युग में जब प्रवेश करते हैं तो मुनिवरों! देखो, वैज्ञानिकजन यन्त्रों का निर्माण करके सूर्य की किरणों के साथ बेटा! सूर्य लोक की गति करते हैं, मानव लोक में भ्रमण करने के लिए तत्पर होते हैं। इसी प्रकार जब यही विज्ञान मानो देखो, आयुर्वेदाचार्यों के द्वारा यह किरण पहुंची तो मुनिवरों! देखो, इन किरणों के द्वारा, नाना प्रकार की वनस्पतियों को ले करके नाना वनस्पतियों के द्वारा वह मानो देखो, चिकित्सा के क्षेत्र में चला जाता है। वह चिकित्सा के क्षेत्र में जा करके इसी सूर्य की नाना प्रकार को किरणों को ले करके

अश्विनी कुमारों ने वैद्यराज बने। मेरे पुत्रों! देखो, रावण के राज्य में, मुझे स्मरण है देखो, अश्विनी कुमार वैद्यराज रहते थे। उनके यहाँ सुधन्वा नामक एक वैद्यराज थे जो मुनिवरों! देखो, सूर्य की किरणों से वार्त्ता प्रगट करते थे। सूर्य की किरणों से कैसे वार्त्ता प्रगट की जाती है? वैद्यराज विद्यमान है, मानो अपने में रुग्ण को शान्त करना चाहता है, वह सूर्य की किरणों को तपाता है।

मेरे प्यारे! देखो, एक समय मुझे स्मरण ऐसा आया है क्या मुनिवरों! देखो, राजा रावण के राष्ट्र में जो सुधन्वा जी थे, महाराजा सुधन्वा के द्वारा एक मूलक कृतिक नाम का एक मानो देखो, रुग्ण आया। जब वह रुग्ण आया रुग्ण कृतियों में रमण करने लगा तो महाराजा सुधन्वा ने मानो देखो, उस रुग्ण को मानो पीपल का पंचांग पीपल का एक खरल बना करके, और पीपल की पांचो वस्तुओं को लेकर के और अंगत नामक एक औषधि होती है उसको लेकर के, सूर्य कृतिका औषध को लेकर के उनका पिपाद बना करके, अग्नि में तपा करके उस मानव के जैसे ही लेपन मानो लेपन किया और सूर्य की किरण उसमें प्रभावाद्यादित हुई, तो बेटा! देखो, वह रूग्ण शान्त होने लगा। तो परिणाम क्या? देखो, वह रुग्ण क्या था, जिससे मानव के अंग अंग में अस्वात हो जाता है। तो वैद्यराज इन्हीं किरणों के साथ नाना प्रकार के पिपाद, विज्ञान को ले करके लेपन करने से इनकी कृतिकाओं में पहुंच जाता है। परन्तु देखो, यही विज्ञान मेरे पुत्रों! देखो, जब प्राण चिकित्सा के क्षेत्र में पहुंचा तो यही नाना प्रकार की सूर्य की किरणों के द्वारा बेटा! वह मानो सूर्य से ऊर्ज्वा ले करके सूर्य से ऊर्ज्वा ले रहा है, रुग्णों को शान्त कर रहा है। सूर्य प्राणायाम कर रहा है, चन्द्रकेतु प्राणायाम कर रहा है। प्राणायाम करता हुआ अपने को सूत्र में पिरो रहा है। जब वह अपने को सूत्र में पिरो रहा है तो मानो देखो, वह अपने में चिकित्सक बन रहा है। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, बेटा! भिन्न भिन्न प्रकार की चिकित्साएं रही हैं मानवीय क्षेत्र में। बेटा! जैसे औषध विज्ञान रहा है, इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, यह प्राण चिकित्सा भी रही है। प्राण चिकित्सा के सम्बन्ध में मैंने तुम्हें कई काल में अपने विचार देते हुए कहा था क्या प्राण की चिकित्सा होनी चाहिए। प्राण चिकित्सा क्या होती है? मानो शरीर में दाह बन गया

है, अग्नि का दाह बन गया है तो वह चन्द्र प्राणायाम अवश्य करने वाला बने। चन्द्रवाणी असुतो मेरे प्यारे! देखो, यदि वह उसमें वायु का प्रकोप आ गया है तो मुनिवरों! मानव को शीतली प्राणायाम करना चाहिए। यदि उसमें शीतलता के विशेष परमाणु भरण कर गए हैं शीतलता आ गई है तो सूर्य प्राणायाम करना चाहिए। यदि मानो वह अक्राति में रमण कर गया है मानो देखो, कुअस्ति बन गया है तो मानव को शीतल रेचक, अव्रेत प्राणायाम दोनों करते हुए सूर्य की किरणों को अपने में भरण करना चाहिए। तो यह मानो भिन्न भिन्न प्रकार की चिकित्सा, प्राण चिकित्सा का वर्णन आता है। यहाँ ऐसे ऐसे वैज्ञानिक हुए हैं, इस प्रकार के साधक भी हुए हैं जिन्होंने सूर्य के परमाणु को अपने प्राणों में साधना के रूप में लाने का प्रयास किया तो वह गृह की दीपावली बन जाती थी। मुझे स्मरण है महाराजा नल हुए हैं, उनके गुरु थे जिनका नाम खेचरी भारद्वाज कहलाता था। वह भारद्वाज गोत्रीय थे परन्तु नामोकरण उनका खेचरी था। खेचरी मुनि महाराज मानो देखो, खेत्री मुद्रा को जानते थे। खेचरी मुद्रा में जब मुद्रित हो जाते थे तो मानो वह सूर्य की किरणों को अपने में भरण करते हुए प्राणायाम करते थे, कुम्भक करते, रेचक करते, शीतली करते, रोहिणी वृत्तिका करते सूर्य और चन्द्र की सर्वत्र प्राणों की आभा को जानते रहते थे। वह मानो देखो, प्राण को अपान में, अपान को उदान में, उदान को समान में, समान को देखो, वह उदगेति में रमण कराते हुए मानो जब खेचरी मुद्रा करते थे तो मस्तक ललाहट बन जाता था। जब मस्तक में ललाहट उत्पन्न होता तो मानो देखो, उनकी वाणी में अग्नि प्रभावित हो जाती। वह अग्नि मानो दीपक विद्यमान है। वह दीपावली बनने वाली है, जैसे वह प्राण के मानो देखो, वह अपनी वाणी से खेचरी प्राणायाम जहाँ किया तो मुनिवरों! दीपक में प्रकाश आ जाता था। तो मानो देखो, इस प्रकार की विद्या, हमारे यहाँ, परम्परागतों से देखो, वैदिक साहित्य में निहित रहती है।

आधुनिक काल का तो मुझे प्रतीत नहीं। तो मेरे प्यारे! महानन्द जी प्रगट करते रहते हैं। परन्तु मैंने इन विद्याओं का मानो कुछ अभ्यास भी किया है। नाना प्रकार की विद्याएं, हमारे वैदिक साहित्य में आती रहती हैं। तो मानो देखो, सूर्य की किरणों के साथ, एक

वैज्ञानिक है, एक आयुर्वेदाचार्य है, मानो ये भिन्न भिन्न प्रकार की आभा में गति करने वाले हैं, अहा यही सूर्य की नाना प्रकार की किरणें हैं जो मानो देखो, नाना प्रकार के औषध विज्ञान को जानने वाले, वैद्याराज जानते हैं। मेरी प्यारी माता जानती है उस अग्नि को जो अग्नि मुनिवरों! माता के गर्भस्थल में शिशु को तपाती रहती है। शिशु को तपाती रहती है वही अग्नि सूर्य की नाना प्रकार की किरणों को ले करके वह परमाणुओं का आदान प्रदान होता रहता। इसी प्रकार एक परमाणु का मानो एक परमाणु का विभाजन हुआ, एक परमाणु का संघर्ष हुआ, दूसरे परमाणु ने उस परमाणु को नष्ट किया, अपने में निगल लिया, वह शक्तिशाली बन गया है। इसी प्रकार उस परमाणु को रेण परमाणु ने लिया संघर्ष किया तो वह उसे निगल गया वे परमाणु और शक्तिशाली बना परन्तु इसी प्रकार जब एक परमाणु को निगलने की शक्ति, दूसरे परमाणु को मानो वमन करने की शक्ति आ जाती है तो उससे मुनिवरों! देखो, एक अणु की उत्पत्ति हो जाती है। मानो देखो, उसी से नाना प्रकार के अणुओं को ले करके मानव नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता है। मुझे स्मरण है क्या वह जो अणु मंगलं वाचक शक्ति है उसी के द्वारा घटोत्कच्छ इत्यादियों ने मानो देखो, निगलने वाली शक्ति को और वमन करने वाली शक्ति को, दोनों परमाणुओं को ले करके दोनों का सम्मिलान किया, दोनों का संघर्ष कराते हुए, जब दोनों थकित हो गए तो वह यन्त्र में स्थिर करके मानो उसमें ऊर्ज्वा ऐसी आ गई कि वह निचले वाले परमाणुओं को अपने में ग्रहण करने लगा। मानो परमाणु को अपने में ग्रहण जब करने लगा तो वही परमाणु देखो, दूसरे परमाणुओं को निगल करके अपने में ग्रहण करता रहा। वह वमन भी कर रहे हैं और देखो, परमाणुओं को अपने में निगल भी रहे हैं। मानो आहार भी चल रहा है और उसका सबवृत्ति भी चल रहा है। तो इस प्रकार का जो परमाणुवाद विज्ञान के क्षेत्र में गति करता रहता है। तो इसके ऊपर मुनिवरों! देखो, मानो विज्ञान परम्परागतों से बेटा! देखो, निर्धारित रहा है। कि हम इसके ऊपर अन्वेषण, अनुसन्धान करने वाले बनें।

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं कहाँ चला गया हूँ। मैं दूरी नहीं जाना चाहता हूँ विचार विनिमय क्या, हमारे यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार की विद्याएं आयुर्वेदाचार्यों ने मानी हैं। भिन्न भिन्न प्रकार

की विद्या के ऊपर अन्वेषण किया गया है। मानो देखो, महाराजा रावण के यहाँ, जो सुधन्वा नामक वैद्यराज थे, जब वह निद्रा की गोद में चले जाते थे तो मध्यरात्रि में वह स्वप्न मुद्रा में चले जाते। तो स्वप्न में जितनी औषधियाँ थीं, मार्ग की मानो भयंकर वनों से आ आ करके वनस्पतियाँ उन्हे अपने गुणों का वर्णन करती रहती। मानो गुणों का कैसे वर्णन होता है? जैसे एक मानव एक वेदमन्त्र के ऊपर अनुसन्धान करता हुआ वह निंद्रा की गोद में चला गया है। तो वह वेदमन्त्र स्वप्न में जब स्वप्नावस्था आती है तो वही वेदमन्त्र मानो देखो, जो भी अपने गर्भ में है उसका वर्णन करने लगता है। क्योंकि मेधावी बुद्धि में जब वेदमन्त्र प्रवेश कर जाता है तो मेधावी बुद्धि से उसका वह अपने में स्पष्टीकरण कर लेता है तो इसी प्रकार हमें विचारना चाहिए। हम मानो देखो, उस क्षेत्र में रमण करने वाले बनें जिस क्षेत्र में जाने के पश्चात् हमारी मानवीयता में एक मानवीयता का विशुद्ध दर्शन हो सके। हम मानवीयता का विशुद्ध दर्शन, उस काल में कर पायेंगे जब हमारे जीवन में प्रभु! की महानत्ता होगी, मानो देखो, प्रभु का विज्ञान हमारे समीप होगा। हम उस विज्ञान के ऊपर अन्वेषण करने वाले होंगे। मानो देखो, हम संसार को एक प्रकार की यज्ञवेदी के रूप में स्वीकार करेंगे, जैसे परमपिता परमात्मा ने इस मानव शरीर का जब निर्माण किया, माता के गर्भ में किया तो माता ने याग किया। याग में मुनिवरों! देखो, याग की जो उन्हें अनुभूति हुई, मानो याग का जो परिणाम हुआ वह माता के गर्भ से पुत्र और पुत्रियों का जन्म हुआ। वही मानो देखो, यागाम् ब्रह्मे इसी प्रकार जब मानव याग में परणित होता है, याग के क्षेत्र में जाता है, अग्नि के समीप जाता है, समुद्र की धाराओं की धाराओं की मानो देखो, अपने में अनुभूति करने लगता है तो मुनिवरों! देखो, वह यज्ञं भूतानि ब्रह्मे देवतं लोका वह देवताओं की सभा में सुशोभनीय बन जाता है। इसीलिए प्रत्येक मानव को अपने जीवन में यह विचारना है। मेरे पुत्रो! मैं इसके पश्चात मेरे प्यारे! मैं दूरी नहीं जाना चाहता हूँ। कल मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे एक वाक् बहुत विचित्र प्रगट कि आधुनिक जगत में कागभुषुण्ड जी को कागा उच्चारण करते हैं, परन्तु देखो, उन्होंने कहा क्या हनुमान जी को वानर कहते हैं। परन्तु देखो, यह वानराति बनो वच्चुतं ऐसा हमारे यहाँ आता

रहता है कि त्रेता के काल में कुछ राष्ट्रीय विभाग ऐसे थे जिसमें वानर एक राष्ट्र कहलाता था। एक मानो उनकी प्रजा को वानराति कहते थे। मानो देखो, वानर प्राणी और मानवीयता में यह रमण करते रहते थे। उनको वानर कहते थे एक वानर नाम की भगवान राम ने एक सेना नियुक्त की थी। मानो देखो, एक सेना जब रक्षकों की एक सेना नियुक्त की मानो वह जो रक्षक बन करके वह उनमें महाराजा हनुमान भी थे, क्योंकि महाराजा हनुमान जहाँ वैज्ञानिक थे, जहाँ अणु और परमाणु को जानते थे, वहाँ मानो देखो, प्रभु! का चिन्तन करने से बड़े कुशल थे, योगाभ्यास में बड़े कुशल थे। मुझे उनका जीवन जब स्मरण आने लगता है तो प्रायः हृदय गद् गद् हो जाता है मैं यह कहा करता हूँ क्या ब्रह्मे वाचो देवो ब्रह्म वाचा कृति मानो देखो, जब वह माता ने उसे उत्तम शिक्षा प्रदान की थी तो माता ने यह कहा था हे पुत्र! तुम परमपिता परमात्मा को अपने से दूरी नहीं करना। मानो देखो, परमपिता परमात्मा यह जो अणुवाद है वह इसको स्थिर करने वाला है। यदि चेतना नहीं रहेगी, परमपिता परमात्मा नहीं रहेंगे, तो परमाणु का जो अंतिम छोर है वे परमपिता परमात्मा की प्रतिभा से पिरोया हुआ है, मानो बिंधा हुआ है। यदि वह देखो, तुम उससे दूरी हो गए, तो तुम्हारा एक एक परमाणु प्रकृतिवाद में रत्त रह करके, मानो तुम भोगवाद में परिणित हो करके तुम्हारी आत्मा का हनन हो जाएगा। यह माता की पवित्र शिक्षा थी, उस काल में। आचार्य ने भी यही शिक्षा दी। परन्तु इसी को ले करके उन्होंने देखो, विज्ञान जहाँ अणुवाद, परमाणुवाद देखो, नाना प्रकार के परमाणुओं को जानते थे। अणुवाद में उनका विश्वसनीय विषय रहता था, परन्तु क्रिया कलाप में भी परिणित रहते। तो उनका जीवन मानो एक पवित्र माना गया है। पूजा की दृष्टि से ऋषि मुनि भी उस काल में उन्हें दृष्टिपात करते थे। परन्तु राम भी किसी किसी काल में उनके क्रिया कलाप को दृष्टिपात करके उनको मानो पूज्य दृष्टि से दृष्टिपात करते थे। ऐसा मुझे स्मरण है।

मानो देखो, इसी प्रकार अब रहा मेरे पुत्र ने कागभुषुण्ड जी को, कागा की दृष्टि से, उन्हें काग उच्चारण कराया, परन्तु देखो, आधुनिक काल को यह अज्ञानता का क्षेत्र मानो अपने मस्तिष्क से दूरी कर देना चाहिए। मानव का ये कर्त्तव्य है कि अपने मस्तिष्क में

से इन वार्त्ताओं को शान्त कर देना चाहिए क्या देखो, कागभुशुण्ड जी देखो, यह भी एक मानो की प्रति अस्तो यह भी कोई मानो देखो, ऐसे पक्षी हो सकते हैं जिन्हें कागा कहते हैं जो मानो देखो, वह देखो, अहिंसा और हिंसा को न जानने वाला हो। परन्तु मुझे उनका जीवन भली भांति स्मरण आता रहता है। कागभुशुण्ड जी की माता मानो शकुत को एक ऋचा नामक ब्रीहि व्रताम मानो देखो, एक महर्षि भुषण्डिकेतु नामक एक ऋषि थे, भुषण्डिकेतु मुनि महाराज मेरे प्यारे! भारद्वाज गोत्रीय कहलाते थे और इनका जो शासन परिवर्तन हुआ तो यह अंगिरस गोत्र में प्रवेश कर गए, अंगिरस गोत्रीय कहलाते थे। मानो देखो, वह साधन ब्रीहि व्रताम देवो ब्रह्म वाचो मानो देखो, भुषुण्ड जी एकां भू सम्भवा देवो मेरे प्यारे! देखो, वह जो ऋषि थे वे महान् और पवित्र होने से अकृतियों में बेटा! एक समय, अपनी पत्नी के समीप विद्यमान थे। उनकी पत्नी का नाम रूषेणकेतु था। मानो रूषेणकेतु पत्नी से बोले हे देवी! हमारी इच्छा यह है कि हम एक ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मचारी को जन्म देना चाहते हैं, मानो देखो, हम याग करना चाहते हैं। उन्होंने कहा, बहुत प्रियतम। तो मेरे पुत्रो! देखो, ऐसा मुझे स्मरण है क्या मानो देखो, उन्होंने पुत्र याग किया और याग करने के पश्चात् नौ माह तक माता उसे शिक्षा देती रहती थी। ब्रह्म विद्या प्रदान करती रहती थी। मानो देखो, निकटतम जो आसन था वह महर्षि वैशम्पायन ऋषि का था। वैशम्पायन की पत्नी का नाम मेरे पुत्रों! देखो, शकुंतका था। शकुंतकेतु ने भी यह निश्चय किया था कि मैं भी ब्रह्मवेत्ता पुत्र को जन्म देना चाहती हूँ। तो दोनों ने यह निश्चय किया पुत्र याग किया तो मानो देखो, उस माता के शकुंतकेतु के गर्भ से उत्पन्न होने वाले बालक का नाम महर्षि लोमश हुआ और मुनिवरों! देखो, उनके ऋषेतकेतु के गर्भ से उत्पन्न बालक का नाम कागो वशिष्ट हुआ। मानो उनके कागो वशिष्ट कहते थे उसके पश्चात् उनका नामोकरण प्रीति में कागभुशुण्ड भी कहने परन्तु देखो, दोनों महान तपस्या माता पिता ने तपस्वी बनाया। तप करने के पश्चात् उन्हें विद्या का खण्ड कराया। माता लोरियों का पान कराती रहती थी और लोरियों का पान कराते कराते मानो वह उनको शिक्षा और दीक्षा में परणित कर दिया। आचार्य के कुल में जब प्रवेश कराया तो उनका वेद का जो विषय रहा वह ब्रह्म विद्या में विश्वसनीय बन गए।

कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश दोनों एक ही गुरु के मानो शिष्यं ब्रही वृताम् कहलाते थे। वे दोनों मानो अध्ययन करते रहते थे। अध्ययन की प्रतिभा में दोनों ने निश्चय किया हम दोनों ही वेद का अध्ययन करते करते हम अपने प्राणों को समाप्त कर दें, यदि हम इस संसार से जाएंगे तो हम आत्मवेत्ता बन करके अपनी संकल्प से अपनी आत्मा को त्यागेंगे। इस शरीर में से विच्छेद करेंगे। परन्तु देखो, हम केवल अपने में अनुसन्धान करते हुए, दोनों एक दूसरे के प्रश्नोत्तरों को ले करके हम मानो अपने जीवन को व्यतीत करेंगे। ये विद्या काल में उन्होंने यह संकल्प किया था पुत्रों! बेटा! मुझे वह जीवन उनका उस काल का साहित्य, मुझे स्मरण आता है तो हृदय गद् गद् हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, दोनों ने यह संकल्प किया वे केवल ब्रह्म विद्या में तल्लीन रहते थे। देखो, वे ब्रह्म विद्या में उत्तर प्रश्न होते रहते थे। एक अणु को लेते, दूसरे अणु से उसका मिलान मिलाते रहते थे। उसको आध्यात्मिकवाद से उसका सम्मिलान कराते रहते थे। मानो पृथ्वी विज्ञान को लिया और उस पृथ्वी विज्ञान में गुरूतव को ले करके, परमाणुवाद को ले करके दोनों विश्लेषण करते करते इतना दूरी चले जाते थे क्या गुरूतव में इतने दूरी क्या मानो देखो, उसका आत्मा से समन्वय करते रहते थे। यदि उन्होंने देखो, आपो के परमाणुओं को ले करके उसके ऊपर विश्लेषण करना प्रारम्भ किया। प्रारम्भ करते करते बेटा! वह महतत्व को अपने से मिलान कराते रहते थे। अग्नि के ऊपर चयन करने लगे तो अग्नि के परमाणुओं को ले करके, अग्नि की धाराओं को ले करके बेटा! वह महान् क्षेत्र में प्रवेश कर जाते थे। परिणाम क्या मानो दोनों एक दूसरे के पूरक, जिनकी चर्चा मैं कल प्रगट करूंगा। मानो देखो, उन्होंने, दोनों ने याग के विषय ले करके जो अपना मन्तव्य दिया है, याग की चर्चाएँ हम कल प्रगट करेंगे।

आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, मानव को अपने जैसा मेरे पुत्र ने इससे पूर्व काल में प्रगट किया था क्या प्रत्येक मानव को अपने महापुरुषों की जीवनी को, उनके साहित्य को, उनकी विचारधारा को अपने से दूरी न करते हुए मानो देखो, अपने में नम्रता से उनके विद्या काण्ड को अपने में धारण करते हुए मानो देखो, उनको पूज्य स्वीकार करना चाहिए। उनको नाना प्रकार

के पशु पक्षियों की उपाधि देना ये सुशोभनीय नहीं देता, हमारे लिए अशुभ है। तो इसीलिए हमें यह विचारना है, मुझे बेटा! उनका बहुत सा काल उनका स्मरण आता रहता है, बहुत सा काल मेरे अन्तर्हृदय में विद्यमान रहता हैं, तो यह जो नाना विषयों के विशेषज्ञ ऋषि रहे हैं। देखो, एक ऋषि है वो तपस्या में परणित हो करके वो ज्ञान को जानता है वह ज्ञान का जानता है, विज्ञान को जानता है, और प्रकृतिवाद के विज्ञान को जान करके, सर्वत्र विज्ञान के अणु और परमाणु को जान करके, मौन हो करके आत्मवेत्ता बन जाता हैं तो इस प्रकार के जो ऋषि हैं उनको हम नतमस्तक हो करके नमः कर रहे हैं ऐसा मुनिवरों! देखो, हमारा सदैव विचार रहता है। आज का विचार विनिमय क्या कि मुनिवरों! मेरे पुत्र महानन्द जी ने बहुत सी वार्त्ताएं नवीन प्रगट कराई हैं परन्तु देखो, जो जिनके आश्रमों में, उनकी विचारधाराओं को ले करके हम अपने जीवन को ऊँचा बनाएं ऐसा हमारा सदैव विचार रहता है।

अब समय मिलेगा, तो कल मेरे प्यारे! महानन्द जी कुछ याग के सम्बन्ध में कुछ हमारे भी यागों के सम्बन्ध में विचार विनिमय हो सकेंगे। आज का विचार क्या आज तो मैंने अपने मानो महानन्द जी के विचारों के ऊपर एक अपनी टिप्पणियाँ, अपने विचार व्यक्त किए हैं। समय मिलेगा शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा। आज हमने बेटा! बिखरे परमाणुओं को एकत्रित करने का प्रयास किया बिखरे हुए को एक सूत्र में एक माला के सदृश्य उनको निर्माणित किया है समय मिलेगा शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन ओ३म् देवं भगाः आप्याहं लोकं सर्वा ग्राहणां त्वाः मां गतौ रेवा ओ३म् जनिता भद्रं मां ऋषि गा ताः ओ३म् ब्रह्मणा देवं मया सर्वं भद्राः लाक्षागृह बरनावा समय दोपहर : 3.00 बजे।

२० 10 03 1984 पुष्प 45 यज्ञोमयी विष्णु की व्याख्या

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर

वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि हमारा वेदमन्त्र उस महान् प्रभु को विज्ञानमयी स्वरूप उच्चारण कर रहा है और यह कहा रहा है कि वे परमपिता परमात्मा विज्ञानां भवते दिव्यं स्वरूपः भवते। अर्थात् परमपिता परमात्मा विज्ञानमयी स्वरूप माने गए हैं, क्योंकि यह ब्रह्माण्ड उसी ब्रह्म का आयतन माना गया है। उसी में रत्त रहता है, उसी में रत्त रहता हुआ वह ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का एक मूलतत्व बना हुआ है। इसके ऊपर प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, अन्वेषण करता रहा है अथवा विचार विनिमय करता रहा हैं। इसके ऊपर मानव ब्रह्म को विष्णु के रूप में परणित कर रहा है। यज्ञोमयी विष्णु कह रहा है। आज का हमारा वेदमन्त्र यज्ञोमयी विष्णु कह रहा था। परन्तु जब हम यह विचारने लगते हैं कि वे परमपिता परमात्मा यागों में ही परणित रहता है जो यज्ञोमयी विष्णु कहा गया है। तो इसके ऊपर हमारे यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार की विचाराधाएं, भिन्न भिन्न प्रकार की आभाओं में मानव गति करता रहता है। अपने में रत्त रहता है, उसके ऊपर अन्वेषण, अपने विचार, धाराएं, धाराओं से धाराओं का समन्वय करता रहता है।

आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है। यज्ञोमयी विष्णु यज्ञोमयी विष्णु इस धारा को ले करके, आज मैं तुम्हें ऋषि मुनियों के उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि मुनि इन वाक्यों के ऊपर अपनी विचारधारा को व्यक्त करते रहे हैं। तो आओ मुनिवरों! मैं तुम्हें उसी काल में, उसी ऋषि मुनियों के भयंकर वनों में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि मुनि इसके ऊपर अनुसन्धान और विचार विनिमय, विचारों का आदान प्रदान करते रहते थे। मैं तुम्हें उन्हीं ऋषियों के क्षेत्र में, जहाँ महर्षि लोमश और कागभुषुण्ड जी दोनों विद्यमान हो करके अपनी विचारधारा को व्यक्त करते रहे हैं। तो एक वेदमन्त्र उनके समीप आया, महर्षि लोमश ने कागभुषुण्ड जी से यह प्रश्न किया कि यह वेदमन्त्र कहता है कि यज्ञोमयी विष्णु है। यज्ञोमयी विष्णु क्या है? हम इसकी विवेचना करना चाहते हैं। तो महर्षि कागभुषुण्ड जी ने कहा कि हे लोमश! आप तो आदान और प्रदन की विवेचना में आ गए हैं। यज्ञोमयी विष्णु कहते हैं पालन करने वाले को, जो पालन करता है वही

विष्णु हैं। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में विष्णु के नाना पर्यायवाची शब्द माने गए हैं। जैसे विष्णु नाम राजा को, विष्णु नाम परमपिता परमात्मा को माना है जो पालन करने वाला है। विष्णु नाम सूर्य को माना है जो प्रकाश देता है, जो प्रकाश में रत्त रहने वाला है। इसी प्रकार यज्ञों का नाम भी विष्णु माना गया है। यज्ञशाला में यज्ञमान, होतागण विद्यमान हो करके जब याग करते हैं, अग्न्याधान करते हैं, अग्नि में चयन करते हैं, अग्नि में स्वाहा कहते हैं तो जानो कि अग्नि की तरंगों में शब्दों को भरण कर रहे हैं, अथवा उसमें ओत प्रोत करा रहे हैं। तो यज्ञोमयी विष्णु आता है कि जितने भी संसार के शुभ कर्म हैं, आत्मीय कर्म हैं, निर्माणीय कर्म हैं, उन सर्वत्र का नाम याग के रूप में परणित किया गया हैं। हमारे यहाँ एक माता याग कर रही है, एक पितर याग कर रहा है, एक होतागण याग कर रहा है, और ब्रह्मा उद्गाता के रूप में उद्गीत गा रहा है। ब्रह्मा उसकी कृतिका को दृष्टिपात करता हुआ उसे निहार रहा है। तो वह एक यज्ञोमयी विष्णु बन गया है। विष्णु नाम यहाँ यज्ञ को इसलिए माना है कि जितनी भी उद्गम विचारधारा है, पवित्र धारा है, पवित्रत्तम कर्म है, उन सर्वत्र का नाम याग के रूप में परणित माना है। मुनिवरों! बहुत पुरातन काल हुआ जब मैं याग के सम्बन्ध में अपनी विवेचना भी देता रहा हूँ, आज भी इस सम्बन्ध में बहुत से विचार मुझे स्मरण आ रहे हैं और वह विचार क्या हैं? महर्षि लोमश और महर्षि कागभुषुण्ड जी दोनों का परस्पर जो विचार विनिमय आदान प्रदान था उस पर मैं तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। कागभुषुण्ड जी ने कहा एक समय मैं मगध राष्ट्र में पहुंचा, तो मगध राष्ट्र में स्वाति ऋषि महाराज अपने आसन पर विद्यमान थे। महर्षि स्वाति मुनि से मैंने यह प्रश्न किया, महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ यज्ञमान जो याग कर्म करता हूँ, याग का क्रिया कलाप करता है, इस याग का उद्गात कौन है? जो गीत गाता है। स्वाति ऋषि ने कहा, मैं तो इसको नहीं जानता। तब मैंने कहा, कोई जानता हो तो उसका मुझे समावृत्ति करो, मुझे उसके समीप ले चलो। तो वहाँ से भ्रमण करते हुए वह आदित्य मुनि के द्वार पर पहुंचे। उन्होंने कहा कि महाराज! जो यज्ञशाला में विद्यमान हो करके जो उद्गीत गाने वाला उद्गात है उसका देवता कौन है? तो उन्होंने कहा कि जो उद्गीत गा रहा है, उद्गान गा रहा है उसका

देवता विष्णु है। उन्होंने कहा, विष्णु किसे कहते हैं? उन्होंने कहा, याग में जो उद्गान गा रहा है मैं उस उद्गीत वाले उद्गाता को जानना चाहता हूँ कि उसका देवता कौन है? उन्होंने कहा, उद्गाता का देवता साम है और वह कृतियों में रमण करने वाला साम गान है। साम गान का देवता कौन है? वायु परमाणुओं को ले करके, जब गति करती रहती है तो वह उद्गीत गाती रहती है, उद्गान गाती रहती है। वह यज्ञ की सुगन्ध को, परमाणुओं को और शब्दों को ले करके वह वायुमण्डल में प्रवेश कराती, द्यौ को प्राप्त करा देती है। उन्होंने कहा, प्रभु! उद्गान गाने वाला वायु का देवता कौन है? जो यज्ञमान के, उद्गाता के स्वाहा शब्द को द्यौ लोक में पहुंचाता है। उन्होंने कहा, जो अग्नि में प्राण तेजोमयी है, जो गति करने वाला है, जो सूर्य की किरणों को उद्गीत के रूप में परमाणुओं को ले करके द्यौ मैं उन्हें प्रवेश करा देता है। द्यौ में उनकी स्थिति हो जाती है। तो विचार क्या? जो वायु में परमाणुवाद गति कर रहा है वह प्राण सूत्र में पिरोया हुआ है। वह प्राण में पिरोया हुआ होने के नाते यज्ञमान स्वाहा कह रहा है, उद्गाता उद्गान गान गा रहा है। वह उद्गान गा करके जब स्वाहा कह रहा है तो वह द्यौ लोक को शब्द जा रहा है। अग्नि उसका देवता, सूर्य उसका उद्गीत गाने वाला है। उन्होंने कहा, यह जो यज्ञमान याग कर रहा है यह क्यों कर रहा है, इसका कौन सा मन्तव्य है? तो उन्होंने कहा, इसको मैं नहीं जानता।

मुनिवरों! उन्होंने कहा, इसको कौन जानता है? तो वह भ्रमण करते हुए अंगिरस मुनि के द्वार पर पहुंचे। अंगिरस गोत्र में एक श्वेत्ताभानु ऋषि थे, उनके द्वार पर पहुंचे। उन्होंने यह प्रश्न किया महाराज! यज्ञशाला में विद्यमान होने वाला जो यज्ञमान है, वह याग क्यों कर रहा है? वह श्रद्धामयी घृत क्यों दे रहा है? तो उस समय अंगिरस ऋषि ने कहा कि हे मुनिवर! यज्ञमान इसलिए याग कर रहा है कि उसका प्रतिनिधित्व कर रहा है, और प्रतिनिधित्व करके वह श्रद्धामयी घृत की आहुति दे रहा है। साकल्यमयी गुरूतव की आहुति दे रहा है। वह जो आहुति में स्वाहा उच्चारण कर रहा है, स्वाहा उच्चारण करता हुआ वह आत्म तत्त्व के द्वारा, वह प्राण सूत्र में पिरोया हुआ उस यज्ञमान की जो श्रद्धा है, वह द्यौ में प्रवेश कर रही है और वह यज्ञमान को पुनः प्राप्त होती हुई,

उसको पुरायां ब्रह्म वाचोः देवाम् ब्रह्मः इसलिए कर रहा है कि याग ही उसका कर्म है, याग ही उसका जीवन है, यज्ञं भविते देवः आत्मा वृत्तते जैसे यज्ञ इसलिए कर रहा है कि मेरा यह लोक पवित्र बन जाए, तेरा परलोक ऊँचा बन जाए। मैं इसके पश्चात् उपराम हो करके आत्मा लोक को प्राप्त करने लगूं।

जब अंगिरस ऋषि ने उत्तर दिया तो उन्होंने कहा, यज्ञमान की धर्म देवी साकल्य की आहुति दे रही है गुरूतव दे रही है। यह जो साकल्य प्रदान किया जा रहा है यही साकल्य तो जीवन है। यही साकल्य यह उसी को प्राप्त हो करके, साकल्य पृथ्वी का तत्त्व माना गया है, यह पृथ्वी की आभा मानी गई, हैं। नाना वनस्पतियों को ले करके यह वायु मराडल में उसे पिरोना चाहते हैं। वह विष्णु है क्योंकि पालन करता है। इसी के द्वारा साकल्य जब भावना से प्रदान किया जाता है, परमाराुवाद की उत्पत्ति होती है। अशुद्ध परमाराु निगले जाते हैं, शुद्ध परमाराुओं का जन्म होता है और वही परमाराुवाद, विज्ञानवेत्ताओं ने माना है कि इस लोक में प्रवेश करके नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते रहते हैं। इसी प्रकार ऋषि ने यह निर्णय दिया तो उन्होंने एक प्रश्न और किया कि महाराज! यह जो ब्रह्मा विद्यमान हो करके प्रत्येक वेदमन्त्र को निहार रहा है, अपने में दृष्टिपात कर रहा है और वह यज्ञमान को संकेत करता है कि स्वाहा कह करके तू लोक और परलोक को प्राप्त हो। इसमें आत्मा का लोक क्या है? मैं आत्मा के लोक की और चर्चा करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा प्रभु! मैं इसको नहीं जानता। तो मेरे पुत्रो! ऋषि मुनि इतने निरभिमानी होते हैं जो कहते हैं कि मैं नहीं जानता। उन्होंने कहा तो ऐसा कौन है? उन्होंने कहा तुम महर्षि जालवी के द्वार पर चले जाओ। वह महर्षि जालवी के द्वार पर पहुंचे। वहाँ से अंगिरस ऋषि भी उनके साथ साथ भ्रमण करते हुए वह महर्षि जालवी के द्वार पर पहुंचे। उन्होंने उनका स्वागत किया और कहा मेरा कैसा अहोभाग्य है कि आज ब्रह्मवेत्ताओं के दर्शन हो रहे हैं। उनसे कहा क्या कारण है? उन्होंने कहा कारण यह है कि हम आत्मा के लोक को जानने के लिए आए हैं। तो मेरे पुत्रो! महर्षि जाहनवी ने कहा यह जो यज्ञोमयी प्रतिभा, आत्मा का लोक पञ्च महाभूत माने गए हैं। यह जो पञ्च तरंगें हैं, पञ्च महाभूत है, यह आत्मा का लोक हैं। उन्होंने

कहा प्रभु! हम आत्मा का कर्म और जानना चाहते हैं। जब इसका लोक यह है। उन्होंने कहा कि आत्मा का कर्म उसका याग है। यागां ब्रह्मेः आत्मा, आत्मा का जो कर्म है वह पञ्च महाभूतों में आ करके कर्म ही उसका याग है। तो याग का अभिप्राय यह है कि जितना शुभ कर्म है, प्रत्येक दृष्टि से मुनिवरों! सु दृष्टिपात करने वाला हो। प्रत्येक इन्द्रिय से वह सु रहने वाला हो, तो वह मुनिवरों! याग कर रहा है। आनन्दित हो रहा है। अपने आनन्दमयी श्रोत्रों का पालन कर रहा है।

आज मैं कहाँ चला गया हूँ, विचार क्या कि महर्षि जालवी ने जब यह निर्णय दिया कि आत्मा का लोक पञ्च महाभूत है। यह जो हमारा मानव शरीर है यह पञ्च महाभौतिक पिण्ड कहलाता है। इसका जो कर्म है वह ब्रह्मवाचः प्रवेः याग माना गया हैं वह याग कर रहा है। सु कर्म कर रहा है। यज्ञोमयी विष्णु पालन करने वाले की उपासना कर रहा है। पञ्च महाभूतों के रूप को, स्वरूप को लेकर के साकल्य बना करके उसका याग कर रहा है। सुगन्धि कर रहा है। विचारों की महत्ता में मानव को परणित करता चला जा रहा है। ऋषि ने कहा अमृतम् ब्रह्मलोकाम् हिरण्यम् रथः आत्म ब्रह्म लोकः आत्मा का लोक ही यह पञ्च महाभूत हैं और कर्म उसका याग है। जालवी ऋषि से उन्होंने एक प्रश्न और किया कि महाराज! हम यह जानना चाहते हैं कि यह आत्मा इस संसार में पञ्च महाभौतिक पिण्डों में आ करके प्रवेश करता है तो भौतिक याग से इसका क्या सम्बन्ध रहता है? उन्होंने कहा कि भौतिक याग से इसका यह सम्बन्ध है कि पञ्च महाभौतिक जो कर्म हैं अप्रतः है। (शब्द ध्वनि से)

वही तो भौतिकता कहलाती है। उससे उसका समन्वय रहता है। मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा प्रभु! इससे हमारी संतुष्टि नहीं हुई। उन्होंने कहा तो चलो भगवन्! भ्रमण करते हुए मुनिवरों! उन्होंने कहा चलो, महर्षि भारद्वाज, श्वेताश्वतर भारद्वाज मुनि, इसका क्रियात्मक इसका उत्तर देंगे। तो बेटा! देखो, वहाँ से भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, वह महर्षि भारद्वाज मुनि के द्वार पर पहुंचे। तो कागभुषुण्ड जी ने कहा, हे लोमश! हम सब ऋषिजन सब मिलन करते हुए, मानो देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुंचे। भारद्वाज मुनि ने ऋषि मुनियों का स्वागत किया और उन्होने कहा आइये भगवन्!

विराजिए। वह विराजमान हो गए। ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारिणी शबरी, ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी कृतिका, यज्ञदत्तः, महर्षि प्रवाहणा, महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य, महर्षि रोहिणीकेतु, महर्षि सोमप्रतिभा आदि मेरे पुत्रों! देखो, आदि ऋषिवर इससे पूर्व ही विद्यमान थे। तो यह भी मुनियों कागभुषुण्ड जी, और मुनिवरों! देखो, श्वेत्ताम और जालवी इत्यादि सब ऋषि उनके द्वार पर जा पहुंचे। ऋषि मुनियों ने बेटा! जालवी ऋषि महाराज उस समय ब्रह्मनिष्ठ कहलाते थे। मानो देखो, उनको आसनम् ब्रह्मे ऊँचा आसन प्रदान किया। आईए भगवन! विराजिए, कागभुषुण्ड जी को भी ऊँचा आसन प्रदान किया। मानो देखो, विद्यमान हो गए तो ऋषि मुनियों ने यह प्रश्न किया। जालवी ने कहा प्रभु! मैंने आत्मा का लोक इन्हें निर्णय कराया है। इनसे वर्णन किया है कि पञ्च महाभूत ही आत्मा का लोक है। परन्तु यह जानना चाहते हैं कि विज्ञान से इनका क्या सम्बन्ध है? तो भगवन्! आप निर्णय कराइये। तो मेरे प्यारे! महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में जो ब्रह्मचारी सुकेता अध्ययन करता था तो ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा आओ भगवन्! विराजो! वह विराजमान हो गए। विराजमान होने के पश्चात् उन्होंने कहा प्रभु! आप क्या जानना चाहते हैं? उन्होंने कहा हम यज्ञ से इसका समन्वय चाहते हैं कि याग कैसे मानो पञ्च महाभूत है और विष्णुमयी याग का वर्णन वैदिक साहित्य में आता रहता है तो हम जानना चाहते हैं क्या इसका विज्ञान से क्या समन्वय रहता है? तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने कहा आओ, भगवन! तो वह विराजमान हो गये, विराजमान हो जाने के पश्चात उन्होने कहा आओ, ब्रह्मचारी सुकेता ने भारद्वाज मुनि से प्रश्न करने लगें उन्होने कहा प्रभु! यह कुछ प्रश्न ले करके आए हैं। आप इनके प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

उन्होंने कहा ब्रह्मवाचो ब्रव्हे व्रतां देवा हिरण्यं रथः वाचन्नमो ब्रह्मवेत्तो कृति देवः मेरे प्यारे! जब ऋषि ने यह निर्णय कराया, कि हम इसमें सम्भूति रहते हैं, हम इसको अच्छी प्रकार नहीं जान पाते। तो हमें इसे जनाईए तो मेरे प्यारे! महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने, ब्रह्मचारी सुकेता ने, ब्रह्मचारी कवन्धि ने, महर्षि पनपेतु ऋषि महाराज ने कहा, कि सम्भवतो ब्रह्मचित्रो वस्ता क्या प्रभु! आपने तो नाना प्रकार की चित्रावलियों का निर्माण

किया है, उन चित्रावलियों को लाया जाए। उनहोने कहा कि चित्रावली इस प्रकार नहीं, तो मेरे पुत्रों! उनके यहाँ एक मानो देखो, पञ्चकोण की यज्ञशाला थी। पञ्चकोण की यज्ञशाला में बेटा! वह विद्यमान हो गए और विद्यमान हो करके मानो महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा, हे भगवन! तुम याग का प्रारम्भ करो। मैं तुम्हें दृष्टिपात कराऊंगा। आप यागाम् ब्रह्म लोकं हिरण्यं रथा मानो तुम याग का प्रारम्भ करो। मानो वह याग का प्रारम्भ करने लगे, जब याग का प्रारम्भ करने लगे, तो मेरे पुत्रों! भारद्वाज मुनि ने, ब्रह्मचारी सुकेता ने, मेरे पुत्रों! देखो, अपनी चित्रावलियों को एकत्रित कराया, और उन्होंने कहा चित्रो भविता देवाः हिरण्यं रथाः गायन्त्वा देवो ब्रह्म वाचो देवाः मेरे प्यारे! जब ऋषि ने यह वर्णन कराया, क्या भगवन! याग का प्रारम्भ करो। तो मुनिवरों! देखो, उन्होने जैसे ही, याग का प्रारम्भ कराया, तो मुनिवरों! देखो, जैसे स्वाहा उच्चारण करने लगे, अहा! स्वाहा उच्चारण करते ही मुनिवरों! देखो, उस महान् यज्ञ में से तरंगों का जो प्रादुर्भाव हो रहा था, जो तरंगें उत्पन्न हो रही थी उनके शब्द मुनिवरों! देखो, अग्नि की पवित्र धाराओं के ऊपर विद्यमान हो करके मेरे पुत्रों! देखो, वह उन्हे द्यौ लोक जाते हुए उन्हें दृष्टिपात आने लगे। तो मेरे प्यारे! देखो, वह द्यौ लोक वाला जो ब्रह्माण्ड है, द्यौ लोक वाली जो प्रतिभा है, वह महानत्ता में गति करने वाली है।

मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता रहता है, भारद्वाज मुनि ने कहा ये पञ्चमहाभूतों का जो लोक है यह मानो देखो, स्वाहाः के ऊपर विद्यमान हो करके, अग्नि की धाराओं में प्रवेश करता हुआ, द्यौ लोक को तुम्हारा शब्द जाता हुआ दृष्टिपात आता है। यज्ञ का रथ बन करके जाता है मेरे यज्ञमान का रथ बन करके बेटा! द्यौ लोक को जाता हुआ अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके बेटा! वह शब्द अपनी आभा में गति कर रहा है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, केवल परिचय देने के लिए आया हूँ, और वह परिचय क्या है मेरे पुत्रों! परिचाम् देवो भविता ब्रह्म वाचा वाचन्नमाः वेद का आचार्य कहता है, ऋषि कहता है, यागां ब्रह्मे पंचो वृत्ति देवः मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा, यह विज्ञान है मेरे पुत्रों! देखो, यन्त्रों में चित्र जा रहे हैं। अन्तरिक्ष में चित्रों का गमन हो रहा है। शब्द के साथ में चित्र गतियाँ कर

रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वह उन यन्त्रों में उनके चित्र साक्षात्कार शब्दों के साथ दृष्टिपात आ रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, उस समय जालवी ऋषि इत्यादि ने, धन्यवाद कह करके और महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज का वह क्रियात्मक जीवन मानो क्रियात्मक विज्ञान में प्रवेश करते हुए, उन्हें धन्यवाद, उनकी प्रतिभा की सराहना उन्होने की, मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने भारद्वाज से यह और प्रश्न किया कि महाराज! यज्ञोमयी विष्णु यह विष्णु क्या है? इसका विज्ञान से, क्या सम्बन्ध है? उन्होंने कहा, यज्ञोमयी विष्णु क्योंकि परमपिता परमात्मा रचयिता है, रचाने वाला है, पालन करने वाला है, यज्ञोमयी विष्णु मानो जैसे परमाणुवाद की उत्पत्ति हो रही है। शब्द गति कर रहा है द्यौ लोक में, परन्तु शब्द ज्यों का त्यों आकार बना हुआ है। परमाणुवाद में निहित हो रहा है। परन्तु उस परमाणुवाद को जो नियन्त्रण में लाने वाला है। उसका नाम यज्ञोमयी विष्णु कहा गया है, मेरे पुत्रों! देखो, विज्ञानवेत्ता विज्ञान में गति कर रहा है अणु और परमाणु को जान रहा है परमाणु के क्षेत्र में चला जाता है चित्रावलियों में मेरे पुत्रों! एक एक अणु के परमाणु का विभाजन करने से मानो ब्रह्माण्ड उसमें दृष्टिपात आता है, और परमाणुओं में ब्रह्माण्ड निहित हो रहा है उस ब्रह्माण्ड के ऊपर जो नियन्त्रण कर रहा है, उसका नाम यज्ञोमयी विष्णु कहा गया है। मेरे पुत्रों! उसी का नाम विष्णु है, विष्णु भविताः देवाः जैसे मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ माता को विष्णु कहा गया है। माता को यागां विष्णु कहते हैं। जब माता अपने पुत्र का पालन करती है, माता का पुत्र मानो देखो, एकान्त स्थली में विद्यमान है और क्षुधा लग रही है पुत्र को, परन्तु व्याकुल हो रहा है। माता के श्रोत्रों में जब मानो बालक की वाणी प्रवेश करती है तो माता के शरीर में मुनिवरों! देखो, वह जो परमाणुओं का मानो देखो, आदान प्रदान हो रहा है, उसमें एक विचित्र गति होती है और वह जानती है मेरे पुत्र को क्षुधा लग रही है। मानो माता विष्णु बन करके पालन करने वाली बन करके मेरे पुत्रों! वह लोरियों का पान करा रही है। लोरियों का पान करा करके जब क्षुधा से पूर्णवत शान्त हो जाता है, पूर्ण रूपेण हो जाता है, वह आनन्दवत् हो करके मग्न हो जाता है, माता भी मग्न होती है, मानो वह

पालन कर रही है। वह यज्ञमयी विष्णु है।

मानो देखो, वही क्रियाकलाप, हमारे यहाँ यज्ञमान के मध्य में हो रहा है। मेरे प्यारे! वह अग्न्याधान जब करता है, अग्नि को जानता है, यह अग्नि है, यह वैश्वानर यज्ञोमयी अग्नि जो काष्ठों में गति करने वाली है, जो काष्ठ में रहने वाली अग्नि है, आभा में रत्त रहने वाली अग्नि है, मानो देखो, उस अग्नि का सूत्र हो रहा है। आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना में तुम्हे ले जाना नहीं चाहता हूँ। मैं व्याख्याता नहीं हूँ। मेरे पुत्रों! मैं परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है? यज्ञोमयी विष्णु! मेरे पुत्रों! देखो, माता रूधनम् ब्रह्मे वाचा मेरे पुत्रों! देखो, जब यह विष्णु माता बन करके पालन करती है, शासन कर रही है और उत्पत्ति के वर्गवत बना रही है तो मुनिवरों! वह माता विष्णु के रूप में है वह विष्णु याग करती है, विष्णु याग कर रही है। मेरे पुत्रों! देखो, विचार विनिमय क्या? यज्ञोमयी विष्णु प्रियम् ब्रह्मवाचो देवः आभ्यां रुद्रो, मेरे पुत्रो! आज मैं विशेषता में तुम्हें ले जाने के लिए नहीं आया हूँ। आज तो मेरे प्यारे! महानन्द जी को दो शब्द उच्चारण करने थे, परन्तु वह समय नहीं रहा। कल समय मिलेगा तो हम इनकी विवेचना परणित अपने में ग्रहण कर सकेंगे। आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है कि यह विष्णु है मेरे पुत्रों! महर्षि जालवी, कागभुषुण्ड जी, मुनिवरों! देखो, रोहिणीकेतु, अश्वेतकेतु, सम्भूति इन सब ऋषि विद्यमान हो करके मेरे पुत्रों! देखो, महान् उनको संतुष्टि हो गई। क्या वास्तव में, वाणी से देखो, जब स्वाहा कहता हैं, स्वाहा के साथ उसका जब चित्र आता है, यज्ञशाला का चित्र जाता है, शब्द के साथ में और वह अन्तरिक्ष में मुनिवरों! देखो, गति करता रहता है। वह द्यौ लोक को प्राप्त हो जाता है। समय समय पर बेटा! वही वाक्य, वही कृतिका, वही तरंगें बेटा! यज्ञमान को प्राप्त होती हैं।

आओ मेरे पुत्रों! हम हृदयग्राही बन करके अपने को ऊँचा बनाना चाहता है हृदयग्राही बन करके मानवीय क्षेत्र में प्रवेश करना चाहते हैं, मेरे पुत्रों! देखो, मानो ब्रह्म वाचा देवाः प्राच्यं ब्रह्म वाहा कृतिका लोकाः मेरे प्यारे! देखो, वही विष्णु है, यज्ञोमयी विष्णु जो हमारा पालन करने वाला संसार का जितना सु कर्म है, विचित्र कर्म है वह सब विष्णु

हे मेरे प्यारे! वह सब विष्णु कहलाता है। विष्णु पवित्र को कहते हैं, पालन करने वाले को कहते हैं। यह याग हमारा पालन करता है। जब यह सुगन्ध साकल्य की वायुमण्डल में प्रवेश करती है, यह अशुद्ध परमाणुओं को निगलता है, शुद्ध परमाणु देता है मानो नवीन परमाणुओं को जन्म देता है। मेरे पुत्रों! देखो, इससे मानो परमाणुओं का आदान प्रदान हो करके वायु मण्डल को पवित्र बनाता है।

विचार विनिमय क्या? आज का हमारा वाक्य क्या कहता है यह वैज्ञानिक सिद्ध है, वैज्ञानिक जनों ने परम्परागतों में बेटा! याग को पवित्र माना है। याग को वायुमण्डल का शोधन माना है। याग को मानव की विचारधारा की महानत्ता वाला क्रिया कलाप माना है जिसके ऊपर मुनिवरों! देखो, परम्परागतों से, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके मुनिवरों! वर्तमान के काल तक याग के ऊपर मानव चिन्तन करता रहा है, याग में रत्त होता रहा है। अग्न्याधान करता रहा है, अग्नि में सुगन्ध को लाना चाहता है। यह परम्परागतों से मानवीय मस्तिष्कों में यह विचारधारा, आदान प्रदान होती रहती है और देखो, उनके हृदयों में एक पवित्रता की धारा निहित रहती है। आज का विचार विनिमय क्या? आज हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए बेटा! परमपिता परमात्मा को जानते हुए अपने को विज्ञान में ले जाना चाहते हैं, विज्ञान में से तरंगों को पाना चाहते हैं, अपने में धारणा करना चाहते हैं।

तो मेरे पुत्रों! देखो, आज का विचार विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए जैसा मुनिवरों! देखो, मैं वहीं आना चाहता हूँ कि महर्षि कागभुषुण्ड जी ने लोमश मुनि महाराज की चर्चा महर्षि कागभुषुण्ड ने यह लोमश जी को यह निर्णय कराया कि मैंने अपने जीवन में यज्ञ के सम्बन्ध में जो पाया है वह मैंने तुम्हें उद्गम किया है और वह उद्धृत करते हुए कहा है क्या देखो, ऋषि मुनियों का ऐसा मन्तव्य है, उन्होंने अपनी यन्त्रशालाओं में, चित्रशालाओं में मानो स्वाहा का जो शब्द है यह अन्तरिक्ष में जाता है। यह यज्ञ का रथ बन करके द्यौ लोक को प्राप्त होता है। वह द्यौ सूर्य की किरणा उससे गतियाँ लेती हैं। वह सूर्य की किरणा है, जो मानो उस रथ की आभा को मेरे पुत्रों! जहाँ आच्छादित कर देती हैं। परिणाम क्या? मानो देखो, यह

विज्ञानमयी रहस्य माना गया है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी ने कहा क्या महाराज! मैंने याग के सम्बन्ध में देखो, यहाँ विष्णु ब्रह्म वाचो, मेरे पुत्रों! देखो, यहा एक एक सूत्र जिस सूत्र में प्रत्येक मानव पिरोया हुआ है और वही याग पिरोया हुआ है। मानो देखो, सर्वत्र देवता इस संसार में प्राण सूत्र है जिस प्राण सूत्र में एक एक वाक्, एक एक परमाणु बेटा! उसमें पिरोया हुआ है। एक एक परमाणु में जो ब्रह्माण्ड है वह उसमें पिरोया हुआ है, वह माला बनी हुई है। लोक लोकांतर बेटा! देखो, उसी सूत्र में पिरोए हुए हैं इसीलिए यज्ञोमयी विष्णु यह प्राण को देने वाला है। यह सतोगुणी है, यह सत्यमयी माना गया है। हमें उस प्राणसूत्र की उपासना करनी चाहिए। अपने उपास्य देव को अपने में अन्तर्ध्यान, अन्तर्मुखी हो करके, ध्यानावस्थित हो करके मानवीय क्षेत्र में रमण करना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रकट करूंगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं और यज्ञोमयी विष्णु की उपासना करते हुए उसकी महानत्ता में गति कर जाएं। यह आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् ब्रह्म भवाः आ पा रथं मा ना वाचन् देवाः आभ्यां मना। ओ३म् त्वञ्जना रतौ ब्रह्ममणा। लाक्षागृह बरनावा समय दोपहर : 3.00 बजे

२१ 11 03 1984 पुष्प 45 राष्ट्र को समुन्नत करने हेतु रूढ़ि व स्वार्थवाद

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, क्योंकि हमारे यहाँ प्रायः उस पवित्र वेदवाणी का वर्णन होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना जो यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है। यज्ञ तो उस ब्रह्म का आयतन माना गया है जिसके ऊपर यह मानव परम्परागतों से ही, प्रायः अनुसन्धान करता रहा है और उस यज्ञोमयी स्वरूप की महिमा का वर्णन हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में आता

रहता है। नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे यहाँ, परम्परागतों से माना है। हमारे यहाँ जैसे यह यागों का चलन है, इसके भिन्न भिन्न प्रकार माने गए हैं। जैसे हमारे यहाँ अग्निष्टोम याग का वर्णन आता रहता है, वाजपेयी यागों का वर्णन आता रहता है। अश्वमेध याग है, अजयमेध, गोमेध, भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन होता रहता है। परन्तु यागों का चयन करने से ही इस वायुमण्डल में पवित्रता आती है। ऋषि मुनियों ने परम्परागतों से ही, इस याग के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार का चयन किया है। जिसके ऊपर मुनिवरों! ऋषि मुनि परम्परागतों से अपने में अध्ययनशील रहे हैं और अध्ययन करते रहे हैं यह याग द्यौ लोक की प्रतिभा कहलाती है।

आओ मेरे पुत्रो! हम द्यौ लोक को विचारने लगते हैं, द्यौ लोक में जो नाना प्रकार के शब्द, द्यौ में प्रवेश होते रहते हैं। उनका संघर्ष हो करके वायुमण्डल को पवित्र बनाते रहते हैं, क्योंकि अग्नि सदैव संघर्ष करती रहती है। तो वह एक दूसरे की आभा को जन्म देने लगती है। जन्मदाता बन करके इस संसार में प्रकाश की द्योतक बन जाती है। तो आओ मेरे पुत्रो! विचार कि यज्ञो मंगलं ब्रह्मः अब मैं कोई विशेष चर्चाएँ प्रगट करने नहीं आया हूँ। मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् मधुमा रथं आप्यां लोकाः सर्वेषु भद्रं मां गता। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे भद्र समाज! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी, कुछ यागों का चयन कर रहे थे, अथवा यागों का वर्णन कर रहे थे। नाना प्रकार के यागों का चलन मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! परम्परागतों में मानो उसकी आभा निहित करते रहे हैं। जैसे अश्वमेध याग है, गो मेध याग है, वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है, रुद्र याग है, विष्णु याग है, ब्रह्मयाग है। नाना प्रकार के यागों का चयन इन वैदिक साहित्य में, वेद के मन्त्रों में होता रहा है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वर्णन कराया, कई कालों में वर्णन कराया कि यह जो याग है यह मानो देखो, एक आनन्द की एक प्रतिभा कहलाती है। क्योंकि प्रत्येक प्राणी यह चाहता है कि मेरे हृदय में सुगन्धि आ जाए, सुगन्धि को चाहता है, क्रिया कलाप ऊँचा चाहता है, और उस क्रिया कलाप को क्रियात्मक रूप देना चाहता है। परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! कई काल में प्रगट कराया कि इसके मूल

में कोई आनन्द है। इसके मूल में देवतव है, इसके मूल में पञ्चमहाभूतों की प्रतिभा विद्यमान रहती है, विज्ञान की तरंगें रहती हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत पुरातन काल हुआ, मानो इन्होंने वर्णन कराया कि वाजपेयी यागों का वर्णन वैदिकता में प्रतिष्ठित रहा है। जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों की, उनके मुखारबिन्दु की कल्पना करते लगता हूँ और जब मैं आधुनिक काल अथवा महाभारत काल के पश्चात् के काल में जब मैं प्रवेश करता हूँ, तो मुझे यह संसार, इनका क्रिया कलाप एक खिलवाड़ के रूप में दृष्टिपात आता है। मेरा अन्तरात्मा बहुत प्रसन्न हो रहा था। जब मैं मानो देखो, इस स्थली पर, जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है, वहाँ एक याग सम्पन्न होने जा रहा है। उस याग की पूर्णता को, वह याग मानो देखो, परिमार्जित बन रहा है। वह अपनी पूर्णता को प्राप्त हो रहा है। मेरा हृदय बड़ा गद् गद् होता रहता है। परन्तु देखो, जहाँ मैंने, बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कहा, आज मैं विशेष चर्चा नहीं, केवल यज्ञमान को अपनी शुभकामना प्रगट करने आया हूँ। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरे जीवन में महानत्ता की प्रतिभा रहे मानो देखो, तू सदैव अपने गृह में अपने द्रव्य का सदैव सदुपयोग करता रहे। यज्ञमान का यही कर्त्तव्य है, क्या वह उद्गीत के द्वारा, वेद ध्वनि के द्वारा मानो याग का सदुपयोग करता चला जाए। मानो देखो, यही उसकी प्रतिष्ठा कहलाती है।

तो विचार क्या है? मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के वाक्यों पर जाना चाहता हूँ, जिस स्थली पर मानो यह याग वेदज्ञ ध्वनियाँ हो रही हैं, भिन्न भिन्न प्रकार के विचार विनिमय हो रहे हैं, जब मैं दृष्टिपात करता हूँ, क्या यह प्रभु क्या कर देता है? यह मानो प्रभु की कैसी प्रतिभा कहलाती है। जहाँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का मृत लोकीयं एक शरीरां दृष्टिपात होता है, परन्तु देखो, जो भूमि, श्मशान भूमि बन सकती है, वह भूमि देवतव भूमि भी बन सकती है। परन्तु आज मैं हर्ष ध्वनि कर रहा हूँ क्या जहाँ मानो देखो, मेरी पुत्रियों के सतीतव का हनन हुआ हो आज वहाँ वेदज्ञ ध्वनि हो रही है, मेरा हृदय बड़ा गद् गद् हो रहा है मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यहाँ की साहित्यिक चर्चाएँ प्रगट की थी और वह साहित्यिक क्या कि मेरी पुत्रियों के मानो देखो,

उनके सतीत्व को नष्ट करने वाली भूमि ब्रह्मवाचो बन सकती है क्या वह देव भूमि बन सकती है। वह देवताओं की प्रतिभा बन जाती है। आज मेरा अन्तरात्मा यज्ञमान! तेरा मानो द्रव्य का सदुपयोग हो रहा है। परमाणुवाद का शोधन हो रहा है। मानो वही परमाणुवाद शोधन हो करके मानव के श्वासों की प्रतिभा बन रहा है। विचार क्या? मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में प्रगट कराया कि जहाँ सतीत्व को हनन किया जाता हो वहाँ देवतव और वेदज्ञ ध्वनि की प्रतिभा का मानो उद्गीत गाया जाता हो, उद्गीत गाने वाला गान गा रहा है, मानो गान गाता हुआ अपने में प्रसन्न हो रहा है, पवित्रता को प्राप्त कर रहा है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अभी अभी नाना प्रकार के यागों का चयन कर रहे थे। हमारे यहाँ अग्निष्टोम यागों का वर्णन आता रहता है। परन्तु देखो, यहाँ वाजपेयी याग का वर्णन भी है। हमारे यहाँ यह माना है, क्या यह जो वाजपेयी याग है, वाचा वाचम् वाचो ब्रह्म देवः जैसे पूज्यपाद गुरुदेव ने हमें यह प्रगट कराया कि वाच कहते हैं मानो देखो, श्रुति को, देखो, ज्ञान को जो मानो ज्ञानयुक्त रह करके, और स्वाहा दे करके अपने पितरों को तृप्त करता है, मानो उसका नाम मानो देखो, अश्वा ब्रहे उसको अग्निष्टोम याग कहा जाता है। जो अग्नि को पितर स्वीकार करके उसकी पूजा करता है, उसका सदुपयोग करता है, उसको अग्रणीयों में लाता है परन्तु वही उसकी पूजा है। हमारे यहाँ गो मेध याग का वर्णन आया है, गो की रक्षा होनी चाहिए। गो का चलन होना चाहिए, परन्तु महाभारत काल के पश्चात् जो वाममार्ग समाज आया, उसने जहाँ गो की रक्षा होनी थी, वहाँ गो की प्रत्येक इन्द्रिय की याग में आहुति देना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु देखो, यह ऐसा यहाँ याग के मर्म का ह्रास हुआ। क्या उससे नाना प्रकार के सम्प्रदायों का जन्म हो गया। और उन सम्प्रदायों का जन्म होने से मानो देखो, एक मानव मानव का भक्षक बन गया।

विचार विनिमय क्या? मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह वर्णन करने जा रहा हूँ क्या आज का जो आधुनिक जगत् है, मेरे पूज्यपाद! वह यागों में तो विश्वास नहीं कर रहा है, परन्तु जब वैज्ञानिकों के मध्य में प्रवेश करते हैं, वैज्ञानिको को अभी अभी कुछ समय हुआ समुद्रों के तट पर एक मानो सभा हुई थी और उस सभा में यह निर्णय

हुआ था क्या यह जो परमाणुओं का जो दूषित वायुमण्डल बन गया है इसके लिए कोई युक्तियाँ हमें प्राप्त कर लेनी चाहिएं। तो मानो देखो, युक्तियों को प्राप्त करने के लिए वह रत्त रहना चाहते हैं। अपने में कृतिभा रहना चाहते हैं अपनी महानत्ता में रमण करना चाहते हैं।
तो विचार क्या कि वह कहते हैं गो घृत है, जो यज्ञ में अग्नि में प्रवेश करने से वायु को शोधन कर सकता है। परन्तु आधुनिक वैज्ञानिक यह कह रहा है। आधुनिक विज्ञानवेत्ता यह कहा रहा है पूर्व का वैज्ञानिक तो याग को आधार ले करके अणु और परमाणु का निर्णय करता रहता था, आधुनिक काल का प्राणी अणु और परमाणु को जान करके, याग को एक शोधन की दृष्टि स्वीकार कर रहा है। इतना आधुनिक जगत्, में अन्तर्द्वन्द्व बन गया है। क्योंकि याग क्यों नहीं हो रहे हैं? क्योंकि उसके मूल में यह है कि नाना प्रकार के सम्प्रदाय हैं, और वह जो सम्प्रदाय हैं, वह जो नाना प्रकार की रूढ़ियाँ हैं वह रूढ़ियाँ मानो देखो, जो ऋषियों का मत है उस मत उस मार्ग से विचलित करता चला जा रहा है, उससे वह दूरी करता चला जा रहा है, उससे विडम्बनित करता चला जा रहा। तो इसीलिए मैं विशेष विवेचना नहीं। केवल मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव ने जो अभी अभी जो यागों का चलन वर्णन किया है यागों की प्रतिभा का वर्णन किया है, न प्रतीत जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों को ले करके अपनी आभा अपने संस्कारों की उद्बुद्धता हो रही है।
मैं उच्चारण कर रहा था जहाँ गो मेध याग है वहाँ वहां गो मेध याग में, गऊओं की पूजा होनी चाहिए, गऊओं की रक्षा होनी चाहिए, गऊओं का सदुपयोग होना चाहिए, जिससे दुग्ध आहार लिया जाए। जिस राजा के राष्ट्र में दुग्ध होता है, दुग्ध देने वाला पशु होता है, अथवा गो होता है, वह राष्ट्र मानो देखो, संसार में सम्पन्न होता है। वह सम्पन्नता को प्राप्त होता है, और जिस राजा के राष्ट्र में गऊओं के माँसों को मानो देखो, वह उसके कृत्य बन बन करके, वह मानव पान कर रहा है, उस राजा का राष्ट्र आज नहीं तो कल अग्नि के मुख में परणित होता चला जाएगा। मैंने बहुत पुरातन काल में यह वर्णन किया था, क्या गो मेध याग का अभिप्रायः क्या कि गऊओं की रक्षा होनी

चाहिए, गऊओं की पूजा होनी चाहिए, गऊओं के बहुत से पर्यायवाची शब्द मेरे पूज्यपाद वर्णन कराते रहते है। मैंने बहुत वाक्यों में यह कहा, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कि आधुनिक काल का जो राष्ट्र है मानो वह बड़ा विचित्र है। वह स्मरण आता रहता है काल मानो जब गऊंओं की पूजा देखो, भगवान कृष्ण का काल स्मरण आता रहता है। भगवान कृष्ण मानो गऊओं के मध्य में विद्यमान हो करके अन्वेषण करते थे। मानो देखो, जाबला पुत्र सत्यकाम गऊओं को ले करके ही मानो देखो, वह ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करते थे। यह ब्रह्मज्ञान के द्यौतक हैं। ब्रह्मज्ञान इनसे प्राप्त होता है। जब मानो देखो, सत्यकाम जब गऊओं को ले करके चला, गौतम के आश्रम से तो गौतम ऋषि ने कहा क्या हे ब्रह्मचारी! जब तक यह चार सौ की सहस्र नहीं हो जाएगा, मानो देखो, एक हजार न होगी तब तक तुम मेरे आश्रम में मत आना। चार सौ गऊओं की जब सहस्र हो गई देखो, एक हजार हो गई तो उन गऊओं को ले करके वह गुरु आश्रम को प्रस्थान करता है। मानो वृष कहता है क्या हम एक हजार हो गएं ब्रह्मचारी चलो गुरु आश्रम को वह ब्रह्मज्ञान को प्राप्त कर रहा है। वह नाना मानो षोडश कलाएं जो ब्रह्म की हैं उन्हें अनुभव करता हुआ, अपने में धारण करता हुआ ब्रह्मचारी अपने गुरु के द्वार पर जा रहा है। परन्तु देखो, गऊओं के मध्य में गो इन्द्रियों का पालन करने से गो पशु का पालन करने से मानो देखो, इन्द्रिय विजयी बन जाता है।

आज मैं विशेष चर्चा नहीं, केवल गो मेध याग का वर्णन आ रहा है, गो मेध किसे कहते हैं? हे राजा! तेरे राष्ट्र में गऊओं की रक्षा होनी चाहिए अन्यथा देखो, वह समय आ रहा है यदि तेरे राष्ट्र में गऊओं का ह्रास होता रहा, गऊंए नष्ट होती रही, तो इस समाज को दुग्ध और घृत प्राप्त नहीं होगा। मानो देखो, वह समय आ रहा है, वह घृत और दुग्ध का अभाव क्यों हो रहा है? क्योंकि राजा बुद्धिमान नहीं है। राजा मानो देखो, प्रजा के हित के लिए विचार नहीं रहा है राजा, राष्ट्र के हित के लिए कोई वाक् विचार नहीं रहा है। वह केवल स्वार्थपरता में परिणित हो रहा है यह जो स्वार्थवाद है यह मानव समाज को नष्ट कर रहा है। यह मेरी प्यारी माताओं के श्रृङ्गार को हनन कर रहा है। यह स्वार्थवाद मानो इतना विचित्र बन गया हैं आज मैं यह विचार रहा हूँ, मैं अपने

पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन कर रहा हूँ, कि गो मेध याग को ले करके मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ कि गो की रक्षा होगी तो इन्द्रियों की रक्षा होगी। इन्द्रियों की रक्षा हुई तो ब्रह्मचर्य का पालन होगा और ब्रह्मचर्य का पालन होगा तो ब्रह्म से मिलान होगा, ब्रह्म से मिलान होगा तो मानो देखो, मोक्ष और आनन्द को मानव प्राप्त कर सकता है। सुसज्जित सन्तान का होना ही बहुत अनिवार्य है। यदि माता के गर्भ से उत्पन्न होने वाला ब्रह्मचारी बालक यदि माताओं के श्रृङ्गार को हनन करता है तो यह मानो देखो, माता के श्रृङ्गार के आभूषण का क्या बनेगा? परन्तु जब तेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाला पुत्र तेरे ही श्रृङ्गार को हनन करने के लिए तत्पर हो गया हो।

तो मानो देखो, इस प्रकार का विचार हमारे वैदिक साहित्य में मानो देखो, मैं अपने उद्गार प्रगट कर रहा हूँ देखो, विचार क्या है क्या हे माता! तुझे महान् बनना है। हे माता! तुझे ऊर्ध्वा में गति को प्रदान करना है। तुझे मल्दालसा बन करके प्रवाहण और शिलक को, शिलभ और दालभ्य को जन्म दे करके तुझे ऋषि माता बनना है। तुझे दैत्य माता नहीं बनना है, तुझे स्वार्थी माता नहीं बनना है जो दूसरों के श्रृङ्गार को, दूसरे के प्राणों के हनन की चर्चा में लगा हुआ है। तो मानो देखो, मैं उच्चारण कर रहा हूँ, मैं सूक्ष्म सूक्ष्म वार्त्ता प्रगट कर रहा हूँ, विशेष चर्चा नहीं, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कह रहा था, गो मेध का वर्णन, गो मेध याग किसे कहते हैं? जहाँ गो की इन्द्रिय की रक्षा होनी चाहिए, देखो, इन्द्रिय विजय, इन्द्रिय जय और देखो, गो मेध यागों का वर्णन करने से राष्ट्र ऊँचा बनता है। इससे समाज और मानवीयता ऊँचा बनता है।

तो मेरे पूज्यपाद ने वर्णन कराया, कि यह गो मेध याग है, गो मेध यागां ब्रह्म वाचोः देवा। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि गो मेध याग में, गऊओं के माँस की आहुति, अजामेध में बकरी के माँस की आहुति, अश्वमेध याग में राजा देखो, घोड़े के माँस की आहुति देना, मानो देखो, यह वाम मार्ग ने इसे प्रचलित किया था। जब मैं यह विचारता रहता हूँ, कि यह क्या है? अरे, कहाँ चला गया ऋषि मुनियों का सिद्धांत? कहाँ गई वह ऋषि मुनियों की प्रतिभा, परन्तु देखो, वह इस अज्ञान ने रूढ़िवाद की प्रतिभा ने जन्म लिया। मानो देखो, जब देखो, यह जो भारत भूमि,

जहाँ महर्षि कणाद, और भारद्वाज इत्यादि जहाँ भगवान राम की पतिका रहती थी, भगवान कृष्ण गऊओं के मध्य में विद्यमान हो करके उनके श्वास पर, उसके दुग्ध पर मानो देखो, उनके शौच इत्यादियों पर अनुसन्धान करते थे, विचारते रहते थे यह गऊ क्या देती है? हमें जिसका श्वास भी दूषित परमाणुओं को निगलता है। इसका मूत्र भी दूषित परमाणुओं को निगलता है, इसका गोधन भी देखो, दूषित परमाणुओं को निगलता है और देखो, इसकी जो गतियाँ हैं वह भी मानो देखो, परमाणु को नष्ट करती रहती हैं। इस प्रकार का भगवान कृष्ण ने मानो इसका जो दुग्ध है, घृत है वह आयुर्वेदाचार्यों ने इसकी प्रशंसा की है। यह कहा है कि गो घृत मानो वायु नाशक है, वायु का विनाश करने वाला है। यह जो घृत है यह तेजस्वी है, यह तेजोमयी बनाने वाला मानव के बहुत से रुग्णों को शान्त कर देता है। जब इस प्रकार के पशुओं का ह्रास होता हो। उनको नष्ट किया जाता हो, तो यह समाज रह सकेगा अथवा समाप्त हो जाएगा? मेरे विचार में यह वाक् नहीं आ रहा है। परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने जहाँ अग्निष्टोम, जहाँ गो के मांस की आहुति का वर्णन कर दिया, वाममार्ग ने, परन्तु वैदिक साहित्य की कही नहीं है, वैदिक साहित्य में हिंसा का शब्द ही नहीं हैं हिंसा तो निषिद्ध है मानो देखो, हिंसा शब्द भी नहीं है अहिंसा परमोधर्मः का पालन करने वाला पार होता हैं संसार में।

तो विचार विनिमय क्या? मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को आधुनिक जगत का परिचय देता चला जाऊँ, कि यह मसाज नाना प्रकार के रूढ़ियों में अज्ञान के आने से नाना सम्प्रदाय बन गए, नाना रूढ़ियाँ बन गईं। इन रूढ़ियों का परिणाम यह हुआ कि राजाओं महाराजाओं का मस्तिष्क मानो देखो, निष्क्रिय बन गया, विलासता के क्षेत्र बन गया बिना ज्ञान के, बिना दूसरों की रक्षा करके मानव में विलासता आ जाती है। मानव विलासी बन जाता है, यदि द्रव्य का सदुपयोग नहीं होता है, तो वहाँ आलस्य और प्रमाद में परणित हो करके विलासी बन जाएगा। यदि देखो, द्रव्य का सदुपयोग देवताओं की पूजा में लग जाएगा, संगतिकरण में, मानव के लिए मानव की क्षुधा को शान्त करने के लिए तो वह मानव नम्र बनेगा, धर्म के मर्म को जानेगा, ओजस्वी बनेगा। मानो

देखो, वह अपने द्रव्य का सदुपयोग करके वायुमण्डल को शुद्ध और पवित्र बनाता चला जाएगा। तो परिणाम क्या मानो देखो, पुरातन काल यह जब इसका ह्रास हुआ, इसके वाम मार्गी प्राणियों ने, स्वार्थियों ने जब इस याग को भ्रष्ट करना प्रारम्भ किया तो याग ने समाज को भ्रष्ट कर दिया। मानो नाना प्रकार के सम्प्रदाय हैं इन सम्प्रदायों के बलवती होने पर इनके बलवती होने पर यह मानव एक दूसरे सम्प्रदाय को निगलता चला जा रहा है। एक दूसरे विचार को निगलता हुआ, एक दूसरे के विचार पर आक्रमण कर रहा है और वह जो आक्रमण हो रहा है वह समाज का अप्रिय ह्रास हो रहा है।

मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव! से कहा था क्या मानो देखो, यहाँ जो राष्ट्रवाद है वह गऊओं की रक्षा इसीलिए नहीं कर सकता क्योंकि मोहम्मद के मानने वालों का भय लगा हुआ है। और यह भय अपृति है मानो देखो, उन आचार्यों को एकत्रित करके यह कहा जाए, कि गो पशु प्रिय है। अथवा नहीं वह प्रिय स्वीकार करते हैं परन्तु देखो, राष्ट्रीयता, रूढ़िता में परणित हो करके कहते हैं, कि गऊ में हमें नाना प्रकार का खनिज और नाना प्रकार के पोषक तत्त्व हमें प्राप्त होते हैं। क्या मोहम्मद के मानने वाले ही नाना प्रकार के पोषक तत्त्व पा करके स्वर्ग को जाना चाहते हैं, यह स्वर्ग के गामी बनना चाहते हैं। मानो देखो, यहाँ नाना प्रकार के सम्प्रदाय भी बहुत से इस प्रकार के हैं जो माँस को देखो, जो आधुनिक काल का जनसमूह है आधुनिक काल का जो मानवकृति है वह अपनी वाणी को ह्रासता में परणित कर गया है। विचार विनिमय क्या? यहाँ ईसा के मानने वाले जिस महात्मा ईसा ने अपने जीवन में केवल लवणयुक्त आहार को अपने में पान किया, वह गऊओं का पालन भी करते हैं, तो मानो देखो, उसको भक्षण भी करते हैं। यह कौन सा न्याय हो रहा है? ये पशुओं के लिए कौन सा, यह रसना के लिए न्याय हो रहा है? अरे, उसके दुग्ध को भी पान कर रहा है, उसके माँस को भी पान कर रहा हैं, तू कैसा धृष्ट प्राणी बन गया है। मेरे विचार में नही आ रहा है, तू कैसा धृष्ट बन गया है, तू कैसा युवक बन गया है, तू कैसा राष्ट्रवेत्ता बन गया है? तू मानो स्वार्थ के गति करने वाला, ऊर्ध्वा में रमण करने वाला अपनी कृतियों को नष्ट कर रहा है। महात्मा नानक के मानने वालों ने, महात्मा नानक जी ने

एक वाक् कहा था, गुरु अस्ति बन करके क्या देखो, रक्त का एक बिन्दु है यदि वस्त्र पर लग जाता है, उसकी लालिमा नहीं जाती। अरे, तुम्हारे अन्तःकरण पर जब उसकी लालिमा ओत प्रोत हो जाएगी तो उसके लिए कौन सी प्रतिभा है जो उस लालिमा को तुम अन्तःकरण से नष्ट कर सकते हो। परन्तु देखो, वही अरे, वह जो रक्षक थे वहाँ भक्षक की प्रतिभा केवल देखो, स्वार्थवाद की परता आ गई है। जब मैं यह विचारता रहता हूँ, हे मानव! तू मानव को क्यों नष्ट कर रहा है? उन्होंने कहा यह मेरे विचारों को स्वीकार नहीं कर रहा है। तेरे विचार क्या हैं? वह कहता है मेरे विचारों में राष्ट्रीयता है, मेरे विचारों में पराधीन नहीं रहना चाहता।

अरे, प्राणी! तू विचार तो अपने जीवन को, तू तो सदैव ही पराधीन रहता है। यदि तू देखो, राष्ट्रीयता में पराधीन तू उस काल तक है, जब तक तू पापाचार कर्म करता है। जब पाप करना त्याग देता है, मिथ्या को त्याग देता है, विडम्बना को त्याग देता है, तो उस समय तू क्यों स्वाधीन बना हुआ है? और जिस काल में तू पराधीन है जब तू अपने में स्वतंत्र होना चाहता है, तेरे द्वारा ब्रह्मज्ञान होना चाहिए। तू प्रभु! का सेवक बन, प्रभु! की प्रतिभा को जानने वाला बन। तू पराधीन क्यों रहता है? पराधीन वह प्राणी रहता है जो पापाचार करता है, जो स्वार्थ में लिप्त है। मानो जो द्रव्यपति बनना चाहता है, जो राष्ट्रनेता बनना चाहता है, जो प्रजा पर शासन करना चाहता है, जो मानो देखो, प्रजा के श्रृङ्गार को ले करके अपने वैभव को ऊँचा बनाना चाहता है, क्या मानो देखो, वही तो पराधीन रह सकेगा। जो यह जानता है कि प्रभु सर्वत्र है, मैं प्रभु का पुत्र हूँ, मैं प्रभु की गोद में जाना चाहता हूँ, वह साधना करता है, वह आहार करता है शुद्ध, पवित्र। मानो देखो, एक दूसरे को विडम्बनित नहीं कर रहा है। एक दूसरे को महानत्ता की आभा प्रगट कर रहा है। वह प्रभु की गोद में चला जाता है। प्रभु के राष्ट्र में कोई स्वतंत्र नहीं, कोई परतंत्र नहीं, एक रस रहने वाला समाज रहता है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने मुझे कई काल में यह वर्णन कराया है, मैंने बहुत पुरातन काल में यह कहा है क्या यदि देखो, पशुओं को नष्ट करने से ही, पशुओं के माँस को आहार करने से ही मानव को नाना प्रकार की शक्ति प्राप्त होती है, तो हे भोले प्राणियों!

तुम्हारा आहार करने से किसको शक्ति प्राप्त होगी? देखो, जब यह विचारा जाता है मैंने बहुत पुरातन काल में अभी अभी मैं यह विचारता रहता हूँ वर्तमान के काल में जिस भारत भूमि पर राम अपनी पतिका को ले करके चलते थे, कृष्ण अपनी पतिका को ले करके अहिंसा परमोधर्मः पर चलते थे, आधुनिक काल कैसा बन गया है? आधुनिक काल में मेरी प्यारी माताओं के शिशुओं को हनन करके मानो देखो, उसको भोजनालय में तपाया जाता है। (पुस्तक से) पान कराया जाता है। गो के शिशुओं को ले करके भोजनालय में पान कराया जाता है, और वह यह कहते हैं कि हम इसमें प्रतिष्ठित होना चाहते हैं। कहता है कि आधुनिक काल में मानव का अस्तित्व, व्यक्तित्व माना जाता है। अरे, इसमें कौनसा व्यक्तित्व तुम्हारा ऊँचा बन रहा है?

विचार क्या? मैं विशेष विवेचना में जाना नहीं चाहता हूँ, विचार यह देना चाहता हूँ कि यह समाज कहाँ जा रहा है? मैं समाज की चर्चा नहीं, केवल यह कि हे राजा! तू यदि महान् बनना चाहता है, समाज को ऊँचा बनाना चाहता है तो तेरे राष्ट्र में रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए। प्रत्येक रूढ़ि के आचार्यों को एकत्रित करके निर्णय करो। वैदिक साहित्य को, ज्ञान को विचार विनिमय में लाओ तो कोई यह नहीं कहेगा कि माँस भक्षण का प्रचार होना चाहिए। कहना यह है कि अपने पूर्वजों की वार्त्ता को प्रत्येक सम्प्रदाय नष्ट कर रहा है। क्यों कर रहा है? क्योंकि उस सम्प्रदाय से उसका समन्वय है। उससे वह अपने स्वार्थ की पूर्ति करना चाहता है। उससे वह राष्ट्रवाद पर आघात पहुंचाना चाहता है। उसमें विशुद्धता न रह करके अपनी प्रतिभा अपने में ओत प्रोत कराना चाहता है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब यहाँ राष्ट्रीयता का निर्माण हुआ तो त्रिपुरी में एक इन्द्र रहता था। वह इन्द्र सब राजाओं का धिराज बनता था और उसके यहाँ से जो नियमावली बन करके चलती थी वह पृथ्वी मण्डल पर सब राष्ट्र को मान्य होती थी। वह एक पताका थी। एक विचार था उस विचार में एक दाह, एक सत्यता होती थी। कोई यह नहीं चाहता था कि मैं ऋषि बनूं प्रत्येक प्राणी की यह इच्छा है मैं वायु का सेवन करके साधना में प्रवेश करना चाहता हूँ। राजा के राष्ट्र में जब शुद्ध वैदिकता होती है, वैदिकता कहते हैं प्रकाश को, ज्ञान को। जो विज्ञान पर स्थिर रहने वाला

समाज है वही तो ऊँचा बनेगा। अहा जब वह ऊँचा बनेगा तो यह समाज महान् और पवित्र बन करके राष्ट्रीयता एकता विशुद्ध जा जाएगी। विशुद्धता क्योंकि राष्ट्र को त्यागना है। राम के काल में मुझे स्मरण है भरत कहता है मैं राष्ट्र नहीं चाहता, राम कहता है मैं नहीं चाहता, कैसा विचित्र काल मुझे दृष्टिपात करने के लिए प्राप्त हुआ। क्योंकि वह ज्ञानी, महापुरुषों, वैज्ञानिकों का, ब्रह्मवेत्ताओं का नृत्य था। ब्रह्मवेत्ता राष्ट्र का निर्माण करते थे। ज्ञान के द्वारा ही मानव पवित्र बनता है।

विचार विनिमय क्या? मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! जो इतनी आज्ञा नहीं दे रहे हैं, मैं कई समय तक इस वाक् को देता रहूँगा तो समाप्त नहीं होगा। मैं केवल संक्षिप्त परिचय दे रहा हूँ और वह परिचय क्या है कि रूढ़िवाद से जहाँ वैज्ञानिकों का ह्रास हुआ, यहाँ ज्ञानियों को अग्नि के मुख में प्रदान कर दिया जाता है। जब कोई ज्ञानी प्राणी आता है तो रूढ़िवादी स्वार्थी प्राणी उसे अग्नि के मुख में परणित कर देते हैं अपनी स्वार्थपरता के कारण। उनको विष प्रदान कर देते हैं स्वार्थपरता के कारण, इसीलिए स्वार्थपरता को समाप्त करते हुए, गो मेध याग करते हुए, वाजपेयी याग को करते हुए, अश्व मेध याग में घोड़े की आहुत देना स्वीकार किया। हे वाम मार्गी! तू ऊर्ध्वा के मार्ग पर गति करने वाला, जहाँ अश्व की पूजा होती है राज के राष्ट्र में अश्व नाम है जो सैनिकों के क्रिया कलाप में आता हो। अहा राजा भी उसी का वाहन बन करके इन अश्वों की उपमा देकर के सूर्य का रथ बनाया है। कल्पनावादियों ने तो यह कहा है कि सूर्य के रथ ऐसे विचित्र हैं कि घोड़ों को किरणों की उपाधियाँ प्रदान की हैं। अरे, उसको नष्ट करके स्वार्थी वाम मार्ग ने घोड़े की आहुति देना प्रारम्भ कर दिया। अरे, क्या याग इसी को कहते हैं? अश्वमेध याग इसी को कहते हैं? परन्तु जब शुद्ध वैदिक वाक् आता है तो अश्व नाम राजा का है, मेध नाम प्रजा का है। जब राजा प्रजा के लिए, प्रजा राजा के लिए जब संघर्ष होते है। तो उनका चिन्तन का एक राष्ट्रीय विषय बन जाता है, सात्विक राष्ट्र बन जाता है। समाज में एक दूसरा ऋणी नहीं रहता। नियमपूर्वक राष्ट्र चल रहा है, तो अश्वमेध याग हो रहा है। सुगन्धि हो रही है। प्रत्येक गृह में याग हो रहा है। प्रजा कहती है कि हम राष्ट्र में सुगन्धि चाहते हैं। वैज्ञानिक वैज्ञानिकों में सुगन्धि

चाहते हैं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे अभी अभी वर्णन करा रहे थे कि भारद्वाज मुनि के यहाँ यज्ञशाला में याग हो रहा हैं परमाणुओं को ले करके उन्होंने याग का यन्त्र बनाया। उसमें परमात्मा आ रहा है, उसमें यज्ञमान का चित्र आ रहा है। होताओं का चित्र आ रहा है और वह द्यौ लोक को प्राप्त हो रहा हैं अरे, यज्ञमान! तू याग कर रहा है। तू याज्ञिक बना हुआ है। इस प्रकार याग की प्रतिभा से विज्ञान का प्रारम्भ होता है। वर्तमान के काल में भी जो सत्यवत् हैं गृह प्रवेश करते हैं तो याग होता है। पति पत्नी का जब संस्कार होता है, तो याग है। पूजन होता है तब याग है। नामोकरण होता है तो याग है। प्रत्येक मानव याग में पिरोया हुआ है। कैसी विचित्रता है? कैसा प्रिय याग है यह? इसी को सूक्ष्मवाद में ले गए तो विद्यमान हो करके आत्म चिन्तन हो रहा है। आत्मा के प्रकाश में जाना चाहते हैं। परमात्मा के लोक में जाना चाहते हैं तो वह आत्म याग कर रहे हैं। वही ऊर्ध्वा में और सूक्ष्म दृष्टि होती हैं कि योगी योगाभ्यास कर रहा है। योगाभ्यास करके प्रत्येक इन्द्रिय को शासन में ला रहा है। प्रत्येक इन्द्रिय के विषय को एकत्रित कर रहा है। साकल्य बना रहा है। साकल्य बना करके यज्ञशाला में आहुति दे रहा है। तो जब वह आहुति दे रहा है तो आध्यात्मिक याग हो रहा है। तो यागाम् ब्रह्मलोकाम् ब्रह्मलोक में जाने के लिए याग हो रहा है। हे यज्ञमान! तू याज्ञिक बन। तेरी महत्ता पवित्रता में परणित हो गए।

मेरे पूज्यपाद ने मुझे सूक्ष्म सा समय दिया है और वह क्या है कि यहाँ विचारना है कि, आधुनिक काल का वैज्ञानिक चिन्तित हो रहा है। आधुनिक काल का वैज्ञानिक कहता है कि दूषित वायुमण्डल भरन हो गया हैं इसका शोधन होना चाहिए। वह याग कर रहा है। प्रत्येक मानव कर्म काण्ड में परणित हो जाएं। दूषित वातावरण नहीं रहगा। दूषित वायु मण्डल नहीं रहेगा। नाना सम्प्रदाय एक विचारों में रत्त हो जाओ। अपनी रूढ़ियों को त्याग करके मानव मानव का भक्षण स्वार्थवाद में न करो। वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है कि एक मानव वेद के मन्त्रों को उच्चारण कर रहा है, एक मानव संघर्ष कर रहा है, एक मानव प्रतिभाषित बन रहा है परन्तु एक मानव याज्ञिक बन रहा है। वह इतना शोधित वायुमण्डल नहीं हो रहा है जितना स्वार्थवादी वायुमण्डल

हो रहा है। प्रत्येक मानव जहाँ विराजमान होता है वहीं द्रव्य की चर्चा करता है या विलासिता की चर्चा कर रहा है। अरे, इन विचारों से वायुमण्डल विशेषकर दूषित हो रहा है। राजा को चाहिए कि उसके राष्ट्र में बुद्धिमान हों। धर्म के मर्म को जानने वाले होने चाहिएं। नाना रूढ़ियों को समाप्त कर देना चाहिए। राजा के राष्ट्र का वायुमण्डल पवित्र बन जाएगा। वायुमण्डल की पवित्रता एकोकी मूल है कि विज्ञान का दुरूपयोग है, विचारों का दुरूपयोग है। उनके मूल में नाना प्रकार के सम्प्रदाय हैं। इसीलिए वैदिकता का ह्रास हो रहा है। विचारों में, वायुमण्डल में दूषितपन आ रहा है। तो इसीलिए एक दूसरा सम्प्रदाय एक दूसरे के विचारों में ईश्वर को पाना चाहता है। तो उसमें विडम्बना क्या है? उसमें संघर्ष क्या है? अरे, संघर्ष केवल स्वार्थपरता, स्वार्थवाद है इसी से वातावरण दूषित हो रहा है। उसी में मानव परणित हो रहा है। उन विचारों को अग्रणीय नहीं बनना चाहता। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ यह वाक् प्रगट कर रहा हूँ कि परमपिता परमात्मा की आराधना करें अब मैं पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेव मेरे प्यारे! ऋषिवर! आज मेरे प्यारे! महानन्द जी ने विडम्बनामयी शब्दों को उच्चारण किया और यज्ञमान के लिए अपने हृदय से उसको शुभकामना अर्पित कर रहे थे। मेरा अन्तरात्मा भी यह कहता रहता है, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तू अपने द्रव्य का सदुपयोग, द्रव्य की प्रतिभा तेरी महान् बनती रहे जिससे तेरा जीवन एक ऊर्ध्वा में गति करने वाला हो। तेरा जीवन एक महत्ता की वेदी पर रहना चाहिए। मेरे प्यारे! महानन्द जी ने नाना प्रकार के यागों का चयन करते हुए, नाना प्रकार की याज्ञिक चर्चाएँ, इन्होंने प्रगट की हैं। आध्यात्मिकवाद इसमें था, राष्ट्रीयवाद इसमें था। स्वार्थवाद, परम्परागत रूढ़ियों का विनाश करने के लिए, मेरे पुत्र बड़ा बल देते रहते हैं। उसके ऊपर मारव को विचार विनिमय करना चाहिए। राजा के राष्ट्र में भी राजा को यह विचार विनिमय करना चाहिए कि गऊओं का पालन हो। मानवता ऊँची बने। यह आज का वाक् हमारा समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा। स्थान :

लाक्षागृह, बरनावा समय : दोपहर 11.00 बजे

२२ 27 04 1984 पुष्प 44 महाराजा युधिष्ठिर का याग एवं संगतिकरण की व्याख्या

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी से उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महत्ति का वर्णन किया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, जितना भी यह संसार हमें दृष्टिपात आ रहा है इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड की प्रतिभा में मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। जब हम यह चिन्तन करना प्रारम्भ करते हैं कि वे परमपिता परमात्मा कैसा अमूल्य देव है, जिसका एक एक वेद का मन्त्र उसकी गाथा गा रहा है अथवा उसका वर्णन कर रहा है। उसकी महत्ता की घोषणा कर रहा है और उद्घोष कर रहा है। उस परमपिता परमात्मा की महत्ति अथवा उसकी अनुपमता के ऊपर हमें सदैव चिन्तन और मनन करना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक मानव जो संसार मैं आया है वह उस परमपिता परमात्मा के अमूल्य जगत् अथवा उसकी महत्ति का अथवा उसकी महानता का वर्णन करने आया है। हमें बहुतसा काल स्मरण आता रहता है जिस काल में ऋषि मुनि एकत्रित हो करके अनुसन्धान करते रहते थे। जो अनुसन्धान की उनकी प्रतिभा रही है वह अणु और चेतना की प्रतिभा में प्रायः भाषित रही हैं जिसके ऊपर मानव अपने में अन्वेषण अथवा अपने विचार की प्रतिभा को ले करके मानवीयता की उसके समीप एक आभा निहित होती रहती है।

आज का हमारा वेदमन्त्र कुछ याग के सम्बन्ध में भी उद्घोष कर रहा है। प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनने के लिए वह प्रेरित कर रहा है। क्योंकि अग्नि ही हमारा जीवन है और अग्नि में जब मानव अपनी वाणी की प्रतिभा प्रतिष्ठित करता है तो यह अग्नि ही है जो द्यौ लोक में मानव की प्रतिभा को ले जाती है अथवा वहीं नाना सूर्य की किरणों के द्वारा अपनी आभा में परणित होती हुई परमाणुओं के ऊपर उनका अधिपथ्य बन जाता है। आज मैं विज्ञान के युग में ले जाना नहीं चाहता हूँ। विज्ञान की उस धारा में भी

नहीं ले जाना चाहता हूँ जहाँ मानव वैज्ञानिक बन करके नाना प्रकार के विज्ञान में रत्त रहा है और विज्ञान की प्रतिभा मानव के हृदय में सदैव प्रतिष्ठित और विचारनीय रही है। मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें वर्णन कराते हुए कहा था कि यह संसार एक अमूल्यता में दृष्टिपात होता रहा है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण अथवा अपने विचार की अमूल्यता का घोष करता रहा है। जिसकी अमूल्यता मानव के हृदय प्रायः समाहित रही है और जिसके ऊपर समाहित हो करके मानव अपने में विचारणीय आभा में परणित होता रहा है।

मुनिवरों! इससे पूर्व काल में तुम्हें मैं यह प्रकट करा रहा था कि एक एक वेदमन्त्र प्रभु की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है। माता का वर्णन कर रहा है, उद्घोष कर रहा है। बेटा! माता के द्वार पर यदि पुत्र नहीं है तो माता का मूल्य नहीं रहता जैसे परमपिता परमात्मा के न रहने पर वेद की गाथा अपने में शून्य गति को प्राप्त हो जाती है।

आज हम आत्मा के ऊपर कुछ अपना मनन और चिन्तन करना चाहते हैं। प्रत्येक मानव आत्मिक शान्ति के लिए भिन्न भिन्न क्रिया कलापों में तत्पर रहा है। मेरे पुत्रो! मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें प्राणायाम की चर्चाएं की थीं और यह कहा था कि मानव को प्राणायाम करना चाहिए जिससे मानव का अन्तरात्मा बलिष्ठ हो जाए। मानव अपने रुग्णों से दूरी हो जाए। ऐसा कई कालों में हमने प्रकट किया। आज मैं तुम्हें एक वाक्य प्रकट कराने के लिए आया हूँ। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, प्राण सूत्र की बड़ी विवेचना होती रही है। प्राण सूत्र की विवेचना करते हुए जब हम त्रेता के काल कि अथवा उस काल की विवेचना में परणित होने लगता हूँ जिस काल में मानव अपने में प्रतिभाषित रहा है अथवा अपने में ओत प्रोत रहा है, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है एक समय बेटा! जब किसी काल में महाराजा युधिष्ठिर ने एक याग कराया था, इन्द्रप्रस्थ में याग की रचना की थी। उस याग की रचना करते हुए उन्होंने अपने में बहुत अकृतियों में रमण किया था।

जिस समय याग प्रारम्भ हुआ, याग के उद्घोष की चर्चाएं जैसे ही समाप्त अथवा सम्पन्न

हुई तो बेटा! सम्पन्न होने के पश्चात् एक शंख ध्वनि होती है, उस ध्वनि में मानव अपने में शून्यता को प्राप्त हो गया, और वह ध्वनि उस रूप में नहीं हुई जिस ध्वनि से वह उद्घोष होने वाला था। तो महाराज युधिष्ठिर भगवान कृष्णा के समीप पहुंचे। भगवान कृष्णा से बोले, महाराज! मेरा याग तो सम्पन्न हो गया हे परन्तु वह जो शंख ध्वनि होनी थी वह नहीं हुई। ध्वनि न होने के कारण मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मेरा याग सम्पन्न नहीं हुआ हैं मेरे याग की प्रियता में उद्घोषा नहीं हुआ है। भगवान कृष्णा ने कहा, यह तो यथार्थ है परन्तु मेरे विचार में ऐसा आता है कि महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज अपने में शानत मुद्रा में विद्यमान हैं और महर्षि विभाण्डक के समीप कुछ प्रतिभाषित ऋषि भी हैं। एक विभाण्डक त्रेता के काल में भगवान राम के काल में हुए। एक विभाण्उक वह हुए जो द्वापर के काल में याग में आना चाहते थे परन्तु निमन्त्रित न होने के कारण उस याग में नहीं जा पाए। विचार आया, जब वह उद्घोष नहीं हुआ तो भगवान कृष्णा ने उन्हें निर्णय कराया कि मेरे विचार में यह आता है तुम्हारा जो याग है उसका उद्घोष, शंख ध्वनि महापुरुषों की प्रिय न हुई क्योंकि तुमने महापुरुषों को निमन्त्रित नहीं किया। महर्षि विभाण्डक पावेश्वत ऋषि को तुमने निमन्त्रित नहीं किया। इसके मूल में क्या था? उन्होंने कहा, प्रभु! इसके मूल में यह था कि यह राष्ट्रीय यज्ञ था, जितने भी संसार के राजा हैं मैंने सबको सदा प्रसन्न किया है, किसी को अपने प्रभाव से, किसी को अपने विचारों से, किसी को ईश्वरीय याग का उद्घोष करके मैंने प्रसन्नता में लाने का प्रयास किया है। तो इसीलिए में आदरणीय आभा में ले जाना नहीं चाहता हूँ इसीलिए मैंने महर्षि विभाण्डक को निमन्त्रित नहीं किया क्योंकि उनके आश्रम में महर्षि शृङ्गी जी रहते है और दोनों ऋषि वाजपेयी याग के ऊपर विवेचना करते रहते हैं। वह अग्निष्टोम याग की चर्चाएं करते रहते हैं। कहीं वह अश्वमेध याग में रत्त रहते हैं। कही वह वृष्टि याग की विवेचना करते रहते हैं। इसीलिए मैंने इन्हें निमन्त्रित नहीं किया। भगवान कृष्णा ने यह कहा तुम्हें दोनों ऋषियों को निमन्त्रण दे करके उन्हें याग में लाना चाहिए और याग में तुम्हारी वह जो शंख ध्वनि है अथवा उद्घोष हो वह उसी काल में हो सकेगा। जब तक उनका स्वागत न हो जाए तो वह शंख ध्वनि हो सकती है।

तो मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज अप्रतम देवः महाराज भीम उनको लेकर के वहाँ से गमन किया नकुल सहदेव भी उनके साथ ही भ्रमण करते रहे। महाराजा युधिष्ठिर बोले प्रभु! आप महान् है, इस समय आपका भी हमारे साथ रहना अनिवार्य है उनके द्वारा पदार्पण होना। भगवान कृष्ण ने कहा, जाओ तुम्हीं उनको निमन्त्रित करो। उन्होंने कहा प्रभु! आप इस याग के अधिपति है, आपका गमन करना बहुत अनिवार्य है। उन्होंने कहा मैं तुम्हारे विचारों से अवगत हूँ। परन्तु में उन ऋषियों के समीप नहीं जा सकूंगा युधिष्ठिर ने जब यह कहा कि मूल में क्य है? उन्होंने कहा कि मूल में यह है मुझे निमन्त्रण प्रथम देना चाहिए था। इसलिए उन्होंने भगवान कृष्ण को त्याग दिया और वहाँ से गमन करते हुए वह कदली वनों में पहुंचे।

कदली वनों में दोनों ऋषि मुनियों का विचार विनिमय हो रहा था और विचार विनिमय यह हो रहा था कि यह जो वाजपेयी याग है यह क्या है? इस याग को कौन करता है? तो मेरे पुत्रों!? यह विचार विनिमय होते हुए विभाण्डक मुनि ने यह कहा कि वाजपेयी याग करने का हमारे यहाँ राजा को अधिकार है। क्योंकि राजा उस काल में वाजपेयी याग करता है है जिस काल में राजा के राज्य में जो कृषक है वह शून्यता को प्राप्त हो जाता है। वह जो कृषक है वह आलस्य प्रमाद में रहता है, वह भूमि के गर्भ में बीज की स्थापना न करता हुआ आलस्य में रहता है। उस समय राजा का कर्त्तव्य है कि वह वाजपेयी याग करे और वह याग में ऐसे साकल्य प्रदान करने वाला हो, ऐसे यज्ञमान को विचार देने चाहिएं जिन विचारों को ले करके वायु मण्डल पवित्र हो जाए और वायुमण्डल के पवित्र होने से वतरासुर की उद्घोषता होने लगे, वतरासुर से जब मेघों की वृष्टि हो तो उस समय कृषक पवित्र बने।

उनका विचार विनिमय हो रहा था और वह चारों नकुल सहदेव, युधिष्ठिर और भीम चारों शान्त मुद्रा में विद्यमान थे और यह विचार रहे थे कि यह किस काल में अपने वक्तव्य को शान्त करें और हम भी निमन्त्रित करें। परन्तु उनका वक्तव्य को शज्ञनत करें और हम भी निमन्त्रित करें। परन्तु उनका विचार ऐसा विचारणीय था कि वह अपने

चिन्तन में मग्न थे। महर्षि विभाण्डक ने श्रृङ्गी ऋषि से यह कहा कि महाराज! तुम्हें यह प्रतीत होगा कि एक समय महाराजा जनक के यहाँ कृषक निष्क्रिय बन गए थे तो उन्होंने स्वर्ण के एक हल का निर्माण किया और इसमें गो के बछड़ों को ले करके वह अपनी भूमि में अपना क्रिया कलाप करने लगे। तो उस समय कृषकों ने यह विचारा कि तुम निष्क्रिय बन गए हो। उस समय राजा जनक के उच्चारण करते ही सर्वत्र जागरूक हो गया कृषक। राष्ट्र सम्पन्न बन गया। अन्न से परिपक्व बन गया। माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! कौन सा पदार्थ नहीं है जो माता वसुन्धरा नहीं दे सकती? जैसे माता का प्रिय पुत्र होता है तो माता उसे लोरियों का आलिंगन कराती हुई अपने कण्ठ में धारण कराती हुई अपने बालक की क्षुधा को शान्त कर देती है। इसी प्रकार यह जो ममस्त को धारण करने वाली वसुन्धरा है, इस वसुन्धरा के गर्भ में नाना पदार्थ विद्यमान हैं। नाना प्रकार की आभाएं विद्यमान रहती हैं। यह माता क्या नहीं दे सकती इस संसार को। ममतव को धारण करने वाली, हे वसुन्धरा! तू जैसे पुत्र का उद्घोष करके उसके साथ ही शान्तना कर देती है, इसी प्रकार हमारे यहाँ राजा जनक ने वाजपेयी याग किया था। वाजपेयी याग का अभिप्राय क्या कि वैदिक ध्वनियां हो रही हैं और साकल्य का सुगन्ध परमाणु परमाणु की भेदन कर रहा है, वह अग्नि उन परमाणुओं का भेदन कराती हुई वायु में प्रवेश करा देती है। दोनों ऋषियों की परस्पर यह चर्चा हो रही थी।

जब वह शान्त हुए तो महाराजा युधिष्ठिर ने कहा, हे प्रभु! मैंने आपकी साहित्यिक चर्चाओं को श्रवण किया है। यागों का चयन भी मैंने श्रवण किया है। प्रभु! हमारी इच्छा यह है कि इमने इन्द्रप्रस्थ में एक याग किया है। हम उस याग में आपको निमन्त्रित करने आए हैं। याग तो सम्पन्न हो गया है परन्तु आपका आशीर्वाद और चाहते हैं। महर्षि श्रृङ्गी ने कहा यह वाक्य तो तुम्हारा यथार्थ है परन्तु महापुरुषों को, याज्ञिक पुरुषों को प्रारम्भ में ही निमन्त्रित करना चाहिए। यदि प्रारम्भ में निमन्त्रित नहीं करते हो तो पश्चात् में उसका कोई मूल नहीं रहता। महाराजा युधिष्ठिर बोले हे प्रभु! यह जो राष्ट्रीय भाव होता है, राष्ट्रीय विचार होता है, इसमें मानव की स्मरण शक्ति का ह्रास भी हो जाता

है। प्रभु! हमारी बुद्धि का स्मरण शक्ति का ह्रास हो गया है, हम आपको निमन्त्रण देने आए है। आप हमारे याग में चल करके आशीर्वाद दीजिए। महर्षि विभाण्डक ने कहा बोले तुम क्या चाहते हो? उन्होंने कहा प्रभु! जैसी आपकी इच्छा हो। तो मुनिवरों! दोनों ऋषियों ने वहाँ से गमन किया। क्योंकि ऋषियों का जो हृदय होता है वह उदार होता है। जैसे माता का हृदय होता है वह उदार होता है। जैसे माता का हृदय व्यापकता में रत्त रहता है। इसी प्रकार जो तपस्वी होते हैं, गायत्राणि छन्दों का पठन पाठन करते हैं, जो अपने में महत्ता की घोषणा करते रहते हैं उनका हृदय भी प्रायः उदार होता है। उनके हृदय में उदारता की प्रतिभा होती है।

तो मेरे प्यारे! दोनों ऋषि वहाँ से गमन करते हुए अपने में घोषित होते हुए, वह भ्रमण करते हुए इन्द्रप्रस्थ में आ गए। इन्द्रप्रस्थ में आ करके जहाँ याग की रचना हो रही थी याग में जहाँ उनका ब्रह्म भोज हो रहा था ब्रह्म भोज में जा कर दोनों ऋषि अपने में प्रति आकृत हो गए। ब्रह्म भोज का कुछ अन्न उन्होंने पान किया जैसे उन्होंने अन्न का पान किया वह घोषणा हो गई वह शंख ध्वनि हो गई जिस ध्वनि के लिए वह याग में प्रतिष्ठित होना चाहते थे। मुझे स्मरण आता रहता है वह शंख ध्वनि होने लगी, जैसे शंख ध्वनि हुई तो मुनिवरों! भगवान कृष्णा प्रसन्न हो गए। भगवान कृष्णा ऋषि मुनिवरों! के द्वार पर जा करके उनसे भिन्न भिन्न प्रकार की वार्त्ताएं प्रकट करने लगे। जब वार्त्ताएं प्रकट होने लगीं तो महर्षि विभाण्डक ने कहा हे प्रभु! आप को तो हमने श्रवण किया है आप तो इन यागों के क्रिया कलापों में रत्त रहे हैं। आप तो इन यागों में अध्यक्षवत् प्राप्त हुए हैं। उन्होंने कहा प्रभु! यह आपकी ही महिमा है। आप ही जैसे पुरुषों ने मुझे जिस पद की नियुक्ति कराई मैंने उसे ग्रहण किया है। ग्रहण करना यह मानव का कर्त्तव्य है क्योंकि मानव अपने में अपनत्व को प्राप्त होता हुआ प्रभु को प्राप्त होता है। भगवान कृष्णा से उनकी विवेचना होने लगी। उन्होंने कहा यह याग तुमने कैसा कराया है? तुम किस कार्य के अध्यक्ष बने हो? उन्होंने कहा प्रभु! मैंने इस याग की अध्यक्षता इसीलिए की है क्योंकि याग एक शुभ कर्म है। देव पूजा में आता है। देवताओं का पूजन है जितने भी जड़ अथवा चैतन्य देवता है उनकी पूजा होती रहती है उस पूजा की मैंने

अध्यक्षता की हैं उस समय विभाण्डक श्रृङ्गी ने, दोनों ने, एकप्रश्न किया, हे कृष्णा! तुमने इस यज्ञ की अध्यक्षता क्यों की है? उन्होंने कहा मैंने इसलिए की है क्योंकि यह संसार संगतिकरण में परणित रहता है।

मैं जब भी किसी काल में इसके ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ करता हूँ तो मुझे यह संसार संगतिकरण में दृष्टिपात आता है। उन्होंने कहा संगतिकरण से आपका कया अभिप्राय है? भगवान कृष्णा ने कहा कि संगति करण का यह अभिप्राय है कि एक संग विद्यमान हो करके मानव अपने विचारों का उद्घोष कर सके, अपने विचारों का व्यक्त कर सके और अपने विचारों को अग्नि के परणित करता हुआ द्यौ लोक को प्राप्त कराए। उन्होंने कहा यह तो वाक्य तुम्हारा यथार्थ है। हम यह जानना चाहते हैं कि संगतिकरण के ऊपर और कौनसी प्रतिभा होती है? उन्होंने कहा महाराज! मुझे तो संसार का प्रत्येक कार्य संगतिकरण ही दृष्टिपात आता है। भगवान कृष्णा ने कहा मुझे स्मरण है मैंने उद्दालक गोत्रीय ऋषियों का जीवन कहीं अध्ययन किया है। उनके अध्ययन से कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है कि वह अपने विचारों में संगतिकरण करते रहते थे उनके अध्ययन से मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि प्रत्येक वस्तु को संगतिकरण से कटिबद्ध कर दिया है। जैसे तारा मण्डल है, लोक लोकान्तर हैं, आत्मा परमात्मा है पति पत्नि है, माता पुत्र है, राजा प्रजा है प्रत्येक प्राणी को एक दूसरे से कटिबद्ध करके वह संगतिकरण दृष्टिपात आता रहता है। पृथ्वी के परमाणुओं को, रज को ले करके जब जल से मन्थन किया जाता है तो वह संगतिकरण कहलाता है। मैंने यह श्रवण किया है, उद्दालक गोत्र में एक श्वेनकेतु ऋषि हुए हैं, श्वेनकेतु ऋषि महाराज एक समय अपनी पत्नि से यह कहने लगे हे प्रिय! आओ, हम देव पूजा करेंगे। तो उनकी पत्नि और वह देव पूजा में संलग्न हो गए। देव पूजा के पश्चात् बोले कि आओ अब हम संगतिकरण करेंगे। तो दोनों संगतिकरण में परणित हो गए।

संगतिकरण का जो परिणात हुआ वह पुत्र बना, क्योंकि माता पिता जब संगतिकरण करते हैं, विचारों को सुगठित कर लेते हैं तो उनका गृह प्रकाश में आ जाता है। अन्धकार के आँगन से प्रकाश को प्राप्त हो जाता है। मेरे पुत्रो! भगवान कृष्णा ने जब

यह गाथा प्रकट करायी कि यह संसार संगतिकरण में आ रहा है, एक वैज्ञानिक अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके परमाणुओं का मिलान कर रहा है। वह परमाणुओं को एक दूसरे में पिरो रहा है तो वह संगतिकरण कर रहा है। जैसे माला का निर्माण करने वाला सूत्र और मनके दोनों का संगतिकरण कर लेता है तो वह माला बन जाती है। जैसे परमपिता परमात्मा ने इस संसार का सृजन किया है जड़ और चेतन दोनों का संगतिकरण हुआ तो सृष्टि की उत्पत्ति हो गई और तृतीय शब्द की रचना हो गयी। उस रचना का नाम ही मेरे प्यारे! सृष्टि कहलाती है। इसी प्रकार जैसे वैज्ञानिक अपनी विज्ञानशाला में विद्यमान हो करके संगतिकरण करता है परमाणुओं का अग्नि के परमाणुओं को लेता है, जल के परमाणुओं को लिया और उसमें अग्नि की पुट लगा करके परमाणुओं का संगतिकरण हुआ तो यन्त्र की उत्पत्ति होगी नाना प्रकार की चित्रावलियों की उत्पत्तियां हो जाती हैं।

भगवान कृष्ण ने कहा एक समय, सूक्ष्म सा मेरा आसन्न है, मैं सन्ध्या के काल में विद्यमान था। मेरी देवी रुक्मणी ने कहा हे भगवन्! आओ आज हम संगतिकरण करना चाहते हैं, तो उन्होंने संगतिकरण के लिए मुझे प्रेरित किया। मैं उससे पूर्व संगतिकरण कर रगया था। मैंने परमाणुओं को एकत्रित किया था और वह परमाणु कृति भाषित कहलाते थे। उन परमाणुओं को ले करके हम दोनों ने संगतिकरण किया। मैंने रात्रिकाल में जिसे रेणुका कहते हैं उस रेणुका के अन्धकार में परमाणुओं को ले करके सूर्य के परमाणुओं से उनकी पुट लगाई, चन्द्रमा के परमाणुओं को ले करके उनको कृति भाषित बनाया। वह ऐसा एक यन्त्र बन गया उन परमाणुओं का कि दिवस को रात्रि बना दिया। तुम्हें स्मरण है मैंने उस यन्त्र का निर्माण किया है जो सूर्य के ऊपर आच्छादित हो जाते हैं। मेरी पत्नि ने संगतिकरण के लिए मुझे प्रेरित किया। मैंने यन्त्रों का निर्माण किया है। तो संगतिकरण का अभिप्राय केवल यह है कि एक दूसरे का मिलान है, एक दूसरे की प्रतिभाषिता है जैसे परमपिता परमात्मा का यह जगत् है एक तरंग दूसरे में पिरोई हुई है। एक दूसरे में पिरोई हुई होने के नाते वह संगतिकरण कहलाता है। तो ऋषि ने कहा याग है और याग के तीन स्थम्ब कहलाते हैं जैसे मानव के शरीर में रजोगुण, तमोगुण,

सतोगुण तीन गुण धावन हो करके यह शरीर क्रिया कलाप कर रहा है। यह नाना प्रकार के व्यंजनों की उत्पत्ति कर रहा है। इसी प्रकार याग के तीन स्थम्ब माने जाते ह। सबसे प्रथम देव पूजा उसके पश्चात् संगतिकरण और दानेषु यह तीन स्थम्ब कहलाते हैं। मैं दान की चर्चा तो कल ही प्रकट करूंगा। आज केवल मैं यह उच्चारण करने के लिए आया हूँ कि यह सर्वत्र जगत् एक संगतिकरण में परणित हो रहा है। मेरे पुत्रों! ब्रह्मा अस्त्र है, वरुणास्त्र है जितने भी अस्त्रों शस्त्रों का निर्माण किया जाता है वह सब संगतिकरण कहलाता है। माता अपने में पुत्रवती बनती है तो वह भी संगतिकरण कहलाता है। संगतिकरण का अभिप्राय यह हे कि हम समूह में विद्यमान हो जाएं।
एक समय यही वाक्य कहीं ब्रह्मचारी सुकेता को स्मरण आया था। कहीं यह वाक्य त्रेता के काल में महर्षि काग भुजण्ड जी भी स्मरण आया था महर्षि काग भुजण्ड जी ने इस संगतिकरण की विवेचना करते हुए अपने में यन्त्रों का निर्माण किया था। संगतिकरण एकाम् ब्रह्म वाचो देवः, एक समय ब्रह्मवारी शवरी अध्ययन कर रही थी, अध्ययन करते करते कहीं संगतिकरण की विवेचना आने लगी तो उन्होंने वेद का अध्ययन किया और वेद में संगतिकरण का अध्ययन करते हुए एक यन्त्र का निर्माण किया था जिससे एक रक्त के बिन्दु को यन्त्र में प्रवेश करने से उसमें परमाणुओं का समूह उसमें दृष्टिपात आने लगा और वह यन्त्र चित्रावली बन करके मानव के समीप आ गया। विचार क्या? भगवान कृष्ण ने यह कहा, महर्षि विभाण्डक और महर्षि शृङ्गी से कि यह संगतिकरण ही संसार का मूल कहलाता है। परमपिता परमात्मा ने भी जगत् की संगतिकरण में ला करके रचना की है। वैज्ञानिक यन्त्रों की रचना कर लेते हैं। माता अपनी प्रीतियों का संगतिकरण करके पुत्र को लोरियों का पान करा देती है। राजा प्रजा का संगतिकरण करके प्रजा और राष्ट्र को स्वर्ग बना देता है। ब्रह्मचारियों के समीप विद्यमान हो करके आचार्य अपने विचारों का संगतिकरण करके ब्रह्मचारियों को पवित्र बना देता है और उनको बुद्धियुक्त बना देता है। इसी प्रकार यज्ञशाला में विद्यमान हो करके उद्गीत गाने वाला उद्गाता परमाणुओं का संगतिकरण करके उसका छन्द बन जाता है और छन्द बन करके वही ध्वनि बन जाती है और वह ध्वनि बन करके राष्ट्र को और समाज को ऊँचा बना देती

है।
मैं द्वापर के कालों की चर्चा क रहा था। भगवान कृष्णा ने यह वार्त्ता ऋषियों को प्रकट कराई। ऋषिवर बोले, धन्य है। उस समय भगवान कृष्णा ने एक वाक्य कहा ऋषियों से कि यहाँ इतना सुन्दर याग हुआ है और याग में जब तक तुम्हारा पदार्पण नहीं हुआ तब तक प्रसन्नता नहीं आई, यह ध्वनि नहीं हुई। इसके मूल में क्या है? महर्षि विभाण्डक ने यह कहा कि हम यागों के कर्म काण्ड को जानते हैं। हम क्रिया कलाप को जानते हैं। ऐसे राजा के राष्ट्र में जब ऐसे कर्म काण्डियों को निमन्त्रित नहीं किया गया, निष्पद्ध और विवेकी पुरुषों को क्योंकि यागों में विवेक की धारा अनिवार्य होती है। इसीलिए ऐसे जो याग हैं, राजेश्वर याग हैं इसमें ध्वनि जभी हो सकती है जब राष्ट्र का प्रत्येक प्राणी प्रसन्न हो जाए। यदि राजा के राष्ट्र में प्रसन्नता नहीं रहेगी तो याग कितना ऊँचा बन जाए उसमें ध्वनि नहीं होती। हमने इस याग में सम्मिलित होने के लिए विचारा परन्तु आ नहीं सके। निमन्त्रित नहीं किए गए। अब हम निमन्त्रित हो करके यहाँ नियुक्त हो गए हैं। हमने विचार लिया कि बुद्धियुक्त वेदायुक्त याग हुआ है, प्रसन्नता हो गई है। इसलिए तुम्हारी ध्वनि बन गई हैं यह उच्चारण करके दोनों ऋषि मौन हो गए।
तो मेरे पुत्रो! विचार विनिमय क्या? याग बड़ा सूक्ष्मतम रहस्य माना गया है। इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान किया गया है, इस पर शेष चर्चाएं हम कल प्रकट करेंगे। आज का वाक् यह कह रहा है कि हम अपने में प्रसन्न रहें। तो बेटा! ऋषि मुनियों ने यह उद्घोष करके अपने आश्रम को प्रस्थान किया। सभा विसर्जन हो गई। याग में उद्घोष हो गया, शान्त मुद्रित हो करके अपने में महत्ता की आभा प्रकट हो गई। यह है बेटा! आज का वाक्। आज का वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय क्या कि वह जो मेरा देव है वे परमपिता परमात्मा है जिसकी आभाओं में मानव सदैव तत्पर रहा है, आनन्दित होता रहा है। शेष चर्चाएं मैं तुम्हें कल प्रकट करूंगा। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा। निवास स्थान : सेठ हरी राम गुप्ता समय : रात्रि 8.00 बजे